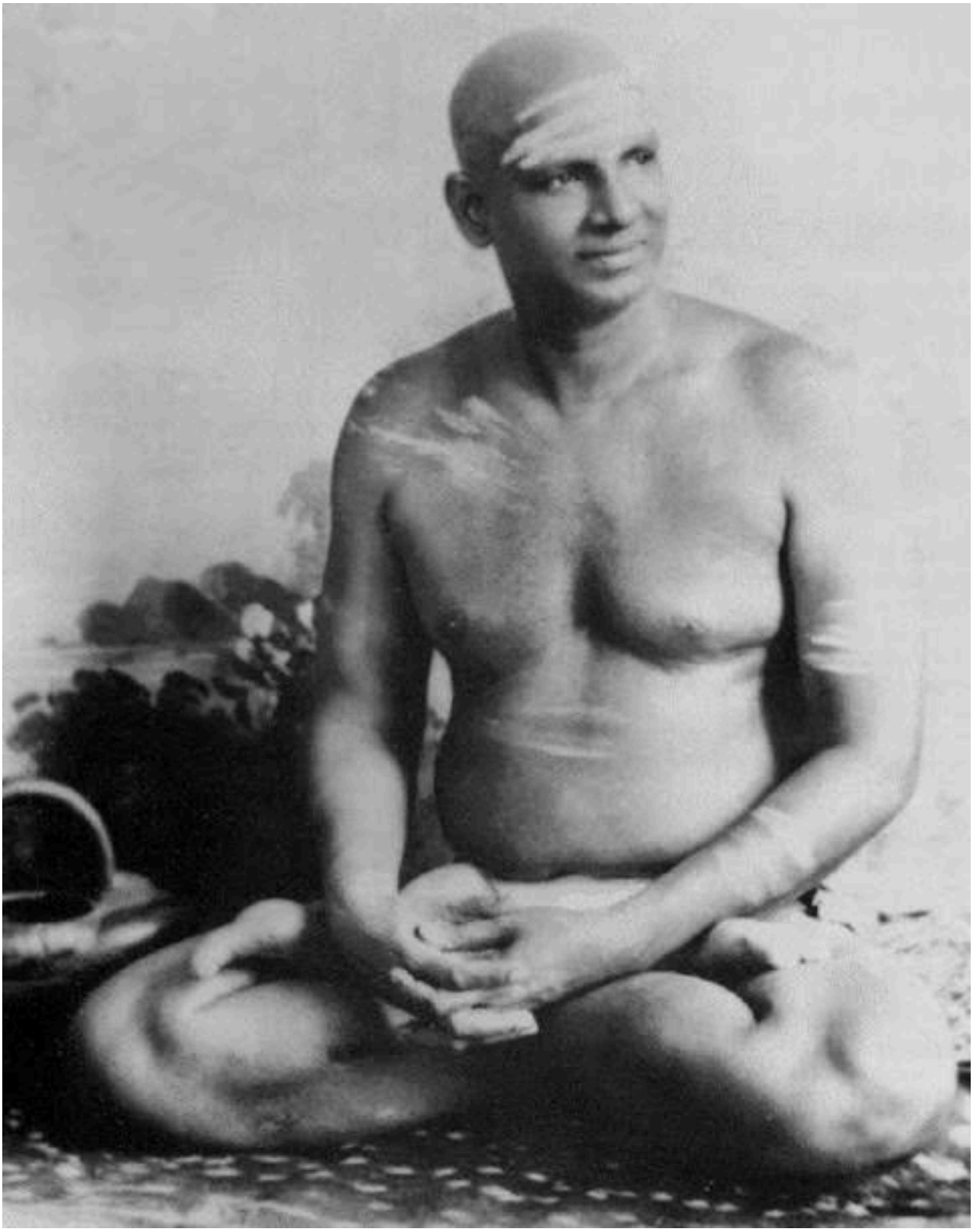

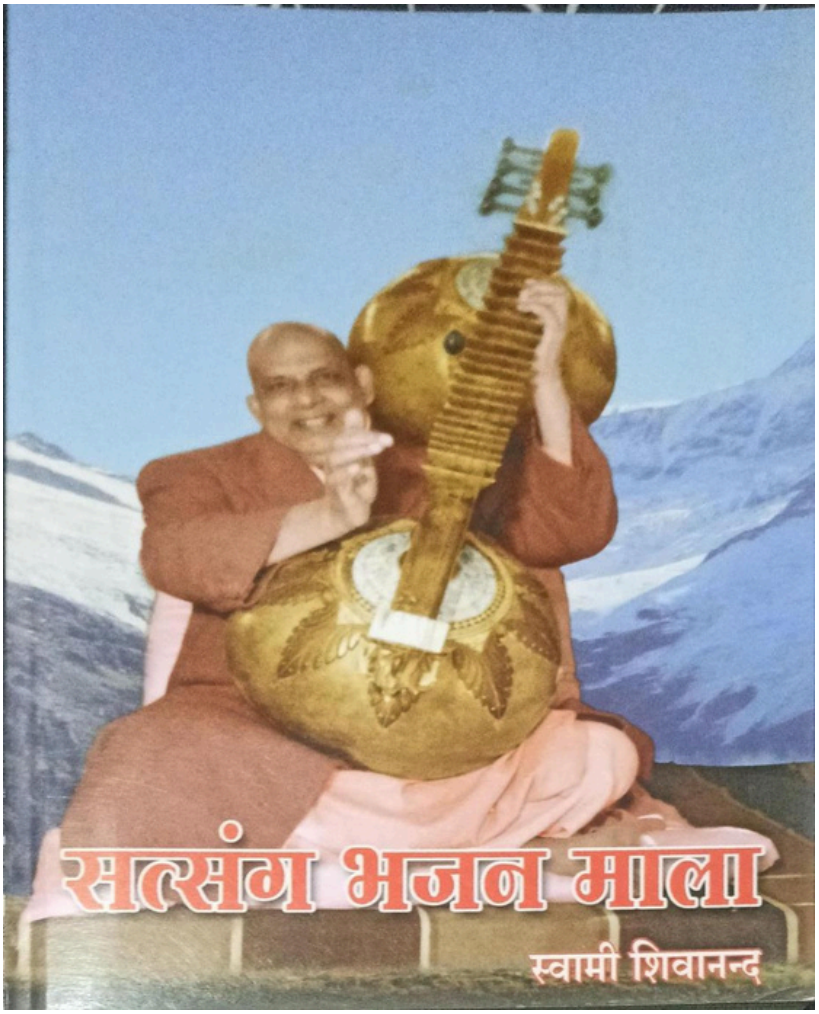

सत्संग भजन माला

'प्रार्थना –मंजरी' और 'शिवानन्दाश्रम-भजनावली ' का संयुक्त तरा पररवशधथत रूप

श्री स्वामी शिवानन्द सरस्वती

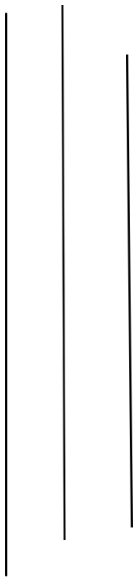

प्रकिाक

द शिवाइन लाइफ सोसायटी
पत्रालय : शिवानन्दनगर-२४९१९२
शजला : शटहरी गढ़वाल,उत्तराखण्ड (शहमालय), भारत
www.sivanandaonline.org, www.dlshq.org

प्रर्म संस्करण:१९८३
षष्ठ संस्करण:२०१८
(९,००० प्रशतयााँ)

© दशिवाइन लाइफटरस्टसोसायटी

ISBN 81-7052-141-6

HS136

PRICE:160/-

'द शिवाइन लाइफसोसायटी , शिवानन्दनगर के शलएस्वामीपद्यनाभानन्दद्वारा
प्रकाशित तर्राउन्ीिंके ं द्वारा 'योगबेदान्त फारेस्टएकिोमीपे्रेस ,
पो शिवानन्दनगर २४९ १९२ , शजलाशटहरी गढ़वाल , उत्तराखण्ड ' मेंमुशित।
For onlineordersandCataloguevisit: disbooks org

प्रकिाकीय वक्तव्य

यह पुस्तक 'सत्संग भजन माला' यहाँ की पूवथ-प्रकाशित पुस्तकों ं'प्रार्थना-मंजरी' तर्रा 'शिवानन्दाश्रम-भजनावली' का संयुक्त तर्रा पररवशधथत रूप है। इसमें स्तोत्र, भजन आशद को नये क्रम से रखा गया है। जो गीत, भजन अर्वा स्तोत्र शजस शदन गाये जाते हैं, उन्ें उस शदन के ीिषथक के अन्तगथत संगृहीत शकया गया है। इस भाँशत समूपूणथ पुस्तक सप्ताह के सात शदनों ंके क्रम से सात उपीिषथकों ंमें शवभाशजत है। उपयुथक्त दोनों ंपुस्तकों ं'प्रार्थना-मंजरी' तर्रा 'शिवानन्दाश्रम-भजनावली' की उपयोशगता तर्रा लोकशप्रयता सवथशवशदत है। आिा है शक ये पुस्तकें अपने इस नवीन पररवशधथत रूप 'सत्संग भजन माला' में शहन्दी पाठकों ंतर्रा भक्त जनता के शलए अशधक उपयोगी शसद्ध होगी।

-द डिवाइन लाइफ सोसायटी

बीसवीं ंिताब्दी तर्ा सत्संग की आवश्यकता

बीसवीं ंिताब्दी के नर और नाररयाँ भौशतकवाद के शवष से सराबोर हैं। उनके शदलों ंमें आध्यात्मिकता का रज-कण भी नहीं ंहै। सत्संग करने की बात तो दूर रही, उनको यही मालूम नहीं ंशक सत्संग शकस शिशिया का नाम है। उनके संस्कार उलझ गये हैं, मैले हो गये हैं, काले हो
गये हैं-शकया ही क्या जाये ?

यशद आज का नर-नारी-समाज अपने सामने मुँह खोले हुए दुःखों ंके शनराकरण की जरा भी िाह रखता है, तो अपने शदल और शदमागों ंको साफ कर ले। शजस प्रकार मन को कल-पुजे शनकाल कर पुननथव शकया जाता है, शजस प्रकार गन्दी जगहों ंको पानी से साफ शकया जाता है, उसी प्रकार बीसवीं ंिताब्दी के प्रशतशनशध मनुष्य को अपने हृदय और अपनी बुत्मद्ध को पुननथव करना होगा तर्ा आध्यात्मिकता के जल से साफ कर लेना होगा। यशद यह हो गया, तो बीसवीं ंिताब्दी के दूसरे अधथक को आध्यात्मिकता के प्रकि से उज्ज्वल शकया जा सकता है।

आज प्रत्येक व्यत्मक्त के शलए सत्संग की साधना अशनवायथ हो गयी है। यशद वह सत्संग नहीं ं करता, तो भौशतकवाद के अन्धकार में ही पर्भ्रष्ट बना रहेगा। पहले ही जीवन को छोटा कहा गया र्ा, जब शक मनुष्य कई सौ सालों ंतक िरीर धारण शकये रहते रे्। शफर आज की क्या पूछो, जब शक मुत्मिल से जीवन की अधथि–ताब्दी पार होती है, वह भी पार होते ही मृतुयु के तट पर पहुाँती है। इसशलए जीवन एकदम छोटा हो गया है। समय तो भागता ही जा रहा है, रुकने वाला वह है ही कब ? यशद समय को हार त्मखलानी है, तो हमें उससे तेज भागने की ित्मक्त का अजथन करना िाशहए।

मनुष्य-जन्म बि़ा अनमोल है। इसको खोना ठीक उस व्यापारी के समान होगा जो शमले हुए मोती को (जो कई साल के पररश्रम के बाद उसे शमला र्ा) अर्ाह सागर में शगरा देता है। एक बार इस जीवन से हार् धो शदया तो समझ लो, सदा के शलए धो शदया। कह नहीं ंसकते शक शफर होगा क्या? यशद इस जीवन में कुछ अच्छे संस्कारो का अजथन शकया है, तो कभी-न-कभी मनुष्य जीवन की आिा की जा सकती है, पर यशद जन्म से ले कर कफन ओढ़ने तक कुत्ते, शबल्ली, गधे आशद के समान कमथ शकये, तो न जाने शफर कब यह मनुष्य-योशन शमलेगी ।

अभी तो खून में जिो है, शवटाशमन बी की गोशलयाँ, इन्स्यूशलन की सूइयाँ, काशलवर आयल, च्यवनप्रिा, स्वणथभस्म आशद खा-खा कर ित्मक्त को शगरने से बिाया जा रहा है, गाल अभी लाल हैं, रग-रग में खून खौल रहा है; इसशलए कुछ भी समझ में नहीं ंआता-भले ही लाख समझाओ । कल को जब लक़ी के सहारे उठने लगोगे, शजस शदन बालों ंपर बरफ शगर जायेगी,

दाँतों ंको कोई आ कर सोते-ही-सोते तिो जायेगा, शजस शदन हलवा और दूध ही पेट के अन्दर आसानी से जा सकेंगे; सम्भवतुः उसी शदन कुछ शविार आयेगा-ओहो, हमने गलती की, युवावस्ा को जुए में हार शदया, िराब, शसनेमा, उपन्यास और अश्लील समाज के हार्ों ंबिे शदया। पर तब हो ही क्या सकता है! शिशियाँ तो खेत को ुग गयीं,ं अब तो व्यर्थ में कनस्तर बजाओ।

देवी, बीसवीं ंिताब्दी, जागो; तुम्हारे जन जागें। सोये हुओं ंमें तुम जाग-जाग कर जाग्रशत भरो । इशतहास में तुम्हारे अध्याय का ीषथक न तो काले अक्षरों ंमें शलखा जाना िाशहए औरन लाल अक्षरों ंमें ही। या तो पीला या काषाय या स्वशणथम - मुझे यही तीनों ंरंग पसन्द हैं। क्यों ंनहीं ं तुम ही अपने इशतहास का आमुख अपने हार्ों ंसे गेरुए रंग में शलख जाती हो? मैं तुम्हारी सहायता करूँगा।

-स्वामी डिवानन्द

प्रार्थना की मशहमा

"ीरीर के शलए प्राण-तत्त्व शजतना आवश्यक है, उतना ही आिा के शलए प्रार्थना भी आवश्यक है। प्रार्थना जीविा का परमिा के सार् ऐक्य कराती है। प्रार्थना व्यत्मक्त के अहं को शवगशलत करती है।"

-स्वामी डिवानन्द

"शवश्व के सभी धर्मों के अनुसार प्रार्थना तर्ा पूजन जीवन का आधार है। अशधकांि साधकों ं के शलए शनत्य दैवी उपासना हेतु यह साधन है। प्रार्थना से मनोभाव की वृत्मद्ध होती है तर्ा शदव्यता की शदिा में गशत होती है। इस भाँशत प्रार्थना साधक को पशवत्र कर उन्नत बनाती है।"

-स्वामी डिदानन्द

"स्तोत्रों ंतर्ा प्रार्थना की महत्ता समझने की अपेक्षा अनुभव की वसुतु है। प्रार्थना सतत होनी ाशिहए। यह तो प्रत्ेयेक साधक की जीवन-सार्ी होनी ाशहए। प्रार्थना केवल कशतपय ब्दों ंका उच्चारण मात्र नहीं ंहै। यह तो साधक का ईश्वर के सार् सीधा सम्बन्ध है।"

-स्वामी कृष्णानन्द

अनुक्रमडिका

प्रकाकीय वक्तव्य 2
बीसवीं ंताब्दी तर्ा सत्संग की आवश्यकता 3
प्रार्थना की मशहमा 4

सोमवार

१. 'मंगलं शदितु मे शवनायको' और 'जय गणे' 10
२. मुदा करात्तमोदकम् (ंकरााययकृत) 13
३. गाइये गणपशत जगवन्दन 15
४. श्री गणे जी की आरती 16
५. शिव-सुतुशत 16
६. शलंगाष्टकम् 17
७. द्वादि ज्योशतशलिंगस्तोत्रम् 19
८. साम्ब गौररवर 19
९. साम्बसदाशिव भोलानार् 20
१०. महामृतुंयुंजय-मन्त्र 21

११. जटाटवी-गलज्जल-प्रवाहपाशवतस्ले 22
१२. अशतभीषणकटुभाषण..... 25
१३. शबल्वाष्टकम्..... 28
१४. श्री शिवमानसपूजा 29
१५. शिवपंाक्षिरस्तोत्रम् 30
१६. शिवषिक्षरस्तोत्रम् 30
१७. दाररद्र्य-दहन-शिवस्तोत्रम्..... 31
१८. रिाष्टकम् (श्री तुलसीदासकृतं) 32
१९. नमो भूतनार् 33
२०. हर गाओ शिव गाओ 34
२१. िंकर महादेव देव..... 34
२२. श्री शिव-अष्टोत्तरित-नामावली 35
२३. शिव-आरती 37

मंगलवार

१. नाद-शबन्स्दु-कलाशद नमो नमुः..... 38
२. िरणागतमातुरमाशधशजतम्..... 40
३. काशतथकेयस्तोत्रम्..... 41
४. पदारशवन्द-भक्त-लोक-पालनैक-लोलुपम् 43

बुधवार

१. भजो रे मैया राम गोशवन्द हरी 45
२. यमुना-तीर-शवहारी 46
३. भज रे गोपालम्..... 46
४. गायशत वनमाली..... 48
५. बूरूशह मुकुन्देशत..... 49
६. क्रीशत वनमाली 51
७. भज रे यदुनार्म् 52
८. स्मर वारं वारं 54
९. गोपाल-गोकुल-वल्लभीशप्रय 55
१०. दिथन दो घनश्याम नार् 56
११. अधरं मधुरं..... 58
१२. जयशत तेऽशधकम्..... 60
१३. काशलय-मदथनं-अर् बाररशण..... 65
१४. अचुयुतं केिवं 68
१५. जय शवठ्ठल शवठ्ठल..... 70

१६. हरर तुम हरो जन की भीर 70
१७. महायोग-पीठे 72
१८. प्रलयपयोशधजले..... 74
१९. राधारमण कहो 77
२०. राम-कृष्ण-हरर 77
२१. कृष्ण गोशवन्द गोशवन्द..... 78
२२. नटवर लाल शगररधर गोपाल..... 79
२३. कृष्ण पे्रेम मयी राधा..... 79

गुरुवार

१. शवशदतात्मखलि–ाख-सुधा-जलपे..... 80
२. देव-देव-शिवानन्द 83
३. जय गुरुदेव दयाशनधे..... 84
४. आनन्द कुटीर के शदव्य देवता 84
५. श्री दत्तात्रेयस्तोत्रम्..... 85
६. श्री दत्तात्रेयस्तोत्रम्..... 85
७. गुरुस्तोत्रम् 87
८. गुवथष्टकम्..... 91
९. शिवगुरु-पंकिम् 92
१०. शिवानन्द योगीन्द्र सुतुशतुः..... 93
११. श्री शिवानन्दिरणागशतसुतुशतुः..... 94
१२. श्री शिवानन्दाष्टोत्तरितनामावशलुः 95
१३. भव-सागर तारण 98

ुक्रिवार

१. श्री सरस्वशत नमोऽसुतु ते..... 100
२. दे मज शदव्य मती..... 101
३. सुवक्षोजकमुम्भाम् 102
४. न तातो न माता 104
५. अम्ब-लशलते..... 107
६. नमसे्ते जगद्धाशत्र (श्री महालक्ष्मीस्तोत्रम्) 108
७. जय तुंग तरंगे 111
८. नमसे्ते ि◌रण्ये (श्री दुगाथदेवी-स्तोत्रम्)..... 112
९. नमसे्तेऽसुतु गंगे..... 115
१०. जय भगवशत देशव नमो वरदे..... 118
११. नवरत्नमाशलका..... 119

१२. श्री अन्नपूणाथस्तोत्रम्..... 122
१३. आशद शदव्य ज्योशत..... 124
१४. श्री देवी-अष्टोत्तरित-नामावली 124
१५. देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रम् 129
१६. देवी-आरती 130
१७. श्री गंगा-आरती 132
१८. श्रीसूक्तम् 132

शिनवार

१. िशनस्तोत्रम्..... 134
२. वन्देे सन्तं श्री हनुमन्तम्..... 136
३. जयशतमंगलागार..... 137
४. राम सुशमर राम सुशमर..... 138
५. ुिद्ध ब्रह्म परात्पर राम..... 139
६. रामिन्द्र रघुवीर 143
७. खेलशत मम हृदये 144
८. पे्रेम मुशदत मन से कहो..... 145
९. शपब रे राम-रसम्..... 146
१०. भज रे रघुवीरम् 147
११. भज मन रामिरण सुखदाई 149
१२. ितुः श्री राममू्..... 150
१३. राम रतन धन पायो 152
१४. राम से कोई शमला दे 153
१५. श्रीरामरक्षास्तोत्रम् 154
१६. श्री हनुमान ालीसा..... 157
१७. संकटमोिन हनुमानाष्टक 158
१८. हनुमान् सुतुशतुः..... 159
१९. कशलयुगकृत भगवत्स्तुशतुः..... 160
२०. श्री रामिन्द्र कृपालु 161
२१. प्रातुःस्मरणम् 162

रशववार

१. आशदत्यहृदयम्..... 164
२. गायत्री-मन्त्र 166
३. श्रीमद्भगवद्गीता, अध्याय २ 167
४. श्रीमद्भगवद्गीता, अध्याय १२ 169

५. श्रीमद्भगवद्गीता, अध्याय १५ 170
६. गीता मशहमा 172
७. श्री शवषणुसहस्रनामस्तोत्रम् 172
८. सूयथ-सुतुशतुः 187
९. शवषणु-स्तोत्रम् 188
१०. ात्मन्त-मन्त्र 188
११. पुरुषसूक्तम् 192
१२. नारायणसूक्तम् 192
१३. खेलशत शपण्डाणे्डे 194
१४. शिन्ता नात्मस्त शकल 195
१५. मानस संरि रे ब्रह्मशण 196
१६. तद्वत् जीवत्ंवं ब्रह्मशण 197
१७. मज गोशवन्दम् 198
१८. नमो आशदरूप 200
१९. आशद बीज एकले 201
२०. नशह रे नशह ंका 202
२१. सविं ब्रह्ममयम् 203
२२. सब हैं समाना 204
२३. एक सार नाम 204
२४. अठारह सद्गुण 205
२५. शदव्य जीवन 205
२६. कोई-कोई जाने रे 206
२७. रि प्रभु 206
२८. मन्त्र-पुष्पाशण 207
२९. मा ि ुः 207
३०. प्रभु-प्रार्थना 208
३१. दैव-प्रार्थना 208
३२. शवश्व-प्रार्थना 209
३३. जगदीि-आरती 209
३४. आरती 210

सोमवार

प्रार्थनाऔरश्रीगिेस्तोत्रम्

१. मंगलं शदितु मे शवनायको' और 'जय गणि'

श्लोक

नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूतथये सहस्रपादाडिडिरोरुबाहवे।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय ाश्वते सहस्रकोडटयुगधाररि नमः।।

दिकालवसुतुपररचे्छेद से रशहत, अनेक ीर वाले, असंख्य हार्, पैर, आँख, ऊरु तर्ा शिर वाले, नाना नाम वाले, अनन्त कोशट युगों ंके धारण करने वाले ाश्वत पुरुष को नमन हो, नमन हो।

श्लोक

त्वमेव माता ि डपता त्वमेव त्वमेव बनुधुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव डवद्या द्रडविं त्वमेव त्वमेव सवं मम देवदेव।।

हे देवों ंके भी देव महादेवजी, तूहीमेरीमाताहै।तूहीमेरा शपता है। तू ही मेरा बनुधु है और तू ही मेरा सखा भी है।तूही शवद्याहै।तूहीिव्यहैऔरअशधक क्या कहें, मेरा सब-कुछ तू ही है।

श्लोक

अन्यर्ा ि रिं नास्तस्त त्वमेव ि रिंमम। तस्मात्
कारुण्यभावेन रि रि महेश्वर।।

हे महेश्वर। आप ही मुझ िरणागत के रक्षक है। आपके अशतररक्त मेरी अन्य कोई गशत नहीं ंहै। अतुः करुणा करके मेरी रक्षा कीशजए, मेरी रक्षा कीशजए।

मन्त्र

ॐ नमो नारायिाय ।
ॐ नमो भगवते रामिन्द्राय ।
ॐ श्री सद्गुरुभ्यो नमः ।
ॐ नमः डिवाय ।
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
ॐ नमो भगवते ि रविभवाय ।
ॐ श्री परिाकै्त्यै नमः ।

श्लोक

ॐ सह नाववतु । सह नौ भुनकुतु । सह वीयं करवावहै।
तेजस्तस्व नावधीतमसुतु मा डवडिषावहै ।। ॐ ि ास्तन्तः ि ास्तन्तःास्तिन्तः ।

वह(परमिाा) हम दोनों ं(गुरु-शिष्य) की सार्-सार् रक्षा करे। वह हम दोनों ंको सार्-सार्ीमोक्षकेआनन्द का उपभोग कराये । हम दोनों ंकी अध्ययन की हुई शवद्या तेजोमयी हो। हमदोनों ंपरस्परकभी दे्वेष न करें। ॐ ि ात्मन्तुः ि ात्मन्तुः ि ात्मन्तुः ।

श्लोक

मंगलं डदितु मे डवनायको,मंगलंडदितुमेसरस्वती।
मंगलं डदितु मे महेश्वरी, मंगलंडदितुमेसदाडिवः।।१।।

गुरुर्ब्थह्मा गुरुडवथषुणुगुथरुदेवोमहेश्वरः।
गुरुः सिाात् परं ब्र्ह्मतसै्मैश्रीगुरवेनमः।।२।।

सवथमंगल मांगले्येडिवेसवाथर्थसाडधके ।
रिणे्ये त्र्यम्बके गौररनारायडिनमोऽसुतुते।।३।।

लोकाः समस्ताःसुस्तखनोभवनुतु!

श्री गणिे हमारा मंगल करें, श्री सरस्वती देवी हमारा मंगल करें, श्री महेश्वरी देवी हमारा मंगल करें, श्री सदाशिव हमारा मंगल करें ।।१

गुरु ब्रह्मा हैं, गुरु ही शवषुणु हैं. गुरु भगवान्, शिव हैं, गुरु ही परब्रह्म हैं, उन गुरु को नमस्कार ।।२

हे पावथती देवी, हे शिवपत्नी, समूपूणथ पुरुषार्ों को शसद्ध करने वाली, मंगल प्रदान करने वाली, भक्तों ंकी रक्षा करने वाली, तीन नेत्रों ंवाली माँ दुगे ! तुम्हें नमस्कार है ।।३

समूपूणथ शवश्वुखी हो।

कीतथन

जय गणिे जय गणिेजयगणिेपाशहमाम् श्री गणिे श्री गणिेश्रीगणिेरक्षमाम्।।१

रिवणभव िरवणभविरवणभवपाशहमाम्।
काशतथकेय काशतथकेयकाशतथकेयरक्षमाम्।।२

जय सरस्वशत जय सरस्वशतजयसरस्वशतपाशहमाम्।
श्री सरस्वशत श्री सरस्वशतश्रीसरस्वशतरक्षमाम्।।३

जय गुरुशिवगुरुहररगुरुराम।
जगद्गुरु परं गुरु सद्गुरु श्याम ।।४

ॐ आशदगुरु अद्वैतगुरुआनन्दगुरुॐ।
शिद्गुरु शिद्धन गुरुशिन्मयगुरुॐ।।५

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ।
हरे कृ ष्ण हरे कृ ष्ण कृ ष्ण कृ ष्ण हरे हरे ।।६

नमुः शिवाय नमुःशिवायनमुःशिवाय।
नमुः शिवाय नमुःशिवायनमुःशिवाय।।७

ॐ नमो नारायणायॐनमोनारायणाय।
ॐ नमो नारायणायॐनमोनारायणाय।।८।।

ॐ नमो भगवतेवासुदेवाय।
ॐ नमो भगवतेरामिन्द्राय।।९।।

आंजनेय आंजनेयआंजनेयपाशहमाम्।
हनुमन्त हनुमन्तहनुमन्तरक्षमाम्।।१०

दत्तात्रेय दत्तात्रेयदत्तात्रेयपाशहमाम्।
दत्तगुरु दत्तगुरुदत्तगुरुरक्षमाम्।।११

शिवानन्द शिवानन्दशिवानन्दपाशहमाम्।
शिवानन्द शिवानन्दशिवानन्दरक्षमाम्।।१२

गंगारानी गंगारानीगंगारानीपाशहमाम्।
भागीरर्ी भागीरर्ीभागीरर्ीरक्षमाम्।।१३

ॐ ित्मक्त ॐ ित्मक्तॐत्मिक्तपाशहमाम्।
ब्रह्मित्मक्त शवषुणित्मक्तशिवित्मक्तरक्षमाम्।।१४

ॐ आशदित्मक्त महित्मक्तपरित्मक्तपाशहमाम्।
इच्छित्मक्त शक्रयित्मक्तज्ञानित्मक्तरक्षमाम्।।१५

राजराजेश्वरर राजराजेश्वरराजराजेश्वरीपाशहमाम्।
शत्रपुरसुन्दरर शत्रपुरसुन्दररशत्रपुरसुन्दररक्षमाम्।।१६

ॐ तत्सत् ॐ तत्सत्ॐतत्सत्ॐ।
ॐ ित्मन्तु: ॐ ित्मन्तु:ॐत्मिन्तु:ॐ।।१७

शलोक
गजाननं भूतगिाडधसेडवतं
कडपत्थजमूबूफलसार-ंभिम् ।
उमासुतं ोकडवनिाकारकं
नमाडम डवघ्नेश्वर-पाद-पंकजम् ।।१

श्लोक
ब्र्ह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूडतथ
ंिातीतं गगनसदृं तत्त्वमस्याडदलक्ष्यम् ।
एकं डनत्यं डवमलमिलं सवथधीसाडिभूतं
भावातीतं डत्रगिुरडहतं सद्गुरुं तं नमाडम ।।२

त्वमेव माता ि डपता त्वमेव त्वमेव बनुधुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव डवद्या द्रडविं त्वमेव त्वमेव सवं मम देवदेव ।।३

अन्यर्ा ंिरिं नास्तस्त त्वमेव ंिरिं मम ।
तस्मात् कारुण्य-भावेन रि रि महेश्वर ।।४

२. मुदा करात्तमोदकम् (किरिाायथकृत)

श्लोक

ॐ ॐ ॐकाररूपं त्र्यहडमडत ि परं यत्स्वरूपं तुरीयम्।
तै्रैगुण्यातीतनीलं कलयडत मनस: ंारुडसनदूरमूडतथम्।।
योगीनै्रै: ब्र्ह्मरन्ध्र: सकलगिुमयं श्री हरेनेंद्रि संगम्।
गं गं गं गं ंगिं गजमुखमडभतो व्यापकं डिन्तयस्तन्त।।

अपने मन में सिोी शक मैं वही ओंकार-रूप हाँ जो परम है, तुरीय-स्वरूप है, शत्रगुणातीत हैतर्‌ आभायुक्त और सुन्दर है। योशगश्रेेष्ठ अपने ब्रह्मरन्ध में गजमुख गणिे का ध्यान शकया करते हैं,जो समूपूणथ सद्गुणों ंसे पूणथ हैं, शिव और इन्द्र के सशहत हैं, शजनका बीजाक्षर 'गं' है और जोसवथत्र व्यापक हैं।

गीत

मुदा करात्तमोदकं सदा डवमुस्तक्त-साधकं,
कलाधरावतंसकं डवडित्र-लोक-रिकम् ।
अनायकैकनायकं डवनाडितेभ-दैत्यकं,
नतिुभ-ंप्रिाकं नमाडम तं डवनायकम् ।।१

नतेतराडतभीकरं नवोडदताकथ-भास्वरं,
नमतुसुरारर-डनजथरं नताडधकापदुद्धरम् ।
सुरेश्वरं डनधीश्वरं गजेश्वरं गिेश्वरं,
महेश्वरं तमाश्रये परात्परं डनरन्तरम् ।।२

समस्त लोकि ंकरं डनरस्त-दैत्यकुंजरं,
दरेतरोदरं वरं वरेभवक्त्र-मिरम् ।
कृपाकरं ि ंमाकरं मुदाकरे यिस्कर,
मनस्करं नमसत्कृतं नमस्करोडम भास्वरम् ।।३

अडकंनिाडतथ-माजथनं डिरन्तरोस्तक्त-भाजनं,
पुरारर-पूवथनन्दनं सुरारर-गवथि ंवथिम् ।
प्रपंि-ंिना-भीषिं धनंजयाडद-भूषिं,
कपोल-दानवारिं भजे पुरिा-वारिम् ।।४

डनतान्त कान्त-दन्तकं तमन्तकान्तकात्मजं,
अडिन्त्यरूपमन्तहीनमन्तराय-कृन्तनम् ।
हृदन्तरे डनरन्तरं वसन्तमेव योडगनं,
तमेकदन्तमेकमेव डिन्तयाडम सन्ततम् ।।५

महाग्गिे-पंरित्नमादरि योऽन्वहं,
प्रजल्पडत प्रभातके हृडद स्मरन् गिेश्वरम् ।
अरोगतामदोषतां सुसाडहतीं ंसुपुत्रतां,
समाडहतायुरष्टभूडतमभुयुपैडत सोऽडिरात् ।।६

मैंउनगणिे को प्रणाम करता हाँ जो प्रसन्नता के सार् हार् में मोदक धारण शकये हुए हैं , मोक्ष के सदादाता हैं, शजनके मस्तक पर अधथि ंन्द्र है, जो शवशित्र ढंग से लोक-रक्षण करते हैं ,

जहाँ कोई नायक न हो तो जो नायक हो जाते हैं, शजन्होंनें गजासुर का संहार शकया है और जो रिणागत लोगों ंके अमंगल दूर करते हैं ।।१

मैं उन परात्पर गणेि की िरण में सवथदा जाता हाँ जो ितुरुओं ंके शलए महा-भयानक हैं, शजनकी कात्मन्त प्रातुःकालीन सूयथ के समान है, शजनें देवता और राक्षस-सभी प्रणाम करते हैं, जो प्रणाम करने वालों ंको सारी शवपशत्तयों ंसे बिाते हैं तर्ा देवताओं ंके, सारी सम्पशत्त के तर्ा हाशर्यों ं के स्वामी हैं और साक्षात् परमेश्वर भी हैं ।।२

मैं उन शवनायक को प्रणाम करता हाँ जो सारे लोकों ंका कल्याण करने वाले हैं, शजन्होंनें महान् राक्षसों ंका संहार शकया है, शजनका पेट बि़ा है, जो उत्तम हैं और जो गजवदन हैं, िाश्वत हैं, कृपा, क्षमा, सन्तोष, कीशतथ, मान्यता आशद को देने वाले हैं और अत्यन्त तेजस्वी हैं ।।३

मैं उन सनातन गणेि जी का भजन करता हाँ जो दीन जनों ंका दुख दूर करते हैं, जो सनातन कहे जाने के योग्य हैं, जो भगवान् शिव के जे्येष्ठ पुत्र हैं, जो राक्षसों ंका गवथ िूर करते हैं, जो प्रलय-काल में अशत-भयंकर हैं, जो धनंजय (सपथ) को आभूषण के रूप में धारण करते हैं और शजनके कपोल से मद-जल प्रस्रशवत होता रहता है।।४

मैं उन एकदन्त शवनायक का ही सदा शिन्तन करता हाँ जो काल के काल (शिव) के पुत्र हैं (शिव जी ने यम को जीता र्ा), शजनके दाँत अत्यन्त प्रकिामान और तीक्ष्ण हैं, जो अवणथनीय रूपवान् हैं, अनन्त हैं, शवघ्ननिाक हैं और जो योशगयों ंके हृदय में सवथदा शनवास करते हैं ।।५

जो प्रशतशदन प्रातुःकाल श्री गणेि जी का स्मरण करते हुए इस महागणेि-पंकि का भत्मक्त और श्रद्धापूवथक पारायण करता है, उसे ीघ्र ही आरोग्य लाभ होगा, उसका पाप क्षय होगा, उसको शवद्वत्ता, सुसन्तान, दीघाथयुष्य और अष्टशसत्मद्धयों ंकी प्रात्मप्त होगी ।।६

नामावली

जय गणेि जय गणेि जय गणेिपाशहमाम्।
श्री गणेि श्री गणेि श्री गणेिरक्षमाम्।।

३. गाइये गणपशत जगवन्दन

(तुलसीदासकृत)

गाइये गणपशत जगवन्दन ।
किर-सुवन भवानी-नन्दन ।।

शसत्मद्ध-सदन गजवदन शवनायक।
कृपाशसनुधु सुन्दर सबदायक।।१

मोदक-शप्रय मुदमंगलदाता ।

शवद्यावाररशध बुत्मद्धशवधाता ।।२

माँगत तुलशसदास कर जोरे।।
बसशह राम-शसय मानस मोरे।।३

४. श्री गणिे जी की आरती

जय गणिे जय गणिे जय गणिे देवा ।
माता जाकी पारवती शपता महादेवा ।।

एक दन्त दयावन्त ि ार भुजा धारी ।
मारे् शसन्दूर सोहे मूसे की सवारी ।। (जय गणिे . . .)

अन्धन को आँख देत कोश ढन को काया।
बाँझन को पुत्र देत शनधथन को माया ।। (जय गणिे . . .)
पान ि ढ़े फूल ि ढ़े और ि ढ़े मेवा ।
लिुअन को भोग लगे सन्त करे सेवा ।। (जय गणिे . . .)

श्री डिव-स्तोत्रम्

५. शिव-सुतुशत

नि्तं पद्मासनस्ं ि डिधरमुकुटं पंविक्त्रं डत्रनेत्रं,
लू ि वज्रं ि खि्गं परिुमभयदं दडिांगे वहन्तम्।
नागं पिां ि घण्ां ि मरुकसडहतं ि ांकिुं वामभागे,
नानालंकारदीप्तं स्फडटकमडिडनभं पावथतिं नमाडम।।१

वन्दे ि मुभुमुमापडतं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारिं,
वन्दे पन्नगभूषिं मृगधरं वन्दे पिूनां पडतम् ।
वन्दे सूयथिांकवडिनयनं वन्दे मुकुन्दडप्रयं,
वन्दे भक्तजनाश्रयं ि वरदं वन्दे डिवं ि ंकरम् ।।२

मैं पावथती का पूजन करता हाँ, जो ि ान्त हैं, जो पद्मासन में बैठे हैं; शजनका मुकुट ि न्द्रमा से सुसत्मज्जत है; शजनके पाँि मुख और तीन नेत्र हैं; जो ि ूल, वज्र और खि्ग को धारण शकये हुए हैं; शजनके दाशहने भाग में अभयदान देने वाला परिु तर्ा शिर और कन्धे पर सपथ हैं,
शजनके वाम भाग में घण्टा, ि मरू और शत्रिूल त्मस्त हैं, जो नाना प्रकार के अलंकारों ि ंसे प्रदीप्त
और स्फशटक-मशण के समान प्रकाशित हैं ।।१

मिुभु, उमापशत, देवों ंके गुरु तर्ा जगत् के कारणभूत िंकर की मैं वन्दना करता हाँ।
नाग शजनका आभूषण है, जो मृगिमथ धारण करते हैं, पिुपशत हैं, उन िंकर की मैं वन्दना करता हाँ। सूयथ, िन्द्र तर्ा अशि शजनके तीन नेत्र हैं; जो शवषुणु के शप्रय हैं, उन िंकर की मैं बन्दना करता हाँ। जो भक्तों ंके आश्रय हैं, वरदान देने वाले हैं, कल्याणकारी हैं, उन िंकर की में वन्दना करता हाँ।।२

६. शलंगाष्टकम्

श्लोक

तस्ैमै नमः परमकारि कारिाय
दीप्तोज्वलज्वडलत डपंगललिोनाय।
नागेन्द्रहार कृत कुण्डल भूषिाय
ब्र्हेमेन्द्रडवषुणुवरदाय नमः डिवाय।।

गीत

ब्र्ह्ममुरारर-सुराडिथत डलंगं,
डनमथल-भाडषतिोडभत-डलंगम् ।
जन्मज-दुःख-डवनिाक-डलंगं,
तत्प्रिमाडम सदाडिवडलंगम्।।१

देवमुडन-प्रवराडिथत डलंगं,
कामदहं करिकर-डलंगम्।
रावि-दपथ -डवनिान-डलं गं ,
तत्प्रिमाडम सदाडिवडलंगम्।।२

सवथ-सुगस्तन्ध-डवलेडपत-डलंगं,
बुस्तद्ध-डववद्धथन-कारि-डलंगम् ।
डसद्ध-सुरासुर-वस्तन्दत-डलंगं,
तत्प्रिमाडम सदाडिवडलंगम्।।३

कनक-महामडि-भूडषत-डलंगं,
फडिपडत-वेडष्टतिोडभत-डलंगम् ।
दिसुयज्ञ-डवनिान-डलंगं,
तत्प्रिमाडम सदाडिवडलंगम्।।४

कुंकुमिन्दन-लेडपत-डलंग,

पंकज-हार-सुिोडभत-डलंगम् ।
संडित-पाप-डवनािन-डलंग,
तत्प्रिमाडम सदाडिवडलंगम् ।। ५

देवगिाडिथत-सेडवत-डलंगं,
भावैभथस्तक्तडभरेवि डलंगम् ।
डदनकर-कोडट-प्रभाकर-डलंग,
तत्प्रिमाडम सदाडिवडलंगम् ।। ६

अष्टदलोपरर-वेडष्टत-डलंगं,
सवथसमुद्भव-कारि-डलंगम् ।
अष्टदररद्र-डवनाडित-डलंग,
तत्प्रिमाडम सदाडिवडलंगम् ।। ७

सुरगुरु-सुरवर-पूडजत-डलंगं,
सुरवन-पुष्प-सदाडिथत-डलंगम् ।
परात्परं परमात्मक डलंग,
तत्प्रिमाडम सदाडिवडलंगम् ।। ८

डलंगाष्टकडमदं पुण्यं यः पठेस्तिव सडन्नधौ ।
डिवलोकमवाप्नोडत डिवेन सहमोदते ।। ९

शलंग जो भगवान् शिव का प्रतीक है, ब्रह्मा, शवषुणु तर्ा देवों ंके द्वारा पूशजत है। वह शनमथल, प्रकिामान तर्ा ोशभत है। वह जन्म के दुखों ंको नष्ट करने वाला है। मैं उस सदाशिव शलंग को नमस्कार करता हाँ।।१

वह शलंग देवता तर्ा मुशनयों ंद्वारा पूशजत है। वह काम का शवनिाक है तर्ा करुणा-सागर है। उसने रावण के दपथ को शवनष्ट शकया। मैं उस सदाशिव शलग को नमस्कार करता हाँ।।२

वह शलंग सब प्रकार की सुगत्मन्धयों ंसे लेशपत है, वह बुत्मद्ध की वृत्मद्ध का कारण है। वह शसद्धों,ं देवताओं ंतर्ा असुरों ंद्वारा वत्मन्दत है। मैं उस सदाशिव शलंग को नमस्कार करता हाँ।।३

वह शलंग स्वणथ तर्ा महामशण से शवभूशषत है। वह ेषनाग से वेशष्टत हो कर ोभायमान हो रहा है। उसने दक्ष के यज्ञ को शवधंवस शकया है। मैं उस सदाशिव शलंग को नमस्कार करता हाँ ।।४

वह शलंग कुंकुम तर्ा न्दन से लेशपत है। वह पंकज-हार से सुिोशभत है। वह सारे संशित पापों ंका शवनिाक है। मैं उस सदाशिव शलंग को नमस्कार करता हाँ।।५

उस शलंग की सेवा देवता तर्ा भूत गण करते हैं। वह भावपूणथ भत्मक्त के द्वारा प्रसन्न होता है।उसमें करिों ंसूयथ के समान प्रकि है। मैं उस सदाशिव शलंग को नमस्कार करता हाँ।।६

वह अष्टदल कमल पर आसीन है। वह सबकी उत्पशत्त एवं वृत्मद्ध का कारण है। वह आठ प्रकार की दररिता को नष्ट करता है। मैं उस सदाशिव शलंग को नमस्कार करताहाँ।।७

वह शलंग देवताओं ंके गुरु बृहस्पशत तर्ा श्रेष्ठ देवताओं ंद्वारा पूशजत है। वह देवताओं ंके वनों ं से लाये हुए पुष्पों ंद्वारा पूशजत है। वह परात्पर तर्ा परमिाा है। मैं उस सदाशिव शलंग को नमस्कार करता हाँ।।८

७. द्वादि ज्योशतशलिंगस्तोत्रम्

सौराष्टर सोमनार्ं ि श्रीले मस्तिकाजुथनम्।
उज्जडयन्यां महाकालं ओंकारममलेश्वरम्।।१

परल्यां वैद्यनार्ं ि िाडकन्यां भीमिंकरम्।
सेतुबन्धे तु रामिं नागिं दारुकावने।।२

वारिस्यां तु डवशे्विं त्र्यम्बकं गौतमीतटे।
डहमालये तु केदारं घुशे्मिं ि डिवालये।।३

एताडन ज्योडतडलंगाडन सायं प्रातः पठेन्नरः।
सप्त जन्म कृतं पापं स्मरिन डवनश्यडत।।४

८. साम्ब गौररवर

(सन्त किवदास कृत)

साम्ब गौररवरिंकरडिविंकर।
अस्तम्बका मनोहरिंकरडिविंकर।।१

डत्रनेत्रधारर ि ंकरडिविंकर।
डत्रिूलधारर ि ंकरडिविंकर।।२

रजताडद्रवास ि ंकरडिविंकर।
भक्तहृदयवास ि ंकरडिविंकर।।३

जटामुकुटधर ि ंकरडिविंकर।
गंगाधर हर ि ंकरडिविंकर।।४

नस्तन्दवाहन ि ंकरडिविंकर।
पावथतीरमि ि ंकरडिविंकर।।५

दण्डिामूडतथ िंकरडिविंकर ।
सद्गुरुमूडतथ िंकरडिविंकर ।।६

काडिडवश्वनार् िंकरडिविंकर।
दासकिवनुत िंकरडिविंकर।।७

९. साम्बसदाशिव भोलानार्

(सन्त किवदास कृत)

साम्बसदाडिव भोलानार् ।
म्भो िंकरगौरीनार्।।१

नस्तन्दवाहन सुन्दरांग हर,
कन्दपाथरर भोलानार् ।
गिंन्द्रिधर िंकर सुखकर,
इन्द्राडदडवनुत गौरीनार् ।।२

ूलिमरुधर कालकालहर,
फालनेत्र डिवभोलानार्।
बालेनदु फालव्यालांगरुण्ड,
मालाधर हरगौरीनार्।।३

जटामुकु टधर घट घट व्यापक,
नटराजा डिव भोलानार् ।
कु डटल कू ल खल दैत्य संहारर,
नटवर ृिभकर गौरीनार् ।।४

डिव डिव भव भवनीलकण्ठडिव,
किवडप्रय डिवभोलानार्।
डिवभव भवडिवभवभयमिोन,
दास किवनुतगौरीनार्।।५

१०. महामृतुंयुंजय-मन्त्र

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगस्तन्धं पुडष्टवधथनम्।
उवाथरुकडमव बन्धनान्मृत्योमुथीय माऽमृतात्।।

अन्वयार्थ

ॐ (प्रणव मन्त्र; हे परमिाा) त्र्यम्बकं (तीन लिोन वाले भगवान् िंकर को; सूयथ, िन्द्र और कामदेव को जला कर भस्म करने वाली अशि के समान शत्रलिोनधारी महादेव को; महाकालेश्वर को) सुगत्मन्धं (सुवाशसत, मधुर गन्ध वाला, संसूकृशत वाला ऐसे त्र्यम्बक को) पुशष्टवधथनं (पोषण अर्थात् दैवी अनुग्रह अर्थात् कृपावृशष्ट करने वाले त्र्यम्बक को) यजामहे (हम भजते हैं; हम प्रार्थना करते हैं शक) उवाथरुकं (कक़ी; लता का फल; पररपक्व फल की) इव (तरह; भाँशत) मृत्योः (मृतुयु के; देह के; देहरूपी लता के) बन्धनात् (बन्धन से) मुक्षीय (मुक्त करो; मोक्ष करो) मा (मुझे नहीं)ं अमृतात् (अमरत्व के शलए; अमृत आिा से)।

ब्दिार्थ

ॐ मैं शत्रनेत्रधारी भगवान् शिव की उपासना करता हाँ जो सुगत्मन्धमय हैं तर्था जो सारे प्राशणयों ंको पुशष्ट प्रदान करते हैं। वे मुझे अमृतत्व प्रदान करने के शलए मृतुयु से उसी प्रकार मुक्त करें शजस प्रकार कक़ी का फल अपनी लता के बन्धन से छुटकारा प्राप्त करता है।

(कोई-कोई भाष्यकार 'मा अमृतात्' का अर्थ ऐसा भी लगाते हैं शक हे महि ! तू हमें मृतुयु के अर्थात् देह के बन्धन से मुक्त कर, शकनुतु आिा के सनातन सम्बन्ध से नहीं।ं)

(१) यह महामृतुंयुंजय मन्त्र एक संजीवनी मन्त्र है। आज के शदनों ंमें जब शक जीवन बहुत ही जशटल हो ुिका है, जब दुघथटनाएँ हर शदन हुआ करती हैं, इस मन्त्र के द्वारा सपथदि, शबजली, मोटर-दुघथटना तर्था अन्य सारे प्रकार की दुघथटनाओं ंसे जीवन की रक्षा होती है। इसके अशतररक्त यह मन्त्र रोगों ंका भी शनवारण करता है। भाव, श्रद्धा तर्था भत्मक्त के सार् इस मन्त्र के जप द्वारा उन रोगों ंका भी शनवारण हो जाता है शजनको शक ाक्टरों ंने असाध्य बतला शदया है। यह सभी व्याशधयों ंका शनवारक है। इस मन्त्र से मृतुयु पर शवजय प्राप्त होती है।

(२) यह मोक्ष का भी मन्त्र है। यह भगवान् शिव का मन्त्र है। यह दीघाथयु, ात्मन्त, धन, सम्पशत्त,तुशष्ट, पुशष्ट तर्था मोक्ष प्रदान करता है।

११. जटाटवी-गलज्जल-प्रवाहपाशवतस्थले

(शिवताण्डवस्तोत्रम्) (रावणकृ तं)

श्लोक

जिटतं पद्मासनस्थं ि-धर-मुकुटं पं ि-वक्त्रंडत्र ने त्रं

ूलि वज्र ि खि्गं परिुमभयदं दडिांगे वहन्तम् ।
नागं पिां ि घण्टां ि मरुक-सडहतं िांकिुं वामभागे
नानालंकारदीप्तं स्फडटकमडिडनभं पावथतीिं नमाडम ।।

न्ति, पद्मासनत्मस्त (पद्यासन पर बैठे हुए), िन्द्रमुकुट वाले, शत्रलिोन, दाशहने भाग में शत्रिूल, वज्र, तलवार और अभय देने वाले परिु को धारण करने वाले और वाम भाग में नाग, पिा, घण्टा और िमरू के सार् अंकिु धारण करने वाले, तरह-तरह के अलंकारों ंसे ंिभियमान, स्फशटकमशण की तरह कात्मन्त वाले, ऐसे पावथतीपशत शिवजी को मैं प्रणाम करता हाँ।

स्तोत्र

जटाटवी-गलज्जलप्रवाहपाडवतस्थले
गलेऽवलम्ब्य लस्तम्बतां भुजंग-तुंग-माडलकाम् ।
मिड्डमड्डमड्डमडन्ननादवड्डमवथयं
किार िण्ड-ताण्डवं तनोतु नः डिवः डिवम् ।।१

जटा-कटाहसम्भ्रम-भ्रमडन्नडलम्पडनर्थरी-
डवलोल-वीडि-विरी डवराजमान-मूद्धथडन ।
धगद्धगद्धगज्ज्वलिलाटपट्ट-पावके
डकिोरि-न्द्रि खरे रडतः प्रडतिं मम ।।२

धरा-धरेन्द्र-नस्तन्दनी-डवलास-बनुधु-बनुधुर-
सुफुरडिगन्त-सन्तडत-प्रमोद-मान-मानसे ।
कृपा-कटिा-धोरिी-डनरुद्ध-दुधथरापडद
क्वडिडिगम्बरे मनो डवनोदमेतु वसुतुडन ।।३

जटा भुजंग-डपंगल-सुफुरत्फिा-मडि-प्रभा-
कदम्ब-कुंकुम-द्रव-प्रडलप्त-डदग्वधू-मुखे ।
मदान्ध-डसनुधुर-सुफुरत्त्वगुत्तरीयमेदुरे
मनो डवनोदमद्भुतं डवभतुथ भूत-भतथरर ।।४

सहस्र-लिोन-प्रभृत्यिेष-लेखि-खर-
प्रसून-धूडल-धोरिी-डवधूसरांडि-पीठ-भूः ।
भुजंग-राज-मालया डनबद्ध-जाट-जूटकः
डश्रयै डिराय जायतां िकोर-बनुधु-ि खरः ।।५

ललाटि-त्वरज्वलद्धनंजयसुफुडलंगभा-
डनपीत-पंि-सायकं नमडन्नडलम्प- नायकम्।
सुधा-मयूख-लेखयाडवराजमानि खरं
महा-कपाडल-सम्पदेडिरोजटालमसुतु नः ।।६

कराल-फाल-पडट्टका-धगद्धगद्धगज्यल-
द्धनंजयाहुतीकृत-प्रिण्ड-पंसिायके ।
धराधरेन्द्र-नस्तन्दनी-क्रिाग्र-डित्र-पत्रक-
प्रकल्पनैक-डिस्तल्पडन डत्रलिोने रडतमथम ।।७

नवीन-मेघ-मण्डली-डनरुद्ध-दुधथर-सुफुर-
तुकुहू-डनिीडर्नी-तमः-प्रबन्ध-बन्ध-कन्धरः ।
डनडलम्प-डनर्थरी-धर स्तनोतु कृडत्त-डसनुधुरः
कला-डनधान-बनुधुरः डश्रयं जगधुरन्धरः ।।८

प्रफि-नील-पंकज-प्रपं-काडलमा-प्रभा-
वलस्तम्ब-कण्ठ-कन्दली-रुडि-प्रबन्ध-कन्धरम् ।
स्मरस्तिदं पुरस्तिदं भवस्तिदं मखस्तिदं
गजस्तिदान्धकस्तिदं तमन्तकस्तिदं भजे ।।९

अखवथ-सवथ-मंगला-कला-कदम्ब-मंजरी
रस-प्रवाह-माधुरी-डवजृम्भिा-मधुव्रतम् ।
स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकं
गजान्तकान्धकान्तकं तमन्तकान्तकं भजे ।।१०

जयत्वदन-डवभ्रम-भ्रमद्-भुजंगम-श्वस-
डिडनगथम-क्रम-सुफुरत्कराल-फाल-हव्यवि् ।
डधडमस्तद्धडमस्तद्धडमद्-ध्वननूमृदंग-तुंग-मंगल-
ध्वडन-क्रम-प्रवडतथत-प्रिण्ड-ताण्डवः डिवः ।।११

दृषडिडित्र-तल्पयोभुथजंग मौस्तक्तकस्रजो-
गथररष्ठ-रत्न-लोष्टयोसुहृडिपिपियोः ।
तृिारडवन्दर्ि ुषोः प्रजा-महीमहेन्द्रयोः
सम-प्रवृडत्तकः कदा सदाडिवं भजाम्यहम् ।।१२

कदा डनडलम्प-डनर्थरी-डनकुंज-कोटरे वसन्
डवमुक्त-दुमथडतः सदा डिरःस्र्-मंजडलं वहन् ।
डवलोल-लोल-लिोनो ललाम-फाल-लग्नकः
डिवेडत मन्त्रमुच्चरन् कदा सुखी भवाम्यहम् ।।१३

इमं डह डनत्यमेव-मुक्तमुत्तमोत्तमं स्तवं
पठन् स्मरन् रुबुवन्नरो डविस्तद्धमेडत सन्ततम् ।
हरे गुरौ सुभस्तक्तमिु याडत नान्यर्ा गडतं
डवमोिनं डह देडहनां सिुंकरस्य डिन्तनम् ।।१४

पूजावसान-समये दिवक्त्र-गीतं

यः िमुभु-पूजन-परं पठडत प्रदोषे ।
तस्य स्तरूरां रर्-गजेन्द्र-तुरंग-युक्तां
लक्ष्मीं ंसदैव सुमुखीं ंप्रददाडत िमुभुः ।।१५

शजसने जटारूपी अटवी (वन) से शनकली हुई गंगा जी के शगरते हुए प्रवाहों ंसे पशवत्र शकये गये गले में सपों की लटकती हुई शविाल माला को धारण कर िमरू के िमिम िब्दों ंसे मत्मण्डत प्रिण्ड ताण्डव (नृत्य) शकया; वह शिव हमारे कल्याण का शवस्तार करे! ।।१

शजसका मस्तक जटारूपी क़िाह में वेग से घूमती हुई गंगा की िंिल तरंग- लताओं ंसे सुिोशभत हो रहा है, ललाट की अशि धक् धक् जल रही है, शिर पर बालिन्द्रमा शवराजमान है, उस (भगवान् शिव) में मेरा शनरन्तर अनुराग हो !।।२

शगररराज शकिोरी पावथती के शवलासकालोपयोगी शिरोभूषण से समस्त शदिाओं ंको प्रकाशित होते देख शजसका मन आनत्मन्दत हो रहा है, शजसकी शनरन्तर कृपादृशष्ट से कशठन आपशत्त का भी शनवारण हो जाता है, ऐसे शकसी शदगम्बर-तत्त्व में मेरा मन शवनोद करे ! ।।३

शजसके जटा-जूटवती सपों के फणों ंकी मशणयों ंका फैलता हुआ शपंगल प्रभापुंज शदिारूशपणी अंगनाओं ंके मुख पर कुंकुमराग का अनुलेपन कर रहा है, मतवाले हारी् के शहलते हुए िमि का उत्तरीय वस्त्र (िादर) धारण करने से शिग्ध वणथ हुए उस भूतनार् में मेरा शित्त अद्भुत शवनोद करे ! ।।४

शजसकी िरणपादुकाएँ इन्द्र आशद समस्त देवताओं ंके (प्रणाम करते समय) मस्तकवती कुसुमों ंकी धूशल से धूसररत हो रही हैं, नागराज (िेष) के हार से बंधी हुई जटा वाला वह भगवान् िन्द्रिेखर मेरे शलए शिरस्त्राशयनी सम्पशत्त का साधक हो ।।५

शजसने ललाटबेदी पर प्रज्वशलत हुई अशभ की शिनगाररयों ंके तेज से कामदेव को नष्ट कर ालिा रा, शजसे इन्द्र नमस्कार शकया करते हैं, िन्द्रमा की कला से सुिोशभत मुकुट वाला वह (श्री महादेव का) उन्नत शविाल ललाट वाला जटा-जशटत मस्तक हमारी सम्पशत्त का साधक हो ।।६

शजसने अपने शवकराल फालपट्ट पर धक् धक् जलती हुई अशग्न में प्रिण्ड कामदेव को हवन कर शदया रा, शगररराज शकिोरी के स्तनों ंपर पत्र-भंग रिना करने वाले एकमात्र कारीगर, उस भगवान् शत्रलिोन में मेरी धारणा लगी रहे ।।७

शजसके कण्ठ में नवीन मेघमाला से शघरी हुई अमावया की अधथराशत्र के समय फैलते हुए दुरूह अन्धकार के समय श्यामता अंशकत है, जो गजिमथ लपेटे हुए है, वह' संसार-भार को धारण करने वाला, िन्द्रमा (के सम्पकथ) से मनोहर कात्मन्तवाला भगवान् गगाधर मेरी सम्पशत्त का शवस्तार करे ।।८

शजसका कण्ठदेि त्मखले हुए नीलकमल समूह का, श्यामप्रभा का अनुकरण करने वाली शहरणी की-सी छशव वाले शिह्न से सुिोशभत है तरा जो कामदेव, शत्रपुर, भव (संसार), दक्षयज्ञ, हारी्, अन्धकासुर और यमराज का भी उच्छेदन करने वाला है, उसे मैं भजता हाँ ।।९

जो अशभमान-रशहत पावथती की कलारूप कादम्बरी के मकरन्दस्रोत की बढ़ती हुई माधुरी का पान करने वाला मधुप है तर्ा कामदेव, शत्रपुर, भव, दक्षयज्ञ, हार्ी, अन्धकासुर और यमराज का भी उच्छेदन करने वाला है, उसे मैं भजता हाँ ।।१०

शजसके मस्तक पर ब्रि वेग के सार् घूमते हुए भुजंग के फुफकारने से ललाट की भयंकर अशि क्रमुि: धधकती हुई फैल रही है, शधशम-शधशम बजते हुए मृदंग के गम्भीर मंगलघोष के क्रमानुसार शजसका प्रिण्ड ताण्डव हो रहा है, उस भगवान् िंकर की जय हो! ।।११

पत्थर और सुन्दर शबछौनों ंमें, साँप और मुक्ता की माला में, बहुमूल्य रत्न तर्ा शमट्टी के ढेले में, शमत्र और ितुरु पक्ष में, तृण और कमललोना तरुणी में, प्रजा और पृथ्वी के महाराज में समान भाव रखता हुआ मैं कब सदाशिव को भजूाँगा ? ।।१२

सुन्दर ललाट वाले िन्द्रिखर में दत्तशित्त हो अपने कुशविारों ंको त्याग कर गंगा जी के तटवती शनकुंज के भीतर रहता हुआ शिर पर हार् जि़ो, िबिबाई हुई शवह्वल आाँखों ंसे शिव-मन्त्र का उच्चारण करता हुआ मैं कब सुखी होऊाँगा ? ।।१३

जो मनुष्य इस प्रकार से उक्त इस उत्तमोत्तम स्तोत्र का शनत्य पाठ, स्मरण और वणथन करता रहता है, वह सदा ुिद्ध रहता है और ीघ्र ही सुरगुरु श्री िंकर जी की अच्छी भत्मक्त प्राप्त कर लेता है, वह शवरुद्ध गशत को प्राप्त नहीं ंहोता है; क्योंशंक श्री शिव जी का अच्छी प्रकार का शिन्तन प्राशणवगथ के मोह का नाि करने वाला है ।।१४

सायंकाल में पूजा समाप्त होने पर रावण के गाये हुए इस िमुभु-पूजन-सम्बन्धी स्तोत्र का जो पाठ करता है, भगवान् िंकर उस मनुष्य को रर्, हार्ी, घिोंं ंसे युक्त सदा त्मस्र रहने वाली सम्पशत्त देते हैं ।।१५

नामावली

साम्ब सदाडिव, साम्ब सदाडिव,
साम्ब सदाडिव, साम्ब डिवोम्।

१२. अशतभीषणकटुभाषण

श्लोक

कृपा-समुद्रं सुमुखं डत्रनेत्रंजटा-धरं पवथतनस्तन्दर्निीम् ।
सदाडिवं रुद्रमनन्त-रूपंडिदम्बरिं हृडद भावयाडम ।।

मैं अपने हृदय में उस शिदम्बरि का स्मरण करता हाँ जो दयासागर है, सुन्दर मुख वाला है, शत्रनयन है, जटाधारी है, शजसके पाश्वथ में पावथती है, जो सदाशिव है, रि है तर्ा अनेक रूप है।

गीत

अडत-भीषि-कटु-भाषि-यम-डकंकर-पटली-
कृत-तिान-पररपिीन-मरिागम-समये ।
उमया सह मम ितडस यमि-ासन डनवसन्
हर िंकर डिव िंकर हर मे हर दुररतम् ।।१

असडदस्तन्द्रय-डवषयोदय-सुख-सतृकृत-सुकृतेः
पर-दूषि-पररमिो-कृत-पातक-डवकृतेः ।

मिनान्तक भव-कानन-डनरतेभथव िरिं
हर िंकर डिव िंकर हर मे हर दुररतम् ।।२

डवषयाडभध-बडलियुध-डपडिताडयत-सुखतो
मकराडयत-गडत-संसृमृडत-कृत-साहस-डवपदम्।
पररलालय पररपालयपररताडपत-मडनिं
हर िंकर डिव िंकरहरमेहरदुररतम्।।३

दडयता मम दुडहताममजननीमनजनको
मम कस्तल्पत-मडत-सन्तडत-मरु-भूडमषुडनरतम्।
डगररजा-सख जडनतासुख-वसडतंकुरुसुस्तखनं
हर िंकर डिव िंकर हरमेहरदुररतम्।।४
जडन-निान मृडत-मिोनडिव-पूजन-डनरते
अडभतोदृिडमदमीदृिमहमावह इडत हा ।
गज किप जडनताश्रमडवमलीकुरुसुमडतं
हर िंकर डिव िंकरहरमेहरदुररतम्।।५

त्वडय डतष्ठडत सकल-स्तरुडत-करित्मडनहृदये
वसुमागथि-कृिपे मनसाडिव-डवमुखम्।
अकृताडिकमसु-पोषकमवताद्डगरर-सुतया
हर िंकर डिव िंकरहरमेहरदुररतम्।।६

डपतरावडतसुखदाडवडत ङिना कृ त-हृदयौ
डिवया हत-भयके हडदजडनतंतवसुकृतम्।
इडत मे डिवहृदयंभवभवतात्तवदययया
हर िंकर डिविंकरहरमेहरदुररतम्।।७

रिागत-मरिाडश्रत-करिमृत-जलधे
रिं तव िरौ डिव मम संसृडत-वसतेः।
परडिन्मय जगदामय-डभषजे नडतरववात्
हर िंकर डिव िंकर हर मे हर दुररतम्।।८

डवडवधाडधडभरडतभीडतडभरकृताडधक-सुकृतं

तिकोडटषु नरकाडदषु हत-पातक-डवविम्।
मि मामव सुकृतीभव डिवया सह कृपया
हर िंकर डिव िंकर हर मे हर दुररतम् ।।९

कडल-निान गरलिान कमलासन-डवनुत
कमला-पडत-नयनाडिथत-करिाकृडतिरि ।
करिाकर मुडन-सेडवत भव सागर हरि
हर िंकर डिव िंकर हर मे हर दुररतम् ।।१०

मरण-समय में जब यमदूत आ कर अत्यन्त भीषण और कठोर बिन से मुझे पिी़ा देंगे और पीटेंगे तब, हे यम का िासन करने वाले ! तू माता पावथती सशहत मेरे शित्त में शवराजमान रह। हे हर, हे िंकर, हे शिव, मेरे पाप दूर कर ।।१

मैंने अपने जीवन में दुष्ट इत्मन्द्रय-शवषय-भोग को ही पुण्य समझा, दूसरों ंकी शनन्दा की, इस प्रकार के कई पाप शकये हैं। संसार-रूपी कानन में ही रमता रहा हाँ। यम का निा करने वाले हे िंकर, मुझे अपनी िरण दे। हे हर, हे िंकर, हे शिव, मेरे पाप दूर कर ॥२

शजस प्रकार मछुआरे के काँटे में लगे मांस के टुक़ि को खाने की इच्छा से मछली खुद काँटे में फाँस जाती है, उसी प्रकार इत्मन्द्रयों ंके अनुराग से मैं जन्म-मरण के िक्र में फाँस गया हाँ। हे परम दयालु िंकर, सदा सन्तप्त रहने वाले मुझको सहारा दे। हे हर, हे िंकर, हे शिव, मेरे पाप दूर कर ।।३

मैंने अपनी बुत्मद्ध की कल्पना से मान शलया शक यह मेरी पत्नी है, बेटी है, मेरी माँ है, मेरा शपता है। उसी मरुभूशम में फाँस गया हाँ। हे पावथतीरमण, मुझे सच्चा सुख प्रदान कर। हे हर, हे िंकर, हे शिव, मेरे पाप दूर कर ।।४

जन्म-मरण का निा करने वाले, गजासुर और कछुए को आराम देने वाले शिव! िारों ं ओर भटकने वाले, संसार के युद्ध में पि़े हुए मुझे सम्मशत दे, शिवपूजन में लगने की बुत्मद्ध दे। हे हर, हे िंकर, हे शिव, मेरे पाप दूर कर ।।५

हे पावथतिी, हे करुणा-सागर, सबके हृदय में तेरे रहते हुए भी मैं धन कमाने और कृपण दृशष्ट से जीने में तुझसे शवमुख हो गया हाँ। कभी शनत्य-कमथ नहीं ंशकया। तू मेरी रक्षा कर। हे हर, हे िंकर, हे शिव, मेरे पाप दूर कर।।६

बच्चों ंको यह शवश्वास रहता है शक माता-शपता उनका भला करते हैं और सब प्रकार का सुख देते हैं। अतु: हे शिव! मैं भी तेरी कृपा से यह आिा रखूाँ शक तू और माँ गौरी-दोनों ंसदा मेरे शित्त में शनवास करेंगे और जन्म-मृतुयु के भय से मुझे मुक्त कर सारे आनन्द प्रदान करेंगे। हे हर, हे िंकर, हे शिव, मेरे पाप दूर कर ।।७

हे िरणागतरक्षक, आशश्रतों ंके शलए करुणामृत के सागर, संसार में फाँसे हुए मेरे शलए तेरे रिण ही िरण हैं। तुझे प्रणाम । तू शिन्मय है, जगत्-रूपी रोग का औषध है। हे हर, हे िंकर, हे शिव, मेरे पाप दूर कर ।।८

कई प्रकार की शिन्ताओं ंतरा् भयों ंके कारण मैं अशधक पुण्य-कमथ नहीं ंकर सका । भयंकर पातकों ंके कारण करिों ंनरक भोगता रहा हाँ। हे शिव, पावथती सशहत तू मेरी रक्षा कर,
मुझे पुण्यवान् बना। हे हर, हे िंकर, हे शिव, मेरे पाप दूर कर ।।९

हे कशल का निा करने वाले, शवष शनगलने वाले, ब्रह्मा से नमसूकृत, शवषुणु के नेत्रों ंद्वारा पूशजत, तेरे िरण करुणामय हैं। तू करुणा-सागर है, मुशनयों ंसे सेशवत है, भवसागर को दूर करने वाला है। हे हर, हे िंकर, हे शिव, मेरे पाप दूर कर ।।१०

नामावली
हर हर िंकर डिव डिविंकर।
हर हर हर हर मे दुररतम्।।

१३. शबल्वाष्टकम्

डत्रदलं डत्रगिुाकारंडत्रनेत्रं ि डत्रयायुधम् ।
डत्रजन्मपाप-संहारमेकडबल्ंवं डिवापथिम् ।।१

डत्रिाखैडबथल्वपत्रैश्च ह्यस्तिदै्रैः कोमलैः ुिभैः ।
डिवपूजां कररष्याडम ह्येकडबल्ंवं डिवापथिम् ।।२

अखण्डडबल्वपत्रेरि पूडजते नस्तन्दकेश्वरे ।
ुद्धियस्तन्त सवथपापेभ्यो ह्येकडबल्ंवं डिवापथिम् ।।३

ाडिलग्रामडिलामेकां डवप्रिाां जातु अपथयेत् ।
सोमयज्ञ-महापुण्यमेकडबल्ंवं डिवापथिम् ।।४

दस्तन्तकोडटसहस्राडि वाजपेयिताडन ि ।
कोडटकन्या-महादानमेकडबल्ंवं डिवापथिम् ।।५
लक्ष्मम्याः स्तनत उत्पन्ंनं महादेवस्य ि डप्रयम् ।
डबल्वविृं प्रयिाडम होकडबल्ंवं डिवापथिम् ।।६

दिथनं डबल्वविृस्य स्पिथनं पापनिानम् ।
अघोरपापसंहारमेकडबल्ंवं डिवापथिम् ।।७

मूलतो ब्र्ह्मरूपाय मध्यतो डवषुणुरूडपि ।
अग्रतः डिवरूपाय होकडबल्ंवं डिवापथिम् ।।८

डबल्वाष्टकडमदं पुण्ंयं यः पठेस्तिवसडन्नधौ ।
सवथपापडवडनमुथक्तः डिवलोकमवापुनुयात् ।।९ ।।
इडत डबल्वाष्टकं समूपूिथम् ।।

१४. श्री शिवमानसपूजा

ॐ श्रीगिीय नमः

रत्नैः कस्तल्पतमासनं डहमजलैः स्नानंडिदव्याम्बरं
नानारत्नडवभूडषतं मृगमदामोदांडकतंन्दिनम्।
जातीम्पकडबल्वपत्ररडितं पुष्पं ि धूपं तरा
दीपं देव दयाडनधे पिुपतेहत्कस्तल्पतंगृह्यताम्।।१

सौविथ मडिखण्डरलरडितेपात्रेघृतंपायसं
भक्ष्यं पंडिवधं पयोदडधयुतंरम्भाफलंपानकम्।
ाकिानामयुतं जलं रुडिकरंकपूथरखण्डोज्वलं
तामूबूलं मनसा मया डवरडितंभक्त्याप्रभोस्वीकुरु।।२

छत्रं ामरयोयुथगं व्यजनकं गिदिथकं डनमथलं
वीाभेररमृदंगकाहलकला गीतं ि नृत्यं तरा ।
साष्टांगं प्रिडतः सुतुडतबथहुडवधाहेयेतत्समस्तंमया
संकल्पेन समडपथतं तव डवभोपूजांगृहाप्रभो।।३

आत्मा त्वं डगररजा मडतःसहिराःप्रााःरीरंगृहं
पूजा ते डवषयोपभोगरिनाडनद्रासमाडधस्तरूडतः।
संरिः पदयोः प्रदडिडवडधःस्तोत्राडिसवाथडगरो
यद्यत्कमथ करोडम तत्तदस्तखलंम्भोतवाराधनम्।।४

इत्येवं हरपूजनं प्रडतडदनंयोवाडत्रसनं्ध्यंपठेत्
सेवाश्लोकितुष्टयं प्रडतडदनंपूजाहरेमाथनडस।
सोऽयं सौख्यमवापुनुयाद्द्युडतधरंसिाहोदथिथनं
व्याससे्तेन महावसानसमयेकैलासलोकं गतः।।५

करिरिकृतं वाक्कायजं कमथजं वा
श्रविनयनजं वा मानसं वापराधम् ।
डवडहतमडवडहतं वा सवथमेतत्क्षमस्व
जय जय करुिबे्धेश्रीमहादेविम्भो।।५।।
इडत श्रीडिवमानसपूजासमाप्तम्।।

१५. शिवपंाक्षिरस्तोत्रम्

नागेन्द्रहाराय डत्रलोनाय
भस्मांगरागाय महेश्वराय ।
डनत्याय ुद्धायडदगम्बराय
तस्मै 'न'-कारायनमःडिवाय।।१

मन्दाडकनी-सडललि-न्दनि-डिथताय
नन्दीश्वर-प्रमर्नार्-महेश्वराय ।
मन्दारपुष्प-बहुपुष्प-सुपूडजताय
तस्मै 'म' -काराय नमः डिवाय ।।२

डिवाय गौरीवदनारडवन्द-
सूयाथय दिाऽध्वर-निाकाय ।
श्री नीलकण्ठाय वृषध्वजाय
तस्मै 'डि' -काराय नमः डिवाय ।।३

वडसष्ठ-कुम्भोद्भव-गौतमायथ-
मुनीन्द्र-देवाऽडिथति-खराय ।
न्द्राकथ-वैश्वानर-लिोनाय
तस्मै 'व'-काराय नमः डिवाय ।।४

यिस्वरूपाय जटाधराय
डपनाकहस्ताय सनातनाय ।
डदव्याय देवाय डदगम्बराय
तस्मै 'य'-काराय नमः डिवाय ।।५

पंिरिडमदं पुण्यं यः पठेस्तिवसडन्नधौ।
डिवलोकमवाप्नोडत डिवेन सह मोदते।।६।।
इडत श्रीमिंकरिायथडवरडितं डिवपंिरिस्तोत्रंसमूपिूथम्।।

१६. शिवषिक्षरस्तोत्रम्

ॐकारं शबन्स्दुसंयुक्तं शनत्यं ध्यायत्मन्त योशगनुः।
कामदं मोक्षदं ैव 'ॐ' -काराय नमो नमुः।।१

नमत्मन्त ऋषयो देवा नमन्त्यप्सरसां गणाुः।
नरा नमत्मन्त देर्वि 'न' -काराय नमो नमुः॥२

महादेवं महिानं महाष्यानं परायणम् ।
महापापहरं देवं 'म'-काराय नमो नमुः ।।३

शिवं ानन्तं जगन्नार्लोकानुग्रहकारकम्।
शिवमेकपदं शनत्यं 'शि'-काराय नमोनमुः।।४

वाहनं वृषभोययवासुशकुः कण्ठभूषणम्।
वामे ित्मक्तधरंदेवं'व'-काराय नमो नमुः।।५

यत्र यत्र त्मस्त्तो देवुः सवथव्यापी महेश्वरुः।
यो गुरुः सवथदेवानां 'य' -काराय नमोनमुः।।६

षिक्षरशमदं स्तोत्रं युः पठेत्मच्छवसशन्नधौ ।
शिवलोकमवाप्नोशत शिवेन सह मोदते ।।७

१७. दाररद्र्य-दहन-शिवस्तोत्रम्

डवश्वेश्वराय नरकिाथवतारिाय
किाथमृताय िंडिखरधारिाय ।
कपूथरकास्तन्तधवलाय जटाधराय
दाररद्रय-दुःखहरिाय नमः डिवाय ।।१

गौरीडप्रयाय रजनिीकलाधराय
कालान्तकाय भुजगाडधपकंकिाय ।
गंगाधराय गजराज-डवमदथनाय
दाररद्रय-दुःखहरिाय नमः डिवाय ।।२

भस्तक्तडप्रयाय भव-रोग-भयापहाय
उग्राय दुगथमभव-सागरतारिाय ।
ज्योडतमथयाय गिुनामसुनृत्यकाय
दाररद्रय-दुःखहरिाय नमः डिवाय ।।३

मिाथम्बराय िवभस्मडवलेपनाय
फालिाय मडिकुण्डलमस्तण्डताय ।
मंजीरपादयुगलाय जटाधराय
दाररद्रय-दुःखहरिाय नमः डिवाय ।।४

पंनिनाय फडिराजडवभूषिाय
हेमांकिाय भुवनत्रयमस्तण्डताय ।
आनन्दभूडमवरदाय तमोमयाय
दाररद्रय-दुःखहरिाय नमः डिवाय ।।५

भानुडप्रयाय भवसागरतारिाय
कालान्तकायकमलासनपूडजताय ।
नेत्रत्रयाय िुभलिलडिताय
दाररद्रय-दुःखहरिाय नमः डिवाय ।।६

रामडप्रयाय रघुनार्वरप्रदाय
नागडप्रयाय नरकिाथवतारिाय ।
पुण्येषु पुण्यभररताय सुराडिथताय

दाररद्रय-दुःखहरिाय नमः डिवाय ।।७

मुक्तेश्वराय फलदाय गिेश्वराय
गीतडप्रयाय वृषभेश्वरवाहनाय ।
मातंगिमथवसनाय महेश्वराय
दाररद्रय-दुःखहरिाय नमः डिवाय ।।८

वडसष्ठेन कृतं स्तोत्रं सवथरोगडनवारिम् ।
सवथसम्पत्करं ीिं पुत्र-पौत्राडद-वधथनम् ।
डत्रसन्ध्यं यः पठेडन्नत्यं स डह स्वगथमवापुनुयात् ।।९

।।इडत श्रीवडसष्ठडवरडितं दाररद्रय-दहन-डिवस्तोत्रं समूपिूथम्।।

१८. रिाष्टकम् (श्री तुलसीदासकृतं)

श्लोक

स्रानं न यानं न ि डबनदु नादंरूपं न रेखा न ि धातुवगथम्।
दृश्यं न दृष्टं श्रविं न श्राव्यंतस्तैमै नमो ब्रह्म डनरंजनाय।।

गीत

नमामिीमिीानडनवाथिरूपं
डवभुं व्यापकं ब्रह्मवेदस्वरूपम् ।
अजं डनगुथिं डनडवथकल्पं डनरीहं
डिदाकारमाकिावासं भजेऽहम् ।।१

डनराकारमोंकारमूलं तुरीयं
डगराज्ञानगोतीतमिीं डगरिीम् ।
करालं महाकालकालं कृपालुं
गिुागारसंसारपारं नतोऽहम् ।।२

तुषाराडद्रसंकिागौरं गभीरं
मनोभूतकोडटप्रभास्विरीरम् ।
सुफुरन्मौडलकिोडलनीि-ारुगंगा
लसत्फालबालेनदु-कण्ठे-भुजंगम् ।।३

लितुकुण्डलं ुिभ्रनेत्रं डविालं
प्रसन्राननं नीलकण्ठं दयालुम् ।

मृगाधिीमाथम्बरं मुण्डमालं
डप्रयं िंकरं सवथनारं् भजाडम ।।४

प्रिणं्डं प्रकृष्टं प्रगलं्भं परिें
अखणं्डं भजे भानुकोडटप्रकिाम् ।
त्रयिीूलडनमूथलनं िूलपाडि
भजेऽहं भवानीपडतं भावगम्यम् ।।५

कलातीतकल्याियाकल्पान्तकारी
सदा सज्जनानन्ददाता पुराररः ।
डिदानन्दसन्दोहमोहोपहारी
प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मर्ारर: ।।६

न यावद्-उमानार्पादारडवनं्दं
भजन्तीह लोके परे वा नरिाम् ।
न तावतुसुखं िास्तन्तसन्तापनिां
प्रसीद प्रभो सवथभूताडधवास ।।७

न जानाडम योगं जपं नैव पूजां
नतोऽहं सदा सवथदा देव तुभ्यम् ।
जराजन्मदु:खौघतातप्यमानं
प्रभो पाडह िापान्नमार्मिीम्भो ।।८

रुद्राष्टकडमदं प्रोक्तं डवपे्रिहरतुष्टये ।
ये पठस्तन्त नराभक्त्या तेषांमिुभु: प्रसीदडत ।।९

नामावली

साम्बसदाडिव साम्बसदाडिव ।
साम्बसदाडिव साम्बडिवोऽम् ।।

१९. नमो भूतनार्

नमोभूतनार्,नमो पावथतीी,
नररुण्डमालाधारी, शवष सपथ ते िरीरा।
मिरुशत्रिूलवाला, नमो पावथतीा ।। नमो . . .

व्याघ्रासने शवराजे, ललाट िन्द्र साजे,
अवधूत वेष वाला, नमो पावथतीा ।। नमो...

ंभिे जटाते गंगा, पीये शनराला भंगा,

अल मस्त बैल वाला, नमो पावथतीा ।। नमो . . .

निो शंपिा संगे, जो शभत्मल्लनीसरंगे,
बस भोले भाशव काल, नमोपावथतीा।।नमो . . .
करर िंख नाद रुंझे, मुखेरामनामगूँजे ,
क्षशण जाशल लेमदाला, नमोपावथतीा।।नमो . . .

२०. हर गाओ शिव गाओ

हरगाओ शिव गाओ, हर हर शिविंकर गाओ ।।

जयउमानार् जय मदनान्तक, जय शिव शत्रपुरारी गाओ।।
मिंमि िम िम िमरू बाजे, नत्मन्दवाहन गाओ।
जयउमा महेश्वर गाओ ।। हर गाओ...

जयगंगाधर जय शवशे्वेश्वर, जय जय भवानीवर गाओ ।
पापशवमिोन भवा शनरंजन, शिव मनमोहन गाओ ।
जय उमा महेश्वर गाओ ।। हर गाओ...

जय नागदमन जय नागभूषण, जय शिव गणभूषण गाओ।
कल्मषमिोन भवभयहरणा, शिव पंनिन गाओ ।
जय उमा महेश्वर गाओ ।। हर गाओ ...

२१. िंकर महादेव देव

किर महादेव देव, सेवत सब जाके ।

जटा मुकुट सीस गंगा, बहत तेरे अशत प्रिण्ड,
गौरी अरधंग संग, भंग रंग साजे ।। िंकर...

ध्यावत सुरनर मुनिं, गावत शगररजा शगरिं ।
पावत नहीं ंपार िेष, नेशत नेशत पुकारे ।। िंकर . . .

बरणततुलसीदास, शगररजापशत िरण आस।
एसेवरवेष नार्, भक्त हेतु ताके ।। िंकर...

२२. श्री शिव-अष्टोत्तरित-नामावली

१. ॐ शिवाय नमुः

२. ॐ महेश्वराय नमुः

३. ॐ ि◌म्भवे नमुः

४. ॐ शपनाशकने नमुः

५. ॐ ि◌ंशिखराय नमुः

६. ॐ वामदेवाय नमुः

७. ॐ शवरूपाक्षाय नमुः

८. ॐ कपशदथने नमुः

९. ॐ नीललोशहताय नमुः

१०. ॐ ि◌ंकराय नमुः

११. ॐ ि◌ूलपाणये नमुः

१२. ॐ खट्वांशगने नमुः

१३. ॐ शवषुणुवल्लभाय नमुः

१४. ॐ शिशपशवष्टाय नमुः

१५. ॐ अत्मम्बकानाराय नमुः

१६. ॐ श्रीकण्ठाय नमुः

१७. ॐ भक्तवत्सलाय नमुः

१८. ॐ भवाय नमुः

१९. ॐ ि◌वाथय नमुः

२०. ॐ शत्रलोकिाय नमुः

२१. ॐ शिशतकण्ठाय नमुः

२२. ॐ शिवाशप्रयाय नमुः

२३. ॐ उग्राय नमुः

२४. ॐ कपाशलने नमुः

२५. ॐ कामारये नमुः

२६. ॐ अन्धकासुरसूदनाय नमुः

२७. ॐ गंगाधराय नमुः

२८. ॐ ललाटाक्षाय नमुः

२९. ॐ कालकालाय नमुः

३०. ॐ कृपाशनधये नमुः

३१. ॐ भीमाय नमुः

३२. ॐ परिुहस्ताय नमुः

३३. ॐ मृगपाणये नमुः

३४. ॐ जटाधराय नमुः

३५. ॐ कैलासवाशसने नमुः

३६. ॐ कवशिने नमुः

३७. ॐ कठोराय नमुः

३८. ॐ शत्रपुरान्तकाय नमुः

३९. ॐ वृषांकाय नमुः

४०. ॐ वृषभारूढाय नमुः

४१. ॐ भस्मोद्धूशलतशवग्रहाय नमुः

४२. ॐ सामशप्रयाय नमुः

४३. ॐ स्वरमयाय नमुः

४४. ॐ त्रयीमूतथये नमुः

४५. ॐ अनीश्वराय नमुः

४६. ॐ सवथज्ञाय नमुः

४७. ॐ परमिाने नमुः

४८. ॐ सोमसूयाथशिलिोनाय नमुः

४९. ॐ हशवषे नमुः

५०. ॐ यज्ञमयाय नमुः

५१. ॐ सोमाय नमुः

५२. ॐ पंविक्त्राय नमुः

५३. ॐ सदाशिवाय नमुः

५४. ॐ शवशे्वेश्वराय नमुः

५५. ॐ वीरभिाय नमुः

५६. ॐ गणनाराय नमुः

५७. ॐ प्रजापतये नमुः

५८. ॐ शहरण्यरेतसे नमुः

५९. ॐ दुधथषाथय नमुः

६०. ॐ शगरिीाय नमुः

६१. ॐ शगररिाय नमुः

६२. ॐ अनघाय नमुः

६३. ॐ भुजंगभूषणाय नमुः

६४. ॐ भगाथय नमुः

६५. ॐ शगररधन्वने नमुः

६६. ॐ शगररशप्रयाय नमुः

६७. ॐ कृशत्तवाससे नमुः

६८. ॐ पुरारातये नमुः

६९. ॐ भगवते नमुः

७०. ॐ प्रमराशधपाय नमुः

७१. ॐ मृतुंयुंजयाय नमुः

७२. ॐ सूक्ष्मतनवे नमुः

७३. ॐ जगद्व्याशपने नमुः

७४. ॐ जगद्गुरवे नमुः

७५. ॐ व्योमकिाय नमुः

७६. ॐ महासेनजनकाय नमुः

७७. ॐ ारुशवक्रमाय नमुः

७८. ॐ रिाय नमुः

७९. ॐ भूतपतये नमुः

८०. ॐ स्राणवे नमुः

८१. ॐ अशहबुथध्याय नमुः

८२. ॐ शदगम्बराय नमुः

८३. ॐ अष्टपूतथये नमुः

८४. ॐ अनेकिाने नमुः

८५. ॐ सात्मत्त्वकाय नमुः

८६. ॐ ुद्धशवग्रहाय नमुः

८७. ॐ ाश्वताय नमुः

८८. ॐ खण्डपरिवे नमुः

८९. ॐ अजाय नमुः
९०. ॐ पिाशवमिोनाय नमुः
९१. ॐ मृिाय नमुः
९२. ॐ पिुपतये नमुः
९३. ॐ देवाय नमुः
९४. ॐ महादेवाय नमुः
९५. ॐ अव्ययाय नमुः
९६. ॐ हरये नमुः
९७. ॐ पूषदन्तशभदे नमुः
९८. ॐ अव्यग्राय नमुः
९९. ॐ दक्षाध्वरहराय नमुः
१००. ॐ हराय नमुः
१०१. ॐ भगनेत्रशभदे नमुः
१०२. ॐ अव्यक्ताय नमुः
१०३. ॐ सहस्राक्षाय नमुः
१०४. ॐ सहस्रपदे नमुः
१०५. ॐ अपवगथप्रदाय नमुः
१०६. ॐ अनन्ताय नमुः
१०७. ॐ तारकाय नमुः
१०८. ॐ परमेश्वराय नमुः

।। इशत श्री शिव-अष्टोत्तरित-नामावली।।

२३. शिव-आरती

जय डिव ओंकारा,हरजयडिवओंकारा।
ब्र्ह्मा डवष्णु सदाडिवअधांगीधारा।।जयडिव...

एकानन ि◌तुरानन, पंनिनराजै,डिवपंनिनराजै।
हंसासन गरुडासन, हंसासन गरुडासन,वृषभासनसाजै।।जयडिव...

दो भुज ि◌ार ि◌तुभुथज, दिभुजतेसोहै,डिवदिभुजतेसोहै।
तीनों ◌ंरूप डनरखता, तीनों ◌ंरूप डनरखता,डत्रभुवनजनमोहै।।जयडिव . . .

अिमाला वनमाला, रुण्डमालाधारी,डिवरुण्डमालाधारी।
न्दिनमृगमद ि◌न्दा, ि◌न्दनमृगमद ि◌न्दा,भालिुभकारी।।जयडिव...

शे्वेताम्बर पीताम्बर, बाघम्बरअंगे,डिवबाघम्बरअंगे।
सनकाडदक प्रभुताडदक, सनकाडदक प्रभुताडदक,भूताडदकसंगे।।जयडिव . . .

कर मधे्ये करमण्डल ि◌क्र डत्रिूलधताथ, डिव ि◌क्र डत्रिूल धताथ।
जगकताथ जगभताथ, जगकताथ जगभताथ,जग का संहताथ ।। जय डिव...

ब्र्ह्मा डवषुणु सदाडिव जानत अडववेका, डिव जानत अडववेका ।
प्रिव अिरनु मधे्ये, प्रिव अिरनु मधे्ये, ये तीनों ंएका ।। जय डिव...

डत्रगिु स्वामी जी की आरती जो कोई नर गावै, डिव जो कोई नर गावै ।
कहत डिवानन्द स्वामी, कहत डिवानन्द स्वामी, मनवांडछत फल पावै ।। जय डिव...

मंगलवार

श्री सुब्र्ह्मण्य स्तोत्रम्

१. नाद-शबन्स्दु-कलाशद नमो नमुः

(डतरुपुपुगल)

श्लोक

षिाननं कुंकुम-रक्त-विथमहामडतंडदव्य-मयूर-वाहनम् ।
रुद्रस्य सूनुं सुर-सैन्य-नारं्गुहंसदाऽहं ंरिं प्रपदे्ये ।।

मैं सदा भगवान् षणुमुख काशतथकेय की ंरण जाता हाँ जो कुंकुमरक्तवणथ वाले हैं, शजनमें असीम ज्ञान है, शजनका वाहन शदव्य मयूर है और जो भगवान् शिव के पुत्र तर्ा देवताओं ंकी सेना के नायक हैं।

गीत

नाद-डबनदु-कलाडद नमो नमः ।
वेदमन्त्र-स्वरूपा नमो नमः ।
ज्ञान-पस्तण्डत-स्वामी नमोनमः।।१।।(बहुकोडट)

नाम ि मुभु-कुमारानमोनमः।
भोग अन्तरर-पालानमोनमः।
नाग-बनुधु-मयूरा नमोनमः।।२।।(परिूरा)

छेद-दण्ड-डवनोदा नमो नमः ।
गीत-डकं डकडि-पादा नमो नमः ।
धीर-सम्भ्रम-वीरा नमोनमः।।३।।(डगररराजा)

दीपमंगल ज्योडतनमोनमः।
तूय-अम्बल-लीला नमो नमः ।
देव-कुंजरर-भागा नमो नमः।।४।।(अरुल्ताराई)

उसको नमस्कार है जो ि ब्द, दि तरा् काल से परे है। उसको नमस्कार है जो वेद-मन्त्र-स्वरूप है। उसको नमस्कार है जो ज्ञाशनयों ंका सम्राट् है ।।१

उसको नमस्कार है जो शिव का पुत्र है। उसको नमस्कार है जो सारे आन्तररक भोगों ंका रक्षक है। उसको नमस्कार है जो मयूर पर आसीन हो कर भक्तों ंके वासना-रूपी सपों ंका शनयन्त्रण करता है ।।२

उसको नमस्कार है शजसके हार् में शत्रिूल है। उसको नमस्कार है शजसके पैर में मधुर झंकार करने वाली शंकंशकणी है। उसको नमस्कार है जो महान् वीर है ।।३

उसको नमस्कार है जो दीप, नैवेद्य आशद में वतथमान है। उसको नमस्कार है जो भक्तों ंके पशवत्रहृदय-स्ल में नृत्य करता है। उसको नमस्कार है शजसके पास में देवयानी है। वह सुब्रह्मण्य हमपरकृपा तरा् आनन्द की वृशष्ट करे!!४

नामावली

वेल् मुरुगा वेल् मुरुगावेल्मुरुगापाडहमाम्।
वेलायुधा वेलायुधावेलायुधारिमाम्।।

२. ि रणागतमातुरमाशधशजतम्

श्लोक

स्तिक्त-हस्ंतं डवरूपिांडिस्तख-वाहं षिाननम्।

दारिं ररपु-रोगघ्नं भावये कुकुकुट-ध्वजम् ।।

मैं भगवान् षणुमुख का ध्यान करता हाँ जो अपने हार्ों ंमें ित्मक्त-अस्त्र को धारण शकये हुए हैं, शजसके सूयथ, िन्द्र और अशि- ये तीन नेत्र हैं, जो मोर की सवारी करता है, दुष्टों ंके शलए भयानक है, अपने भक्त के ितुरुओं ंऔर रोगों ंका शवनिाक है तर्ा शजसकी ध्वजा पर कुकुकुट का शिह्न अंशकत है।

स्तोत्रम्

रिगत मातुरमाडधडजतं
करिकर कामद कामहतम् ।
रि-कानन-सम्भव ारु-रिं
पररपालय तारक-मारकमाम्।।१

हर-सार-समुद्भव हैमवती-
कर-पिव-लाडलत-कम्र-तनो ।
मुरवैरर-डवररंडि-मुदमुबुडनधे
पररपालय तारक-मारक माम्।।२

डगररजा-सुत सायक-डभन्न-डगरे
सुरडसनुधु-तनूज सुवित्थ-रिं।
सुरसैन्य-पते डिस्तख-वाहनहे
पररपालय तारक-मारक माम्।।३

जय डवप्र-जन-डप्रय वीरनमो
जय भक्त-जन-डप्रय भद्रनमः।
जय देव डविाख-कुमारनमः
पररपालय तारक-मारकमाम्।।४

पुरतो भवमेपररतोभवमे
पडर् मे भगवन्भवरिगतम्।
डवतराडजषु मे डवजयं भगवन्
पररपालय तारक-मारकमाम्।।५

रिडदनदु -समान-षिाननया
सरसीरुहि ारु-डवलोनया ।
डनरुपाडधकया डनजबालतया
पररपालय तारक-मारक माम्।।६

इडत कुकुकुट-केतु-मनुस्मरतां
पठतामडप षणुमुख-षट्कडममम् ।

नमतामडप नन्दनडमनदुभृतो
न भयं क्वडिदस्तस्त िरीरभृताम् ।।७

मैं शिन्ताओं ंऔर कामनाओं ंसे आक्रान्त हाँ। मैं तेरे िरणकमल की िरण लेता हाँ। तू दया का सागर, भक्तों ंकी मनोकामनाओं ंको पूणथ करने वाला, िरों ंके वन में जन्म ग्रहण करने वाला तर्ा मनोहर है। हे तारकासुर का वध करने वाले काशतथकेय, तू मेरा पररपालन कर ।।१

तू शिवजी का पुत्र है, माता पावथती जी के कोमल हार्ों ंसे पोसा गया है। तू सुन्दर अंग वाला है। तू ब्रह्मा और शवषुणु के आनन्द का सागर है। है तारकासुर का वध करने वाले काशतथकेय, तू मेरा पररपालन कर ।।२

हे पावथती-पुत्र, तूने अपने बाणों ंसे (क्रौं) पिवथत को शवदीणथ कर िाला। तू गंगा जी का पुत्र है, स्वणथ के समान कात्मन्त वाला है, देवताओं ंकी सेना का अशधपशत है और मोर की सवारी करता है। हे तारकासुर का वध करने वाले काशतथकेय, तू मेरा पररपालन कर ।।३

तेरी जय हो! तुझे वेदज्ञ ब्राह्मण तर्ा भक्त शप्रय हैं। तू शविाख और कुमार नाम से प्रशसद्ध है। हे भि, हे देव, तुझको नमस्कार है। हे तारकासुर का वध करने वाले काशतथकेय, तू मेरा पररपालन कर ।।४

हे भगवान्! मेरे समुमुख तर्ा ितुशदथक् तू उपत्मस्त रह। मेरे मागथ में तू सहायक बन और मेरी यात्रा सफल बना। हे तारकासुर का वध करने वाले काशतथकेय, तू मेरा पररपालन कर ।।५

तेरे छह मुख िरच्चन्द्र के समान और नेत्र कमल के समान सुन्दर हैं। तू सभी प्रकार की पररत्मच्छन्नताओं ंसे मुक्त शिरकुमार है। हे तारकासुर का वध करने वाले काशतथकेय, तू मेरा पररपालन कर ।।६

जो कुकुकुट-ध्वजाधारी भगवान् षणुमुख को स्मरण करते हैं, जो इन छह श्लोकों ंका पाठ करते हैं और शिव-पुत्र काशतथकेय जी को नमस्कार करते हैं, उन्ें कहीं ंभी कोई भय नहीं ंप्राप्त होता ।।७

नामावली
सुब्र्ह्मण्य सुब्र्ह्मण्य सुब्र्ह्मण्य पाडह माम्।
काडतथकेय काडतथकेय काडतथकेय रि माम्।।

३. काशतथकेयस्तोत्रम्

ॐ श्री र्गिेाय नमः
स्कन्द उवाि

योगीश्वरो महासेनःकाडतथकेयोऽडग्ननन्दनः।
स्कन्दः कुमारः सेनाडनःस्वामी िंकरसम्भवः।।१

गांगेयस्ताम्रिश्च ब्रह्मारी डिस्तखध्वजः ।
तारकाररुमापुत्रः क्रौंरिश्च षिाननः ।।२

ब्दिब्र्ह्मसमुद्रश्च डसद्धः सारस्वतो गुहः ।
सनतुकुमारो भगवान् भोगमिोफलप्रदः ।।३

रिजन्मा गिाधीः पूवथजो मुस्तक्तमागथकृत् ।
सवाथगमप्रिेता ि वांडछतार्थप्रदिथनः ।॥४

अष्टाडवंडितनामाडन मदीयानीडत यः पठेत् ।
प्रतूयूषे श्रद्धया युक्तो मूको विास्पडतभथवेत् ।।५

महामन्त्रमयानीडत मम नामानुकीतथनम् ।
महाप्रज्ञामवाप्नोडत नात्र कायाथ डविारि ।।६

।। इडत श्रीरुद्रयामले प्रज्ञाडववधथनाख्यं श्रीमत्काडतथकेयस्तोत्रम्।।

नामावली

स्कन्ंधं वन्देि नमोऽसुतुते,जयषणुमुखनार्नमोऽसुतुते।
मुरुगा गुहने नमोऽसुतुते,जयविी-विभनमोऽसुतुते।
काडतथकेय नमोऽसुतुते,जयकडतरकामवासानमोऽसुतुते।
दण्डायुधपाडि नमोऽसुतुते,जयडतरुपुरनकुन्द्रनमोऽसुतुते।
दैवयानै-समेता नमोऽसुतुते,जयअनार्-रिकनमोऽसुतुते।
दीनबनुधु नमोऽसुतुते,जयदीन-नार्नमोऽसुतुते।
देव देव नमोऽसुतुते,जयदेवनार्नमोऽसुतुते।
भक्तवत्सल नमोऽसुतुते,जयपडततपाविननमोऽसुतुते।।
गुह मुरुगाषणुमुखा,उडिडपसुब्र्ह्मण्य।
डतरिनदूर वेला, कडतरकामनारा् ।
देवयानी-समेता, पलडनमलै आन्डवा ।
ॐ िरविभव,गुहमुरुगिा।।
षणुमुखा बाल, षणुमुखा बाल,षणुमुखाबाल,षणुमुखा।
सुब्र्ह्मण्य डिव, सुब्र्ह्मण्य डिव,सुब्र्ह्मण्यडिव,सुब्र्ह्मण्य।
भक्तवत्सल, भक्तवत्सल,भक्तवत्सल,भक्तवत्सल।
पडततपावन, पडततपावन,पडततपावन,पडततपावन।।
बोल षणुमुख, बोलषणुमुख,षणुमुखषमुमुखबोल।
डिव डिव, डिव डिव,सुब्र्ह्मण्य,िरविभवबोल।।

श्री हररहर-पुत्र -स्तोत्रम्

४. पदारशवन्द-भक्त-लोक-पालनैक-लोलुपम्

श्लोक

डश्रतानन्द-डिन्तामडि श्रीडनवासं
सदा सस्तच्चदानन्द-पिूथ-प्रकिाम् ।
उदारं सुदारं सुराधारर्मिं
परं-ज्योडतरूपं भजे भूतनार्म् ।।

जो सवथ भूतों ंका नार् है, आशश्रतजनों ंको आनन्द प्रदान करने के शलए शिन्तामशण रूप है, जोश्रीका आवास-स्ान है, सवथदा सत्, शित् और आनन्द के पूणथ प्रकिा से युक्त है, जो उदार है,शजसकी पत्नी मंगलकाररणी है, जो देवताओं ंका आधार और स्वामी है तर्ा परम ज्योशतस्वरूप है,मैंउसकी आराधना करता हाँ।

गीत

पदारडवन्द-भक्त-लोक-पालनैक-लोलुपं
सदारपाश्वथमात्मजाडद मोदकं सुराडधपम्।
उदारमाडद-भूतनार्मदुद्युतात्म-वैभवं
सदा रवीनदु-कुण्डलं नमाडम भाग्य-सम्भवम् ।।१

कृपा-कटिा-र्विं डवभूडत-वेत्र-भूषिं
सुपावनं सनातनाडद-सत्य-धमथ-पोषिम् ।
अपारि-स्तक्त-युक्तमात्म-र्लिं सुर्लिं
प्रभा-मनोहरं हरिी-भाग्य-सम्भवं भजे ।।२

मृगासनं वरासनं िरासनं महौजसं
जगस्तद्धतं समस्त-भक्त-डित्तरंग-संस्तस्तम् ।
नगाडधराज-राजयोग-पीठ-मध्यवडतथनं
मृगांकि-खरं हरिी-भाग्य-सम्भवं भजे ।।३

समस्त-लोक-डिस्तन्तत-प्रदं सदा सुख-प्रदं
समुस्तत्थता-पदन्धकार-कृन्तनं प्रभाकरम् ।
अमत्यथ-नृत्य-गीत-वाद्य-लालसं मदालसं
नमस्करोडम भूतनार्माडदधमथ-पालकम् ।।४

रिारान्तरस्तस्त प्रभा-मनोहर प्रभो
सुरासुराडिथतांडि-पद्म-युग्म भूतनायक ।
डवराजमान-वक्त्र भक्त-डमत्र वेत्रि-ोडभत
हरिी-भाग्य-जात साधु-पाररजात पाडह माम् ।।५

जो अपने ि◌रण-कमल की ि◌रण लेने वाले भक्तजनों ◌ंका पालन करने में ही लीन है, शजसके पाश्वथ में उसकी पत्नी है, जो अपने पुत्रों ◌ंके संग का आनन्द उठाने वाला है, जो देवताओं ◌ं
का स्वामी है, उदार है, भूतमात्र का आशद स्वामी है, शजसका आध्यात्मिक वैभव अद्भुत है, शजसके कणथ-कुण्डल के रूप में सूयथ और ि◌न्द्र हैं, शवश्व के समस्त भाग्यों ◌ंसे समूभूत उस देव को नमस्कार करता हाँ।।१

शजसके अवलोकन में कृपा भरी हुई है, जो भस्म तर्ा बेंत से शवभूशषत है, जो पशवत्र है, जो सनातन सत्य, धमथ आशद का पोषण करता है, शजसकी ि◌त्मक्त अपार है, जो ओि-ज्ञान में संत्मस्त है, शजसका ि◌रीर अचे्छे लक्षणों ◌ंसे युक्त है, कात्मन्त के कारण जो मनोहर है और जो शवषणु तर्ा शिव के भाग्य से उत्पन्न हुआ है, उस देव की मैं आराधना करता हाँ ।।२

जो शे्रेष्ठ आसन में बाघ पर बैठा है, शजसके हार् में बाण हैं, शजसका तेज महान् है, जो सारे जग का शहत करने वाला है, सब भक्तों ◌ंके शित्त में जो शवराजमान है, जो पवथत-शे्रेष्ठ पर योगपीठ के मध्य में बसता है, शजसके मस्तक पर अधथि◌न्द्र है और जो शवषणु तर्ा शिव के भाग्य से उत्पन्न हुआ है, उस देव की मैं आराधना करता हाँ।।३

जो सारे संसार की इच्छा पूरी करता है, जो सवथदा सुख देने वाला है, आये हुए शवपशत्त-रूपी अन्धकार को नाि करने वाला है, प्रकिामान है, देवताओं ◌ंके नृत्य, गीत, वाद्य आशद के प्रशत शवेिष रुशि रखता है, शजसके हाव-भाव मनोहर हैं, जो आशद धमथ की रक्षा करता है, उस भूतनार् को मैं प्रणाम करता हाँ।।४

हे प्रभु, तुम ि◌र और अि◌र सृशष्ट के अन्तस्थल में रहने वाले हो, कात्मन्त से ि◌ोभायमान हो । हे भूतनार्, देवता तर्ा असुर तुम्हारे ि◌रण-युगल धोते हैं। तुम सुन्दर वदन हो, भक्तों ◌ंके शमत्र हो तर्ा बेंत से सुिोशभत हो, हरर और शिव के भाग्य से उत्पन्न हुए हो, साधुजनों ◌ंके शलए पाररजात वृक्ष-तुल्य हे देव! मेरी रक्षा करो ।।५

नामावली

पूिथ-पुष्कला-समेत-भूतनार् पाडह माम् ।

हे भूतनार् (समूपूणथ जीवों ◌ंके स्वामी), अपनी अधिांशगनी पूणथ पुष्कला के सार् मेरी रक्षा करो।

बुधवार

श्रीकृष्ण-स्तोत्रम्

१. भजो रे मैया राम गोशवन्द हरी

(श्री कबीरदासकृत)

श्लोक

हररहरडत पापाडनदुष्टडित्तैरडप सूमृतः ।
अडनिन्नडप संसूपृष्टोदहत्येव डह पावकः ।।

अर्थ

दुष्ट हृदयों ंके स्मरण करने से भी भगवान् उनके पापों ंको दूर कर देते हैं। जैसे अशनच्छापूवथक भी स्पिथ हो जाये तो अशि जलाती ही है।

गीत

भजो रे भैयारामगोडवन्दहरी।
जप तप साधननडहंकछुलागत,
खरित नडहं गठरी।।भजोरेभैया...

सन्तत सम्पतसुखकेकारि,
जासों ंभूल परी।।भजोरेभैया...

कहत 'कबीरा'रामनजामुख,
ता मुख धूल भरी।।भजोरेभैया...

हे भाई! राम, गोशवन्द और हरर का भजन करो। इसमें जप, तपया आशद कोई भी धन नहीं ंलगता और गाँठ से कुछ खिथ भी नहीं ंहोता।

वह नाम, शजसे तुम भूल गये हो, ाश्वत सुख और सम्पशत्त का कारण है।

कबीरदास कहते हैं शक शजस मुख में राम का नाम नहीं ंहै, वह मुख शमट्टी से भरने योग्य है।

नामावली

राम गोडवन्द हरर राम गोडवन्द।

२. यमुना-तीर-शवहारी

श्लोक

गोपाल-रत्नं भुवनैक-रत्नं गोपांगना-यौवन-भाग्य-रत्नम्।

श्रीकृष्ण-रत्नं सुर-सेव्य रत्नं भजामहे यादव-वंि-रत्नम् ।।

भगवान्कृष्णगोपालों ंके रत्न हैं। वे समस्त लोकों ंके सवोपरर रत्न हैं। वे युवती गोशपयों ंके भाग्यकेरत्नहैं।वेसभी देवताओं ंसे पूशजत रत्न श्रीकृष्ण-रत्न हैं। उस यादव-वंि-रत्न की हम पूजा करते हैं।

गीत

यमुना-तीर-डवहारी,वृन्दावन-संिरी ।
गोवधथन-डगरर-धारी,गोपाल-कृष्ण मुरारी ।।

दिरर्-नन्दन राम राम,दिमुख मदथन राम राम ।
पिुपडत-रंजन राम राम,पाप-डवमिोन राम राम ।।

जय श्री राधे जयनन्द-नन्दन ।
जय जय गोपी-जन-मन-रंजन ।।

गौओं ंको िराने वाले गोपाल कृष्ण मुरारी हैं जो यमुना के शकनारे शवहार करने वाले हैं,श्री वृन्दावन में भ्रमण करने वाले हैं और गोवधथन शगरर को धारण करने वाले हैं।

दिरर् के पुत्र राम हैं, दिमुख अर्थात् रावण को मारने वाले राम हैं, िंकर भगवान् को प्रसन्न करने वाले राम हैं, पापों ंको दूर करने वाले राम हैं।

श्री राधा जी की जय हो, गोपीजनों ंके मन को लुभाने वाले नन्द के पुत्र श्रीकृष्ण की जय हो !

३. भज रे गोपालम्

(श्री सदाशिवब्रह्मेन्द्रकृतम्)

श्लोक

बद्धेनांजडलना नतेनडिरसा गात्रैिः सरोमोद्गमैः
कण्ठेन स्वर-गद्गदेननयनेनोद्गिीथ बाष्पामुबुना ।
डनत्यं त्वच्चरिारडवन्द-युगल-ध्यानामृतास्वाडदनां
अस्माकं सरसीरुहा सततं सम्पद्यतां जीडवतम् ।।

हे परालिोन, हम श्रद्धापूवथक हार् जि़ो कर, शसर को नत कर, रोमांशित हो कर, पे्रेम से रुद्ध-कण्ठ हो कर, आँखों ंसे आनन्दाशुरु बहाते हुए आपके पाद-पद्मों ंमें शनत्य-प्रशत ध्यान की सुधा काआस्वादन करते हैं। हे भगवन्! हमारा जीवन शनरन्तर सुसम्पन्न हो !

गीत

भज रे गोपालं मानस, भज रे गोपालम् ।।
भज गोपालं भडजत-कुिलं,
डत्रजगनूमूलं डददत-सुत-कालम् ।।१।। भज रे...

आगम-सारं योग-डविारं,
भोगिरीरं भुवनाधारम् ।।२।। भज रे...

कदन-कुठारं कलुष-डवदूरं,
मदन-कुमारं मधुसंहारम् ।।३।। भज रे...

नत-मन्दारं नन्द-डकिोरं,
हतर्ि–ूरं हंस-डवहारम् ।।४।। भज रे...

हे मेरे मन! गोपाल का भजन कर। गोपाल का भजन कर।

हे मेरे मन! गोपाल का भजन करो जो तीनों ंलोकों ंका मूल है, जो असुरों ंके शलए मृतुयु-स्वरूप है तर्ा कुिल द्वारा पूशजत है ।।१

उसका भजन करो, जो वेदों ंका सार है, शजसे योग के द्वारा पाया जाता है, शजसका रीिर आनन्द है तर्ा जो भुवनों ंका आधार है।।२

उसकाभजनकरो,जोपापों ंको नष्ट करने के शलए कुठार के समान है, अज्ञान का शनवारणकरताहै,शजसके पुत्रकामदेव रे् तर्ा शजसने मधु नामक राक्षस का संहार शकया भा ।।३

उसनन्दके पुत्रकाभजनकरो, जो अपने भक्तों ंके शलए स्वगथ-वृक्ष के समान है, शजसने णिूरकासंहारशकयातर्ाजोपरमहंसों ंके संग में आनत्मन्दत होता है ।।४

नामावली

एडह मुदं देडहमेश्रीकृष्णकृष्ण,
पाडह माम् गोपाल-बालकृष्णकृष्ण।।१

नन्दगोप-नन्दन श्री कृ ष्ण कृ ष्ण,
वृन्दावनर्ि–न्द्र श्री कृ ष्ण कृ ष्ण ।।२

राधा-मन-मोहन श्री कृ ष्ण कृ ष्ण,
माधव दयाडनधेश्रीकृष्णकृष्ण।।३

भक्त-पररपालकश्रीकृष्णकृष्ण,
भस्तक्त-मुस्तक्त-दायक श्री कृ ष्ण कृ ष्ण ।।४

गोपीजन-विभश्रीकृष्णकृष्ण,
गोप-कु ल-पालक श्री कृ ष्ण कृ ष्ण ।।५

सवथलोक नायकश्रीकृष्णकृष्ण,
सवथजगन्मोहन श्री कृ ष्ण कृ ष्ण ।।६

सस्तच्चदानन्द (कृष्ण)सस्तच्चदानन्द।।७
सस्तच्चदानन्द (गुरु)सस्तच्चदानन्द।।८

हे कृष्ण! मुझे यह आनन्द दीशजए। हे गोप-कुमार । मेरी रक्षा कीशजए ।।१

नन्द तरा गोपों ंको आनन्द देने वाले, वृन्दावन के िन्द्रमा, हे कृष्ण !!२

राधा के मन को मोहने वाले, हे माधव (लक्ष्मीनार), हे दयासागर, हे कृष्ण !!३

भक्तों ंकी रक्षा करने वाले, भत्मक्त और मोक्ष प्रदान करने वाले, हे कृष्ण !!४

हे कृष्ण। तुम गोशपयों ंके परम शप्रय, ग्वालों ंके पररपालक हो ।।५

हे कृष्ण। तुम अत्मखल शवश्व के अशधनायक, समूपूणथ संसार के मन को प्रलुब्ध करने वालेहो ।।६

कृष्ण सत्, शवत् (ज्ञान) और आनन्द (सुख)-मय हैं।।७

गुरु सत्, शित् (ज्ञान) और आनन्द (सुख)-मय हैं ।1८

४. गायशत वनमाली

(श्री सदाशिवब्रह्मेन्द्रकृतम्)

श्लोक

कसूतूरी-डतलकं ललाट-फलके विःस्ले कौसुतुभं,
नासाग्रे नव-मौस्तक्तकं करतले विुं करे कंकिम् ।
सवांगे हररिन्दनं ि कलयन् कण्ठे ि मुक्तामडिं,
गोपस्त्री-पररवेडष्टतो डवजयते गोपाल ूिमडिः ।।

गोपालों ंके ूिमिशण भगवान् कृष्ण की जय हो! वे गोपांगनाओं ंसे पररवेशष्ठत होकर शिभत हो रहे हैं, उनके शविाल ललाट में कसूतूरी का शतलक है, उनके वक्षुःस्ल पर कौसुतुभमशणहै,नाशसकाके अग्रभाग में नवमुक्ता सुिोशभत हो रही है, करतल में बाँसुरीतरा हारों ंमेंकंगनहैं।उनके सब अंग िन्दन से लेशपत हैं तरा उनकी ग्रीवा में मुक्तावली सुिोशभतहो रही है।

गीत

गायडत वनमाली मधुरं, गायडत वनमाली ।

पुष्प-सुगस्तन्ध-सुमलय-समीरे
मुडनजन-सेडवत यमुना-तीरे ।।१।। गायडत...

कूडजतिुक-डपक-मुख खग-कुंजे
कुडटलालक-बहु-नीरद-पुंजे ।।२।। गायडत...

तुलसी-दाम-डवभूषि-हारी
जलज-भव-सुतुत-सद्गुिौरी ।।३।। गायडत...

परमहंस-हृदयोत्सवकारी
पररपूररत-मुरली-रव-धारी ।।४।। गायडत...

वनमाला धारण शकये हुए भगवान् कृ ष्ण गा रहे हैं, वे मधुर गान गा रहे हैं। यमुना के तट पर जहाँ ऋशष गण मौन हो कर ध्यान करते हैं और जहाँ मलय पवथत से ीतल, मन्द, सुगन्ध समीर बहता है (वहाँ श्री कृ ष्ण गा रहे हैं) ।।१

(यमुना के तट पर) वृक्ष और लता के कुं जों ं में जहाँ कोयल, तोता और अन्य गायक पक्षी गाना गा रहे हैं तर्ा बादलों ं का समूह घुँघराले बाल की तरह आकिा में दोलायमान हो रहा है (वहाँ श्री कृ ष्ण गा रहे हैं) ।।२

श्री कृ ष्ण (ौरर) शे्रेष्ठ गुणों ं से सम्पन्न हैं, तुलसी की माला से सुिोशभत हैं और पद्मयोशन ब्रह्मा द्वारापूशजतहैं(वेगारहेहैं)।।३

श्री कृष्ण, जो परमहंसों ं के हृदय में अपार आनन्द भर देते हैं तर्ा शजनकी बाँसुरी से संगीत प्रवाह-रूप में संरिरत होता है, गा रहे हैं ।।४

नामावली

गोडवन्द जय जय गोपाल जय जय,
राधारमि हरर गोडवन्द जय जय ।।

५. बूरूशह मुकुन्देशत

(श्री सदाशिवब्रह्मेन्द्रकृतम्)

श्लोक

वंिी-डवभूडषत-करात् नव-नीरदाभात्,
पीताम्बराद् अरुि-डबम्ब-फलाधरोष्ठात्।
पूिनदु-सुन्दर-मुखाद् अरडवन्द-नेत्रात्,

कृष्णात्परं डकमडप तत्त्वमहं न जाने ।।

भगवान् कृष्ण से परे मैं शकसी परम तत्त्व को नहीं ंजानता, शजनके हार्ों ंमें वंी ंिभायमानहोरही है, जो बादल के समान श्यामलांग हैं, पीताम्बर से भूशषत हैं, शजनके होंठं शबम्ब-फलकेसमान लाल हैं, शजनका मुख पूणथ ेन्द्रमा के समान सुन्दर है तर्ा शजनकी आँखें कमल-दलके समान हैं।

गीत

रू्बूडह मुकुन्देडत रसनेरू्बूडहमुकुन्देडत।

केिव माधवगोडवन्देडत
कृष्णानन्द सदानन्देडत।।१।।रू्बूडह...
राधा-रमि हरे रामेडत
राजीिवा घन-श्यामेडत।।२।।रू्बूडह.

गरि-गमन नन्दक-हसे्तेडत
खस्तण्डत दि-कन्धरमसे्तेडत।।३।।रू्बूडह...

अकूरू्र-डप्रयिक्र-धरेडत
हंस-डनरंजन कंस-हरेडत।।४।।रू्बूडह...

हे शजह्वा! मुकुन्द बोल, मुकुन्द बोल ।

केिव, माधव, गोशवन्द बोल । कृष्ण आनन्द, सदानन्द बोल! ।।१

राधारमण, हरर, राम बोल। पद्मलोिन, घनश्याम बोल ! ।।२

गरि पर ेलने वाले, नन्दक नामक खि्ग हार् में धारण करने वाले, दि शिर रावण को मारने वाले-ऐसा बोल ।।३

अकूरू्र-शप्रय, ेक्रधर, शनरंजन-हस, कस-शवनिान-ऐसा बोल ! ।।४

नामावली

भजो राधे गोशवन्द,गोपालतेराप्यारानामहै।
गोपाल तेरा प्यारा नामहै,नन्दलालतेराप्यारानामहै ।।

६. क्रीशत वनमाली

(श्री सदाशिवब्रह्मेन्द्रकृतम्)

श्लोक

सवथरूपधरं ान्तंसवथनामधरं डिवम् ।
सस्तच्चदानन्दमितंआत्मानं तं उपास्महे ।।

सवथनाम और रूपमय, न्ति, शिव तरा सत्मच्चदानन्दरूप अद्वय आिा की मैं उपासना करता हाँ।

गीत

क्रीडत वनमाली गोष्ठेक्रीडत वनमाली ।

प्रह्लाद-परिार-पररपाली
पवनात्मज-जाम्बवदनुकूली ।।१।। क्रीडत...

पया-कि-पररम्भि ाली
पटुतर ाडसत-माडल-सुमाली ।।२।। क्रीडत...

परमहंस-वर-कुसुम-सुमाली
प्रिव-पयोरुह-गभथ-कपाली ।।३।। क्रीडत...

वनमाला पहने हुए कृष्ण प्रांगण में क्रीा कर रहे हैं।

श्री कृष्ण जो प्रह्लाद तरा परिार के रक्षक हैं, जो हनुमान् तरा जाम्बवान् के प्रशत कृपा करने वाले हैं, वे ही क्रीा कर रहे हैं।।१

जो श्री लक्ष्मी से आशलंशगत हैं तरा शजन्होंने ब्री किुलता से माली तरा सुमाली नामक राक्षसों ंको दण्ड शदया रा, वे ही क्रीा कर रहे हैं ।।२

शजनकी माला में परमहंसजन ही पुष्प हैं तरा जो प्रणव-पद्म के अन्दर शछपे हैं, वही कृष्ण क्रीाकररहे हैं।।३

नामावली

१. कमला-विभ गोडवन्द, माम् ।
पाडह कल्यि-कृष्ण गोडवन्द ।

२. कमनीयानन गोडवन्द, माम् (पाडह . . .)

३. भक्त-वत्सल गोडवन्द, माम् (पाडह . . .)

४.भागवत-डप्रय गोडवन्द, माम् (पाडह . . .)

५.वि-डवलोल गोडवन्द, माम् (पाडह . . .)

६.डवजय-गोपाल गोडवन्द, माम् (पाडह...)

७.नन्द-नन्दन गोडवन्द, माम् (पाडह...)

८.नवनीत◌ोर गोडवन्द, माम् (पाडह...)

९.अनार्-रिक गोडवन्द, माम् (पाडह...)

१०.सवेश्वरश्री गोडवन्द, माम् (पाडह...)

स्वामीगोशवन्द,हेमंगलमयकृष्ण,हेगोशवन्दमेरी रक्षा करो।

१.हेश्रीलक्ष्मीदेवीके
२. हे सौम्यबदन गोशवन्द, मेरी (रक्षा करो...)

३. हे भक्तों ◌ं पर ◌ेह रखने वाले गोशवन्द, मेरी (रक्षा करो...)

४. हे सन्तजनों ◌ं से पे्रेम करने वाले गोशवन्द, मेरी (रक्षा करो...)

५. हे वंविादन-शप्रय गोशवन्द, मेरी (रक्षा करो...)

६. हे शवजय प्राप्त करने वाले गोपाल-गोशवन्द, मेरी (रक्षा करो...)

७. हे नन्द गोप के पुत्र गोशवन्द, मेरी (रक्षा करो...)

८. हे (भक्तों ◌ंके हृदय-रूपी) मक्खन की रिरी करने वाले गोशवन्द, मेरी (रक्षा करो . . .)

९. हे असहायों ◌ंकी रक्षा करने वाले गोशवन्द, मेरी (रक्षा करो...)

१०. हे सभी प्राशणयों ◌ंके स्वामी गोशवन्द, मेरी (रक्षा करो...)

७. भज रे यदुनार्म्

(श्री सदाशिवब्रह्मेन्द्रकृतम्)

श्लोक

वन्दे नव-घन-श्यामंपीत-कौय-वाससम् ।
सानन्दं सुन्दरं ◌ुद्धंश्रीकृष्णं प्रकृतेः परम् ।।

श्रीकृष्ण को नमस्कार, जो मेघ की तरह श्याम-वणथ है, पीले रिमी वस्त्र को धारण शकये है, आनन्दयुक्त है, सुन्दर है, ◌ुद्ध है और प्रकृशत से परे है।

गीत

भज रे यदुनारं्, मानसभज रे यदुनार्म् ।

गोप-वधू-पररम्भि-लोलं
गोप-डकिोरकम्भिुत-लीलम् ।।१ (भज रे...)

कपटांगी-कृत-मानुष-वेषं
कपट-नाट्य-कृत-कृत्स्न सुवेषम् ।।२ (भज रे...)

परमहंस-हत्तत्त्व-स्वरूपं
प्रिव-पयोधर-प्रिव-स्वरूपम् ।।३ (भज रे...)

हेमन,यादवों ंके भगवान् श्रीकृष्ण की पूजा कर। उस यदुनार् को भज।

जोअद्भुतक्रि़ाओं ंमें रत गोपबालक है और गोशपयों ंके आशलंगन में मस्त है, उस कृष्ण का भजनकर।।१

शजसनेकपट-रूप से मानव-रूप धारण शकया है और जो समूपूणथ नाम-रूपों ंमें प्रच्छन्न रूप से नाटकके समानकाम करता है, उस कृष्ण का भजन कर ।।२

जोपरमहंसयोशगयों ंके हृदय में शनवास करने वाला परम तत्त्व है, ओंकार-रूपी बादलों ं के बीस्वयंओंकार-स्वरूप है, उस कृष्ण का भजन कर ।।३

नामावली

कमला-विभराधेश्याम ।
कमनीयाननराधेश्याम ।।
कनकाम्बर-धरराधेश्याम ।
कौसुतुभ-भूषिराधेश्याम ।।
अखण्ड-स्वरूपराधेश्याम ।
अडमत-पराक्रमराधेश्याम ।।
अपररस्तिन्नराधेश्याम ।
अमर-जन-डप्रयराधेश्याम ।।

श्री लक्ष्मी देवी के स्वामी राधेश्याम । सुन्दर मुख वाले राधेश्याम । पीताम्बरधारी राधेश्याम । कौसुतुभ-मशण से शवभूशषत राधेश्याम । स्वजातीय, शवजातीय तर्ा स्वगत भेद-ून्य स्वरूप वाले राधेश्याम । अपररशमत पराक्रम वाले राधेश्याम। दि, काल और कारण से परे राधेश्याम । देवताओं ं के शप्रय राधेश्याम ।

८. स्मर वारं वारं

(श्री सदाशिवब्रह्मेन्द्रकृतम्)

श्लोक

डिदानन्दाकारं शुरुडत-सरस-सारं समरसं
डनराधाराधारं भव-जलडध-पारं पर-गिुम् ।
रमा-ग्रीवा-हारं वज्र-वन-डवहारं हर-नुतं
सदा तं गोडवन्ंदं परम-सुख-कन्ंदं भजत रे ।।

आपसवथदापरमानन्द के मूल उन भगवान् गोशवन्द का भजन कीशजए जो शिदानन्द स्वरूप हैं, जो समस्तवेदों ंके सरस सार हैं, जो सबके शलए समान हैं, जो शनराश्रयों ंके आश्रय हैं, जो जन्म-मृतुयु-रूपीसंसार-सागर के तट हैं, जो सभी गुणों ंके परे हैं, जो लक्ष्मी जी के कण्ठ-हार हैं, जोव्रजकेवनों ंमें शवहार करने वाले हैं और भगवान् शिव शजनका भजन करते हैं।

गीत

स्मर वारं वारं ितःस्मर नन्द-कुमारम् ।

घोष-कुटीर-पयो-घृतिोरं
गोकुल-वृन्दावन-संचरिम् ।।१ (स्मर...)

वेिु-रवामृत-पान-डकिोरं
डवश्व-स्तरुडत-लय-हेतु-डवहारम् ।।२ (स्मर...)

परमहंस-हतृंपंजर-कीर
पटुतर-धेनुक-बक-संहारम् ।।३ (स्मर...)

रेमन, नन्द जी के उस कुमार को बार-बार याद कर।

जोग्वालों ंकी झोपशियों ंसे दूध-घी ुिराता है, जो गोकुल और वृन्दावन में शवहार करता है।॥१-

जोमुरली के स्वर-रूपी अमृत का पान करता है और संसार की सृशष्ट, त्मस्शत और शवलय ही शजसकाखेल है ।।२

जोपरमहंसों ंके हृदयरूपी शपंजरे का तोता है और शजसने घेनुक, बकासुर आशद िालाक असुरों ंकासंहार शकया है ।।३

नामावली

भक्तवत्सल गोडवन्द।भागवतडप्रय गोडवन्द।।
पडतत-पावन गोडवन्द।परम दयालो गोडवन्द।।
नन्द-मुकुन्द गोडवन्द।नवनीत ोर गोडवन्द।।
वुि-डवलोल गोडवन्द।डवजय-गोपाल गोडवन्द।।
करिा-सागर गोडवन्द।कमनीयानन गोडवन्द।।

९. गोपाल-गोकुल-वल्लभीशप्रय

(श्री तुलसीदासकृतम्)

श्लोक

वसुदेव-सुतंदेवंकंसाि-ूर-मदथनम् ।
देवकी-परमानन्दंकृष्णंवन्देे जगद् गुरुम् ।।

मैंजगद्गुरु भगवान् श्रीकृष्ण की वन्दना करता हाँ जो वसुदेव जी का पुत्र है, जो स्वयं भगवान्है,शजसने कंस और ाणूर राक्षसों ंका बध शकया तर्ा जो माता देवकी को परम आनन्द देने वालाहै।

गीत

गोपाल-गोकुल-विभीडप्रय,गोपगोसुत-विभम् ।
ाशिरडवन्द महं भजे, भजनीयसुर-मुडन-दुलथभम् ।।१

घन-श्याम काम अनेक छडव,लोकाडभराम मनोहरम् ।
डकंजल्क-वसन डकिोर मूरडत,भूररगिु करिाकरम् ।।२

डिर-केडक-डपि डवलोल-कुण्डल,अरि वनरुह लिोनम् ।
गुंजावतंस डवडित्र सब अंग,भक्त-भव-भय-मिोनम् ॥३

कि-कुडटल सुन्दर-डतलकभ्रू,राका-मयंक-समाननम् ।
अपहरि-तुलसीदास-त्रास,डवहारवृन्दाकाननम् ।।४

हे गोपाल, गोकुलांगनाओं ंके शप्रयतम, गोपकुमारों ंतर्ा गोवत्सों ंके स्वामी, सुर-मुशनयों ंको भी दुष्प्राप्य परम आराधनीय भगवान् कृष्ण, मैं तेरे िरण-कमल की उपासना करता हाँ।।१

श्यामधन के समान श्याम वणथ वाले हे भगवान् कृष्ण, तू अगशणत कामदेव की ोभा को धारणकरता है। तू संसार का रंजन करता है। तू मनोहर रूप वाला, पीताम्बरधारी, शकिोर वदन,गुणों ंका आगार तर्ा करुणामय है। (मैं तेरे िरण-कमल की उपासना करता हाँ) ।।२

शसरमेंमोर-मुकुट, कानों ंमें िपल कुण्डल, नेत्र कमल-पुष्प के समान लाल, गले में पुष्पों ंकीमाला-इसप्रकार तेरा समूपूणथ शवशित्र अंग भयावह संसार से भक्तों ंका मुत्मक्तकताथ है ।।३

तेरीअलकेंघुाँघराली, ललाट में सुन्दर शतलक धारण शकया हुआ, भौहें मनोहर और मुख पूणथिन्द्रके समानकमनीय है। तू तुलसीदास के भय को दूर करने वाला है तरा् वृन्दावन में शवहार करताहै।(मैंतेरिरण-कमल की उपासना करता हाँ) ।।४

नामावली

गोडवन्द जय जय गोपाल जय जय ।
राधारमि हरर गोडवन्द जय जय ।।

१०. दिथन दो घनश्याम नार्

(श्री नरसीमेहताकृत)

ॐ इडत ज्ञान-वसे्त्रि, राग-डनिेजनी-कृतः।
कमथ-डनद्रां प्रपन्नोस्तस्म, त्राडह मां मधु-सूदन।।

अर्थ

हे मधुसूदन !ॐ-रूप ज्ञान-वस्त्र सेराग-रूप मल को दूर कर। मैं कमथशनिा में प़िा हाँ, मेरी रक्षाकर।

गीत

दिथन दो घनश्यामनार्मोरीअँस्तखयाँप्यासीरे।
मन-मस्तन्दर की ज्योडत जगादो,घटघटवासीरे।।दिथनदो...।।१
मस्तन्दर-मस्तन्दर मूरततेरी,डफरभीनदेखीसूरततेरी।
युग बीते न आयी डमलनकी,पूरनमासीरे।।दिथनदो...।।२

रि दया का जब तू खोले,पंमिस्वरमेंगूँगाबोले।
अन्धा देखे लंगडा िल कर, पहुँकिीरे।।दिथनदो...।।३

पानी पी कर प्यास बुराऊँ,नैननकोकैसेसमराऊँ ।
आँखडमौली छोडो अब तो, मनकेवासीरे।।दिथनदो...।।४

डनबथल के बल धन डनधथनके,तुमरखवारेभक्त-जननके।
तेरे भजन में सब कुछ पाऊँ,डमटेउदासीरे।।दिथनदो...।।५

नाम जपे परतुरे्नजाने,उनकोभीतूअपनामाने।
तेरी दया का अन्तनहीं ंहै,हेदुःखनिीरे।।दिथनदो...।।६

आज फैसला तेरे ार पर, मेरी जीत है तेरी हार पर ।
हार जीत है तेरी, मैं तो रि उपासी रे ।। दिथन दो...।।७

रि खडा कब से मतवाला, माँगे तुमसे हार तुम्हारा ।
'नरसी' की ये डबनती सुन लो, भक्त डवलासी रे ।। दिथन दो...।।८

लाज न लुट जाये प्रभु तेरी, नार् करो न दया में देरी।
तीनों ंलोक छोड कर आओ, गगन-डनवासी रे ।। दिथन दो...।।९

हे घनश्याम, हे नार्, मुझे दिथन दो।

मेरे नेत्र तुम्हारे दिथनों ं के शलए प्यासे हो रहे हैं। हे सबके अन्तवाथसी, मेरे मन-मत्मन्दर की ज्योशत जला दो ।।१

तुम्हारी मूशतथ सभी मत्मन्दरों ं में शवद्यमान है, शफर भी तुम्हारे दिथन नहीं ं होते । (तुम्हारी प्रतीक्षा में) युग बीत ले, परनुतु तुम्हारे शमलन की पूशणथमा की राशत्र अभी तक नहीं ं आयी ।।२

जब तू दया का द्वार खोलता है तो गूाँगा पंमि स्वर में बोलने लगता है, अन्धा देखने लगता है और लंग़ा पाँव-पाँव ल कर किी पहुाँ जाता है ।।३

मैं (साधारण) तृष्णा को तो जल पी कर ान्त कर देता हाँ; परनुतु इन नेत्रों ं को (जो तुम्हारे दिथन के शलए प्यासे हैं) भला में कै से समझाऊाँ ? हे हृदयवासी, आाँखशमौली का यह खेल अब छि़ो।।४

तुम शनबथलों ं के बल, शनधथनों ं के धन और भक्तजनों ं के रक्षक हो। तुम्हारे भजन से मैं सब-कुछ प्राप्तकरलूाँऔरसबशिन्तादूरहोजाये।।५

हे दु:ख शनवारक! जो तुम्हारा भजन तो करते हैं, परनुतु तुम्हें जानते तक नहीं,ं उन्ें भी तू अपनालेताहै।तुम्हारीदयाअसीमहै।।६

आज तुम्हारे दरवाजे पर ही हमारी हार-जीत का फैसला होने को है। मेरी जीत तुम्हारी हार परशनभथरकरतीहै,परनुतुहारऔरजीत-येदोनों ंहीतोतुम्हारे(हार्)हैं।मैंतोतुम्हारे रिणों ंकाउपासकहाँ।।७

मैं पागल कब से तुम्हारे द्वार पर ख़ा हुआ तुम्हारे हार की शभक्षा तुम से ही माँग रहा हाँ। हे भक्तों ंकोआनन्ददेनेवाले,नरसीकीप्रार्थनाअबतोसुनलो।।८

हे नार्, अब दया करने में शवलम्ब न करो। नहीं ं तो कहीं ं ऐसा न हो शक तुम्हारी लाज ही लुट जाय।हेवैकुण्ठवासी,तीनों ंलोकों ंकोछि़ोकरीघ्रपधारो।।९

नामावली

दिथन दो घनश्याम नार्।
राधेश्याम जयराधेश्याम।

११. अधरं मधुरं

(श्री वल्लभिायथकृतम्)

श्लोक

ान्ताकारं भुजगि-यनंपद्य-नाभं सुरिं,
डवश्वाधारं गगन-सदृिं,मेघ-विथ ुिभांगम् ।
लक्ष्मी कान्तं, कमल-नयनं,योडगडभध्याथन-गम्यं,
वन्दे डवष्णुं भव-भय-हरं,सवथ-लोकैकनार्म् ।।

मैंउसशवष्णुकोप्रणामकरताहाँशजसकीआकृशत ान्त है, जो आशद ेष पर लेटा है, जोपद्मनाभहै,देवताओं ंकास्वामीहै,शवश्वकाआधार है, आकाि सदृ व्यापक है, मेघ जैसी वांममंसवानारहैं,शजोसबकी का पशत है, शजसके नयन कमल के सदृ हैं,शजसेयोशगजनध्यानद्वाराजानपातेहैं,जोसंसार-भय को दूर करने वाला और समस्त लोकों ं का एकमात्र स्वामी है।

स्तोत्र

अधरं मधुरं वदनं मधुरं,नयनं मधुरं हडसतं मधुरं ।
हृदयं मधुरं गमनं मधुरं,मधुराडधपते-रस्तखलं मधुरम् ।।१

विनं मधुरं ेररतं मधुरं,वसनं मधुरं वडलतं मधुरं ।
डिलतं मधुरं भ्रडमतं मधुरं,मधुराडधपते-रस्तखलं मधुरम् ।।२

वेणु-मथधुरो रेणु-मथधुरो,पाडि-मथधुरः पादो मधुरः ।
नृत्यं मधुरं सख्यं मधुरं,मधुराडधपते-रस्तखलं मधुरम् ।।३

गीतं मधुरं पीतं मधुरं,भुक्तं मधुरं सुप्तं मधुरं ।
रूपं मधुरं डतलकं मधुरं,मधुराडधपते-रस्तखलं मधुरम् ।।४

करिं मधुरं तरिं मधुरं,हरिं मधुरं रमिं मधुरं ।
वडमतं मधुरं ेडमतं मधुरं,मधुराडधपतये-रस्तखलं मधुरम् ।।५

गुंजा मधुरा माला मधुरा,यमुना मधुरा वीिी मधुरा ।
सडललं मधुरं कमलं मधुरं,मधुराडधपते-रस्तखलं मधुरम् ।।६

गोपी मधुरा लीला मधुरा,युक्तं मधुरं मुक्तं मधुरं ।

दृष्टं मधुरं डिष्टं मधुरं, मधुराडधपते-रस्तखलं मधुरम् ।।७

गोपा मधुरा गावो मधुरा, यडष्टमथधुरा सृडष्टमथधुरा ।
दडलतं मधुरं फडलतं मधुरं, मधुराडधपते-रस्तखलं मधुरम् ।।८ ।।

उनके अधर मधुर हैं, मुख मधुर है, नेत्र मधुर हैं। हाय मधुर है और गशत भी मधुर है; श्री मधुराशधपशत का सब-कुछ मधुर है ।।१

उनके विन मधुर है, ि◌ररत्र मधुर है, वस्त्र मधुर हैं, अंगभंगी मधुर है, ि◌ाल मधुर है और भ्रमण भी अशत मधुर है; श्री मधुराशधपशत का सभी कुछ मधुर है ।।२

उनकी वेणु मधुर है, ि◌रण-रज मधुर है, कर-कमल मधुर हैं, ि◌रण मधुर हैं, नृत्य मधुर है और सख्य भी मधुर है; श्री मधुराशधपशत का सभी कुछ मधुर है ।।३

उनका गान मधुर है, पान मधुर है, खान मधुर है, ि◌यन मधुर है, रूप मधुर है और शतलक भी अशत मधुर है; श्री मधुराशधपशत का सभी कुछ मधुर है ।।४

उनका कायथ मधुर है, तैरना मधुर है, हरण मधुर है, रमण मधुर है, उद्गार मधुर है और ि◌ात्मन्त भी मधुर है। श्री मधुराशधपशत का सभी कुछ मधुर है ।।५

उनकी गुंजा मधुर है, माला मधुर है, यमुना मधुर है, उसकी तरंगें मधुर हैं, उसका जल मधुर है और कमल भी अशत मधुर है; श्री मधुराशधपशत का सभी कुछ मधुर है।।६

गोशपयाँमधुरहैं,उनकी लीला मधुर है, उनका संयोग मधुर है, शवयोग मधुर है, शनरीक्षण मधुरहैऔरशिष्टाारभीमधुर है; श्री मधुराशधपशत का सभी कुछ मधुर है।।७

गोपमधुरहैं,गायेंमधुर हैं, लकुटी मधुर है, रिना मधुर है, दलन मधुर है और उसका फल भीअशतमधुरहै,श्रीमधुराशधपशत का सभी कुछ मधुर है ।।८

नामावली

डवडपन-डवहारी राधेश्याम,कुंज-डवहारी राधेश्याम।
बाँके-डवहारी राधेश्याम,देवकी-नन्दन राधेश्याम।।
गोडपका-विभ राधेश्याम,राधा-विभ राधेश्याम।
कृष्ण-मुरारी राधेश्याम,करिा-सागर राधेश्याम।।
भस्तक्त-दायक राधेश्याम,ि◌स्तक्त-दायक राधेश्याम।
भुस्तक्त-दायक राधेश्याम,मुस्तक्त-दायक राधेश्याम।।
सस्तच्चदानन्द राधेश्याम,सद्गुरु-रूप राधेश्याम।
सवथ-रूप श्री राधेश्याम,सवथ-नाम श्री राधेश्याम।
राधेश्याम राधेश्याम,राधेश्याम श्री राधेश्याम।।

१२. जयशत तेऽशधकम्

(भागवत से)

श्लोक

वन्दे नन्दव्रज-स्त्रीांपाद-रेुमभीक्ष्मिः ।
यासां हरर-कर्ोद्गीतंपुनाडत भुवन-त्रयम् ।।

गोशपयों ंके, नन्द के, व्रज की त्मस्त्रयों ंके ेरण-रज को सदा नमस्कार, भगवान् की लीलाओं ंका वणथन करने वाला शजनका गीत तीनों ंलोकों ंको पशवत्र करता है।

जयडत तेऽडधकं जन्मना व्रजः
श्रयत इस्तन्दरा ेश्व-दत्र डह।
दडयत दृश्यतां डदु तावका-
स्त्वडय धृतासव-स्त्वां डवडिन्वते ।।१

रि-दुदिाये साधु-जातसत्-
सरडसजोदर-श्री-मुषा दृा ।
सुरत-नार् तेऽुल्कि-दाडसका
वरद डनघ्नतो नेह डकं वधः ।।२

डवष-जलाप्ययाद्-व्याल-रिासाद्-
वषथ-मारुताद्-वैद्युतानलात् ।
वृष-मयात्मजाद्-डवश्वतोभया
दृषभ ते वयं रडिता मुहुः ।।३

न खलु गोडपका-नन्दनो-भवा-
नस्तखल-देडहना-मन्तरात्म-दृक् ।
डवखनसाडर्थतो डवश्व-गुप्तये
सख उदेडयवान् सात्वतां कुले ।।४

डवरडिताभयं वृस्तष्ण-धुयथ ते
रिि-मीयुषां संसृते-भथयात् ।
कर-सरोरुहं कान्त कामदं
डिरडस धेडह नः श्रीकर-ग्रहम् ।।५

व्रज-जनाडतथहन् वीर-योडषतां
डनज-जन-स्मय-धृंवंसन-स्तस्मत ।
भज सखेभवत्-डकंकरी स्म नो
जलरुहाननंरिुदिथय ।।६

प्रित-देडहनां पाप-किथनं
ितिृरानुगं श्री-डनकेतनम् ।
फडि-फिाडपथतं ते पदांबुजं
कृि किुषु नः कृस्तन्ध हृियम् ।।७

मधुरया डगरा वलुतु-वाक्यया
बुध-मनोज्ञया पुष्कारिे ।
डवडधकरी-ररमा वीर मुहाती-
रधर-सीधुना-ऽऽप्याययस्व नः ।।८

तव कर्ामृतं तप्त-जीवनं
कडवडभ-रीडितं कल्मषापहम् ।
श्रवि-मंगलं श्रीम-दाततं
भुडव गिृस्तन्त ते भूररदा जनाः ।।९

प्रहडसतं डप्रय पे्रेम-र्विी
डवहर्रि ि ते ध्यान-मंगलम्।
रहडस संडवदो या हृडद-सृपिृः
कुहक नो मनः िोभयस्तन्त डह ।।१०

लिडस-यद्-व्रजा-च्चारयन् पिून्
नडलन-सुन्दरं नार् ते पदम् ।
डिल-तिृांकुरैः सीदतीडत नः
कडललतां मनः कान्त गिडत ।।११

डदन-परिरये नीलकुन्तलै-
वथनरुहाननं डवभ्र-दावृतम् ।
घन-रजस्वलं दिथयन् मुहु-
मथनडस नः स्मरं वीर यिडस ।।१२

प्रित-कामदं पद्मजाडिथतं
धरडि-मण्डनं धे्येय-मापडद ।
रिि-पंकजं सन्तमं ि ते
रमि नः स्तने-ष्वपथयाडधहन् ।।१३

सुरत-वधथनं िोक-निानं
स्वररत-वुिेना सुष्ठिुस्तम्बतम् ।
इतर-राग-डवस्मारिं निृां
डवतर वीर न-स्तेऽधरामृतम् ।।१४

अटडत यद्-भवा-नडि काननं

तुरुडट-युथगायते त्या-मपश्यताम् ।
कुडटल-कुन्तलं श्रीमुखं ि ते
जड उदीतां पक्ष्कृद-दृिम् ।।१५

पडत-सुतान्वय-भ्रातृ-बान्धवा-
नडतडवलंघ्य तेऽन्त्यचयुतागताः ।
गडत-डवद-स्तवोद्गीत-मोडहताः
डकतव योडषतः क-स्त्यजे-डन्नडि ।।१६

रहडस संडवदंहि-योदयं
प्रहडसताननंपे्रेम-र्विीम् ।
बृह-दुरः डश्रयोवीक्ष्य धाम ते
मुहु-रडतसूपृहामुह्यते मनः ।।१७

वज्र-जनौकसांव्यस्तक्त-रंग ते
वृडजन-हनत्र्यलंडवश्व-मंगलम् ।
त्यज मनाक् नि-स्त्वत्स्पृहात्मनां
स्वजन-हृदुरुजांय-डन्नषूदनम् ।।१८

यते्ते सुजाति-रिमुबुरुहं स्तनेषु
भीताः ि नैः डप्रयदधीमडह ककथिषु ।
तेनावटी-मटडस तद्-व्यर्ते न डकंस्तस्वत्
कूपाथडददभ-भ्रमडत धी-भथवदायुषां नः ।।१९

इडत गोप्यः प्रगायन्त्यः प्रलपन्त्यश्च डित्रधा,
रुरुधुः सुस्वरं राजन् कृष्ण-दिथन-लालसाः।
तासा माडवरभूत् ि ौरः स्मयमान-मुखामुबुजः,
पीताम्बर-धरः स्रग्वी सिाा-न्मन्मर्-मन्मरः ।।२०

अर्थ

गोशपयाँ शबरहावि में गाने लगीं ंः प्यारे! तुम्हारे जन्म के कारण वैकुण्ठ आशद लोकों ंसे भी ब्रज की मशहमा बढ़ गयी है। तभी तो सौन्दयथ और मृदुलता की देवी लक्ष्मी जो अपना शनवास स्ान बैकुण्ठ छिो कर यहाँ शनत्य शनरन्तर शनवास करने लगी हैं, इसकी सेवा करने लगी हैं। परनुतु शप्रयतम! देखो, तुम्हारी गोशपयाँ, शजन्ोंनें तुम्हारे ि रणों ंमें ही अपने प्राण समपथण कर रखे हैं, वन में भटक कर तुम्हें खोज रही हैं ।।१

हमारे पे्रेमपूणथ हृदय के स्वामी! हम तुम्हारी शबना मोल की दासी हैं। तुम ि रत्कालीन जलिाय में सुन्दर सरशजस कशणथका के सौन्दयथ को ि ुराने वाले नेत्रों ंसे हमको घायल कर ि ुके हो।

हमारे मनोरर् पूणथ करने वाले प्राणेश्वर! क्या नेत्रों ंसे मारना वध नहीं ंहै? अस्त्रों ंसे हत्या करना ही वध है?।।२

पुरुष-शिरोमणे ! यमुना जी के शवषैले जल से होने वाली मृतुयु, साँप का रूप धारण कर खाने वाले अघासुर, इन्द्र की वषाथ, आँधी, शबजली, दावानल, वृषभासुर और व्योमासुर आशद से एवं शभन्न-शभन्न अवसरों ंपर सब प्रकार के भयों ंसे तुमने हमारी रक्षा की है ।।३

तुम केवल यिोदानन्दन ही नहीं ंहो, समस्त िरीरधाररयों ंके हृदय में रहने वाले साक्षी हो, अन्तयाथमी हो । सखे ! ब्रह्मा जी की प्रार्थना से शवश्व की रक्षा करने के शलए तुम यदुवंिमें उत्पन्न हुए हो ।।४

अपने पे्रेशमयों ंकी अशभलाषा पूणथ करने वालों ंमें अग्रगण्य यदुवंिशिरोमणे ! जो लोग जन्म-मृतुयु-रूप संसार के िक्र से िर कर तुम्हारे िरणों ंकी िरण ग्रहण करते हैं, उन्ें तुम्हारे कर-कमल अपनी छत्र-छाया में ले कर शनभथय कर देते हैं। हमारे शप्रयतम ! सबकी लालसा-अशभलाषाओं ंको पूणथ करने वाला वही कर-कमल, शजससे तुमने लक्ष्मी जी का हार् पक़िा है, हमारे शिर पर रख दो ।।५

व्रजवाशसयों ं के दु:ख दूर करने वाले वीरशिरोमशण श्यामसुन्दर ! तुम्हारी मन्द मुस्कान की एक उज्वल रेखा ही तुम्हारे पे्रेमीजनों ं के सारे मानमद को िूरि-ूर कर देने के शलए पयाथप्त है। हमारे प्यारे सखा ! हमसे रूठो मत, पे्रेम करो। हम तो तुम्हारी दासी हैं, तुम्हारे िरणों ं पर शनछावर हैं। हम अबलाओं ं को अपना परम सुन्दर साँवला मुख-कमल शदखाओ ।। ६

समस्त तुम्हारे रिण-कमल रिणागत प्राशणयों ंके सारे पापों ंको नष्ट कर देते हैं। वे सौन्दयथ-माधुयथ की खान हैं और स्वयं लक्ष्मी जी उनकी सेवा करती हैं। तुम उन्ीं ं िरणों ं से हमारे बछ़िों ं के पीछे-पीछे िलते हो और हमारे शलए तुमने उन्ें साँप के फणों ं पर भी रखने में संको न शकया।हमाराहृदयतुम्हारीशवरह-व्यर्ाकीआगमेंजलरहाहै,तुम्हारेशमलनकीआकांक्षा हमको सता रही है। तुम अपने वही िरण हमारे वक्ष स्ल पर रख कर हमारे हृदय की ज्वाला को िान्त कर दो।।७

कमलनयन! तुम्हारी वाणी शकतनी मधुर है। उसका एक-एक िब्द, एक-एक अक्षर मधुरातीत मधुर है। ब़िे-ब़िे शवद्वान् उसमें रम जाते हैं, उस पर अपना सवथस्व शनछावर कर देते हैं। तुम्हारीउसवाणीकारसास्वादनकरकेतुम्हारीआज्ञाकाररणीदासीगोशपयाँमोशहतहोरहीहैं। दानवीर। अब तुम अपना शदव्य अमृत से भी मधुर अधर-रस शपला कर हमें जीवन दान दो ।।८

प्रभो! तुम्हारी जीवन-लीला-कर्ा भी अमृतस्वरूप है। शवरह से सताये हुए लोगों ं के शलए तो यह जीवनसवथस्वहीहै।ब़िे-ब़िेज्ञानीमहिाओं,ंभक्तकशवयों ंनेउसकागानशकयाहै।वहसारे पाप-ताप'को तो शमटाती ही है, सार् ही श्रवण मात्र से परम मगल, परम कल्याण का दान भी करती है। वह परम सुन्दर, परम मधुर और परम शवसूतृत भी है। जो तुम्हारी उस लीला-कर्ा का गान करते हैं, वास्तव में भूलोक में वे ही सबसे ब़िे दाता हैं ।।९

प्यारे! एक शदन वह रा, जब तुम्हारी पे्रेम-भरी हाँसी और शितवन तरा तुम्हारी तरह-तरह
की क्रि़ाओं ंका ध्यान करके हम आनन्द में मि हो जाया करती रीं।ं उनका ध्यान भी परम मंगलदायक है, और उसके
बाद तुम शमले। तुमने एकान्त में हृदयस्पिी शठठोशलयाँ कीं,ं पे्रेम की
बातें कहीं।ं हमारे कपटी शमत्र! अब वे सब बातें याद आ कर हमारे मन को कुषुब्ध शकये देती
हैं।।१०

हमारे प्यारे स्वामी! तुम्हारे िरण कमल से भी अशधक सुकोमल और सुन्दर हैं। जब तुम
गौओं ंको िराने के शलए व्रज से शनकलते हो, यह सिो कर शक तुम्हारे वे युगल िरण कंक़ि,
शतनके और कु-काँटे के ग़ि जाने से कष्ट पाते होंगें, हमारा मन बैिन हो जाता रा। हमें ब़ा
दुःख होता है।।११

शदन ढलने पर जब तुम वन से घर लौटते हो तो हम देखती हैं शक तुम्हारे मुख-कमल पर
नीली-नीली अलकें लटक रही हैं और गौओं ंके खुर से उ़ि-उ़िकर घनी धूल प़ी हुई है। हे
शप्रयतम। हम तो तुम्हारा वह सौन्दयथ देखती हैं और तुम हमारे हृदय में शमलन की आकांक्षा-पे्रेम
उत्पन्न करते हो ।।१२
शप्रयतम! एकमात्र तुम्हीं ंहमारे दुःखों ंको शमटाने वाले हो, तुम्हारे िरण-कमल िरणागत
भक्तों ंकी समस्त अशभलाषाओं ंको पूणथ करने वाले हैं। स्वयं लक्ष्मी जी उनकी सेवा करती हैं और
पृथ्वी के तो वे भूषण ही हैं। आपशत्त के समय एकमात्र उन्हीं ंका शिन्तन करना उशित है, शजससे
सारी शवपशत्तयाँ कट जाती हैं। कुंजशवहारी। तुम अपने परम कल्याण-स्वरूप िरण-कमल हमारे वक्ष
स्ल पर रख कर हमारे हृदय की व्यरा को ान्त कर दो ।।१३

वीर शिरोमणे! तुम्हारा अधरामृत शमलने के सुख की आकांक्षा को बढ़ाने वाला है। वह
शवरहजन्य समस्त ोक-सन्ताप को नष्ट कर देता है। गाने वाली वह बाँसुरी उसको भली-भाँशत
ूमिती रहती है। शजन्होंनें एक बार उसको पी शलया, उन लोगों ंको शफर दूसरों ंतरा दूसरों ंकी
आसत्मक्तयाँ का ध्यान भी नहीं ंहोता। हमारे वीर! अपना वही अधरामृत हमको शवतरण करो, हमको
शपलाओ ।।१४

प्यारे। शदन के समय जब तुम वन में शवहार करने के शलए िले जाते हो, तब तुम्हें देखे
शबना हमारे शलए एक-एक क्षण युग के समान हो जाता है और जब तुम सन्ध्या के समय लौटते
हो तरा घुँघराली अलकों ंसे युक्त तुम्हारा परम सुन्दर मुखारशवन्द हम देखती हैं, उस समय पलकों ं
का शगरना हमारे शलए भार हो जाता है और ऐसा जान प़िता है शक इन नेत्रों ंकी पलकों ंको
बनाने वाला शवधाता मूखथ ही है ।।१५

प्यारे श्यामसुन्दर! हम अपने पशत, पुत्र, भाई, बनुधु और कुल (पररवार) का त्याग कर,
उनकी इच्छा और आज्ञाओं ंका उल्लंघन करके तुम्हारे पास आयी हैं। हम तुम्हारी एक-एक िाल
जानती हैं और संकेत समझती हैं और तुम्हारे मधुर गान की गशत समझ कर उसी से मोशहत हो
कर यहाँ आयी हैं। कपटी ! इस प्रकार राशत्र के समय आयी हुई युवशतयों ंको तुम्हारे शसवा और
कौन त्याग सकता है?।।१६

प्यारे ! एकान्त में तुम शमलन की आकांक्षा, पे्रेमभाव को जगाने वाली बातें शकया करते रे।
शठठोली करके हमको छ़िते रे। तुम पे्रेमभरी शितवन से हमारी ओर देख कर मुस्करा शदया करते

रे और हम लक्ष्मी-शनकेतन तुम्हारा शविाल वक्षु:स्ल देखती रीं।ं तब से अब तक हमारी लालसा शनरन्तर बढ़ती जा रही है। हमारा मन अशधकाशधक मुग्ध होता जा रहा है ।।१७

प्यारे ! तुम्हारी यह अशभव्यत्मक्त व्रज-वनवाशसयों ंके समूपूणथ ोक-ताप को शमटाने वाली और शवश्व का पूणथ मंगल करने के शलए है। हमारा हृदय तुम्हारे प्रशत लालसा से भरा हुआ है। कुछ रीी-सी ऐसी औषशध दो जो तुम्हारे स्वजनों ंके हृदय रोग को सवथरा शनमूथल कर दे ।।१८

तुम्हारे रण कमल से भी सुकुमार हैं। उन्ें हम अपने स्तनों ंपर भी रतेि-रते बहुत धीरे से रखती हैं शक कहीं ंउनको ोट न लग जाये। उन्ीं ंरणों ंसे तुम राशत्र के समय घोर जंगल में शछपे-शछपे घटक रहे हो। क्या कंक़ि-पत्थर आशद की ोट लगने से उनमें पीा नहीं ंहोती ? हमें तो उसकी सम्भावना मात्र से क्कर आ रहा है। हम अित होती जा रही है। श्रीकृष्ण। श्यामसुन्दर। प्राणनार्। हमारा जीवन तुम्हारे शलए है। हम तुम्हारे शलए ही जी रही हैं, हम तुम्हारी हैं ।।१९

इस भाँशत गोशपयाँ उच्च स्वर से श्रीकृष्ण का गुणगान करने लगीं।ं वे श्रीकृष्ण के दिथन के शलए क्रन्दन करने लगी और उनका वह रुदन ही गान के रूप में फूट शनकला। ठीक उसी समय भगवान् श्रीकृष्ण पीताम्बर तरा बनमाला धारण शकये हुए उनके बीि प्रकट हो गये ।।२०

१३. काशलय-मदथनं-अर् बाररशण

(श्री मेप्पतूतूर नारायण भट्टपाद रशित 'श्रीमन्नारायणीयम्' से)

श्लोक

वसुदेव-सुतंदेवंकंसाि-ूर-मदथनम्।
देवकी-परमानन्दंकृष्णंवन्दे जगद् गुरुम् ।।

मैंजगद्गुरु भगवान् श्रीकृष्ण की वन्दना करता हाँ, जो बसुदेव जी का पुत्र है, जो स्वयं भगवान्है,शजसने कंस और ाणूर राक्षसों ंका वध शकया तरा जो माता देवकी को परम आनन्द देने वालाहै।

गीत

अर् वाररडि घोरतरं फडिनं
प्रडतवारडयतुं कृतधी-भथगवन्।
ति-माररर् तीरग-नीप-तरुं
डवष-मारुतोडषत-पिथि-यम्। ।।१

अडधरुह्य पदामुबुरुहे ि तं
नव-पिव-तुल्य-मनोज्ञ-रिा ।
हृद-वाररडि दूरतरं न्यपत:
पररघूडिथत-घोर-तरंग-गि ।।२
भुवन-त्रय-भार-भृतो भवतो

गुरु-भार-डवकस्तम्प-डवजृस्तम्भ-जला ।
पररमज्जयडत स्म धनुः ितकं
तडटनी र्डटडत सुफुट-घोषवती ।।३

अर् डदुि डवडदुि परस्रिुडभत-
भ्रडमतोदर-वारर-डननाद-भरैः ।
उदका-दुदगा-दुरगाडधपडतः
त्वदुपान्त-मिान्त-रुषान्ध -मनः ।।४

फि-शृंग-सहस्र-डवडनःसृमर-
ज्वल-दडग्न-किोग्र डवषामुबु-धरम् ।
पुरतः फडिनं समलोकयर्
बहु-शृंडगि-मंजनै-ल-डमव ।।५

ज्वल-दडि-पररिर-दुग्र-डवष-
श्वसनोष्म-भरः स महा-भुजगः ।
पररदश्य भवन्त-मनन्त-बलं
समवेष्टय-दसुफुटै-ष्ट-महो ।।६

अडवलोक्य भवन्त-मर्ाकुडलते
तट गाडमडन बालक-धेनु-गि ।
व्रज-गेह-तलेऽप्यडनडमत्तं-तं
समुदीक्ष्य गता यमुनां पुिपाः ।।७

अस्तखलेषु डवभो भवदीय-दिं
अवलोक्य डजहासुषु जीवभरम् ।
फडि-बन्धन-मिु डवमुच्य जवाद्-
उदगम्यत हास-जुषा भवता ।।८

अडधरुह्य ततः फडि-राज फिान्
ननृते भवता मृदु-पाद-रिा।
कल डिंडजत नूपुर-मंजु-डमलत्
कर-कंकि-संकुल-संक्वडितम् ।।९

जहषुः पुिपा-सुततुषु-मुथनयो
ववृषुः कुसुमाडन सुरेन्द्र-गाः ।
त्वडय नृत्यडत मारुत-गेह-पते
पररपाडह स मां त्व-मदान्त-गदात् ।।१०

हे भगवन्! तू यमुना के जल में शनवास करने वाले उस महा सपथ का शवनिा करने का शनश्चय कर नदी के तट पर रहने वाले कदम्ब-वृक्ष पर ढ़ गया, शजसके सारे पत्ते शवष-वायु से
सूख गये रे ।।१

उस कदम्ब-वृक्ष पर तू ढ़ गया और नव-पल्लवों के समान कात्मन्तयुक्त अपने रण-कमल से नदी का जल दूर तक शहलाने लगा शजससे नदी में जोर से लहरें उठने लगीं ।।२

शिक तू तीनों लोकों का भार वहन करता है, तेरे उस महान् भार से नदी का जल सौ-सौ धनुष की उँाई तक उठने लगा और तटवती प्रदे में महान् कोलाहल मिने लगा ।।३

अब इस प्रकार ारों शदाओं में उमिते, क्कर लगाते पानी के कोलाहल के बी सपथराज पानी से बाहर शनकल कर, ब्रि क्रोध से अन्धा हो कर तेरे पास आया ।।४

उसके हजारों फन पवथत की ोशटयों की तरह दीख रहे रे, उनमें जलते अंगारे के समान शवष उमि रहा रा जो बादलों के समान दीखता रा। तू कई ोशटयों वाले अंजन पवथत के समान दीख रहा रा ।।५

उस महा सपथ की आँखें जल रही रीं। वह ब्री गरम उसासों के सार् तीव्र शवष उगल रहा रा। अनन्त त्मक्त से सम्पन्न तुमको कुछ भी शविशलत न होते देख कर वह तुम्हें लपेटने लगा ।।६

यमुना के तट पर सारे गोप बालक और पिु तुझे न देख पाने के कारण तरा घर में भी कई प्रकार के असगुन होते देख कर सब ग्वाल यमुना के पास ले आये ।।७

उन लोगों ने जब तेरी अवस्ा देखी, तब इतने दुःखी हुए शक सबने अपने प्राण त्याग करने का शनश्चय कर शलया। यह देख कर तू सपथ के बन्धन को छुा कर ीघ्र ही हाँसनुमुख हो बाहर आ गया ।।८

और तब सपथराज के फनों पर तू ढ़ गया और अपने मृदुल पाद-कमलों से, नुपूर के सुमधुर शननाद तरा हारों के कंकण की मनोहर ध्वशन के सार् वहाँ निाने लगा ।।९

हे गुरुवागूर, तुझे यों नृत्य करते देख कर गोपालक हशषथत हुए, मुशनजन सनुतुष्ट हुए, देवगण आकिा से पुष्प वषाथ करने लगे। तू मेरी रक्षा कर जो दुशनथवार रोग से पीशित

नामावली

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

श्री डवषुण्स्तोत्रम्

१४. अचुयुतं किवं

(श्री ंकरिायथकृतम्)

श्लोक

आदौ देवडक-देडव-गभथ-जननं गोपी-गृहे वधथनं
माया-पूतन-जीडवतापहरिं गोवधथनोद्धारिम् ।
कंसिदन-कौरवाडद-हननं कुन्ती-सुतापालनं
एकद् भागवतं पुरि-कडर्तं श्रीकृष्ण-लीलामृतम् ।।

प्रारम्भमेंदेवकी देवी के गभथ में जन्म ग्रहण करना, गोपी (यिोदा) के घस ालन-पालन होना,मायाशवनीपूतना का प्राण-हरण, गोवधथन-पवथत को धारण करना स तर्ा दूसरे असुरों ंका वध,कौरवतर्ाउनके साथयों ंका शवनि, कुन्ती के पुत्रों ंक 1-संक्षेप में भागवतमहापुराण में श्रीकृष्णकीयहीअमृतरूपी लीला-कर्ा है।

गीत

अच्युतं केिवंराम-नारायिं
कृष्ण-दामोदरंवासुदेवं हररम् ।
श्रीधरं माधवंगोडपका-विभं,
जानकी-नायकं रामिनं्द्रं भजे ।।१

अच्युतं केिवंसत्यभामा-धवं,
माधवं श्रीधरंराडधकाराडधतम् ।
इस्तन्दरा-मस्तन्दरीतिसा सुन्दरं
देवकी नन्दनंनन्दजं सन्दधे ।।२

डवष्णवे डजष्णर्विस्तखने िडक्रि
रुस्तिी-राडगिजानकी-जानये ।
विभी-विभायाडिथतायात्मने,
कंस-डवधं्वंडसने वंडिने ते नमः ।।३

कृष्ण गोडवन्द हे राम नारायि,
श्रीपते वासुदेवाडजत श्रीडनधे ।
अच्युतानन्द हे माधवाधिोज,
रिका-नायक द्रौपदी-रिक ।।४

रिास िोडभतः सीतया िोडभतो,
दण्डकारण्य-भू पुण्यता-कारिः
लक्ष्मेिनोस्तन्वतो वानरैः सेडवतोऽ
गस्त्य-समूपूडजतो राघवः पातु माम् ।।५

धेनुकाररष्टकाडनष्ट-कृद्िडषतः,
केडिहा कंस-हृद्-वंडिका-वादकः ।

पूतना-कोपकः सूरजा खेलनो,
बाल-गोपालकः पातु मां सवथदा ।।६

डवद्युदुद्योतवत्-प्रसुफुर ासं,
प्रावृ-दम्भोदवत्-प्रिोस-डिग्रहम् ।
वन्यया मालया ोडभतोरः-स्लं,
लोडहतांडि यं वाररजिां भजे ।।७

कुंडितैः कुन्तलै-डजमाननं,
रत्न-मौडलं लस-तुकुण्डलं गण्डयोः ।
हार-केयूरकं कंकि-प्रोज्वलं, मागिी
डकंडकिी-मंजुलं श्यामलं तं भजे ॥८

अचुयुतस्याष्टकं यः पठे-डदष्टदं,
पे्रेमतः प्रत्यहं पूरुषः ससूपृहम्।में डमली
वृत्ततः सुन्दरं कतृथ-डवश्वम्भर-
स्तस्य वश्यो हरर-जाथयते सत्वरम् ।।९

अर्थ

अचुयुत, किेव, राम, नारायण, कृष्ण, दामोदर, वासुदेव, हरर, श्रीधर, माधव, गोशपकावल्लभ तर्ा जानकीनार् रामिन्द्र को मैं भजता हाँ।।१

अचुयुत, किेव, सत्यभामापशत, लक्ष्मीपशत, श्रीधर, राशधका जी द्वारा आराशधत, लक्ष्मीशनवास, परम सुन्दर, देवकीनन्दन, नन्दकु मार का शित्त से मैं ध्यान करता हाँ।।२

जो शवभु है, शवजय है, िंखि क्र-धारी है, रुत्मिणी जी का परम पे्रेमी है, जानकी जी शजसकी धमथपत्नी हैं तर्ा जो व्रजांगनाओं ं का प्राणाधार है, उस परम पूज्य, आिस्वरूप, कसशवनिाक, मुरलीमनोहर को नमस्कार करता हाँ।।३

हे कृष्ण! हे गोशवन्द! हे राम' हे नारायण ! हे रमानार्। हे वासुदेव! हे अजय! हे ीभिाधाम' हे अचुयुत! हे अनन्त' हे माधव ! हे अधोक्षज (इत्मन्द्रयातीत) । हे द्वारकानार्! हे ीपिदीरक्षक! मुझ पर कृ पा करो ।।४

जो राक्षसों ं पर अशत कुशपत है, श्री सीता जी से ोशभत है, दण्डकारण्य की भूशम की पशवत्रता का कारण है, श्री लक्ष्मी जी द्वारा अनुगत है, वानरों ं से सेशवत है और श्री अगस्त्य जी से पूशजत है, वह रघुकु ल में उत्पन्न श्री रामिन्द्र मेरी रक्षा करें ।।५

धेनुक और अररष्टासुर आशद का नि करने वाला, ितुरुओं ं का धं्वस करने वाला, किी और कस का वध करने वाला, वंि बिजाने वाला, पूतना पर कोप करने वाला, यमुना-तट शवहारी, बाल-गोपाल श्रीकृ ष्ण सदा मेरी रक्षा करें ।।६

शवद्युत् प्रकि के सदृि शजसका पीताम्बर शवभाशसत हो रहा है, वषाथकालीन मेघ के समान शजसका ि◌रीर अशत ि◌ोभायमान है, शजसका वक्ष स्ल वनमाला से शवभूशषत है और ि◌रणयुगल अरुण वणथ के हैं, उस कमल-नयन श्री हरर को मैं भजता हाँ।।७

शजसका मुख घुाँघराली अलकों ◌ंसे सुिोशभत है, मस्तक पर मशणमय मुकुट ि◌ोभा दे रहा है तर्ा कपोलों ◌ंपर कुण्डल सुिोशभत हैं, उज्ज्वल हार, भुजबन्द, कंकण और सुन्दर शंकंशकणी से सुिोशभत मनोहर मूशतथ श्री श्यामसुन्दर को भजता हाँ।।८

जो पुरुष इस अशत सुन्दर छन्दों ◌ंवाले और अभीष्ट फलदायक अच्युताष्टक का प्रेरेष और श्रद्धा से शनत्य पाठ करता है, शवश्वम्भर, शवश्वकताथ श्री हरर ि◌ीघ्र ही उसके वीभूत हो जाते हैं ।।९

१५. जय शवठ्ठल शवठ्ठल

श्लोक

दृष्ट्वेदं मानुषं रूपंतवसौम्ंयंजनादथन ।
इदानी-मस्तस्म संवृत्तःसैताःप्रकृडतं गतः ।।

हे जनादथन, अब तेरा यह मानवीय सौम्य रूप देख कर मैंने समाधान प्राप्त शकया हैऔर मैं स्वस्शित्त हुआ हाँ।

गीत

जय डवठ्ठल डवठ्ठल डवठ्ठल,जयडवठ्ठलपाणुडुरंग
जय डवठ्ठल डवठ्ठल डवठ्ठल,ओडवट्ठलडवठ्ठल डवठ्ठल
जय डवठ्ठल डवठ्ठल डवठ्ठल,जयडवठ्ठलपाणुडुरंग
जय डवट्ठलपाणुडुरंग

नामावली

जय जय शवठ्ठलपाणुडुरंग शवट्ठल।

१६. हरर तुम हरो जन की भीर

(श्री मीराबाईकृत)

श्लोक

भजे व्रजैक-मण्डनं समस्त-पाप-खण्डनं

स्वभक्त-डित्त रंजनं सदैव नन्द-नन्दनम् ।
सुपस्ति गि-मस्तकं सुनाद-वि-हस्तकं
अनंग-रंग-सागरं नमाडम कृष्ण-नागरम् ।।

अर्थ

मैंसदाउस नन्दकुमार नटवर कृष्ण भगवान् की वन्दना करता है तरा उसी को भजता हं, जो व्रजकाभूषण है, जो समूपूणथ पापों ंका निा करता है, जो अपने भक्तों ंके हृदय को आनत्मन्दतकरताहै, शजसके शिर पर मोर-शपच्छ का गुच्छा, हार् में मधुर वि है तरा जो सौन्दयों का सागरहै।

गीत

हरर तुमहरोजनकीभीर।
द्रौपदी की लाज राखीतुमबढायिोीर।।१।।हरर...

भक्त कारन रूप नरहररधस्योआपिरीर।
डहरण्यकडिपु मार लीन्ों ंधस्योनाहीं ंधीर।।२।।हरर...

बूडते गजराज राख्योडकयोबाहरनीर।
दासी मीरा लाल डगररधर ि रनकमलपरसीर।।३।।हरर...

हेहरर,तूअपनेभक्तों ंकीपिा़ीकाशनवारणकर। तूनौपदी की सि़ी को बढ़ा कर उसकी लज्जा की रक्षा की ।।१

तूनेअपनेभक्तप्रह्लादकोबिानेके शलएनृशसंह-रूपधारणशकया तरा शहरण्यकशिपु का संहारशकया।प्रह्लादकोबिानेके शलएतूइतनाउतावलाहोरहारा।।२

तूनूबतेहुएगजेन्द्रकोबियाऔरउसेजलसेबाहरशनकाला । हे शगररधर! तेरी दासी 'मीरा' तेरे ि रण-कमल पर अपना मस्तक रखती है ।।३

नामावली

हरर तुम हरोजनकीभीर।
हरर हरर हरर बोल,हररहररहररॐ।

१७. महायोग-पीठे

(श्री ि ंकरिायथकृतम्)

श्लोक

समि-रि-सरोजं सान्द्र-नीलामुबुदाभं
जघन-डनडहत-पाडिं मण्डनं मण्डनानाम् ।
तरि-तुलडस-माला-कन्धरं कंजनेत्रं
सदय-धवल-हासं डवट्ठलं डिन्तयाडम ।।

मैं उस भगवान् शवठ्ठल का ध्यान करता हाँ शजसके कमलसदृि दोनों ंिरण सामंजयपूणथ हैं, शजसकी कात्मन्त नवमेघ के समान नील है, शजसने अपने दोनों ंहार् कशट-प्रदे में रखे हैं, संसार के सब आभूषणों ंका जो आभूषण है, शजसने गले में नवीन तुलसी-माला पहनी है, शजसके नेत्र कमल-सदृि हैं तर्ा शजसके मुख पर दयापूणथ और उज्ज्वल त्मस्मत है।

गीत

महा-योग-पीठेतटेभीम-रथ्ां,
वरं पुण्डरीकायदातुंमुनीनै्रैः ।
समागत्य डतष्ठन्त-मानन्द-कनं्दं,
परब्र्ह्म-डलंगं भजे पाणुडुरंगम् ।।१

तडि-ासंसं नील-मेघावभासं,
रमा-मस्तन्दरं सुन्दरं डित्प्रकिाम् ।

वरं स्तत्वष्ट-कायं सम नय्स्त-पादं
परब्र्ह्म-डलंगं भजे पाणुडुरंगम् ।।२

प्रमिां भवाबे्धे-ररदं मामकानां
डनतम्बः कराभ्यां धृतो येन तस्मात् ।
डवधातुवथसत्यै धृतो नाडभ-र्किो,
परब्र्ह्म-डलंगं भजे पाणुडुरंगम् ।।३

सुफुरत्कौसुतुभालंकृतं कण्ठदे,
डश्रया जुष्टकेयूरकं श्री-डनवासम् ।
डिवं ान्त-मीड्ंयं वरं लोक-पालं,
परब्र्ह्म-डलगं भजे पाणुडुरंगम् ।।४

रिच्चन्द्र-डबम्बाननं ारु-हासं,
लसत्-कुण्डलाक्रान्त-गण्ड-स्लांगम् ।
जपा-राग-डबम्बाधरं कंज-नेत्रं,
परब्र्ह्म-डलंगं भजे पाणुडुरंगम् ।।५

डकरीटोज्ज्वलत्-सवथ-डदक्प्रान्त-भागं,
सुरै-रडिथतं डदव्य-रत्नै-रनधैः ।
डत्रभंगाकृडतं बहथ-माल्यावतंसं,

परब्ह्म-डलंगं भजे पाणुडुरंगम् ।।६

डवभुं विुनादं िरनंतं दुरनंतं,
स्वयं लीलया गोप-वेषं दधानम् ।
गवां वृन्दकानन्ददं िारुहासं,
परब्ह्म-डलंगं भजे पाणुडुरंगम् ।।७

अजं रुक्मिी-प्रिा-संजीवनं तं,
परं धाम कैवल्य-मेकं तुरीयम् ।
प्रसनंनं प्रपन्नाडतथहं देवदेवं,
परब्ह्म-डलंगं भजे पाणुडुरंगम् ।।८

स्तवं पाणुडुरंगस्य वै पुण्यदं ये,
पठेनेत्येकडितेतेन भक्त्या ि डनत्यम् ।
भवाम्भोडनडधं तेऽडप तीध्वाथन्तकाले,
हरेरालयं िाश्वतं प्रापुनुवस्तन्त ।।९

परब्रह्म के प्रतीक पाणुडुरंग का मैं भजन करता हाँ जो भगीरर्ी नदी के तट पर, पुण्डरीक को वर प्रदान करने के शलए मुशनजनों ंके संग आ कर महायोग-मिु में ख़िा है तर्ा आनन्द देने वाला है।॥१-

परब्रह्म के प्रतीक उस पाणुडुरंग का मैं भजन करता हाँ जो नीलमेघध-सदृि श्याम है, शजसके वस्त्र शवद्युत् के समान कात्मन्तमान् है, जो श्री लक्ष्मी का मत्मन्दर है, सुन्दर है, ज्ञान के प्रकि से भरा है और जो अपने जिु हुए दोनों ंपैरों ंको ईंट पर रख कर ख़िा है ।।२

शजसने मेरे समान लोगों ंको यह बताने के शलए शक मेरे भक्तों ंके शलए भवसागर की गहराई इतनी ही है, अपने दोनों ंहार् कशट-प्रदेि में रख रखे हैं तर्ा ब्रह्मा के शनवास-स्र्ान कमल को अपने नाशभ-प्रदेि में धारण कर रखा है, उस परब्रह्म के प्रतीक पाणुडुरंग का मैं भजन करता हाँ।।३

परब्रह्म के प्रतीक पाणुडुरंग का मैं भजन करता हाँ जो प्रकियुक्त कौसुतुभमशण को गले में पहनता है, शजसके भुजबन्ध सुन्दरता से िमक रहे हैं, जो साक्षात् लक्ष्मी का भी आवास है, जो मंगलकारी है, िान्त है, सुतुत्य है, श्रेष्ठ है तर्ा लोकरक्षक है ।।४

परब्रह्म के प्रतीक पाणुडुरंग का मैं भजन करता हाँ शजसका मुख िरत्कालीन िन्द्र-मण्डल के समान है, शजसकी मुस्कान मीठी है, गण्ड-प्रदेि में कुण्डल आ कर लटक रहे हैं, जपापुष्प के समान लाल-लाल ओठ हैं, कमल-सदृि नेत्र हैं ।।५

प्रतीकपाणुडुरंगका मैं भजन करता हाँ शजसके मुकुट के प्रकि से सारी शदिाएँ प्रकाशितहैं,जोदेवताओं ंसे शदव्य और अनमोल रत्नों ंद्वारा पूशजत है, शत्रभंगी आकार में ख़िा है और मोरकेपंखों ंसेसमलंकृत है।। ६

परब्रह्मकेप्रतीकपाणुडुरंगकामैंभजनकरताहाँजोसवथव्यापी है, मुरली बजाता है और
जो अन्तरशहतहै,स्वयंलीलासेग्वालवेषधारणकरनेवालाहै,गो-समूह को आनन्द देने वाला और सुन्दरमुस्कानवालाहै।।७।।

जोअजन्माहै,रुत्मिणीकेशलएसंजीवनहै,जोस्वयंपरम धाम है, कैवल्य है और
तुरीयअवस्ाहै,जोसदाप्रसन्नरहताहै,िरणागतों ंकीपिीाशमटाता है, देवों ंका देव है, उस
परब्रह्म के प्रतीक पाणुडुरंग का मैं भजन करता हाँ।।८

जोलोगपाणुडुरंगके इसपुण्यप्रदस्तोत्रकाशनत्यभत्मक्तपूवथक एकाग्र मन से पाठ करते
हैं,वेअन्तकालमेंसंसार-सागरकोपारकरके श्रीहररकिाश्वत धाम प्राप्त करते हैं।।९

नामावली

परब्र्ह्म रूपंभजेपाणुडुरंगम्।

१८. प्रलयपयोशधजले

(दिावतार-स्तोत्रम्)
(श्रीजयदेवकृतम्)

श्लोक

वेदा-नुद्धरते जगस्तन्तवहतेभूगोल-मुडिभ्रते,
दैत्ंयं दारयते बडलंछलयतित्रि–यं कुवथते ।
पौलस्त्यं जयते हलंकलयतेकारुण्य-मातन्वते,
मे्लिान् मूिथयते दिाकृडत-कृतेकृष्णाय तुभ्ंयं नमः ।।

उस कृष्ण को नमस्कार है शजसने (मत्स्य का रूप धारण कर) वेदों ंका उद्धार शकया,
(वाराह-रूप धारण कर) प्रलयपयोशनशध से पृथ्वी का उद्धार शकया, (कूमथ-रूप से) जगत् को
धारण शकया, (नृशसंह-रूप से) शहरण्यकशिपु दैत्य का संहार शकया, (वामन-अवतार से) बशल को
छला, (पशिुराम का रूप धारण कर) क्षशत्रयों ंका संहार शकया, (रामावतार में) रावण को मारा,
(बलराम-अवतार में) हलधर बना, (बौद्धावतार में) करुणा का प्रसार शकया, (कत्मि अवतार में)
मे्लेच्छों ंकोमूत्मच्छथत शकया। उस एक प्रभु ने ही इन दिावतारों ंसे अनेक लीलाएँ कीं।ं

गीत

प्रलय-पयोडध-जले धृतवा-नडस वेदम् ।
डवडहत-वडहत्रि–ररत्र-मखेदम् ।।

केव धृत-मीनि-रीर जय जगदीि हरे ।
गोपालकृष्ण जय जगदीि हरे ।।१

डिडत-रडतडवपुलतरे तव डतष्ठडत पृष्ठे ।
धरिी-धरि-डकि-क्र-गररष्ठे ।।
केव धृत-किप-रूप जय जगदीि हरे ।
गोपालकृष्ण जय जगदीि हरे ।।२

वसडत दिन-डिखरे धरिी तव लग्ना ।
डिडिन कलंक-कलेव डनमग्ना ।।
केव धृत-सूकर-रूप जय जगदीि हरे।
गोपालकृष्ण जय जगदीि हरे ।।३

तव कर-कमल-वरे नख-मद्भुत -
शंगम् । दडलत-डहरण्यकडिपु-तनु-भृंगम् ।।
केव धृत-नरहरर-रूप जय जगदीि हरे ।
गोपालकृष्ण जय जगदीि हरे ।।४

छलयडस डवक्रमे बडल-मि्भुत-वामन ।
पद-नख-नीरजडनत-जनपावन ।।
केव धृत-वामन-रूप जय जगदीि हरे ।
गोपालकृष्ण जय जगदीि हरे ।।५

डित्रय-रुडधरमये जग-दपगत-पापम् ।
स्नपयडस पयडस ि्डमत-भव-तापम् ।।
केव धृत-भृगुपडत-रूप जय जगदीि हरे ।
गोपालकृष्ण जय जगदीि हरे ।।६

डवतरडस डदु रि डदक्पडत-कमनीयम् ।
दिमुख-मौडल-बडलं रमीियम् ।।
केव धृत-रघुपडत-रूप जय जगदीि रहे ।
गोपालकृष्ण जय जगदीि हरे ।।७

वहडस वपुडष डविदे वसनं जलदाभम् ।
हल-हडत-भीडत-डमडलत-यमुनाभम् ।।
केव धृत-हल-धर-रूप जय जगदीि हरे ।
गोपालकृष्ण जय जगदीि हरे ।।८

डनन्दडस यज्ञ-डवधे-रहह शुरुडतजातम् ।
सदय-हृदय-दडिथत-पिु-घातम् ।।
केव धृत-बुद्धि-रीर जय जगदीि हरे।
गोपालकृष्ण जय जगदीि हरे ।।९

मे्लि-डनवह-डनधनेकलयडसकरवालम् ।
धूमकेतु-डमवडकमडपकरालम् ।।
किव धृत-कस्तल्कि-रीरजयजगदीि हरे ।
गोपालकृष्ण जयजगदीिहरे ।।१०

श्री जयदेव-कवे-ररद-मुडदत-मुदारम् ।
शि सुखदं ुिभदं भवसारम् ।।
किव धृत-दिडवध-रूप जय जगदीि हरे ।
गोपालकृष्ण जय जगदीि हरे ।।११

हे किव। प्रलय-काल में बढ़ते हुए समिु-जल में शबना के्लि नौका िलाने की लीला करते हुए तू वेदों ंकी रक्षा करता है , ऐसे मत्स्यरूपधारी जगत्पशत, हरर, तेरी जय हो !!१

हे किव। तूने अपनी कठोर और दृढ़ पीठ पर पृथ्वी को धारण कर रखा है, ऐसे कच्छपरूपधारी जगत्पशत, हरर, तेरी जय हो ।।२

हे किव। िन्द्रमा में शनमि हुई कलंक-रेखा के समान यह पृथ्वी तेरे दाँत की नोक पर अटकी हुई सिुोशभत हो रही है, ऐसे ि ूकररूपधारी जगत्पशत, हरर, तेरी जय हो !!३

हे किव ! शहरण्यकशिपु के िरीर को ीिर िालने वाले शवशित्र नुकीले नख तेरे करकमल में हैं, ऐसे नृशसंहरूपधारी जगत्पशत, हरर, तेरी जय हो!!४

हे किव ! तू पैर बढ़ा कर राजा बशल को छलता है तर्ा अपने िरण-नखों ंके जल से लोगों ंको पशवत्र करता है, ऐसे हे अद्भुत वामनरूपधारी जगत्पशत, हरर, तेरी जय हो!!५

हे किव ! तू जगत् के पाप और तापों ंका निा करते हुए उसे क्षशत्रयों ंके रुशधर-रूप जल से ान कराता है, ऐसे हे पशिुामरूपधारी जगत्पशत, हरर, तेरी जय हो !!६

हे किव! तू युद्ध में रावण के शिरों ंकी बशल दे कर सब शदिाओं ंके लोकपालों ंको प्रसन्न करता है, ऐसे रामावतारधारी जगत्पशत, हरर, तेरी जय हो!! ७

हे किव ! तू अपने गौर वणथ वाले िरीर पर मेघ-सदृि नीलाम्बर धारण शकये रहता है, मानो तेरे हलास्त्र के भय से यमुना ने तुम्हारे वस्त्र का रूप ले रखा है, ऐसे बलरामरूपधारी जगत्पशत, हरर, तेरी जय हो !!८

हे किव ! सदय हृदय से पुिहत्या की कठोरता शदखाते हुए यज्ञ-शवधान-सम्बन्धी शुरुशतयों ं की शनन्दा करने वाले बुद्धरूपधारी जगत्पशत, हरर, तेरी जय हो !!९

हे किव। जो मे्लेच्छ-समूह का निा करने के शलए धूमकेतु के समान अत्यन्त भयंकर तलवार िलाता है, ऐसे कत्मिरूपधारी जगत्पशत, हरर, तेरी जय हो ।1१० (हे भक्तो) जयदेव

कशव की कही हुई इस मनोहर, आनन्ददायक, कल्याणमय तत्त्वरूपी सुतुशत को सुनो । हे दिावतारधारी। जगत्पशत, हरर, किव, तेरी जय हो !!११

नामावली

किव माधवगोडवन्द जय।
राधेकृष्ण मुकुन्दजय जय।।

१९. राधारमण कहो

डजस हाल में, डजस दि में, डजस वेष में रहो।
राधारमि, राधारमि, राधारमि कहो ।।१

डजस काम में, डजस धाम में, डजस गाँवमेंरहो।
राधारमि, राधारमि, राधारमि कहो।।२

डजस संग में, डजस रंग में, डजस ढंग में रहो।
राधारमि, राधारमि, राधारमि कहो ।।३

डजस योग में, डजस भोग में, डजस रोगमेंरहो।
राधारमि, राधारमि, राधारमि कहो।।४

२०. राम-कृष्ण-हरर

(सन्त किवदास कृत)

राम-कृष्ण-हरर, मुकुन्द-मुरारी।
पाणुडुरंग, पाणुडुरंग, पाणुडुरंगहरी।।१(राम . . .)

मकर-कुण्डल-धारी,भक्त-बनुधु ौरी।
मुस्तक्तदाता, स्तक्तदाता, डवट्ठलनरहरी।।२(राम . . .)

दीन बनुधु, कृपाडसनुधु,श्रीहरीश्रीहरी।
पावनांग, हे कृपांग,वासुदेवहरी।।३(राम ...)

तुलसीहार कन्धर,भक्त-हृदयमस्तन्दर।
मन्दराडिधर मुकुन्द, इस्तन्दरिश्रीहरी।।४(राम . . .)

जगत्रय जीवन,किवनारायि।
माधव जनादथन, आनन्दघनहरी।।५(राम . . .)

राजस सुकुमार,मोहनाकार।
करिसागर, अच्युतश्रीहरी।।६(राम...)

पुण्डलीक वरदा,पण्डररनारिुभदा।
अण्डजवाहन कृष्ण,पाणुडुरंगहरी।।७(राम . . .)

ज्ञानदेव संसुतुता,नामदेवकीडतथता।
तुकाराम पूडजता, दासकिवसनुनुता।।८(राम . . .)

२१. कृष्ण गोशवन्द गोशवन्द

कृ ष्ण गोशवन्द गोशवन्द गाते िलो,
मन को शवषयों ं के शवष से हटाते िलो ।।

देखना इत्मन्द्रयों ं के न घिो भगें,
रात शदन इनपे संयम के किो लगें ।
अपने रर् को सुमागथ बढ़ाते िलो ।। कृ ष्ण . . .

नाम जपते िलो काम करते िलो,
नाम धन का खजाना बढ़ाते िलो ।। कृ ष्ण . . .

सुख में सोना नहीं ं दुःख में रोना नहीं,ं
पे्रेम भत्मक्त के आँसू बहाते िलो ।। कृ ष्ण . . .

लोग कहते हैं भगवान् आते नहीं,ं
धुरुव की तरह से बुलाते नहीं,ं
भक्त प्रह्लाद के जैसा रटना करो ।। कृ ष्ण . . .

लोग कहते हैं भगवान् खाते नहीं,ं
किि शवदुर घर के जैसे त्मखलाते नहीं,ं
भक्त िबरी के जैसे त्मखलाया करो ।। कृष्ण...

लोग कहते हैं संकट में आते नहीं,ं
सती िौपदी की तरह से बुलाते नहीं,ं
टेर गज की तरह से सुनाते िलो ।। कृ ष्ण . . .

गिि किी िलो, िाहे मरुरा िलो ,
गिि प्रयागा िलो, िाहे अयोध्या िलो ,
पे्रेम भत्मक्त के मागथ बढ़ाते िलो ।। कृ ष्ण . . .

यादआवेगा प्रभु को कभी न कभी,
दासपावेगा प्रभु को कभी न कभी,
ऐसाशवश्वास मन में जमाते िलो ।। कृष्ण . . .

२२. नटवर लाल शगररधर गोपाल

नटवर लाल शगररधर गोपाल,
जय जयनन्दायिोदाके बाल।
सार सार सबके सार,
राधा रशसक वर रास शबहार ।।
स्फशटक स्फशटक मय गोशप मण्डल धाम,
गोशप गोशप मध्य मकरकत श्याम ।।
नटवर लाल...

धन्य धन्य व्रज गोशप धन्य हो,
धन्य वृन्दावन कुं ज धन्य हो।
व्रज मृग खग सब धन्य धन्य हो,
व्रज रज यमुना पुशलन धन्य हो ।।
नटवर लाल...

रिद पूशणथमा शनमथल यमुना,
अद्भुत रास महोत्सव अनुपम ।
सार सार सबके सार,
राधा रशसकशप्रयरासशबहार।।
नटवर लाल...

२३. कृष्ण पे्रेम मयी राधा

कृष्ण पे्रेम मरी् राधा, राधा पे्रेम मयो हररुः ।
जीवने शनधने शनतं्यं, राधा कृष्णी गशतमथम ।। (राधा कृष्णी)

कृष्ण प्राण मयी राधा, राधा प्राण मयो हररुः ।
जीवने शनधने शनतं्यं, राधा कृष्णौ गशतमथम ।। (राधा कृष्णी)

कृष्णाय िशवणं राधा, राधायाुः िशवणं हररुः ।
जीवने शनधने शनतं्यं, राधा कृष्णौ गशतमथम ।। (राधा कृष्णी)

कृष्ण िवा मयी राधा, राधा िवा मयो हररुः ।
जीवने शनधने शनतं्यं, राधा कृष्णौ गशतमथम ।। (राधा कृष्णौ)

कृष्ण देह त्मस्ता राधा, राधा देह त्मस्तो हररुः ।
जीवने शनधने शनत्ंयं, राधा कृष्णौ गशतमथम ।। राधा कृष्णौ)

कृष्ण शित्त त्मस्ता राधा, राधा शित्त त्मस्तो हररुः ।
जीवने शनधने शनत्ंयं, राधा कृष्णौ गशतमथम ।। (राधा कृष्णौ)

नीलाम्बर धरा राधा, पीताम्बर धरो हररुः ।
जीवने शनधने शनत्ंयं, राधा कृष्णौ गशतमथम ।। (राधा कृष्णौ)

बृन्दावनेश्वरी राधा, कृष्णौ बृन्दावनेश्वरुः ।
जीवने शनधने शनत्ंयं, राधा कृष्णौ गशतमथम ।। (राधा कृष्णौ)

गुरुवार

श्री गुरु -स्तोत्रम्

१. शवशदतात्मखलि-ाख-सुधा-जलपे

(श्री हस्तामलककृतम्)

श्लोक

पद्मासीनं प्रिान्ंतं यमडनरतमनंगारर-तुल्य-प्रभावं
फाले भस्मांडकताभं स्तस्मत-रुडिर-मुखाम्भोजडमन्दीवरिम्।
कमुबुग्रीव कराभ्यामडवहत-डवलसतुपुस्तकं ज्ञानमुद्र
वन्दयं गीवाथिमुखै्यै-नथत-जन-वरदं भावये ंकरायथम्।।

मैंउनभगवान्किरिाायथ जी का ध्यान करता हाँ जो पद्यासन लगाये बैठे हैं, ान्त बदन
हैं,यममेंलीनहैं,शजनका प्रभाव कामारर भगवान् शिव के समान है, मस्तक पर भस्म धारण शकयेहुएहैं,शजनकामुख-कमल मन्द हास से मनोहर है, शजनकी आँखें इन्दीवर पुष्प के समान
हैं,शजनकीगदथनिंखके समान है, शजनके हार्ों ंमें शनरन्तर पुस्तक सुिोशभत रहती है, जो ज्ञानमुिामेंहैं,देवताओं ंके प्रमुख भी शजनकी वन्दना करते हैं और जो प्रणतजनों ंको वरदान देते
हैं।

गीत

डवडदतास्तखलि-ास्त्र-सुधाजलधे
मडहतोपडनषत्कडर्ार्थ-डनधे ।
हृदये कलयेडवमलंर्रिं
भव ंकरदेडिकमिेरिम्।।१

करुि-वरुिालय पालय मां ।
भव-सागर-दुःख-डवदून-हृदम्
रडितास्तखल-दिथन-तत्त्वडवदं
भव ंकरदेडिक में ंरिम्।।२
भवता जनता सुस्तखता भडवता
डनज-बोध-डविारि-ारु-मते ।
कलयेऽश्वर-जीव-डववेक-डवदं
भव ंकरदेडिक मे ंरिम्।।३

भव एव भवाडनडत में डनतरां
समजायत ैतडस कौतुडकता।
मम वारय मोह-महा-जलडधं
भव ंकरदेडिक में ंरिम्।।४

सुकृतेऽडधकृते बहुधा भवतो
भडवता पद-दिथन-लालसता।
अडतदीन-डममं पररपालयमां
भव ंकंरदेडिक मे ंरिम्।।५

जगती-मडवतुं कडलताकृतयो
डविरस्तन्त महामहस-श्चडलताः।
अडहमांु-रिवात्र डवभाडसपुरो
भव ंकरदेडिक मे ंरिम्।।६

गुरु-पुंगव पुंगव-केतनते
समता-मयतां न डह कोऽडपसुधीः।
रिागत-वत्सल तत्त्व-डनधे

भव ंकरदेडिक मे ंरिम् ।।७

डवडदता न मया डविदैककला
न ं डकंनि कांनि-मस्तस्त गुरो ।
दुरुतमेव डवधेडह कृपां सहजां
भव ंकरदेडिक मे ंरिम् ।।८

समस्त ंास्त्र-रूपी अमृत-सागर के आप ज्ञाता हैं, पूजनीय उपशनषदों ं की अर्थ-रूपी शनशध को आपने(संसारकेसामने)कहाहै।आपकेशविुद्धिरणों ंकामैंअपनेहृदयमेंध्यानकरता हाँ। हे ओायर्थिंकर,आपमुझेरणदें।।१

हे करुणा-सागर, संसार-सागर के दु:ख से मेरा हृदय अत्यन्त पीशित है, आप मेरी रक्षा करें। आपने समस्त दिथनों ं के तत्त्वों ं का सत्य उद्घाशटत शकया है। है ओायथ ंकर, आप मुझे रिण दें ।॥२

आपके कारण ही सारा संसार सुखी हो सका है। आपकी बुत्मद्ध ओज्ञान की ंाथ में कु ंल है। आपने जीव और ईश्वर के शववेक को पहिाना है। आपका मैं ध्यान करता हाँ। हे ओायथ किर, आप मुझे ंरण दें ।।३

यह जान कर मुझे ब्रिा आनन्द हुआ है शक आप साक्षात् भगवान् शिव ही हैं। मेरे मोह-रूपी महासागर को आप दूर करें। हे ओायथ ंकर, मुझे ंरण दें ।।४

बहुत काल के महान् पुण्य-संयि से ही मुझमें आपके ंरण-दिथन की इच्छा उत्पन्न हुई है। मुझ अत्यन्तदीनकीआपरक्षाकरें।हेओायर्थिंकर,आपमुझेरण811^6

भूलोक की रक्षा करने के शलए आपके समान तेजस्वी ओाएँ मनुष्य-रूप धारण कर इधर-उधर घूमती रहती हैं। आप मेरे सामने सूयथ की तरह प्रकिामान हैं। हे ओायथ ंकर, आप मुझे रिण दें ।।६

हे मेरे गुरु महाराज! आप सारे गुरुओं ं में शे्रेष्ठ हैं। हे तत्त्वज्ञान के सागर, ऐसा कोई शवद्वान् नहीं ं है जो आपकी बराबरी कर सके। आप ंरण में आये हुओं ं पर अत्यन्त कृपा रखते हैं। हे ओायथ ंकर, आप मुझे ंरण दें ।।७

हे गुरुदेव, मुझे इस संसार में आपके अशतररक्त कोई भी सम्पशत्त या शनशध आपसे बढ़ कर नहीं ं शदखी शजसका संयि शकया जा सके। कृपा तो आपकी सहज वसुतु है, अतु: मुझ पर ंीघ्र कृ पा कीशजए। हे ओायथ ंकर, आप मुझे ंरण दें ।।८

नामावली

भव ंकरदेडिकमिेरिम्।
भव ंकरदेडिकमिेरिम्।।

२. देव-देव-शिवानन्द

(श्रीहृदयानन्दकृ तम्)

श्लोक

मंगलं योडगवयाथयमहनीय-गिुाब्धये ।
गंगा-तीर-डनवासायडिवानन्दाय मंगलम् ।।

जो योशगयों ंमें श्रेेष्ठ हैं, महान् गुणों ंके सागर हैं तर्ा गंगा के तट पर शनवास करते हैं, उन शिवानन्द जी का मंगल हो।

गीत

देव-देव-डिवानन्ददीनबन्धो पाडह माम् ।
न्द्रि-वदन मन्दहासपे्रेम-रूप रि माम् ।।
मधुर-गीत-गान-लोलज्ञान-रूप पाडह माम् ।
समस्त-लोक-पूजनीयमोहनांग रि माम् ।।१

डदव्य-गंगा-तीर-वासदानिील पाडह माम् ।
पाप-हरि पुण्यिलपरम-पुरुष रि माम् ।।
भक्त-लोक-हृदय-वासस्वाडमनार् पाडह माम् ।
डित्स्वरूप डिदानन्दडिवानन्द रि माम् ।।२

हेदेवों ंके देव,दीनों ंके बनुधुशिवानन्द,मेरीरक्षाकरो।हिेन्द्रमाके समानमुख वाले , मधुर मुस्कान वाले, पे्रेम-स्वरूप! मेरी रक्षा करो। हे मधुर गीत गाने में प्रसन्नशित्त, ज्ञान-स्वरूप ! मेरी रक्षा करो। हे सभी प्राशणयों ं के द्वारा पूशजत, मोहक अंगों ं वाले! मेरी रक्षा करो ।।१

हेगंगा-तटपरशनवासकरनेवाले,दानिील!मेरीरक्षाकरो।हेपापकोदूरकरने वाले , सद्गुणों ंकेआगार,परमपुरुष!मेरीरक्षाकरो।हेभक्तों ंकेहृदयमेंशनवासकरनेवाले प्रभु ! मेरी रक्षाकरो।हिैतन्यतर्ाआनन्द-स्वरूपशिवानन्द!मेरीरक्षाकरो।।२

नामावली

सद्गुरु जय सद्गुरु जय,सद्गुरु जय पाडह माम्। सद्गुरु जय सद्गुरु जय,सद्गुरु जय रि माम्।।

३. जय गुरुदेव दयाशनधे

जय गुरुदेव दयाडनधे, भगतन के डहतकारी।

डिवानन्द जय मोह डवनिाक, भव बन्धन हारी ।।
जय गुरुदेव...

ब्ह्मा डवषणु सदाडिव का,गुरुमूरडतधारी।
वेद पुरि करत बखाना, गुरुकीमडहमाभारी।।
जय गुरुदेव...

जप तप तीरर् िमयमदान,गुरुडबनानहीं ंहोवतज्ञान।
ज्ञान खि्ग से कमाथकाटे,गुरुनामसबपातकहारी।।
जय गुरुदेव...

तन मन धन सब अपथि कीजै,परमागडतमोपदलीजै।
सबके सहारा सद्गुरु नाम,अडवनिीअडवकारी।।
जय गुरुदेव...

नामावली

ॐ गुरुनार्जयगुरुनार्।
जय गुरुनार्डिवगुरुनार्।।
जय गुरुनार्जगद्गुरुनार्।
जगद्गुरुनार् परं गुरुनार् ।।
परं गुरुनार्सद्गुरुनार्।
सद्गुरुनार् जय गुरुनार् ।।
सस्तच्चदानन्द गुरु जय गुरु जय गुरु।
अजर अमरगुरुजयगुरुजयगुरु।।

४. आनन्द कुटीर के शदव्य देवता

आनन्द कुटीर के शदव्य देवता, शिवानन्द सदा अमर रहें।
अत्मखल शवश्व का दीप्त शसतारा, भारत ज्योशत जलती रहे ।।

पे्रेम भत्मक्त का दीप जले, हमें जागृशत का नव राह शमले ।
मानव दुःख शमटाते रहे, शिवानन्द सदा अमर रहें ।।
जलते जग में ित्मन्त शनराली, ज्ञान सुधा बरसाते रहे ।। आनन्द कुटीर के...

शिव ंकर का ले अवतार, दया पे्रेम का है भण्डार ।
जग को शदव्य बनाते रहें, शिवानन्द सदा अमर रहें ।।
संसार के पर् से दूर करें, हमें सत्य मागथ शदखलाते रहें ।। आनन्द कुटीर के . . .

मुख में हरर का गीत रहे, और शिव के िरणों ंमें प्रीत रहे ।
अमृत गीत सुनाते रहें, शिवानन्द सदा अमर रहें ।।
इस धरती पर युग युग स्वामी, 'रामपे्रेम' बरसाते रहें ।।आनन्द कुटीर के...

५. श्री दत्तात्रेयस्तोत्रम्

डदगम्बरं भस्मडवलेडपतांगं
बोधात्मकं मुस्तक्तकरं प्रसन्नं ।
डनमाथनसं श्यामतनुं भजेऽहं
दत्तात्रेयं ब्र्ह्मसमाडधयुक्तम् ।।१

सिंखिक्ंरं रडवमण्डले स्तस्तं
ंकिुयाकान्तमनन्तमचुयुतम् ।
भजाडम बुद्ध्या तपनीयमूडतथ
सुरोत्तमं डित्तडवभूषिोज्वलम् ।।२

शदगम्बर,भस्म–शिथतिरीर वाले, बोध देने वाले, मुत्मक्त प्रदान करने वाले, प्रसन्न, शनमथल शित्तवाले,श्यामिरीरवालेतर् ब्रह्म-समाशध में त्मस्त्त रहने वाले भगवान् दत्तात्रेय को मैं भजता हाँ।।१

सशहत, रशिम्बंशिडवे में त्मस्त, कमल के समान कात्मन्त वाले, अनन्त, अशवनिी,तपकीसाक्षात्मूशतथ, देवों ंमें शे्रेष्ठ तर् शवशवध आभूषणों ंसे उज्वल दत्त भगवान् को मैं भजता हाँ।।२

६. श्री दत्तात्रेयस्तोत्रम्

(श्री नारदशवरशितम्)

जटाधरं पाण्डुरंगिूलहस्तंकृपाडनडधं ।
सवथरोगहरं देवंदत्तात्रेयनमोऽसुतु ते ।।१

जगदुत्पडत्तकजिेस्तरुडतसंहारहेतवे ।
भवपिा डवमुक्तायदत्तात्रेयनमोऽसुतु ते ।।२

जराजन्मडवनिाायदेहिुस्तद्धकराय ि ।
डदगम्बरदयामूते दत्तात्रेयनमोऽसुतु ते ।।३

कपूथरकास्तन्तदेहायब्र्ह्ममूडतथहराय ि ।
वेदिास्त्रपररज्ञायदत्तात्रेयनमोऽसुतु ते ।।४

ह्रस्वदीघथकृिस्थूलनामगोत्रडववडजथतः ।
पंभूित प्रदीप्तायदत्तात्रेयनमोऽसुतु ते ।।५

यज्ञभोक्त्रे ि यज्ञाय यज्ञरूपधराय ि।
यज्ञडप्रयाय डसद्धाय दत्तात्रेय नमोऽसुतु ते ।।६

आदौब्र्ह्म मध्येडवषुणुः अन्तेदेवस्सदाडिवः ।
मूडतथत्रयस्वरूपाय दत्तात्रेय नमोऽसुतु ते ।।७

भोगलयाय भोगाय योगयोग्याय योडगने ।
डजतेस्तन्द्रय डजतज्ञाय दत्तात्रेय नमोऽसुतु ते ।।८

डदगम्बराय डदव्याय डदव्यरूपधराय ि ।
सदोडदतपरब्र्ह्मन् दत्तात्रेय नमोऽसुतु ते ।।९

जमूबिूीप महिौत्रे कोल्हापुरडनवाडसने ।
जयमानसतांदेव दत्तात्रेय नमोऽसुतु ते ।।१०

डभिाटनंगृहे ग्रामेपात्रं हेममयंकरे ।
नानास्वाद्यमयीडभिां दत्तात्रेय नमोऽसुतु ते ।।११

ब्र्ह्मज्ञानमयीं ंमुद्रां वस्त्रमाकिामेव ि ।
प्रज्ञानधनरूपाय दत्तात्रेय नमोऽसुतु ते ।।१२

अवधूत सदानन्द परब्र्ह्मस्वरूडपि ।
डवदेहदेहरूपाय दत्तात्रेय नमोऽसुतु ते ।।१३

सत्यरूप सदिाार सत्यधमथपरायि ।
सत्याश्रय परिोाय दत्तात्रेय नमोऽसुतु ते ।।१४

ूलिहस्तगदापाडि वनमालासुकन्दर ।
यज्ञसूत्रधरब्र्ह्मन् दत्तात्रेय नमोऽसुतु ते ।।१५

ीिारस्वरूपाय परात्परतराय ।
दत्तमुस्तक्तपरस्तोत्रं दत्तात्रेय नमोऽसुतु ते ।।१६

तिुरुनिाकरस्तोत्रं ज्ञानडवज्ञानदायकम् ।
सवथपापप्रिमनं दत्तात्रेय नमोऽसुतु ते ।।१७

इदं स्तोत्रं महडिव्यं दत्तप्रत्यिकारकम् ।
दत्तात्रेयप्रसादाच्च नारदेन प्रकीडतथतम् ।।१८

नामावली

दत्तात्रेय दत्तात्रेयदत्तात्रेयपाडहमाम्।
दत्तगुरु दत्तगुरुदत्तगुरुरिमाम्।।
दत्तगुरु जय दत्तगुरुपूिथगुरुअवधूतगुरु।

दत्तगुरु जय दत्तगुरुपिूथगुरुअवधूतगुरु।।
दत्तात्रेय माम् पाडह,दत्तंनार्माम्पाडह।
अनसूयसुत माम् पाडह,आडश्रतपोषकमाम्पाडह।।
दत्तात्रेय तविरिम्,दत्तंनार्भवहरिम्।
डदगम्बरिा तविरिम्,दीनदयालोभवहरिम्।।
अडत्रपुत्र तविरिम्,अनन्तरूपममिरिम्।
अनसूयपुत्र तविरिम्,डत्रमूडतथरूपममिरिम्।।

७. गुरुस्तोत्रम्

ब्रह्माननंदं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूशतथ
द्वन्स्द्वातीतं गगनसदृिं तत्त्वमयाशदलक्ष्यम् ।
एक शनत्यं शवमलमिलं सवथधीसाशक्षभूतं
भावातीतं शत्रगुणरशहतं सद्गुरुं तं नमाशम ।।१

ययान्तनाथशदमध्यं न शह करिरणंनामगोत्रंनसूत्रं
नो जाशतनैव वणिं न भवशत पुरुषोनोनपुंसंनिस्त्री।
नाकारं नो शवकारं न शह जशनमरणंनात्मस्तपुण्यंनपापं
नो तत्त्वं तत्त्वमेकं सहजसमरसं सद्गुरुं तंनमाशम।।२

गुरुब्रथह्मा गुरुशवथषुणुगुथरुदेवो महेश्वरुः ।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमुः ।।३

ैतिन्यं ािश्वतं ािनंतं व्योमातीतं शनरंजनम् ।
नादशबन्स्दुकलातीतं तस्मै श्रीगुरवे नमुः ।।४

अज्ञानशतशमरान्धय ज्ञानांजनिलाकया ।
किुषुरुन्मीशलतं येन तस्मै श्रीगुरवे नमुः ।।५

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन ािरिरम्।
तत्पदं दशिथतं येन तस्मै श्रीगुरवे नमुः।।६

स्ावरं जंगमं व्याप्तं यत्म ंत्कशित्सिरिरम्।
त्वंपदं दशिथतं येन तस्मै श्रीगुरवे नमुः।।७

शिन्मयं व्याशपतं सविं त्रैलोक्यं सिरिरम्।
अशसत्वं दशिथतं येन तस्मै श्रीगुरवे नमुः।।८

यत्सत्येन जगत्सविं यत्प्रकिोन भात्मन्तयत्।
यदानन्देन नन्दत्मन्त तस्मै श्रीगुरवे नमुः।।९

न गुरोरशधकं तत्त्वं न गुरोरशधकं तपुः ।
न गुरोरशधकं ज्ञानं तस्ैमै श्रीगुरवे नमुः ।।१०

गुरुरेको जगत्सविं ब्रह्मशवषुणुशिविाकम् ।
गुरोुः परतरं नात्मस्त तस्मात् समूपूजयेत् गुरुम् ।।११

यय देवे परा भत्मक्तयथरा् देवे तरा् गुरौ ।
तयैते कशर्ता हारा्थुः प्रकिान्ेते महिानुः ।।१२

मन्नारुः श्रीजगन्नारुः मद्गुरुः श्रीजगद्गुरुः ।
भमिाा सवथभूतिाा तस्ैमै श्रीगुरवे नमुः ।।१३

ध्यानमूलं गुरोमूथशतथुः पूजामूलं गुरोुः पदम् ।
मन्त्रमूलं गुरोवाथक्यं मोक्षमूलं गुरोुः कृपा ।।१४

नमुः शिवाय गुरवे सत्मच्चदानन्दमूतथये ।
शनष्प्रपंायि ान्ताय शनरालम्बाय तेजसे ।।१५
अज्ञानमूलहरणं जन्मकमथशनवारणम् ।
ज्ञानवैराग्यशसद्धयर्ि् गुरोुः पादोदकं शपबेत् ।।१६

शनत्युिद्ध शनराभासं शनराकारं शनरंजनम् ।
शनत्यबोधं शिदानन्दं गुरुं ब्रह्म नमाम्यहम् ।।१७

शनधये सवथशवद्यानां शभषजे भवरोशगणाम् ।
गुरवे सवथलोकानां दशक्षणामूतथये नमुः ।।१८

ॐ नमो ब्रह्माशदभ्यो ब्रह्मशवद्यासम्प्रदाय -
कतृथभ्यो वंशिषथभ्यो महद्भ्यो ।
नमो गुरुभ्युः सवोपप्लवरशहतुः
प्रज्ञानघनुः प्रत्यगों ंब्रह्ैमैवाहमत्मस्म ।।१९

ॐ नारायणं पद्मभवं वशसष्ठं
त्मिक्तं ि ततुपुत्रपरिारं ि ।
व्यासं ुकं गौपदं महान्तं
गोशवन्दयोगीन्द्रमरा्य शिष्यम् ।।२०

श्रीिंकरिाायथमरा्य पद्मपादं ि
हस्तामलकं ि शिष्यम् ।
तं तोटकं वाशतथककारमन्यान्-
अस्मद्गुरून् सन्तत मानतोऽत्मस्म ।।२१

शुरुशतसूमृशतपुराणानामालयं करुणालयम् ।
नमाशम भगवत्पादं िकरं लोकिंकरम् ।।२२

किर िंकरिायथ किेवं बादरायणम् ।
सूत्रभाष्यकृतौ वन्दे भगवन्तौ पुनुः पुनुः ।।२३

ईश्वरो गुरुरीशत मूशतथभेदशवभाशगने ।
व्योमवद् व्याप्तदेहाय दशक्षणामूतथये नमुः ।।२४
मैं सद्गुरु भगवान् को प्रशणपात करता हाँ, जो आनन्दस्वरूप हैं; जो ब्रह्मानन्द प्रदान करते हैं; जो केवल ज्ञानमूशतथ हैं, जो द्वन्द्वातीत हैं; जो गगन के सदृि शविाल हैं; जो 'तत्त्वमशस' के उच्चारण से लभ्य हैं; जो एक, शनत्य और अपररवतथनिील हैं; जो मन की सभी अवस्ाओं ंके साक्षी हैं; जो भावों ंसे परे हैं और जो प्रकृशत के तीनों ंगुणों ंसे रशहत हैं ।।१

मैं उस सद्गुरु को ििी झुकाता हाँ, शजसका आशद, मध्य और अवसान कुछ भी नहीं ंहै, शजसके न तो हार् हैं न पाँव, न नाम, न गोत्र, न सूत्र, न जाशत और न वणथ है, जो न तो खी है न पुरुष और न नपुंसक है; जो शनराकार है, शवकार-रशहत है; जो जन्म, मरण, पुण्य, पाप और सृशष्ट के तत्त्वों ंसे परे है; जो एक सत्य है और जो सहज समरस है ।।२

मैं उस सद्गुरु को प्रणाम करता हाँ, जो स्वयं ब्रह्मा, शवषुणु और महिे है और साक्षात् परब्रह्म है ।।३

मैं उस सद्गुरु को प्रणाम करता हाँ, जो ुिद्ध, ैतन्य, ाश्वत, ान्त, व्योमातीत और शनरंजन है तर्ा जो नाद, शबन्दु और कला से परे है ।।४

मैं उस गुरु को प्रणाम करता हाँ, जो अज्ञानान्धकार से अन्धी बनी हुई मेरी आाँखों ंको ज्ञान रूपी अंजन की िलाका से खोलता है ।।५

मैं उस गुरु की वन्दना करता हाँ, जो िर और अिर जगत् में अखण्ड मण्डलाकार के समान व्याप्त है और जो ब्रह्म के 'तत्' पद का बोध कराता है ।।६

मैं उस गुरु को प्रणाम करता हाँ, जो स्ावर और जंगम तर्ा जो-कुछ भी िर और अिर है, उन सबमें व्यापक 'त्ंव' पद का बोध कराता है।।७

मैं उस सद्गुरु की वन्दना करता हाँ, जो सत्-शित्-आनन्द का शिन्मय, िर और अिर में तर्ा तीनों ंलोकों ंमें व्यापक 'तत्त्वमशस' के 'अशस' पद का बोध कराता है ।।८

शजससे समूपूणथ जगत् त्मस्त है, शजसके प्रकिा से प्रकाशित होता है और शजसके आनन्द से आनन्द है, उस सद्गुरु को मैं नमस्कार करता हाँ।।९

गुरु से क्ेषप्त कोई तत्व नहीं ंहै, गुरु से अशधक तप नहीं ंहै और गुरु से शविेष कोई ज्ञान नहीं ंहै; ऐसे गुरुदेव को मेरा नमस्कार है ।।१०

गुरु एक सवथजगत् रूप है; वह ब्रह्मा, शवषुणु और शिव-रूप है। गुरु से बढ़ कर कोई नहीं ंहै; इसशलए गुरुदेव का पूजन करना ाशहए ।।११

शजसकी भगवान् में अगाध भत्मक्त है और भगवान् के समान गुरु में भी है, ये शजतनी बातें कही गयी हैं, सब उसमें प्रकाशित होती हैं ।।१२

मेरे नार् ही जगत् के नार् हैं, मेरे गुरु आिा है, ऐसे गुरुदेव को नमस्कार है ।।१३
जगत् के गुरु हैं, मेरी आिा प्राशणयों ंकी

गुरु की मूशतथ ध्यान, गुरु के पद पूजा, गुरु की वाणी मन्त्र और गुरु की कृपा मुत्मक्त का मूल है ।।१४

उस सद्गुरु को प्रणाम, जो शिव-स्वरूप है; जो सत्-शित्-आनन्द है; जो जाग्रशतत ैतना से अतीत है और जो ान्त और स्वप्रकाशित है ।।१५

गुरु–रणामृत पान करने से अज्ञान की ज़ि शवनष्ट हो जाती है, जन्म और मृतुयु का शनवारण हो जाता है, कमथ-फल छूट जाते हैं और ज्ञान तर्ा वैराग्य की प्रात्मप्त होती है ।।१६

मैं उस गुरु को प्रणाम करता हाँ, जो शनत्युिद्ध, शनराभास, शनराकार, शनरंजन और शिदानन्द है ।।१७

मैं दशक्षणामूशतथ को नमस्कार करता हाँ जो समूपूणथ शवद्याओं ंके भण्डार, भवरूपी रोग के शनवारण करने वाले वैद्य तर्ा सब लोकों ंके गुरु हैं ।।१८

ब्रह्मा आशद को नमस्कार; ब्रह्मशवद्या-सम्प्रदाय के कताथ को नमस्कार; ऋशषयों ंके वं िको, महान् पुरुषों ंको तर्ा गुरुदेव को नमस्कार । समस्त प्रपंी ंसे परे प्रज्ञानधन और सवथस्वरूप ब्रह्म मैं ही हाँ।।१९

आशद गुरु भगवान् नारायण को, इनके शिष्य ब्रह्मा जी को, इनके शिष्य वशसष्ठ को, इनके शिष्य ित्मक्त को, इनके पुत्र परार को, इनके शिष्य व्यासदेव को, इनके शिष्य ुक मुशन को, इनके शिष्य गौपादिायथ को, इनके शिष्य महान् गोशवन्दापादिायथ को, इनके शिष्य भगवान् किरिायथ को, इनके शिष्यों ंपद्मपादिायथ, हस्तामलकिायथ, तोटकिायथ और सुरेश्वरिायथ को तर्ा अन्य सब अपने गुरुजनों ंको मैं सदा नमस्कार करता हाँ।।२०-२१

शुरुशत, सूमृशत और पुराणों ंके रहय का भण्डार, करुणा-शनशध, ंकरावतार, लोगों ंको सुखी करने वाले भगवान् ंकरिायथ महाराज को मैं नमस्कार करता हाँ।।२२

*ंकर-स्वरूप ंकरिायथ तर्ा कैव-स्वरूप बादरायण शजन्होंने सूत्रों ंपर भाष्य रि है, उन दोनों ंभगवत्स्वरूपों ंको मैं नमस्कार करता हाँ।।२३

मैंदशक्षणामूशतथ को प्रणाम करता हाँ, जो ईश्वर, गुरु और आिा में अपने को प्रकट करते हैं औरशजनकी देह आकाि के समान व्याप्त है।।२४

८. गुवथष्टकम्

रीिरं सुरूपंतरावाकलत्रं
यिश्चारु डित्रंधनंमेरुतुल्यम्।
गुरोरंडिपदे्ये मनशे्चेन्न लग्नं
ततः डकं ततः डकं ततःडकं ततःडकम्।।१

कलत्रं धनंपुत्रपौत्राडदसवं
गृहं बान्धवाःसवथमेतस्तद्धजातम्।
गुरोरंडिपदे्ये मनशे्चेन्न लग्नं
ततः डकं ततः डकं ततःडकं ततःडकम्।।२

षिंगाडदवेदा मुखे ास्त्रडवद्या
कडवत्वाडद गद्यं सुपद्यं करोडत ।
गुरोरंडिपदे्ये मनशे्चेन्न लग्नं
ततः डकं ततःडकं ततःडकं ततःडकम्।।३
डवदेिषु मान्यः स्वदेिषु धन्यः
सदिारवृत्तेेषु मत्तौ न ान्यः ।
गुरोरंडिपदे्ये मनशे्चेन्न लग्नं
ततः डकं ततः डकं ततःडकं ततःडकम्।।४

सभामण्डले भूपभूपालवृन्दैः
सदा सेडवतंयस्यपादारडवन्दम्।
गुरोरंडिपदे्ये मनशे्चेन्न लग्नं ततः डकं
ततः डकं ततःडकं ततःडकम्।।५

यिो मे गतंडदुिदानप्रतापात्
जगिसुतु सवंकरेसत्प्रसादात्।
गुरोरंडिपदे्ये मनशे्चेन्न लप्नं
ततः डकं ततः डकं ततःडकं ततःडकम्।।६

न भोगेनयोगेनवावाडजराजे्ये
न कान्तासुखेनैवडवतेतेषुडित्तम्।
गुरोरंडिपदे्ये मनशे्चेन्न लग्नं
ततः डकं ततः डकं ततःडकं ततःडकम्।।७

अरणे्ये न वा स्वस्य गेहे न काये
न देहे मनो वतथते मेऽत्यनरे्।
गुरोरंडिपदे्ये मनशे्चेन्न लग्नं
ततः डकं ततः डकं ततःडकं ततःडकम्।।८

सुन्दर ि◌रीर हो, सुन्दर स्त्री भी हो, यिस्वी और महान् भी हो और सुमेरु पवथत के सदृ
अत्मखल धन-राशि भी शजसके पास हो; यशद उसका मन गुरु के ि◌रण-कमलों ◌ंमें आसक्त नहीं ◌ंहै तो इन सब वसुतुओं ◌ंसे क्या लाभ ? ?१

गुरु के पद्-पद्म में शजसकी भत्मक्त नहीं ◌ंहै, उसके शलए पत्नी, धन, पुत्र-पौत्र और कुटुम्ब-पररवार का क्या प्रयोजन ??२

षट्-अंगों ◌ंसशहत वेद और ि◌ास्त्र-शवद्या शजसको कण्ठाग्र है और कशवता करने को शजसके पास कशवत्वि–त्मक्त है; यशद उसकी गुरुि–रणों ◌ंमें प्रीशत नहीं ◌ंहै तो इन सब गुणों ◌ंसे कोई लाभ नहीं ◌ंहै ।।३

शवदिों ◌ंमें शजसका आदर होता हो तर् अपने दि में भी शजसकी जयजयकार की जाती हो तर् जो अपने को इस योग्य समझता भी हो शक सदिाार-पालन में उसके अशतररक्त कोई दूसरा नहीं,◌ं शफर भी यशद सद्गुरु के ि◌रणों ◌ंमें उसे अनुराग नहीं ◌ंहै तो इन सब बातों ◌ंसे उसको कोई लाभ नहीं ◌ं।।४

जनता के मध्य, सभा में, सम्राटों ◌ंके द्वारा शजसके ि◌रण-कमलों ◌ंकी शनत्य वन्दना हो; शफर भी उससे कोई लाभ नहीं ◌ंहै, यशद उसने अपने हृदय में गुरुि–रणों ◌ंके शलए स्ान नहीं ◌ंबनाया ।।५

दान के प्रताप से शजसका यि शदिाओं ◌ंमें फैला हो एवं गुरु-अनुकम्पा से संसार की सभी वसुतुएँ शजसे हस्तप्राप्य हैं, शफर भी गुरुि–रणों ◌ंमें यशद उसे पे्रेम नहीं ◌ंहै तो वे सब बीजें उसके शलए शनरर्थक हैं ।।६

शजसका मन योग, अश्व, राज्य, खी-सुख और धन के सुखों ◌ंसे भी शविशलत नहीं ◌ंहोता हो, इतना होते हुए भी उसको इस मशहमिाालीनता से कोई लाभ नहीं ◌ंहै, यशद गुरु के युगल-रिणों ◌ंमें भत्मक्त नहीं ◌ंहै ।।७

शजसका मन जंगल या शविाल भवनों ◌ंमें भी नहीं ◌ंलगता है, जो न कतथव्यों ◌ंमें और न देह में आसक्त है, शफर भी इससे कुछ लाभ नहीं ◌ंहै, यशद सद्गुरु के युगलि–रणों ◌ंमें प्रीशत नहीं ◌ंहै ।।८

९. शिवगुरु-पंकिम्

गंगातटस्ं शिरयोशगराजं योगे रमनं्तं ि◌ुशिान्तमूशतथम्।
आनन्दसंस्ं शवशपने वसनं्तं काषायवनं्तं सततं नमाशम।।१

ज्ञाने शविालं शक्षशतदेहभालं पूणाथशभरामं पररपूणथकामम्।
शदवं्यं शिवानन्दमहायतीनं्द्रं कैवल्यवासं सततं नमाशम।।२

अज्ञानमोहामुबुशधघोरदुःखशनमिजन्तोरवलम्बभूतम् ।
सत्यप्रकिााय तनोशत ुित्मंद्ंध प्रज्ञाघनं तं सततं नमाशम ।।३

कल्याणहेतुं कृतधमथसेतुं श्रीशवश्वनार्य कृतप्रशतष्ठम् ।
धमाथवतारं शवमलप्रकिां शवश्वय वासं सततं नमाशम ।।४

वेदान्तघोषं स्वनुभूततत्त्वं संन्याशसवयिं गुणवशद्वहारम् ।
सत्यय सत्यं सुखशसनुधुशसनुंधुं सारय सारं सततं नमाशम ।।५

१०. शिवानन्द योगीन्द्र सुतुशतुः

सदापावनं जाह्नवी तीरवासं
सदास्वस्वरूपानुसन्धानिीलम् ।
सदासुप्रसन्नं दयालुं भजेऽहं
शिवानन्द योगीन्द्रमानन्दमूशतथम् ।।१

होशदलानाम स्वयं कीतथयन्तं
हरेुः पादभत्मक्त सदा बोधयन्तम् ।
हरेुः पादपग्रस्र् शृंरंग भजेऽहं
शिवानन्द योगीन्द्रमानन्दमूशतथम् ।।२

जराव्याशधदौबथल्य सम्पीशितानां
सदाऽऽरोग्यदं यय कारुण्यनेत्रम् ।
भजेऽहं समस्तातथसेवाधुरीणं
शिवानन्द योगीन्द्रमानन्दमूशतथम् ।।३

सदा शनशवथकलेपे त्मस्रं ययशितं्तं
सदा कुत्मम्भतुः प्राणवायुशनथकामम् ।।
सदा योगशनष्ठं शनरीहं भजेऽहं
शिवानन्द योगीन्द्रमानन्दमूशतथम् ।।४

महामिुबन्धाशदयोगांगदक्ष
सुषुम्नान्तरे शित्स्वरूपे शनमिम् ।
महायोगशनिाशवलीनं भजेऽहं
शिवानन्द योगीन्द्रमानन्दमूशतथम् ।।५

दयासागरं सवथकल्याणराशिं
सदा सत्मच्चदानन्दरूपे शनलीनम् ।
सदिाारिलं भजेऽहं भजेऽहं
शिवानन्द योगीन्द्रमानन्दमूशतथम् ।।६

भवाम्भोशधनौकाशनभं यय नेत्ंरं
महामोहघोरान्धकारं हरन्तम् ।
भजेऽहं सदा तं महान्ंतं शनतान्ंतं
शिवानन्द योगीन्द्रमानन्दमूशतथम् ।।७

भजेऽहं जगत्कारणं सत्स्वरूपं
भजेऽहं जगद्व्यापकं शित्स्वरूपम् ।
भजेऽहं शनजानन्दमानन्दरूपं
शिवानन्द योगीन्द्रमानन्दमूशतथम् ।।८

पठेद्युः सदा स्तोत्रमेतत् प्रभाते
शिवानन्द योगीन्द्र नाशम्न प्रणीतम्।
भवेत्तय संसार दुःखं शवनष्ंटं तर्ा
मोक्ष साम्राज्य कैवल्य लाभुः ।।९

११. श्री शिवानन्दिरणागशतसुतुशतुः

(श्री स्वामी ज्ञानानन्द सरस्वती कृतम्)

करुणावरुणालय लोकगुरो तरुणारुणभास्वर भव्यशनधे ।
रिणागतवत्सल पालय मां शिवदेशिक ते िरणं िरणम् ।।

अविावनलालस पुण्यतनो भविोकशवनिान शवश्वगुरो ।
अवलेपशवहीन किाग्रमते शिवदेशिक ते िरणं िरणम् ।।

भवतोयशधमप्नसमस्तजनानवतो भवतो शवशवधान् सुगुणान् ।
सुतुवतोऽशवरतं मम शनत्यसुखं शिव देशह कृपालय पालय माम् ।।

अशभनन्स्द्यगुणाकर पुण्यवता-मशभगम्य गुरो शिव शदव्यमुने ।
अशभतापशवनिान साधुनृणा-मभयप्रद ते िरणं िरणम् ।।

अशतपावनमानस तत्त्वशवदां सुतुशतभाजन भावुकभाग्यशनधे ।
शक्षशतवाशसशभरादृत सवथजनै-त्मिवदेशिक ते िरणं िरणम् ।।

सुकृशतप्रवरैरशभनन्स्द्युभ-प्रकृते धृशतमन् प्रर्मानमुने ।
अकृतानृतभाषण तोषशनधे शिवदेशिक ते िरणं िरणम् ।।

अवधानशनधान शविालमते शवशवधाशतथशवनिानबद्धमते ।
अवधीररतलौशककतषथ यते शिवदेशिक ते िरणं िरणम् ।।

शवशदतात्मखलनैगमसार शवभो मुशदताय सद्गुणवाररशनधे ।

उशदतारुणसशन्नभदीप्रतनो शिवदेशिक ते ि◌रणं ि◌रणम् ।।

कमलाधवपावननामजप-क्रमलालस सन्मत साधुमते।
शवमलिाय शनसुतुलकीशतथशनधे शिवदेशिक ते ि◌रणंरिणम्।।

पशततोद्धरणोतुसुक ै◌लसुतापशतपूजनतत्पर पूतमते ।
प्रशतपन्नमनोरर् वन्स्द्यमुने शिवदेशिक ते ि◌रणं ि◌रणम् ।।

अपराधितैरशततूनशममं कृपया परया पररपाशह गुरो ।
उपशदष्टिभायन पादजुषां शिवदेशिक ते ि◌रणं ि◌रणम् ।।

जयतु जगदुपायो जीवकारुण्यमूशतथ -
जयतु जनगणानां के्षेमकृत्ैयैकदीक्षुः ।
जयतु जननमृतुयुचे्छेदकारी गुरुमें
जयतु यशतवरेण्युः श्रीशिवानन्दयोगी ।।
रिणागशतशवख्यात-स्तोत्ररत्नशमदं ि◌ुभम् ।
भक्त्या पठन् जनो शनत्ंयं लभते सवथसम्पदुः ।।

१२. श्री शिवानन्दाष्टोत्तरितनामावशलुः

१.ॐश्रीओंकाररूपाय नमुः
२.ॐश्रीसद्गुरवे नमुः
३. ॐ श्री साक्षाच्ंछंकररूपधृते नमुः
४.ॐश्रीशिवानन्दाय नमुः
५.ॐश्रीशिवाकाराय नमुः
६. ॐ श्री शिवायशनरूपकाय नमुः
७. ॐ श्री हृषीके ि◌शनवाशसने नमुः
८. ॐ श्री वैद्यिास्त्रशविारदाय नमुः
९. ॐ श्री समदशिथने नमुः
१०. ॐ श्री तपत्मस्वने नमुः
११. ॐ श्री पे्रेमरूपाय नमुः
१२. ॐ श्री महामुनये नमुः
१३. ॐ श्री शदव्यजीवनसंघप्रशतष्ठात्रे नमुः
१४.ॐश्रीप्रबोधकाय नमुः
१५. ॐ श्री गीतानन्दस्वरूशपणे नमुः
१६. ॐ श्री भत्मक्तगम्याय नमुः
१७. ॐ श्री भयापहाय नमुः
१८. ॐ श्री सवथशवदे नमुः
१९. ॐ श्री सवथगाय नमुः

२०. ॐ श्री नेत्रे नमुः
२१. ॐ श्री त्रयीमागथप्रदिथकाय नमुः
२२. ॐ श्री वैराग्यज्ञानशनरताय नमुः
२३. ॐ श्री सवथलोकशहतोतुसुकाय नमुः
२४. ॐ श्री भवभयप्रिमनाय नमुः
२५. ॐ श्री समाशधग्रन्थकल्पकाय नमुः
२६. ॐ श्री गुशणने नमुः
२७. ॐ श्री महिाने नमुः
२८. ॐ श्री धमाथिने नमुः
२९. ॐ श्री त्मस्तप्रज्ञाय नमुः
३०. ॐ श्री ुभोदयाय नमुः
३१. ॐ श्री आनन्दसागराय नमुः
३२. ॐ श्री साराय नमुः
३३. ॐ श्री गंगातीराश्रमत्मस्ताय नमुः
३४. ॐ श्री शवषुणुदेवानन्ददत्तब्रह्मज्ञानप्रदीपकायनमुः
३५. ॐ श्री ब्रह्मसूत्रोपशनषदांग्लभाष्यप्रकल्पकायनमुः
३६. ॐ श्री शवश्वानन्दिरणयुग्मसेवाजातसुबुत्मद्धमतेनमुः
३७. ॐ श्री मन्त्रमूतथये नमुः
३८. ॐ श्री जपपराय नमुः
३९. ॐ श्री तन्त्रज्ञाय नमुः
४०. ॐ श्री मानवते नमुः
४१. ॐ श्री बशलने नमुः
४२. ॐ श्री उमारमणपादयुग्मसततिाथनलालसाय नमुः
४३. ॐ श्री परस्मै ज्योशतषे नमुः
४४. ॐ श्री परस्मै धाम्ने नमुः
४५. ॐ श्री परमाणवे नमुः
४६. ॐ श्री परात्पराय नमुः
४७. ॐ श्री ान्तमूतथये नमुः
४८. ॐ श्री दयासागराय नमुः
४९. ॐ श्री मुमुकुषुहृदयत्मस्ताय नमुः
५०. ॐ श्री आनन्दामृतसन्दोग्धे नमुः
५१. ॐ श्री अप्पय्यकुलदीपकाय नमुः
५२. ॐ श्री साशक्षभूताय नमुः
५३. ॐ श्री राजयोशगने नमुः
५४. ॐ श्री सत्यानन्दस्वरूशपणे नमुः
५५. ॐ श्री अज्ञानामयभेषजाय नमुः
५६. ॐ श्री लोकोद्धारणपत्मण्डताय नमुः
५७. ॐ श्री योगानन्दरसास्वाशदने नमुः
५८. ॐ श्री सदिाारसमुज्वलाय नमुः
५९. ॐ श्री ओाारामाय नमुः

६०. ॐ श्री गुरवे नमुः
६१. ॐ श्री सत्मच्चदानन्दशवग्रहाय नमुः
६२. ॐ श्री जीवनुमुक्ताय नमुः
६३. ॐ श्री शिन्मयिाने नमुः
६४. ॐ श्री शनसै्त्रैगुण्याय नमुः
६५. ॐ श्री यतीश्वराय नमुः
६६. ॐ श्री अदै्वैतसारप्रकटवेदवेदान्ततत्त्वगाय नमुः
६७. ॐ श्री शिदानन्दजनाह्लादनृत्यगीतप्रवतथकाय नमुः
६८. ॐ श्री नवीनजनसन्त्रातेरे नमुः
६९. ॐ श्री ब्रह्ममागथप्रदिथकाय नमुः
७०. ॐ श्री प्राणायामपरायणाय नमुः
७१. ॐ श्री शनत्यवैराग्यसमुपाशश्रताय नमुः
७२. ॐ श्री शजतमायाय नमुः
७३. ॐ श्री ध्यानमिाय नमुः
७४. ॐ श्री क्षेत्रज्ञाय नमुः
७५. ॐ श्री ज्ञानभास्कराय नमुः
७६. ॐ श्री महादेवाशददेवाय नमुः
७७. ॐ श्री कशलकल्मषनिानाय नमुः
७८. ॐ श्री तुषारैलयोशगने नमुः
७९. ॐ श्री कोशटसूयथसमप्रभाय नमुः
८०. ॐ श्री मुशनवयाथय नमुः
८१. ॐ श्री सत्ययोनये नमुः
८२. ॐ श्री परमपुरुषाय नमुः
८३. ॐ श्री प्रतापवते नमुः
८४. ॐ श्री नामसंकीतथनोत्कषथप्रिंशसने नमुः
८५. ॐ श्री महाद्युतये नमुः
८६. ॐ श्री कैलासयात्रासम्प्राप्तबहुसनुतुष्टितसे नमुः
८७. ॐ श्री ितुस्साधनसम्पन्नाय नमुः
८८. ॐ श्री धमथस्ाापनतत्पराय नमुः
८९. ॐ श्री शिवमूतथये नमुः
९०. ॐ श्री शिवपराय नमुः
९१. ॐ श्री शिष्टेष्टाय नमुः
९२. ॐ श्री शिवेक्षणाय नमुः
९३. ॐ श्री ितुरन्तमेशदनीव्याप्तसुशविालयोदयायनमुः
९४. ॐ श्री सत्यसमूपूणथशवज्ञानसुततै्त्वैकसुलक्षणायनमुः
९५. ॐ श्री सवथप्राशणषु संजातभ्रातृभावाय नमुः
९६. ॐ श्री सुविथलाय नमुः
९७. ॐ श्री प्रणवाय नमुः
९८. ॐ श्री सवथतत्त्वज्ञाय नमुः
९९. ॐ श्री सुज्ञानामुबुशधिन्द्रमसे नमुः

१००. ॐ श्री ज्ञानगंगास्रोतिानपूतपापाय नमुः
१०१. ॐ श्री सुखप्रदाय नमुः
१०२. ॐ श्री शवश्वनार्कृपापात्राय नमुः
१०३. ॐ श्री शिष्यहत्तापतस्कराय नमुः
१०४. ॐ श्री कल्याणगुणसमूपूणाथय नमुः
१०५. ॐ श्री सदाशिवपरायणाय नमुः
१०६. ॐ श्री कल्पनारशहताय नमुः
१०७. ॐ श्री वीयाथय नमुः
१०८. ॐ श्री भगवद्गानलोलुपाय नमुः

ॐ श्री सद्गुरुशिवानन्दस्वाशमने नमुः

१३. भव-सागर तारण

भव-सागर-तारण-कारण हे,
रशव-नन्दन-वन्धन-खण्डन हे।
रिणागत शंकंकर दीनमने,
गुरुदेव दयाकर दीनजने ।।१

हशद-कन्दर तामस भास्कर हे,
तुम शवषुणु प्रजापशत, ंकर हे।
परब्रह्म परात्पर वेद बने,
गुरुदेव दयाकर दीनजने ।।२

मन-वारण ासन-अंकि हे,
नर-त्राण करे हररिाकुषुष हे।
गुण-गान-परायण देवगणे,
गुरुदेव दयाकर दीनजने ।।३

कुल-कुण्डशलनी भव-भंजकहे,
हृशद-ग्रत्मन्थ शवदारण-कारणहे।
मम मानस ंल राशत्र-शदने,
गुरुदेव दयाकर दीनजने ।।४

ररपुसूदन मंगलनायक हे,
सुख–ात्मन्त वराभय दायक हे ।
त्रय ताप हरे तव नाम गुणे,
गुरुदेव दयाकर दीनजने ।।५

अशभमान-प्रभाव-शवमदथक है,

गशतहीन-जने तुम रक्षक हे।
शित संशित वंशित भत्मक्तधने,
गुरुदेव दयाकर दीनजने ।।६

तव नाम सदा ुिभदायक हे,
पशतताधम मानव-पालक हे।
मशहमा तव गिोर ुिद्धमने,
गुरुदेव दयाकर दीनजने ।।७

जय सद्गुरु ईश्वर-प्रापक हे,
भवरोग शवकार शवनिाक हे।
मन-वानर हे तव श्री िरणे,
गुरुदेव दयाकर दीनजने ।।८

ुक्रिवार

श्री सरस्वती -स्तोत्रम्

१. श्री सरस्वशत नमोऽसुतु ते

(श्री दीशक्षतकृतम्)

श्लोक

या कुन्देनदुतुषारहारधवला या ुभ्रवस्त्रावृता,
या वीावरदण्डमस्तण्डतकरा या श्वेतपद्मासना।
या ब्र्म्हाचुयुतिंकरप्रभृडतडभदेवैः सदा पूडजता,
सा मां पातु सरस्वती भगवती डनःषिजाड्यापहा ।।

जोकुन्दपुष्प,ुन्द्रमातरा्शहम-शबन्स्दु की तरह धवल हैं, शजसने ुभ्र-वस्त्र धारण शकया है,शजसके हार्मनोहरवीणासेसुिोशभत हैं, जो श्वेत कमल पर शवराजमान हैं तरा् जो सवथदा ब्रह्मा,शवषणु,महेआशददेवों ंसेपूशजत हैं, वह समस्त ज़िता का नाि करने वाली देवी सरस्वती मेरी रक्षा करें!

गीत

श्री सरस्वडत नमोऽसुतुते।वरदे, परदेवते ।
श्रीपडत-गौरीपडत गुरु-गुह-डवनुते डवडधयुवते ।।
वासना-त्रय-डववडजथत वर-मुडन-भाडवत-मूते ।
वासवाद्यस्तखल-डनजथर-वर-डवतरि-बहु-कीते ।।
दर-हास-युत-मुखामुबुरुहे अद्भुत ि रिामुबुरुहे।
संसारभीत्यापहे सकल-मन्त्रिारगुहे ।।

हेदेवीसरस्वती,वरप्रदानकरनेवाली,परमदेवते,तुझे नमस्कार। शवषणु, िंकर, गुरु तरा्गुहतुझेप्रणामकरनेहैं।तूब्रह्माकीपे्रेयसीहै।तीनों ंप्रकार की वासनाओं ंसे तू मुक्त है। तेरीमूशतथकीभावनाश्रेेष्ठमुशनजनशकयाकरतेहैं।इन्द्रआशददेवताओं ंको वांशछत वर देने की तेरी कीशतथअपारहै।तेरामुख-कमलमन्दत्मयतयुक्तहै,के रिण-कमल अदभुत है। तू संसार-भय को दूर करने वाली है। सभी मन्त्रों ं का आधार तू ही है।

नामावली

वीा-पुस्तक-धाररिी अम्बा,विी जय-जय पाडह माम्।
स्तित्तदाडयनी पाडह माम्।भुस्तत्तदाडयनी पाडह माम् ।
भस्तत्तदाडयनी पाडह माम्।मुस्तत्तदाडयनी पाडह माम् ।।

अपनेकर-कमलों ंमें वीणा और पुस्तक धारण करने वाली हे माँ सरस्वती, तैरी जय हो!
जयहो!!हैत्मक्त, भोग, भत्मक्त और मोक्ष प्रदाशयनी। समूपूणथ दोषों ंऔर बुरे अदृष्टों ंसे मेरी रक्षा कीशजए ।

२. दे मज शदव्य मती

(श्री रामदासकृतम्)

श्लोक

सवथरूपमयीदेवीसवथदेवीमयं जगत् ।
अतोऽहं डवश्वरूपांत्वांनमाडम परमेश्वरीम् ।।१
माडिक्यविी-मुपलालयन्तीं,ं
मदालसां मंजुल-वास्तग्वलासाम् ।
माहेन्द्र-नील-द्युडत-कोमलांगी
मातंगकन्यां मनसा स्मराडम ।।२

देवी सवथरूपमयी हैं तर्ा यह शवश्व देवीमय है। अतुः हे शवश्वरूशपणी परमेश्वरी! मैं तुझे नमस्कार करता हाँ।।१

मैंमातंगमुशनकीकन्या (सरस्वती देवी) का ध्यान करता हाँ जो मशणजशटत वीणा बजा रही हैं,शजसकीभावभंशगमारमणीय है, वाणी मधुर है तर्ा शजसके सुकुमार वदन की द्युशत नील-मशण के समान है।।२

गीत

दे मज डदव्यमतीसरस्वती,
दे मजडदव्यमती।

रामकर्ा बहुगूढडनरूपि
लिवी ीिी गती।।१(देमज...)

ब्र्ह्माडदक देव पूडजडत तुजला
प्रार्थनाडह कररती।।२(देमज...)

रामदास म्हिैकायमलाउि
तू असता जगडत।।३(देमज...)

हे सरस्वती देवी, मुझे शदव्य ज्ञान दे। भगवान् राम की परम मधुर तर्ा रहयमयी कर्ा का ुति गशत से वणथन करने के शलए मुझे शदव्य ज्ञान दे ।।१

ब्रह्माशदक देवगण भी इसके शलए तेरी उपासना करते तर्ा तुझसे प्रार्थना करते हैं ।।२ 'रामदास'कहते हैं शक जब तक तू यहाँ है, मुझे शकसी वसुतु का अभाव नहीं ंहै।।३

नामावली

विी-पुस्तक-धाररिी अम्बा,विी जय जय पाडह माम्।
स्तिक्तदाडयनी पाडह माम्।भुस्तक्तदाडयनी पाडह माम्।
भस्तक्तदाडयनी पाडह माम्।मुस्तक्तदाडयनी पाडह माम्।

३. सुवक्षोजकमुम्भाम्

(श्री िंकरिायथकृतम्)

श्लोक

सुरासुरासेडवत-पाद-पंकजा
करे डवराजत्-कमनीय-पुस्तस्तका ।
डवररंडि-पत्नी कमलासन-स्तस्ता,
सरस्वती नृत्यतु वाडि मे सदा ।।

हेब्रह्माकी पे्रेयसी, पापुष्प पर आसीन, हार् में सुन्दर पुस्तक धारण शकये हुए तर्ा देवताओं ंऔरअसुरों ंसे पूशजत कमल के समान िरणों ंवाली देवी सरस्वती, तू मेहरी वाणी में सदा नृत्य करे।

गीत

सुविोज-कुम्भांसुधापिूथ-कुम्भां
प्रसादावलम्बांप्रपुण्यावलम्बाम् ।
सदास्ेयेनदु-डबम्बांसदानोष्ठ-डबम्बां
भजे ािरदाम्बांअजस्ंरमदम्बाम् ।।१

कटिो दयादाथकरेज्ञानमुद्रां
कलाडभडवथडनद्रांकलापैःसुभद्राम् ।
पुरन्ध्रीं ंडवडनद्रांपुरसुंतुंगभद्रां
भजे ािरदाम्बांअजस्ंरमदम्बाम् ।।२

ललामांक-फालांलसद्गान-लोलां
स्वभक्तकपालांयिशशश्रीकपोलाम् ।
करे त्विमालांकनद्रत्न-लोलां
भजे ािरदाम्बांअजस्ंरमदम्बाम् ।।३

सुसीमन्तविीं ंदृिडनडजथतीिं ं
रमत्-कीरविीं ंनमिज्रपाडिम् ।
सुधा-मन्थरास्यां मुदा डिन्त्यविीं ं
भजे ािरदाम्बां अजस्ंरं मदम्बाम् ।।४

सुिान्तां सुदेहां दृगन्ेते किान्तां
लसत्-सितांगीं ंअनन्तां अडिन्त्याम् ।

सूमृतां तापसैः सगथपूवथस्तस्तां तां
भजे ारदाम्बां अजस्र मदम्बाम् ।।५

कुरंगे तुरंगे मृगेन्द्रे खगेन्द्रे
मराले मदेभे महीऽडधरूढाम् ।
महत्यां नवम्यां सदा सामरूपां
भजे ारदाम्बां अजसं्रं मदम्बाम् ।।६

ज्वलत्-कास्तन्त-वहीं ंजगन्मोहनांगी
भजन्मानसाम्भोज-सुभ्रान्त-भृंगीम् ।
डनजस्तोत्रसंगीत-नृत्य-प्रभांगी
भजे ारदाम्बां अजसं मदम्बाम्।।७

भवाम्भोजनेत्राज-समूपूज्यमानां
लसन्मन्दहास-प्रभा-वक्त्र-ण्डिाम् ।
लित्ँि ला ारु-ताटंक-किाथ
भजे ारदाम्बां अजसं मदम्बाम् ।।८

अर्थ

मैं अपनी माँ श्री ारदा माता की शनत्य आराधना करता हाँ। उसके बक्ष अमृत-कलि की भाँशत सुन्दर हैं, उसका मुख न्द्रिमा के समान कमनीय है और उसके ओष्ठ दयिाथ तर्ा शबम्ब-फल
की भाँशत अरुण हैं ।।१

मैं अपनी माँ श्री ारदा माता की शनत्य आराधना करता हाँ। वह तुंगभि नदी के तट पर शनवास करती है। उसकी दृशष्ट करुणाशिग्ध है। उसके कर में ज्ञानमिु है। वह कलाओं ं से प्रफु ल्ल है। वह शिर पर भूषण धारण शकये हुए ोभायमान है। वह पशवत्र तर्ा सदा प्रसन्न रहने वाली है ।।२

मैं अपनी माँ श्री ारदा माता की शनत्य आराधना करता हाँ। उसके मस्तक में शतलक है। वह संगीतकेआनन्दसेदीत्मप्तमान्है।वहअपनेभक्तों ंकीरक्षाकरतीहै।उसकेकपोलयिश्री की भाँशतसुन्दरहैं।वहअपनेहार्ों ंमेंमालाधारणकरतीहैऔरआभापूणथरत्नों ंसेसुभोशभतहै ।।३

मैं अपनी माँ श्री ारदा माता की शनत्य आराधना करता हाँ। उसके मस्तक के मध्य में एक सुन्दर रेखा है। उसके सुन्दर नेत्र मृग के नेत्र को भी पराशजत करने वाले हैं। उसकी वाणी बुलबुल के समान मधुर है। इन्द्र उसको नमस्कार करते हैं। उसका सुधापूणथ मुख तर्ा वेणी आनन्दपूवथक ध्यान करने योग्य है ।।४

मैं अपनी माँ ारदा माता की शनत्य आराधना करता हाँ। वह सुिान्त है। उसका ीर मनोहर है। उसके नेत्रों ंकी कोर पर बाल की लटें झूलू रही हैं। उसका अंग लता के समान कोमल और कमनीय है। वह अनन्त और अशिन्त्य है। ऋशषगण उसके समुमुख बैठे हुए उसका ध्यान करते हैं ।।५

मैं अपनी माँ श्री ारदा माता की शनत्य आराधना करता हाँ। वह सदा सामवेद के रूप में रहती है और नवमी महोत्सव के समय मृग, तुरंग , शसंह, गरि़, हंस, मत्त गज तर्ा वृषभ पर
आरूढ़ होती है।।६

मैं अपनी माँ श्री ारदा माता की शनत्य आराधना करता हाँ। उसके ीर की कात्मन्त प्रज्वशलत अशि के समान है। उसके अंग की ोभा समूपूणथ शवश्व को शवमोशहत करती है। वह अपने स्तोत्र, संगीत और नृत्य की आभा से प्रकाशित है और अपने आराधकों ं के कमल-रूपी मन में भृंग की भाँशत शवहार करती है ।।७

मैं अपनी माँ श्री ारदा माता की शनत्य आराधना करता हाँ। ब्रह्मा, शवषणु और शिव उसकी शनत्य आराधना करते हैं। उसका मुख मन्द हास की ज्योशत से प्रकाशित है। उसके कु ण्डल दाशमनी की भाँशत सुन्दर एवं ंि ल हैं।।८

नामावली

वीणा-पुस्तक-धाररणी अम्बा,विधा जय-जय पाडह माम्।
स्तिक्तदाडयनी पाडह माम्।भुस्तक्तदाडयनी पाडह माम्।
भस्तक्तदाडयनी पाडह माम्।मुस्तक्तदाडयनी पाडह माम्।

श्री देवी-स्तोत्रम्

४. न तातो न माता

(भवान्यष्टकम्)
(श्री ंकराचायथकृतम्)

श्लोक

अम्बा ाम्भडव न्द्रमौडलरबलाऽपिाथ उमा पावथती
काली हैमवती डिवा डत्रनयना कात्यायनी भैरवी ।
साडवत्री नवयौवना ुभकरी साम्राज्यलक्ष्मीप्रदा
डिदूरूपी परदेवता भगवती श्रीराजराजेश्वरी ।।

जो अम्बा (माता) है, ाम्भवी (ुमभु-पत्नी) है, न्द्रमौशल (शजसका मस्तक न्द्रमा से सुोशभत है) है, अबला (कृ ांगी) है, अपणाथ (शजसने तप करते समय पत्तों ं तक का खाना छोड़ शदया र्ा) है, उमा (शजसके माता-शपता ने और अशधक तप न करो, ऐसा आग्रह शकया) है, पावथती (पवथत की पुत्री) है, काली (भयंकरा) है, हैमवती (शहमवान् की पुत्री) है, शिवा (शिव-पत्नी) है, शत्रनयना (तीन नेत्रों ं वाली) है, कात्यायनी (दुगाथ) है, भैरवी (भैरव की पत्नी) है, साशवत्री (गायत्री देवी) है, नव-यौवना (नवयुवती) है, ुभकरी (कल्याणकाररणी) है, साम्राज्यलक्ष्मीप्रदा (साम्राज्य और लक्ष्मी को देने वाली) है, ृिपी (ज्ञानस्वरूशपणी) है और परदेवता (परमोच्चदेवी)है,उसभगवतीश्रीराजराजेश्वरीकोमैंप्रणामकरताहाँ।

स्तोत्र

न तातो न माता न बन्धुनथ दाता
न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न भताथ ।
न जाया न डवद्या न वृडत्त-मथमैव
गडत-सं्त्वं गडत-सं्त्वं त्व-मेका भवाडन ।।१

भवाब्धा-वपारे महादुःख-भीरुः
पपात प्रकामंप्रलोभीप्रमत्तः।
कुसंसार-पिा-प्रबद्धःसदाहं
गडत-सं्त्वं गडत-सं्त्वंत्व-मेकाभवाडन।।२

न जानाडम दानं न ि ध्यान-योगं
न जानाडम तनं्त्रं न ि स्तोत्र-मन्त्रम् ।
न जानाडम पूजां न ि न्यास-योगं
गडत-सं्त्वं गडत-सं्त्वं त्व-मेका भवाडन ।।३

न जानाडम पुणं्यंनजानाडमतीर्थ
न जानाडम मुस्तक्तलयंवाकदाडित्।
न जानाडम भस्तकं्तंव्रतंवाडपमातः
गडत-सं्त्वं गडत-सं्त्वंत्व-मेकाभवाडन।।४

कुकमी कुसंगीकुबुस्तद्धःकुदासः
कुलिार-हीनःकदिार-लीनः।
कुदृडष्टः कुवाक्य-प्रबन्धःसदाहं
गडत-सं्त्वं गडत-सं्त्वंत्व-मेकाभवाडन।।५

प्रर्जि रर्मिंमहिंसुरिं
डदर्नि डर्नीरेश्वरंवाकदाडित्।
न जानाडम ि न्यत्सदाहंरिण्ये
गडत-सं्त्यं गडत-सं्त्वंत्व-मेकाभवाडन।।६

डववादे डवषादे प्रमादे प्रवासे
जले ि नले पवथते ि तुरु-मध्ये ।
अरण्ये ि रण्ये सदा मां प्रपाडह
गडत-सं्त्वं गडत-सं्त्वं त्व-मेका भवाडन ।।७

अनार्ो दररद्रोजरा-रोग-युक्तो
मर्हिी-दीनः सदा जाड्य-वक्त्रः ।
डवपत्तौ प्रडवष्टःप्रिष्टःसदाहं
गडत-सं्त्वं गडत-सं्त्वंत्व-मेकाभवाडन।।८

मेरा न कोई शपता है, न माता है, न कोई सम्बन्धी है और न कोई देने वाला है। न तो पुत्र है,नपुत्रीहै,ननौकरहैऔरनमाशलकहीहै।पत्नीभीनहीं ं है।मुझमेंज्ञानकाअभाव है। कहाँतककहाँ,मेरेपासकुछभीतोनहीं ंहै।हेदेवी!तूहीएकमेरासहाराहै।।१

मैं इस अपार संसार-सागर में शगर गया हाँ और इसके महादु खों ं से भयभीत हाँ। मैं लोभी, प्रमादी और ब़िा कामी हाँ तर्ा हमिेा इसी कु संस्कार-पिा में बाँधा हुआ हाँ। हे देवी! एक तू ही मेरा सहारा है ।।२

न तो मैं दान करना जानता हाँ, न ध्यान-योग से मेरा पररिय है। मैं शकसी तन्त्र को नहीं ं जानता हाँ और न शकसी स्तोत्र-मन्त्र का ही मुझे ज्ञान है। मैं यह भी नहीं ं जानता शक पूजा कैसे की जाती है और न न्यासयोग-शवद्या की ही मुझे जानकारी है। हे देवी! एक तू ही मेरा सहारा है ।।३

पुण्य क्या है, यह मुझे मालूम नहीं ं है और न शकसी तीर्थ-क्ेषेत्र को मैं जानता हाँ। मोक्ष तर्ा लय-योग को भी मैंने कभी नहीं ं जाना । न मैं भत्मक्त को जानता हाँ और न व्रत आशद को पहिानता हाँ। हे देवी! एक तू ही मेरा सहारा है ।।४

मैं ब़िा कुकमी हाँ, कुसंगी हाँ, कुबुत्मद्ध हाँ और कुसेवक हाँ। कुल के आिारों ं से शवहीन और बुरे आिरणों ं में लीन हाँ। मेरी दृशष्ट कुत्मत्सत है और मैं हमिेा बुरे वाक्यों ं का ही उच्चारण करता हाँ। हे देवी। एक तू ही मेरा सहारा है ।।५

मैं तेरे शसवा ब्रह्मा, शवषणु, महिे, देवेन्द्र, सूयथ, िन्द्र अर्वा शकसी भी अन्य देवता को नहीं ं जानता हाँ। हे देवी! एक तू ही मेरा सहारा है ।।६

जब कभी मैं शवपदा में हाँ, दु:ख में हाँ, असावधान रहाँ, प्रवास में रहाँ या कहीं ं पानी में, अशि में, पवथत या ितुरुओं ं के बिी में अर्वा जंगल में रहाँ, है िरणदात्री। तू हर समय मेरी रक्षा कर। हे देवी! एक तू ही मेरा सहारा है ।।७

मैं अनार् हाँ, गरीब हाँ, बुढ़ापा और रोगों ं से आक्रान्त हाँ, बहुत त्मखन्न हाँ, दीन हाँ, हमिेा ंहिरे पर ज़िता छायी रहती है, संकट में पि़ गया हाँ और सवथदा शवनिा की ओर जा रहा हाँ। हे देवी। एक तू ही मेरा सहारा है ।।८

नामावली

ॐ ि स्तक्त ॐ ि स्तक्तॐस्तिक्त पाडह माम्। ॐ स्तिक्त ॐ िस्तक्तॐस्तिक्त रि माम्।।

५. अम्ब-लशलते

श्लोक

सवथ-मंगल मांगल्येडिवेसवाथर्थ साडधके ।
रिणेये त्र्यम्बके गौररनारायडि नमोऽसुतु ते ।।

हे नारायणी , हेगौरी, समूपूणथ पुरुषार्रों को शसद्ध करने वाली, सभी मंगलों ंका धाम, सभी की रक्षाकरने वाली , तीननेत्रों ंवाली, माँ तुम्हें नमस्कार है।

गीत

अम्ब लडलते मांपालय परडिव-वडनते
सौभाग्यजनडन(लडलते...)
अम्ब सीतेपरमानन्द-डवलडसते
गुरु-भक्त-जनौध-वृतेपरतत्त्व-सुधा-रस-डमडलते
अम्ब ाडसडन दुररत-डवनाडिडन डनगम-डनवाडसडन
डवजय-डवलाडसडन (भगवडत)... ।।१ (लडलते...)

अम्ब वाले कुंकुम-रेखांडकत-फाले
पररपाडलत-सुर-मुडन-जाले भव-पिा-डवमिोन-मूले
अम्ब डहम-डगरर-तनये कमल-सुडनलये
सुमडहत-सदये (देडव) सुन्दर-हृदये....।।२ (लडलते...)

अम्बे रामे घन-सुन्दर-मेघ-श्यामे
डनलयीकृत-हर-तनु-वामे सकलागम-डवडदतिोामे
अम्ब वामि–ाररडि काम-डवहाररडि
साम-डवनोडदडन (देवी) सोमि–ैखरर...113 (लडलते...)

अम्ब तुंगे शंगालक-पररलस-दंगे
पररपूररत-करिापांगे सुरि–ात्रव-गवथ-डवभंगे
अम्ब संग-रडहत-मुडन-पुंगव-नुत-पदे
मंगलि–ुभकरर (देवी) सवथ-मंगले...॥४ (लडलते...)

अम्ब कुन्दे पररवस्तन्दत-सनक-सनन्दे
वन्दारु-महीसुर-वृन्दे मृग-राज-स्कन्धे स्पन्दे
अम्ब इस्तन्दर-मस्तन्दरे डवनदु-समाकुल-
सुन्दरि–रि (देवी) डत्रपुरसुन्दरर...।।५ (लडलते...)

हे लशलते! हेशिवपत्नी! हे अम्बे ! सौभाग्य की जननी, मेरा पालन कर।

हे अम्बे! हे सीते! तू परमानन्द में शवलास करने वाली है; परम तत्त्व के रस का पान करने वाले महान् भक्तों ंसे तू शघरी रहती है। हे अम्बे ! तू ािसन करती है; सारे दुभाथग्यों ंका शवनिा करने वाली तू है। तू वेदों ंमें शनवास करती है; शवजय में शवलास करती है।।१

हे अम्बे! हे बाले! तेरे ललाट पर कुंकुम-रेखा है, तुझसे ही देवता तर्ा मुशनजन पररपाशलत हैं। तू भवपिा का उनूमूलन करती है। हे अम्बे ! तू शहमालय की पुत्री है, तेरी आँखें कमल के समान हैं, तू करुणा तर्ा कृपा की आगार है; हे देवी तेरा हृदय कोमल है।।२

हे अम्बे! हे रामे! तू शिव के वाम पाश्वथ को सुिोशभत करती है, जो शिव श्यामल मेघ के समान सुनील तर्ा सुन्दर हैं तर्ा जो सारे वेदों ंके धाम हैं। हे अम्बे! तू वामिार (तन्त्र) में शनवास करने वाली है, अपनी कामना के अनुसार िलने वाली है, सामगान में आनन्द लेती है तर्ा तू सोमेश्वर भगवान् शिव की पत्नी है।।३

हे अम्बे! तेरी भौहें ऊाँिी हैं, कपाल पर श्याम-भ्रमर के समान अलकें ोभायमान हैं। तू करुणासागर है तर्ा देवितुरुओं ंकी शवनिाक है। हे अम्बे ! मुशनजन जो संगरशहत हैं, वे तेरे िरणों ं को नमन करते हैं। हे देवी! तू मंगलमूशतथ है। तू ुिभ करने बाली है।।४

अम्बे ! तेरा अंग कुन्द पुष्प के समान है; तू सनक, सनन्दन, देवताओं ंतर्ा ब्राह्मणों ंद्वारा पररपूशजत है। तू मृगराज शसंह के कन्धे पर आसीन है। हे अम्बे! तू सौभाग्य का धाम है। हे माते! तू तीनों ंलोकों ंमें सवथसुन्दरी है। तेरे िरण सुन्दर हैं। तू मेरी रक्षा कर ।।५

नामावली

सवथ–स्तक्त-दाडयनीमाता पाडह माम्।
सवथ–स्तक्त-दाडयनीमाता रि माम्।।

६. नमस्ते जगद्धाशत्र(श्री महालक्ष्मीस्तोत्रम्)

(श्रीदेवकृतम्)

श्लोक

या सा पद्मासना-स्र्ा डवपुल-कडट-तटी पद्म-पत्रायतिी
गम्भीरावतथ-नाडभः स्तन-भर-नडमता ुिभ्र-वस्त्रोत्तरीया ।
लक्ष्मी-डदथवै्यै-गथजनेन्द्रे-मथडि-गि-खडितैः स्नाडपता हेम-कुम्भै-
डनथतं्यं सा पद्म-हस्ता मम वसतु गृहे सवथ-मांगल्य-युक्ता ।।

जो लक्ष्मी कमलासन पर बैठी है, शजसका कशट-प्रदे शविाल है, शजसकी आँखें कमलदलों ं के समान दीघथ हैं, शजसकी नाशभ जल के भाँवर के समान गहरी है, जो स्तन-भार से कुछ झुकी हुई है, शजसका पररधान (वस्त्र) उज्वल है, शजसको शे्रेष्ठ हार्ी हीरे-मोशतयों ंसे ज़ि हुए स्वणथ-कुम्भों ंसे ान करा रहे हैं, शजसके हार् में कमल है और जो सकल मंगलों ंसे पररपूणथ है, वह लक्ष्मी मेरे घर में सदा शनवास करे।

गीत

नमस्ते जग-द्ब्राडत्रसद्ब्रह्म-रूपे
नमस्ते हरोपेन्द्रधात्राडद-वनदे्ये।
नमस्ते प्रपन्नेष्ट-दानैक-दि
नमस्ते महालस्तक्ष्कोलापुरेडि।।१

डवडधः कृडत्तवासाहरर-डवथश्व-मेतत्
सृजत्यडत्त पातीडतयत्तत्प्रडसद्धम्।
कृ पालोकना-देव ते ि स्तक्त-रूपे
नमस्ते महालस्तक्ष्कोलापुरेडि।।२

त्वया माययाव्याप्त-मेतत्समस्तं
धृतं लीलयादेडवकुिडहडवश्वम्।
स्तरूतं बुस्तद्ध-रूपिेसवथत्रजन्तौ
नमस्ते महालस्तक्ष्कोलापुरेडि।।३

यया भक्त-वगाथडहलक्ष्यन्तएते
त्वयाऽत्र प्रकामंकृपा-पिूथ-दृष्ट्ट्या।
तो गीयसेदेडवलक्ष्ी-ररडतत्ंवं
नमस्ते महालस्तक्ष्कोलापुरेडि।।४

पुन-वाथक्-पटुत्वाडद-हीनाडहमूका
नरे-सै्तै-डनथकामं खलु प्राथ्थसेयत्।
डनजेष्टाप्तये तच्च मूकास्तम्बकात्ंवं
नमस्ते महालस्तक्ष् कोलापुरेडि।।५

यदितरूपात् परब्र्ह्मि-सं्त्वं
समुत्था पुन-डवथश्व-लीलोद्यमस्ा।
तदाहु-जथना-स्त्वां डह गौरीकुमारीं ं
नमस्ते महालस्तक्ष् कोलापुरेडि।।६

हरीाडद-दे होत्थ-ते जोमय-प्र-
सुफुर-च्चक्रराजाख्य-डलंग-स्वरूपे।
महायोडग-कोलडषथि-त्पा-गेहे
नमस्ते महालस्तक्ष् कोलापुरेडि।।७

नमः िंखि-क्राभयाभीष्ट-हस्ते
नमः-स्त्र्यम्बके गौरर पद्मासन-स्े।

नमः स्विथ-विप्रसन्नेनिरणेये
नमस्ते महालस्तक्ष्कोलापुरेडि।।८

इदं स्तोत्र-रत्नंकृतंसवथ-देवै-
हृडद त्वां समाधायलक्ष्मम्यष्टकं यः।
पठे-डन्नत्य-मेष व्रजत्याषु लक्ष्मीं ं
सुडवद्यां ि सत्यंभवत्याःप्रसादात्।।९

हे माता, शवश्वधाररणी, सद्ब्रह्मस्वरूशपणी तुझे प्रणाम। हे शिव, शवषुणु, ब्रह्मा आशद देवों ं से पूज्य, तू िरणागतों ं को बांशछत फल देने में समर्थ है। हे कोलापुरेशि महालक्ष्मी ! तुझे प्रणाम ।।१

हे ित्मक्तरूशपणी! ब्रह्मा शवश्व का सृजन करते हैं, शवषुणु पालन करते हैं और शिव संहार करते हैं-ऐसी जो प्रशसत्मद्ध हुई है, वसुतुतुः यह सब-कु छ तेरी कृ पाभरी शनगाहों ं के बल पर होता है। हे कोलापुरेशि महालक्ष्मी ! तुझे प्रणाम ।।२

इस समस्त शवश्व को अपनी माया से तूने व्याप्त कर शलया है और तूने लीला से ही इसे अपने पेटमेंरखशलयाहै।प्रत्येकप्राणीके अन्दरबुत्मद्धके रूपमेंतूत्मस्तहै।हैकोलापुरेशि महालक्ष्मी ! तुझे प्रणाम ।।३

हे माते, ि ूँ ूशक सभी भक्तजनों ं की ओर तू अत्यन्त कृपापूणथ दृशष्ट से देखा करती है, इसशलए लक्ष्मी के नाम से तू गायी जाती है। हे कोलापुरेशि महालक्ष्मी ! तुझे प्रणाम ।।४

शजन लोगों ं में बोलने की ित्मक्त नहीं ं है, ऐसे मूकजन तुझसे वर माँगते रहते हैं, शजससे शक उनकी इच्छापूशतथ हो। इसीशलए तेरा नाम मूकात्मम्बका प़ि है। हे कोलापुरेशि महालक्ष्मी! तुझे प्रणाम ।।५

तूने अद्वैतस्वरूप परब्रह्म से प्रकट हो कर शवश्व-सृशष्ट आशद की लीला में योग देना ि ुरू कर शदयाहै।इसीशलएलोगतुझेगौरीकुमारीकहतेहै।हेकोलापुरेशिमहालक्ष्मी!तुझेप्रणाम ।।६

महाशवषुणु, शिन आशद देवों ंके ि रीर की कात्मन्त से उत्पन्न हुए, श्री ि क्र-रूप वाली और महायोगी कोल ऋशष के हृदय-रूपी पक्ष में बसने वाली, है कोलापुरेशि महालक्ष्मी। तुझे प्रणाम ।।७
हे देवी! तूने अपने ि ारों ंहार्ों ंमें एक में ि ंख और दूसरे में ि क्र धारण शकया है, तीसरे से अभय दान और ि ौरे् से वांशछत फल दे रही है। है पद्मासन में त्मस्त गौरी, तीन नयनों ंबाली, स्वणथ-सम कात्मन्तपुते, प्रसन्ने, एकमात्र ि रणेये, कोलापुरेशि महालक्ष्मी । तुझे प्रणाम ।।८

सभी देवों ंने शजन ि ब्दों ंसे तेरी सुतुशत की है, उसी लक्ष्मी अष्टक नामक स्तोत्र-रत्न का पाठ जो व्यत्मक्त अपने हृदय में तेरी स्ापना करके रोज करता है, वह तेरी कृपा से सम्पशत्त और ओिज्ञान को ि ीघ्र ही प्राप्त कर लेता है, इसमें कोई सन्देह नहीं ंहै ।।९

७. जय तुंग तरंगे

(श्री गंगादेवी-स्तोत्रम्)
(श्री सदाशिवब्रह्मेन्द्रकृतम्)

श्लोक

भगवडत तव तीरेनीर-मात्रिानोऽहं
डवगत-डवषय-तृष्णःकृष्ण-माराधयाडम ।
सकल-कलुष-भंगेस्वगथ-सोपान-संगे
तरल-तर-तरंगेदेडवगंगे प्रसीद ।।

हेदेवी! भगवती गंगे, तेरा शकनारा मनुष्य के सारे दोषों ंऔर पापों ंको शमटा देता है। वह स्वगथकीसीढ़ी के समान है और उसकी िपल लहरें कलकल करती रहती हैं। ऐसे शकनारे पर मैं केवलजलहारी रह कर, सभी प्रकार के शवषयों ंकी तृष्णा को छि़ कर कृष्ण की आराधना करता हाँ।तूमुझपर प्रसन्न हो !

गीत

जय तुंग तरंगे गंगे,जय तुंग तरंगे।
कमल-भवाण्ड-करण्ड पडवत्रे ,
बहुडवध-बन्धि-द-लडित्रे ।।१ जय (. . .)

दूरीकृत-जन-पाप-समूहे ,
पूररत-किप-गि-ग्राहे ।।२ जय (. . .)

परमहंस-गुरु-भडित-ररत्रे,
ब्ह्म-डवषणु-कर-नुडत-पात्रे ।।३ (जय . . .)

उन्नततरंगों ंवालीहेगंगे,तेरीजयहो।ऊाँलिहरों ंवाली तेरी जय हो ।

तूसारेब्रह्माण्डकोपावनकरनेवालीहैऔर(मनुष्य के) अनेक प्रकार के बन्धनों ंको काटने वाली दराँती है ।।१

तूमनुष्यों ंकेसकलशवधपापों ंकोदूरकरनेवालीहै। तेरे अन्दर मगरमच्छ आशद अनेक जलिर भरे पि़े हैं।॥२

तेरागुणगानपरमहंसगुरुजनकरतेहैंऔरब्रह्मा,शवषणु तरा महि के द्वारा तू सुतुत्य है। तेरी जयहो!!३

नामावली

जय तुंग तरंगे गंगे , जय तुंग तरंगे।

८. नमस्ते ि रणे्येश्री दुगाथदेवी-स्तोत्रम्)

श्लोक

सवथ-स्वरूपे सवेिसवथिस्तक्तसमस्तन्वते ।
भयेभ्य-स्त्राडह नो देडवदुगेदेडव नमोऽसुतु ते।।

हे सवथस्वरूपमयी , सवेश्वरी, समूपूणथ ि त्मक्तयों ं से सम्पन्न माँ दुगाथ देवी, तुझको नमस्कार है। हे देवी , (जन्म-मृतुयु के) भय से हमारी रक्षा करो।

स्तोत्रम्

नमस्ते ि रणे्येडिवे सानुकमे्पे
नमस्ते जगद्-व्याडपके डवश्वरूपे।
नमस्ते जगिनद्य-पादारडवनेदे
नमस्ते जगत्तारडि त्राडह दुगे ।।१

नमस्ते जगस्तच्चन्त्यमान-स्वरूपे
नमस्ते महायोडगडन ज्ञान-रूपे ।
नमस्ते नमस्ते सदानन्द-रूपे
नमस्ते जगत्तारडि त्राडह दुगे ।।२

अनार्स्य दीनस्य तृष्णातुरस्य
भयातथस्य भीतस्य बद्धस्य जन्तोः।
त्वमेका गडतदेडव डनस्तार-कत्री
नमस्ते जगत्तारडि त्राडह दुगे।।३

अरणे्ये रि दारि ि तुरु-मधे्येऽ-
नले सागरे प्रान्तरे राज-गेहे।
त्वमेका गडतदेडव डनस्तार-नौका
नमस्ते जगत्तारडि त्राडह दुगे ।।४

अपारे महा-दुस्तरेऽत्यन्त-घोरे
डवपत्सागरे मज्जतां देह-भाजाम्।
त्वमेका गडतदेडव डनस्तार-हेतु-

नथमस्ेते जगत्तारर डि त्राडह दुगे ।।५

नम-श्वस्तण्डके ि ण्ड-दोदथण्ड-लीला
समुत्खस्तण्डताखण्डलोिष ि त्रो।
त्वमेका गडतदेडव डनस्तार बीजे
नमस्ेते जगत्तारर डि त्राडह दुगे ।।६

त्वमेवाघभावाधृतासत्यवादी
नजाताडजताक्रोधनात्-क्रोध-डनष्ठा
इि डपंगला त्ंवं सुषुम्ना ि निी
नमस्ेते जगत्तारर डि त्राडह दुगे ।।७

नमो देडव दुगे डिवे भीम-नादे
सरस्वत्यरुन्धत्यमोघ स्वरूपे ।
डवभूडतः ि ी कालराडत्रः सती त्ंवं
नमस्ेते जगत्तारर डि त्राडह दुगे ।।८

ि रिमडस सुरिां डसद्ध-डवद्याधरिां
मुडन-मनुज-पूिनां दसुयुडभस्त्राडसतानाम्।
नृपडत-गृह-गतानां व्याडधडभः पीडितानां
त्वमडस ि रिमेका देडव दुगे प्रसीद ।।९

सवं वा श्लोकमेकं वा यः पठेद्-भस्तक्तमान् सदा ।
स सवथ दुषृकृतं त्यक्त्वा प्राप्नोडत परमं पदम् ।।१०

हिुभकाररणीदेवी,लोगों ंकीतूहीएकमात्रिरणहै।तूपरमदयालुहै,तीनों ंलोकों ंमें व्याप्तहै।अत्मखलशवश्वहीतेरारूपहै।तेरिरण-कमलसमस्तसंसारके शलएपूज्यहैं।तुझको नमस्कार है, नमस्कार है। हे जगत् का उद्धार करने वाली माँ दुगाथ, तू मेरी रक्षा कर ।।१।।

तेरारूपसबकीधे्येय-वसुतुहै।तूमहान्योशगनीतरा्ज्ञानऔरआनन्द-स्वरूशपणीहै। तुझकोनमस्कारहै,नमस्कारहै!हेजगत्काउद्धारकरनेवालीमाँदुगाथ,तूमेरीरक्षाकर।।२

अनार्,दीन,तृष्णातुर,भयातथ,ि ोकाकुलतरा्संसारि क्रमेंआबद्धप्राशणयों ंकेउद्धार के शलएतूहीएकमात्रगशतहै।तुझकोनमस्कारहै,नमस्कारहै!हेजगत्काउद्धारकरनेवाली माँ दुगाथ,तूमेरीरक्षाकर।।३

बनमें,घोरसंग्राममें,ि तुरुओं ंकेमध्यमें,अशि,सागरऔरशवजनपमें,राजदरबार में पि़जानेपरउनके उद्धारके शलएतूहीएकमात्रगशतहै।तुझकोनमस्कारहै,नमस्कारहै! हे जगत्काउद्धारकरनेवालीमाँदुगाथ,तूमेरीरक्षाकर।।४

अपार महादुस्तर अत्यन्त घोर शवपत्सागर में शनमत्मज्जत प्राशणयों ं के उद्धार के शलए तू ही एकमात्र गशत है। तुझको नमस्कार है, नमस्कार है! हे जगत् का उद्धार करने वाली माँ दुगाथ, तू मेरी रक्षा कर ।।५।।

हे ित्मण्डके , अपने अदम्य बल और ौयथ से तूने इन्द्र के सभी ितुरुओं ं का शनपात ाला। तू मोक्ष का बीज है। हे देवी! एकमात्र तू ही मेरी गशत है। तुझको नमस्कार है, नमस्कार है। हे जगत् का उद्धार करने वाली माँ दुगाथ, तू मेरी रक्षा कर ।।६

हे देबी दुगे! तुझमें पाप का स्पिथ नहीं ं है। तू सत्यवादी, अनाशद तर्ा अजेय है। तू क्रोध से पूणथ है। तू इि, शपंगला तर्ा सुषुम्ना आशद योग-नि़ी है। तुझे नमस्कार है, नमस्कार है! हे जगत् का उद्धार करने वाली माँ दुगाथ, तू मेरी रक्षा कर ।।७

हे देवी दुगे! तू ही शिवा, भीमनाशदनी, सरस्वती, अरुन्धती, अमोघरूशपणी, शवभूशत, ी, कालराशत्र तर्ा सती है। तुझको नमस्कार है, नमस्कार है! हे जगत् का उद्धार करने वाली माँ दुगाथ, तू मेरी रक्षा कर ।।८

देवता, शसद्ध, शवद्याधर, मुशन, मनुष्य, पिु, ोरों ं से पीशित, राज-अपराधी तर्ा व्याशधग्रस्त लोगों ं को एकमात्र रण देने वाली तू है। हे देवी दुगाथ, तू प्रसन्न हो ।।९

जो इन स्तोत्रों ं का पूरा अर्वा एक श्लोक भी शनत्य भत्मक्तपूवथक पाठ करता है, वह समूपूणथ पापों ं से मुक्त हो कर परम पद को प्राप्त कर लेता है ।।१०

नामावली

ॐ दुगे ॐ दुगेॐदुगेपाडहमाम्। ॐ दुगे ॐ दुगेॐदुगेरिमाम्।।

जय जय जयजयभारत-माता।
जय डवजयीभवश्रीजगन्माता।।१

जय जय जयजयहेममाता।
जय डवजयीभवश्रीजगन्माता।।२
सत्यरूडपिी भारत-माता ।
जय डवजयीभवश्रीजगन्माता।।३

ज्ञानरूडपिी भारत-माता ।
जय जय जयजयहेममाता।।४

आनन्दरूडपिी भारत-माता ।
जय डवजयीभवहेममाता।।५

स्तिक्तदाडयनी भारत-माता।
जय जय जय जय हे मम माता।।६

मुस्तक्तदाडयनी भारत-माता।
जय डवजयीभव श्री जगन्माता ।।७

भस्तक्तदाडयनी भारत-माता।
जय जय जय जय हे मम माता।।८

ज्ञानदाडयनी भारत-माता ।
जय डवजयीभव श्री जगन्माता ।।९

स्तिन्तदाडयनी भारत-माता।
जय जय जय जय हे मम माता।।१०

सवथदाडयनी भारत-माता ।
जय डवजयीभव श्री जगन्माता ।।११

सस्तच्चदानन्द-स्वरूडपिी माता ।
जय डवजयीभव भारत माता ।।१२

९. नमस्तेऽसुतु गंगे

(श्री गंगा-स्तोत्र)
(श्री काशलदासकृतम्)

श्लोक

गंगे त्रैलोक्य-सारे सकल-सुरवधू-धौत-डवस्तीथतोये
पूथ-ब्ह्म-स्वरूपे हरर-रि-रजोहाररडिस्वगथ-मागे ।
प्रायडश्चत्तं यडद स्यात्तव जलकडिकाब्ह्महत्याडद-पापे
कस्त्वां स्तोतुं समर्थस्तस्त्रजगदघहरेदेडवगंगेप्रसीद ।।

हे देवीगंगे,तूतीनों ंलोकों ंका सार है। तेरे शवसूतृत जल में देवांगनाएँ ान करतीहैं।तू पूणथ ब्रह्मस्वरूपहै।स्वगथपर्सेप्रवाशहत होती हुई तू शवषुणु की रण-रज को धोने वालीहै।यशद तेरे जलकीएकबूँदसेब्रह्महत्याशद पाप का भी प्रायशश्चत्त हो सकता है, तब हे तीनों ंलोकों ंका पाप हरणकरनेवालीगंगे।तेरीसुतुशत करने की त्मक्त शकसमें है? तू प्रसन्न हो !

गीत

नमस्तेऽसुतु गंगे त्वदंग-प्रसंगात् ।

भुजंगासुतुरंगाः कुरंगाः प्लवंगाः ।
अनंगाररंगाः ससंगाः डिवांगा
भुजंगाडधपांगीकृतांगा भवस्तन्त ।।१

नमो जहुकन्ये न मन्ये त्वदन्यै-
डनथसगेनदुर्डिाडदडभलोकभतुथः ।
अतोऽहं नतोऽहं सतो गौरतोये
वडसष्ठाडदडभगीयमानाडभधेये ।।२

त्वदामज्जनात्सज्जनो दुजथनो वा
डवमानैः समानः समानैडहथ मानैः ।
समायाडत तस्तस्मन् पुराराडत-लोके
पुरिार-संरुद्ध-डदक्पाल-लोके ।।३
स्वरावासदम्भोडल-दम्भोऽडप रम्भा -
परीरम्भ-सम्भावनाधीरि◌ंताः ।
समाकांति त्व-त्तटे वृि-वाटी
कुटीरे वसन्नेतुमायुडदथनाडन ।।४

डत्रलोकस्य भतुथजथटाजूट-बन्धात्
स्व-सीमन्त-भागे मनाक् प्रस्खलन्तः ।
भवान्या रुषा प्रौढ-सापत्न्य-भावात्
करिाहतास्त्व-त्तरंगा जयस्तन्त ।। ५

जलोन्मज्ज-दैरावतिोाम-कुम्भ-
सुफुरत्-प्रस्खलत्-सान्द्र-डसनदूररागे ।
क्वडित् पडद्मनी-रिु-भंग-प्रसंगे
मनः खेलतां जहु-कन्या-तरंगे ।।६

भवत्तीर-वानीर-वातोत्थ-धूली-
लव-स्पिथतस्तत्क्षिं ◌ि◌ी पापः ।
जनोऽयं जगत्-पावने त्वत्प्रसादात्
पदे पौरुहूतेऽडप धत्तेऽवहेलाम् ।।७

डत्रसन्ध्या-नमिेख-कोटीर-नाना-
डवधानेक-रत्नांिु-डिबम्ब प्रभाडभः ।
सुफुरत्पाद-पीठे हटेनाष्टमूतेः
जटा-जूट-वासे नताः स्मः पदं ते ।।८

इदं यः पठेदष्टकं जहु-पुत्र्याः
डत्रकालं कृतं काडलदासेन रम्यम् ।
समायास्यतीन्द्राडदडभगीयमानं

पदं किवं िविनो भजेत् सः ।।९

हे गंगे, तुझे प्रणाम। तेरा स्पिथ मात्र करने से सपथ, घिो, शहरन, बन्दर आशद सब भगवान् िंकर का सालोक्य, सामीप्य, सारूप्य और सायुज्य प्राप्त करते हैं ।।१

हे जहु-पुत्री, जगत्पशत शिव का तेरे अशतररक्त अधथिन्द्र आशद और कोई शिह्न मैं नहीं ं जानता । अतुः हे स्वच्छ-जल वाली वशसष्ठ आशद से सुतुत्य गंगे, तुझे नमस्कार करता हाँ।।२

तुझमें ान करने वाला ाहे सज्जन हो या दुजथन, अत्यन्त पशवत्र शवमानों ं में ढ़ कर शिवलोक में पहुाँ जाता है जहााँ शदक्पालों ं तक का भी प्रवे शनशषद्ध है ।।३

इन्द्र भी, जो स्वगथ के आशधपत्य और दम्भोशल अस्त्र की प्रात्मप्त के मद में ूर रहते हैं और रम्भा आशद अप्सराओं ं के आशलंगन का आनन्द लेते हैं, तुम्हारे तट पर वृक्षों ं के नी कु शटया बना कर अपना जीवन व्यतीत करने की आकांक्षा रखते हैं ।।४

शत्रलोकीनार् शिव की जटा में आबद्ध होने के कारण तुम्हारा जल बूंद-बूंद कर शिवजी के वाम-भाग में त्मस्त पावथती जी के शिर पर टपकता है, तब सौतेली ाह के कारण क्रोध में आ कर पावथतीअपनेहार्ों ंसेतुम्हेंआघातपहुाँातीहैं।उसआघातसेतुमसेलहरेंउठतीहैं,उन लहरों ं की जय हो ।।५

हे जहु-कन्ये, तेरी लहरों ं में मेरा मन रमता रहे जो ऐरावत के ान करने से उसके कु म्भ-प्रदे से शनकल कर शगरे हुए शसन्दूर के कारण कहीं– कहीं ं लाल और कमल-पुष् के पराग घुले होनेके कारणकहीं–कहीं ंपीतवणथहै।।६

तेरे शकनारे पर जो वानीर वृक्ष है, उनकी हवा से उठी धूशल का अल्प स्पिथ होने से मेरे करने वाली गंगे, अब मैं तेरी कृ पा से पद का भी शतरस्कार कर सकता हाँ।।७

का रे िरणों ं में सारे देवता शदन में तीन बार शिर नवाते हैं और उनके मुकुट में जी मशणयों ं मेरे प्रकाि से तुम्हारा पादपीठ प्रकाशित होता है। हे शिव के जटाजूट में शनवास करने वाली, तेरे िरणों ं को हम नमस्कार करते हैं ।।८

काशलदास शवरशित इस गंगाष्टक का जो लोग शनत्य तीन बार पाठ करते हैं, वे इन्द्राशद से सुतुत्य श्री शवषुणु का रम्य स्ान प्राप्त करते हैं। वे कभी ीव (पुनजथन्म) प्राप्त नहीं ं करते ।।९

नामावली

नमस्तेऽसुतुगंगेनमस्ते नमस्ते।

१०. जय भगवशत देशव नमो वरदे

(श्री भवानी-स्तोत्र)
(श्री व्यासकृतम्)

श्लोक

नमनंत्रंनोयनंत्रंतदडपिनजानेसुतुडतमहो
निाह्वानंध्यानंतदडपिनजानेसुतुडत-कराः ।
नजानेमुद्रासेंतेतदडपिनजानेडवलपनं
परंजानेमातस्त्वदनुसरिंक्लेिं-हरिम् ।।

हे माता ! मैंतेरामन्त्र,यन्त्र, सुतुशत, आवाहन, ध्यान, सुतुशतकरा, मिुा तरा शवलाप कुछ भी नहीं ं जानता, परनुतुतेराअनुसरण करना जानता हाँ और तू ही सब प्रकार के क्लेिों ंको दूर करने वाली है।

स्तोत्र

जयभगवडतदेडवनमो वरदे
जयपाप-डवनाडिडनबहु-फलदे।
जयिुम्भ-डनिुम्भ-कपाल-धरे
प्रिमाडमतुदेडवनराडतथ-हरे ।।१

जय िन्द्र-डदवाकर-नेत्र-धरे
जय पावक-भूडषत-वक्त्र-वरे ।
जय भैरव-देह-डनलीन-परे
जय अन्धक-दैत्य-डविोष-करे ।।२

जय मडहष-डवमडदथडन िूल-करे
जय लोक-समस्तक-पाप-हरे ।
जय देडव डपतामह-डवषणु-नुते
जय भास्करि-क्र-डिरोऽवनते ।।३

जय षणुमुख-सायुधइिनुते
जय सागर-गाडमडन िमुभु-नुते ।
जय दुःख-दररद्र-डवनिा करे
जय पुत्र-कलत्र-डववृस्तद्ध करे ।।४

जय देडव समस्ति-रीर-धरे
जय नाक-डवदडिथडन दुःख-हरे।
जय व्याडध-डवनाडिडन मिो-करे
जय वांडछत-दाडयडन डसस्तद्धवरे ।।५

एतद्-व्यास-कृतं स्तोत्रंयःपठेडन्नयतः ुिडः ।
गृहे वा ुद्ध-भावेनप्रीताभगवती सदा ।।६

हे वरदाशयनी देवी! हे भगवती! तेरी जय हो ! हे पापों ं को नष्ट करने वाली और अनन्त फल देनेवालीदेवी!तेरीजयहो!हुिम्भ-शनुिम्भके मुण्डों ंकोधारणकरनेवालीदेवी!तेरी जय हो!हेमनुष्यों ंकीपिीाहरनेवालीदेवी!मैंतुझेप्रणामकरताहाँ।।१

हे सूयथ–न्द्रमा-रूप नेत्रों ं को धारण करने वाली देवी! तेरी जय हो! हे अशि के समान देदीप्यमान मुख से ोशभत होने वाली देवी! तेरी जय हो! हे भैरव–रीर में लीन रहने वाली और अन्धकासुर का ोषण करने वाली देवी! तेरी जय हो !!२

हे मशहषासुर का मदथन करने वाली, ूलधाररणी और लोक के समस्त पापों ं को दूर करने बाली भगवती, तेरी जय हो । ब्रह्मा, शवषुणु, सूयथ और इन्द्र से नमसूकृ त होने वाली देवी! तेरी जय हो। जय हो 113
'सिास्त्र ंकर और काशतथके य जी के द्वारा बत्मन्दत होने वाली देवी! तेरी जय हो। शिव के द्वारा प्रिंशसतएवंसागरमेंशमलनेवालीगंगारूशपणीदेवी।तेरीजयहो।दुखऔरदररिताका नि करनेतरापुत्र-कलत्रकीवृत्मद्धकरनेवालीदेवी।तेरीजयहो।जयहो!!४
समस्त ंरीर को धारण करने वाली, स्वगथ लोक का दिथन कराने वाली और दु: खहाररणी हे देवी।तेरीजयहो।हेव्याशधनाशिनीदेवी।तेरीजयहो।हेमोक्षदाशयनी,हेमनोवांशछतफल देने वाली,अष्टशसत्मद्धयों ंसेसम्पन्नपरादेवी,तेरीजयहो।।५

जो घर अर्वा कहीं ं पर भी रह कर पशवत्र भाव से शनयमपूवथक इस व्यास-कृत स्तोत्र का पाठ करताहै,उसकेऊपरभगवतीसदाहीप्रसन्नरहतीहै।।६

नामावली

जय देडव नमाडमजगज्जनडन।

११. नवरत्नमाशलका

(श्री ंकरिायथकृतम्)

श्लोक

नमो नमस्तेजगदेक-मातरे
नमो नमस्तेजगदेक-डपतरे।
नमो नमस्तेऽस्तखलरूप-तनेत्रे

नमो नमस्तेऽस्तखलयज्ञ-रूपे ।।

इसअत्मखल शवश्व की एकमात्र माता तू ही है, तुझको मेरा नमस्कार है। इस अत्मखल शवश्व कातूहीएकमात्र शपता है, तुझको मेरा नमस्कार है। हे समूपूणथ तन्त्र-रूप वाली, तुझको मेरा नमस्कारहै।हेसमूपूणथ यज्ञरूशपणी, तुझको मेरा नमस्कार है।

स्तोत्र

हार-नूपुर-डकरीट-कुण्डल-डवभूडषतावयवि ोडमनीं ंकारिै-वर-मौडल-कोडट-
पररकल्प्यमान-पद-पीडठकाम् ।।
काल-काल-फडि-पिा-वि- -धनु-रंकुिं अरुि-मेखलां
फालभू-डतलक-लोिनां मनडस भावयाडम परदेवताम् ।।१
गन्धसार-घन-सारि ारु-नव-नागवस्ति-रस-वाडसनीं ं
सान्ध्य-राग-मधुराधराभरि-सुन्दराननि ुडि-स्तस्मताम् ।।
मन्थरायत-डवलिोनां अमल-बालि न्द्र-कृत ि ैखरीं ं
इस्तन्द्ररा-रमि-सोदरीं ंमनडस भावयाडम परदेवताम् ।।२

से्मेरि ारु-मुख-मण्डलां डवमल-गण्ड-लस्तम्ब-मडि-कुण्डलां
हार-दाम-पररीभमान-कुिभार-भीरु-तनु-मध्यमाम् ।
वीर-गवथ-हर-नूपुरां डवडवध-कारिै-वर-पीडठकां
मार-वैरर-सहिाररीं ंमनडस भावयाडम परदेवताम् ।।३

भूरर-भार-धर-कुण्डलीन्द्र-मडि-बद्ध-भूवलय-पीडठकां बाररराडि-मडि-मेखला-वलय-
वडि-मण्डलि रीररीम् ।
वाररसार-वह-कुण्डलां गगनि ैखरीं ंि परमास्तत्मकां
ारुि न्द्र-रडव-लोिनां मनडस भावयाडम परदेवताम् ।।४

कुण्डल-डत्रडवध-को-मण्डल-डवहार-षि्दल-समिुसत्
पुण्डरीक-मुख-भेडदनी तरुि ण्डभानु-तडिदुज्वलाम्।
मण्डलेनदु-पररवाडहतामृत-तरंडगिीमरुि-रूडपिीं ं
मण्डलान्त-मडि-दीडपकां मनडस भावयाडम परदेवताम् ।।५

वारिानन-मयूर-वाह-मुख-दाह-वारि-पयोधरां
ारिाडद-सुर-सुन्दरी-डिकुरि ैखरीकृत-पदामुबुजाम् । कारिाडधपडत-पंकि-प्रकृडत-
कारि-प्रर्म-मातृकां
वारिास्य-मुख-पारिां मनडस भावयाडम परदेवताम् ।।६

पद्मकास्तन्त-पद-पाडि-पिव-पयोधरानन-सरोरुहां पद्म-राग-मडि-मेखला-वलय-नीडव-
ाडिभत-डनतस्तम्बनीम् ।
पासम्भव-सदाडिवात्तमय पंरित्ल-पद-पीडठकां
पडकनी प्रिव-रूडपिीं ंमनडस भावयाडम परदेवताम् ।।७

आगम-प्रिव-पीडठकाममल-विथ-मंगलि-रीररिी आगमावयवि-ोडभती-अस्तखल-वेदसार-
कृति-ैखरीम्।
मूल-मन्त्र-मुख-मण्डलां मुडदत-नाद-डबनदु-नव-यौवनां
मातृकां-डत्रपुर-सुन्दरी मनडस भावयाडम परदेवताम् ।।८

काडलका-डतडमर-कुन्तलान्त-पन-भृंग-मंगल-डवराडजनी ्ूडलका-डिखर-माडलकाि-लय-
मस्तिका-सुरडभ-सौरभाम् ।
वाडलका-मधुर-गण्ड-मण्डल-मनोहरानन-सरोरुहां
काडलका मस्तखल-नाडयकां मनडस भावयाडम परदेवताम् ।।९

डनत्यमेव डनयमेन जल्पतां भुस्तक्त-मुस्तक्त-फलदामभीष्टदाम् ।
किरि रडितां सदा जपेत् नामरत्न-नवरत्न-माडलकाम् ।।१०

शजसके अंग हार, नूपुर, शकरीट, कुण्डल आशद अलंकारों ंसे सुिोशभत हैं, शजसकी भगवान् शिवजी सदा आराधना करते हैं, जो अपने हारों ंमें सपथ, पिा, धनुष, बाण और अंकुि धारण करती है, शजसकी कशट में अरुण रंग की मेखला है तरा शजसके मस्तक में शतलक की भाँशत तृतीय नेत्र है, उस परात्पर देवी को मैं नमस्कार करता हाँ।।१

शजसके ि्रीर में ि्रन्दन, कपूथर और तामूबूल के रस के समान मधुर सुगत्मन्ध शनकलती है, शजसका सुन्दर और मन्दत्मस्मत मुख उषाकालीन लाशलमा से रंशजत मधुर ओष्ठों ंसे सुिोशभत है, शजसके सुन्दर शविाल नेत्र हैं, जो अपने मस्तक में शनमथल बालिन्द्र धारण करती है, जो भगवान् कृष्ण की बहन है, उस परात्पर देवी को मैं नमस्कार करता हाँ।।२

शजसकासुन्दरमुखमुस्कानसेयुक्तहै,शजसकेकपोलों ंपरमशणमयकुण्डलकीआभा है, शजसकीपतलीकमरमोतीके हारों ंसेअलंकृतकुिभारसेभयभीत-सीहोरहीहै,शजसके नूपुरों ंकीध्वशनसुिेरवीरों ंके गवथकोशवदूररतकरदेतीहै,जोभगवान्शिवकीशप्रयाहै,उस परात्पर देवी को मैं नमस्कार करता हाँ।।३

समूपूणथशवश्वकाभारवहनकरनेवालेभगवान्आशदिषकेफशणकेमशणयों ंसेरशितपृथ्वी शजसकाआसनहै,सागरमेंप्रज्वशलतअशि(बिवाशि)शजसकिारीरहै,मेघशजसकेकुण्डलहैं, आकिाशिरहैतरासूयथऔरिन्द्रशजसके नेत्रहैं,उसपरात्परदेवीकोमैंनमस्कारकरता हाँ।।४

जिुभज्योशतके वृत्तके सुन्दरशत्रकोण(मूलाधार)मेंशनवासकरतीहै,जोबद्दलकमल (स्वाशधष्ठान)काभेदनकरतीहै,जोमध्याह्नके सूयथतरि्रपलाके समानजाज्वल्यमानहै(सूयथ से तात्पयथयहाँअनाहतिक्रऔरिपलासेमशणपूरि-क्रहै),शजसकारूपपूणथिन्द्रसेशनसृत होने वालीअमृत-धाराके समानहै(आज्ञाि-क्र),शजसकावणथअरुणहैतरा्जोशक्षशतजको प्रकाशित करने वाली मशणदीप है, उस परात्पर देवी को मैं नमस्कार करता हाँ।।५

शजसके पयोधर का दुग्ध गणिे जी तर्ा षिानन की तृष्णा को तृप्त करता है, शजसके रिण-कमल को देवांगनाएँ नमस्कार करती हैं, जो आशद माया अर्वा इस शमथ्या जगत् का कारण है और जो भगवान् गणिे का मुख ुिम्बन करती है, उस परात्पर देवी को मैं नमस्कार करता हाँ।।६

शजसके कर, िरण तर्ा मुख पद्म-पुष्प की भाँशत सुन्दर हैं, शजसके उरोज कमल की कली की भाँशत सुिोशभत हैं शजसकी कमर लाल मशण की मेखला तर्ा सुन्दर पररधान से दीत्मप्तमान है, शजसकी पाद-पीशठका ब्रह्मा, शवषुणु, रुि, ईश्वर और सदाशिव हैं, और प्रणव शजसका रूप है, उस परात्पर देवी को मैं नमस्कार करता हाँ।।७

वेदों ंका प्रणव शजसका आसन है, वणथ (अक्षर) शजसका मंगलमय िरीर है, जो वेदांग अर्ाथत् शिक्षा, कल्प, व्याकरण, शनरुक्त, ज्योशतष और छन्दिास्त्र से सुिोशभत है, समूपूणथ वेदों ंका सार शजसका शिर है, मूलमन्त्र शजसका मुखमण्डल है, नादशबन्दु शजसका यौवन है, उस परात्पर देवी को मैं नमस्कार करता हाँ ।।८

शजसके भृंग के समान काले घने सुन्दर बाल वेणी में गुाँर्े हुए पुष्पों ंसे सुगत्मन्धत हो रहे हैं, शजसके सुन्दर कपोल मशणजशटत कुण्डल की आभा से िमक रहे हैं, जो समूपूणथ शवश्व पर िासन करती है, उस परात्पर देवी को मैं नमस्कार करता हाँ।।९

हे मानव ! श्री िंकरिायथ द्वारा रशित इस नवरत्नमाशलका का शनत्य पाठ करो। यह समूपूणथ मनोकामनाओं ंको देने वाली है तर्ा अन्त में जन्म-मृतुयु से मुक्त करती है ।।१०

१२. श्री अन्नपूणाथस्तोत्रम्

(श्री िंकरिायथकृतम्)

ॐ डनत्यानन्दकरी वराभयकरी सौन्दयथरत्नाकरी,
डनभूथतास्तखल घोरपावनकरी प्रत्यिमाहेश्वरी ।
प्रालेयिल वंपिावनकरी किीपुराधीश्वरी,
डभिां देडह कृपावलम्बनकरी मातान्नपूिेश्वरी ।। १

नानारत्नडवडित्र भूषिकरी हेमाम्बरिम्बरी,
मुक्ताहारडविम्बमान डवलसिोज कुम्भान्तरी ।
काश्मीरागरुवाडसतांगरुडिरे किीपुराधीश्वरी,
डभिां देडह कृपावलम्बनकरी मातान्नपूिेश्वरी ।।२

योगानन्दकरी ररपुियकरी धमथकडनष्ठाकरी,
न्द्राकाथनल भासमानलहरी त्रैलोक्यरिाकरी ।
सवैश्वयथकरी तपः फलकरी किीपुराधीश्वरी,
डभिां देडह कृपावलम्बनकरी मातान्नपूिेश्वरी ।।३

कैलासिालकन्दरालयकरी गौरीह्युमिाांकरी,
कौमारीडनगमार्थगिोरकरी ह्योंकार बीजिारी।
ंमिोारकवाट पाटनकरी किीपुराधीश्वरी,
डभिां देडह कृपावलम्बनकरी माताऩ्नपिूेश्वरी ।।४

दृश्यादृश्यडवभूडत पावनकरी ब्ह्मांण्डभाण्डोदरी
लीलानाटक सूत्रखेलनकरी डवज्ञानदीपांकुरी ।
श्री डवशे्वेमनः प्रमोदनकरी किीपुराधीश्वरी,
डभिां देडह कृपावलम्बनकरी माताऩ्नपिूेश्वरी ।।५

आडदान्त समस्तविथनकरी ंमुभुडप्रये ंांकरी,
काश्मीरे डत्रपुरेश्वरी डत्रनयनी डवशे्वेश्वरी श्रीधरी ।
स्वगथिारकवाट पाटनकरी किीपुराधीश्वरी,
डभिां देडह कृपावलम्बनकरी माताऩ्नपिूेश्वरी ।।६

उवीसवथजनेश्वरी जयकरी माता कृपासागरी,
नारीनीलसमान कुन्तलधरी डनत्यान्नदानेश्वरी ।
सिाान्मिोकरी सदाडिवकरी किीपुराधीश्वरी,
डभिां देडह कृपावलम्बनकरी माताऩ्नपिूेश्वरी ।।७

देवीसवथडवडित्र रत्नरडिता दिाायिी सुन्दरी,
वामस्वादुपयोधर डप्रयकरी सौभाग्यमाहेश्वरी ।
भक्ताभीष्टकरी ंदिुभकरी किीपुराधीश्वरी,
डभिां देडह कृपावलम्बनकरी माताऩ्नपिूेश्वरी ।।८

न्द्राकाथनल कोडट कोडटसदृि ंन्द्रांु डिवम्बाधरी,
न्द्राकाथडग्नसमान कुन्तलधरी ंन्द्राकथविेश्वरी।
मालापुस्तकपिासांकुिधरी किीपुराधीश्वरी,
डभिां देडह कृपावलम्बनकरी माताऩ्नपिूेश्वरी।।९

त्रित्रिाकरी सदाडिवकरी माताकृपासागरी,
सिाान्मिोकरी महाभयकरी डवशे्वेश्वरी श्रीधरी,
दिाक्रन्दकरी डनरामयकरी किीपुराधीश्वरी,
डभिां देडह कृपावलम्बनकरी माताऩ्नपिूेश्वरी ।।१०

अन्नपिूथ सदापिूथ ंकरप्रिाविभे ।
ज्ञानवैराग्य डसद्ध्यर्ं डभिां देडह ं पावथडत ।।११

माता ं पावथतीदेवी डपतादेवोमहेश्वरः ।
बान्धवास्तिवभक्ताश्च स्वदिो भुवनत्रयम् ।।१२

१३. आशद शदव्य ज्योशत

आशद शदव्य ज्योशत महा काशलका नमुः ।
मधु ुम्भ मशहष मशदथशन महा ुक्तये नमुः ।।

ब्रह्म शवषुणु शिव स्वरूप त्ंवं न अन्यर्ा ।
रिरिय पाशलका नमो नमुः सदा ।। आशद शदव्य ज्योशत . .

१४. श्री देवी-अष्टोत्तरित-नामावली

१.ॐआशदिक्तयै नमुः

२.ॐमहादेव्ैयै नमुः

३.ॐअत्मम्बकायै नमुः

४.ॐपरमेश्वयै नमुः

५.ॐईश्वये नमुः

६.ॐअनीश्वयथ नमुः

७.ॐयोशगन्ैयै नमुः

८.ॐसवथभूतेश्वयै नमुः

९.ॐजयायै नमुः

१०.ॐशवजयायै नमुः

११.ॐजयन्ैत्यै नमुः

१२.ॐाम्भिव्ैयै नमुः

१३. ॐ ानै्त्यै नमुः

१४. ॐ ब्राह्मयै नमुः

१५. ॐ ब्रह्माण्डधाररणै्यै नमुः

१६. ॐ महारूपायै नमुः

१७. ॐ महामायायै नमुः

१८. ॐ माहेश्वयै नमुः

१९. ॐ लोकरशक्षणै्यै नमुः

२०. ॐ दुगाथयै नमुः

२१. ॐ दुगथपारायै नमुः

२२. ॐ भक्तशिन्तामणै्यै नमुः

२३. ॐ भूतै्यै नमुः

२४. ॐ शसद्धयै नमुः

२५. ॐ मूतै्यै नमुः

२६. ॐ सवथशसत्मद्धप्रदायै नमुः

२७. ॐ मन्त्रमूतै्यै नमुः

२८. ॐ महाकालै्यै नमुः

२९ ॐ सवथमूशतथस्वरूशपणै्यै नमुः

३०. ॐ वेदमूतै्यै नमुः

३१. ॐ वेदभूतै्यै नमुः

३२. ॐ वेदान्तायै नमुः

३३. ॐ व्यवहाररणै्यै नमुः

३४. ॐ अनघायै नमुः

३५. ॐ भगवतै्यै नमुः

३६. ॐ रिौायै नमुः

३७. ॐ रिस्वरूशपणै्यै नमुः

३८. ॐ नारायणै्यै नमुः

३९. ॐ नारशसंही नमुः

४०. ॐ नागयज्ञोपवीशतनै्यै नमुः

४१. ॐ ि ंखिक्रगदाधाररणै्यै नम।

४२. ॐ जटामुकुटिोशभनै्यै नमुः

४३. ॐ अप्रमाणायै नमुः

४४. ॐ प्रमाणायै नमुः

४५. ॐ आशदमध्यावसानायै नमुः

४६. ॐ पुण्यदायै नमुः

४७. ॐ पुण्योपिाररणै्यै नमुः

४८. ॐ पुण्यकीतै्यै नमुः

४९. ॐ सुतुतायै नमुः

५०. ॐ शविालाकै्ष्यै नमुः ।

५१. ॐ गम्भीरायै नमुः

५२. ॐ रूपात्मन्वतायै नमुः

५३. ॐ कालरातै्र्यै नमुः

५४. ॐ अनल्पशसद्धयै नमुः

५५. ॐ कमलारी नमुः

५६. ॐ पद्यवाशसनै्यै नमुः

५७. ॐ महासरस्वतै्यै नमुः

५८. ॐ मनःशसद्धायै नमुः

५९. ॐ मनोयोशगनै्यै नमुः

६०. ॐ मातथशगनै्यै नमुः

६१. ॐ ि◌ण्डमुण्डिाररणै्यै नमुः

६२. ॐ दैत्यदानवनाशिनै्यै नमुः

६३. ॐ मेषज्योशतषायै नमुः

६४. ॐ परंज्योशतषायै नमुः

६५. ॐ ओिज्योशतषायै नमुः

६६. ॐ सवथज्योशतस्वरूशपणै्यै नमुः।।

६७. ॐ सहस्रमूतै्यै नमुः

६८. ॐ ि◌वाथणै्यै नमुः

६९. ॐ सूयथमूशतथयरूशपणै्यै नमुः

७०. ॐ आयुलथक्ष्मै्यै नमुः

७१. ॐ शवद्यालक्ष्मै्यै नमुः

७२. ॐ सवथलक्ष्मीप्रदायै नमुः

७३. ॐ शविक्षणायै नमुः

७४. ॐ क्षीराणथववाशसनै्यै नमुः

७५. ॐ वागीश्वये नमुः

७६. ॐ वात्मिङ्ख्वै्यै नमुः

७७. ॐ अज्ञानज्ञानगिोरायै नमुः

७८. ॐ बलायै नमुः

७९. ॐ परमकल्याणै्यै नमुः

८०. ॐ भानुमण्डलवाशसनै्यै नमुः

८१. ॐ अव्यक्तायै नमुः

८२. ॐ व्यपारी नम

८३. ॐ अव्यक्तयारी नमुः

८४. ॐ अनन्स्ताये नमुः

८५. ॐ ि न्द्राय नमुः

८६. ॐ ि न्द्रमण्डलयाशधये नमुः

८७. ॐ ि न्द्रमण्डलमत्मण्डत्मुः

८८. ॐ भरी नम:

८९. ॐ परमानन्दाय नमुः

९०. ॐ शिवाय नम:

९१. ॐ अपराशजताय नमुः

९२. ॐ ज्ञानप्रापयै नमुः

९३. ॐ ज्ञानवत्यै नमुः

९४. ॐ ज्ञानमूत्थयै नमुः

९५. ॐ कलावत्ैयै नमुः

९६. ॐ श्मिानवाशसन्ैयै नमुः

९७. ॐ मात्ेरे नमुः

९८. ॐ परमकत्मल्पयन्ैयै नमुः

९९. ॐ घोषवत्ैयै नमुः

१००. ॐ दाररद्र्यहाररण्ैयै नमुः

१०१. ॐ शिवतेजोमुख्ैयै नमुः

१०२. ॐ शवषुणुवल्लभायै नमुः

१०३. ॐ कि शवभूशषतायै नमुः

१०४. ॐ कूमाथयै नमुः

१०५. ॐ मशहषासुरघाशतन्यै नमुः

१०६. ॐ सवथरक्षायै नमुः

१०७. ॐ महाकाल्यै नमुः

१०८. ॐ महालक्ष्म्यै नमुः

।। इशतश्री देवी-अष्टोत्तरित-नामावली ।।

१५. देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रम्

(श्री ंकरिायथकृतम्)

न मन्त्रंनोयनतंत्रं तदडपिनजानेसुतुडतमहो
न ाह्वानंध्यानंतदडपिनजानेसुतुडत-कर्ाः।
न जानेमुद्रास्तेतदडपिनजानेडवलपनं
परं जानेमातस्त्वदनुसरिंक्लेि-हरिम्।।१

डवधेरज्ञानेन द्रडविडवरहिालसतया
डवधेयिाक्यत्वात्तव ियोयाथ चुयुडतरभूत ।
तदेतत्क्षन्तव्ंयं जनडनसकलोद्धाररडिडवे
कुपुत्रो जायेत क्वडिदडपकुमातानभवडत।।२

पृडव्यां पुत्रास्ते जनडनबहवःसस्तन्तसरलाः
परं तेषां मध्ये डवरलतरलोऽहंतवसुतः।
मदीयोऽयं त्यागः समुडितडमदंनोतयडिवे
कुपुत्रो जायेत क्वडिदडप कुमातानभवडत।।३

जगन्मातमाथतस्तव ियिसेवा न रडिता
न वा दत्तं देडव द्रडविमडप भूयस्तव मया ।
तर्ाडप त्वं स्नेहं मडय डनरुपमं यत्प्रकुरुषे
कुपुत्रो जायेत क्वडिदडप कुमाता न भवडत ।।४

पररत्यक्ता देवा डवडवधडवडधसेवाकुलतया
मया पंर्ितिरडधकमपनीते तु वयडस ।
इदानीं ंिेन्मातस्तव यडद कृपा नाडप भडवता
डनरालम्बो लम्बोदरजनडन कं याडम ियिम् ।।५

श्वपाको जल्पाको भवडतमधुपाकोपमडगरा
डनरातंको रंको डवहरडतडिरंकोडटकनकैः ।।
तवापि कि डविडतमनुविफलडमदं
जनः को जानीते जनडनजपनीयंजपडवधौ ।।६
डिताभस्मालेपो गरलमिनंडदक्पटधरो
जटाधारी कण्ठे भुजगपडतहारीपुिपडतः ।

कपाली भूतिो भजडत जगदीकपदवीं ं
भवानी त्वत्पाडिग्रहिपररपाटीफलडमदम् ।।७

न मिोस्याकांिा भिवडवभववांछाडप ि न मे
न डवज्ञानापिा ि डिमुस्तख सुखिाडप न पुनः ।
अतस्त्यां संयिो जनडन जननं यातु मम वै
मृिानी रुद्रिी डिव डिव भवानीडत जपतः ।।८

नाराडधताडस डवडधना डवडवधोपिारैः
डकं रुिडिन्तनपरैनथ कृतं विोडभः ।
श्यामे त्वमेव यडद डकंनि मय्यनारे्
धत्से कृपामुडितमम्ब परं तवैव ।।९

आपतुसु मग्नः स्मरिं त्वदीयं
करोडम दुगे करिोिथवेडि ।
नैतिठत्वं मम भावयेरा्ः
ुधितृषाताथ जननीं ंस्मरस्तन्त ।।१०

जगदम्ब डवडित्रमत्र डकं पररपूिाथ करिास्तस्त िन्मडय ।
अपराधपरम्परावृतं न डह माता समुपिैते सुतम् ।।११

मत्समः पातकी नास्तस्त पापघ्नी त्वत्समा न डह ।
एवं ज्ञात्वा महादेडव यरा्योगं्यं तरा् कुरु ।।१२

इशत श्रीमच्छंकरिाायथशवरशितंदेव्यपराधक्षमापनस्तोत्रं समूपूणथम्।

१६. देवी-आरती

जैअमे्बेगौरी!

मैयाजयमंगलमूरती, मैया जै आनन्दकरणी,
तुमकोशनशिशदन ध्यावत, तुमको शनशिशदनध्यावत

हरर ब्रह्मा शिव री।।१ (ॐ जै अम्बे गौरी)

माँग शसन्दूर शवराजत, टीको मृगमद को,
मैया टीको मृगमद को।
उज्वल से दोऊ नैना, उज्वल से दोऊ नैना,
न्द्रिवदन नीको ।।२ (ॐ जै अम्बे गौरी)

कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजे,
मैया रक्ताम्बर राजे,
रक्तपुष्प वनमाला, रक्तपुष्प वनमाला,
कण्ठन पर साजे ।।३ (ॐ जै अम्बे गौरी)

केहरर वाहन राजत, िंख-खप्पर-धारी,
मैया िंख-खप्पर-धारी।
सुर नर मुशनजन सेशवत, सुर नर मुशनजन सेशवत,
शतनके दुःख हारी ।।४ (ॐ जै अम्बे गौरी)

कानन कुण्डल ोशभत, नासाग्रे मोती,
मैया नासाग्रे मोती।
कोशटक िन्द्र शदवाकर, कोशटक िन्द्र शदवाकर,
राजत सम ज्योती ।।५ (ॐ जै अम्बे गौरी)

ुम्भि-शनिुम्भ शवदारे, मशहषासुर घाती,
मैया मशहषासुरघाती।
धूम्र-शवलोन नाशिशन, धून-शवलोन नाशिशन,
शनशिशदन मदमाती ।।६ (ॐ जै अम्बे गौरी)
ींसिंठयोशगशनगावत,नृत्यकरतभैरूँ,
मैया नृत्य करत भैरूँ ।
बाजत ताल मृदंगा, बाजत ताल मृदंगा,
अरु बाजत िमरू ।।७ (ॐ जै अम्बे गौरी)

भुजा ार अशत ोशभत, िंख-खप्पर-धारी,
मैया िंख-खप्पर-धारी।
मन वांशछत फल पावत, मन वांशछत फल पावत,
सेवत नर-नारर ।।८ (ॐ जै अम्बे गौरी)

कंनि ाल शवराजत, अगर कपूर बाती,
मैया अगर कपूर बाती ।
श्री मालकेतु में राजत, श्री मालकेतु में राजत,
कोशट रतन ज्योती ।।९ (ॐ जै अम्बे गौरी)

यह अमे्बे जी की आरती, जो कोई शनत गावै,
मैया जो कोई शनत गावै।
कहत शिवानन्द स्वामी, कहत शिवानन्द स्वामी ,
सुख सम्पशत पावै ।।१० (ॐ जै अमे्बे गौरी)

१७. श्री गंगा-आरती

ॐजय गंगे माता, मैया जय गंगे माता ।
जोनर तुमको ध्याता, जो नर तुमको ध्याता,
मनवांशछत फल पाता ।। ॐ जय...

न्द्रि-सी ज्योशत तुम्हारी, जल शनमथल आता,
मैया जल शनमथल आता,
रिण पि़ जो तेरी, िरण पि़ जो तेरी,
सो नर तर जाता ।।ॐ जय.....
पुत्र सगर के तारे, सब जग को ज्ञाता,
मैया सब जग को ज्ञाता,
कृपा-दृशष्ट तुम्हारी, कृपा-दृशष्ट तुम्हारी,
शत्रभुवन सुखदाता ।। ॐ जय...

एक ही बार जो तेरी, िरणागत आता,
मैया िरणागत आता,
यम की त्रास शमटा कर, यम की त्रास शमटा कर,
परम गती पाता ।। ॐ जय...

आरती मात तुम्हारी, जो कोई नर गाता,
मैया जो कोई नर गाता,
दास वही सहज में, भक्त वही सहज में
मुत्मक्त को पाता ।। ॐ जय...

१८. श्रीसूक्तम्

हररुः ॐ ।। शहरण्यवणिां हररणीं ंसुवणथरजतस्रजाम् । िन्द्रां शहरण्मयीं ंलक्ष्मी जातवेदो म आ
वह ।। तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगाशमनीम् । ययां शहरण्ंयं शवने्देयं गामश्ंवं पुरुषानहम् ।। अश्वपूविां रर्मध्यां हत्मस्तनादप्रबोशधनीम्। शश्रयं देवीमुपह्वये श्रीमाथ देवीजुथषताम् ।। कां सोत्मस्मतां
शहरण्यप्राकारामिााँ ज्वलन्तीं ंतृप्तां तपथयन्तीम् । पदे्ये त्मस्तां पद्मवणाथ ताशमहोपह्वये शश्रयम् ।। िन्द्रां प्रभासां यिसा ज्वलन्तीं ंशश्रयं लोके देवजुष्टामुदाराम् । तां पशद्मनीमीं ंिरणमहं प्रपदे्येऽलक्ष्मीमें नश्यतां
त्वां वृणे ।। आशदत्यवणे तपसोऽशधजातो वनस्पशतस्तव वृक्षोऽर् शबल्वुः । तय फलाशन तपसा नुदनुतु

मायान्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः ।। उपैतु मां देवसखुः कीशतथश्च मशणना सह। प्रादुभूथतोऽत्मस्म राष्टेरऽत्मस्मन् कीशतथमृत्मंद्ध ददातु मे ।। कुषुत्मत्पपासामलां जेयेष्ठामलक्ष्मीं ंनियाम्यहम् । अभूशतमसमृत्मंद्ध ि सविां शनणथद मे गृहात् ।। गन्धद्वारां दुराधषिां शनत्यपुष्टां करीशषणीम्। ईश्वरीं ंसवथभूतानां ताशमहोपह्वये शश्रयम्।। मनसुः काममाकूशतं विुः सत्यमीमशह । पूिनां रूपमन्त्रय मशय श्रीुः श्रयतां यिुः ।। कदथमेन प्रजाभूता मशय सम्भव कदथम । शश्रयं वासय मे कुले मातरं पद्ममाशलनीम् ।। आपुः सृजनुतु शिग्धाशन शिक्लीत वस मे गृहे । शन ि देवीं ंमातरं शश्रयं वासय मे कुले ।। ओाथ पुष्कररणीं ंपुशष्टं शपगंलां पद्ममाशलनीम्। िन्द्रां शहरण्मयीं ंलक्ष्मीं ं जातवेदो म आ वह ।। आदाथ युः कररणीं ं यशष्टं सुवणिां हेममाशलनीम्। सूयाथ शहरण्मयीं ं लक्ष्मीं ंजातवेदो म आ वह ।। तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगाशमनीम् । ययां शहरण्यं प्रभूतं गावो दायोऽश्वान् शवन्देयं पुरुषानहम्।। युः ुिशिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्। सूक्तं पंिदेथ ि श्रीकामुः सततं जपेत् ।। पद्मानने पद्म ऊरू पद्माक्षी पद्मसम्भवे । तन्मे भजशस पद्माशक्ष येन सौख्यं लभाम्यहम्।। अश्वदायी गोदायी धनदायी महाधने । धनं मे जुषतां देशव सवथकामांश्च देशह मे ।। पद्मानने पद्मशवपद्मपत्रे पद्यशप्रये पद्मदलायताशक्ष । शवश्वशप्रये शवश्वमनोऽनुकूले त्वत्पादपद्यं मशय सशन्नधत्स्व ।। पुत्रपौत्रधनं धान्यं हस्त्यश्वाशदगवे रम्। प्रजानां भवसी माता आयुष्मन्तं करोतु मे ।। धनमाथ धथनं वायुधथनं सूया धनं वसुः । धनशमन्ो बृहस्पशतवथरुणं धनमसुतु ते ।। वैनतेय सोमं शपब सोमं शपबतु बृ हा । सोमं धनय सोशमनो म 'ददातु सोशमनुः ।। न क्रोधो न ि मात्सय न लोगो निुभा मशतुः । भवत्मन्त कृतपु यानां भक्तानां श्रीसूक्तं जपेत्।। सरशसजशनलये सरोजहसे्ते धवलतरांुकिगन्धमाल्योरे्। भगवशत हररवल्लभे मनोजे्ञ १ भुवनभूशतकरर प्रसीद म म्।। शवषुणुपत्न क्षमां देव माधव माधवशप्रयाम्। लक्ष्म शप्रयसख देव नमाम्यचुयुतवल्लभाम्।। महालक्ष्मी ि शवग्रहे शवषुणुपत्नी ि धीमशह । तन्नो लक्ष्मीुः प्रिोदयात् ।। श्रीविथस्वमायुष्यमारो यमाशवधाच्छोभमानं महीयते । धान्यं धनं पिुं बहपु लाभं ितसंवत्सरं दीघथमायुः ।।

(पद्मशप्रये पशद्मशन पद्महसे्ते पद्मालये पद्मदलायताशक्ष। शवश्वशप्रये शवषुणुमनोऽनुकूले त्वत्पादपद्मं मशय सशन्नधत्स्व ।।

शश्रये जात शश्रय आशनयाथय शश्रयं वयो जशनतृभ्यो दधातु । शश्रयं वसाना अमृतत्वमायन् भजत्मन्त सद्युः सशवता शवदधूयून् ।। शश्रय एवैनं तत्मच्छरयामादधाशत । सन्ततमृिा वषट्कृत्यं सन्धत्तं सन्धीयते प्रजया पिुशभुः ।। य एवं वेद ।। ॐ महादेवै्यै ि शवद्महे शवषुणुपत्न्यै ि धीमशह । तन्नो लक्ष्मीुः प्रिोदयात्।।)

हररुः ॐ ! ितन्मन्तुः ितन्मन्तुः ितन्मन्तुः ।।

शिनवार

श्रीनैश्चरस्तोत्रम्

१. िशनस्तोत्रम्

ॐश्रीगणिेाय नमुः । अय श्री िनैश्चरस्तोत्रम्य दिरर् ऋशषुः ।िनैश्चको देवता । शवष्टुप् छन्दुः ।िनैश्चरप्रीत्यरे् जपे शवशनयोगुः ।।

दिरर् उवाि

क्कोणोऽन्तको रौियमोऽर् बभ्रुरुः कृष्णुः िशनुः शपंगलमन्दसौररुः।
शनत्ंवं सूमृतो यो हरते ि पीिां तसै्मै नमुः श्रीरशवनन्दनाय ।।१

सुरासुरुाः शंकंपुरुषोरगेन्द्रा गन्धवथशवद्याधरपन्नगाश्च ।
पीड्यत्मन्त सवे शवषमत्मस्तेन तसै्मै नमुः श्रीरशवनन्दनाय ।।२

नरा नरेन्द्रुाः पिवो मृगेन्द्रा वन्याश्च ये कीटपतंगभृगुाः ।
पीड्यत्मन्त सवे शवषमत्मस्तेन तसै्मै नमुः श्रीरशवनन्दनाय ।।३

दिाश्च दुगाथशण वनाशन यत्र सेनाशनवि्ुः पुरपत्तनाशन ।
पीड्यत्मन्त सवे शवषमत्मस्तेन तसै्मै नमुः श्रीरशवनन्दनाय ।।४

शतलैयथवैमाथषगि्ान्नदानैलोहेन नीलाम्बरदानतो वा ।
प्रीणाशत मनै्त्रैशनथजवासरे ि तसै्मै नमुः श्रीरशवनन्दनाय ।।५

प्रयागकूले यमुनातटे ि सरस्वतीपुण्यजले गुहायाम् ।
यो योशगनां ध्यानगतोऽशप सूक्ष्मस्तसै्मै नमुः श्रीरशवनन्दनाय ।।६

अन्यप्रदिात्स्वगृहं प्रशवष्टस्तदीयवारे स नरुः सुखी यात् ।
गृहागतो यो न पुनुः प्रयाशत तसै्मै नमुः श्रीरशवनन्दनाय ।।७

सष्टा स्वयमूभूभुथवनत्रयय आता हरीिी हरते शपनाकी।
एकत्मस्त्रधा ऋग्यजुःसाममूशतथस्तयै नमुः श्रीरशवनन्दनाय ।।८

न्यिष्टकं युः प्रयतुः प्रभाते शनत्ंयं सुपुतै्रुः पिुबान्धवैश्च ।

पठेतुतु सौख्यं भुशव भोगयुक्तुः प्राप्नोशत शनवाथणपदं तदनेते ।।९

कोणस्थुः शपंगलो बभुः कृष्णो रौिऽन्तको यमुः ।
सौररुः िनैश्चरो मन्दुः शपप्पलादेन संसुतुतुः ।।१०

एताशन दिनामाशन प्रातरुत्थाय युः पठेत् ।
नैिश्चरकृता पिीा न कदाशिद् भशवष्यशत ।।११

हररुः ॐ ितमन्तुः ितमन्तुः ितमन्तुः ।।

यह श्री िनैश्चर महाराज के शवषय में दिरकृत स्तोत्र है। िनैश्चर देवता है। छन्द शत्रष्टुप् है। िनैश्चर की प्रीशत के शलए जप, प्रार्थना और योग का शवधान कहते हैं।

दिरर् जी बोले :

मैं सूयथ -पुत्र की वन्दना करता हाँ, शजसको कोण, अन्तक, रौि, यम, बचुनु, कृष्ण, शिन, शपंगल, मन्द और सौरर नामों ंसे शनत्य-प्रशत स्मरण शकया जाता है। जो कोई इस प्रकार उनकी वन्दना करते हैं, उनके सभी कष्टों ंको िनैश्चर महाराज हर लेते हैं।॥१

मैं सूयथतनय की प्रार्थना करता हाँ, जो शवषम राशि में रहते और देवताओं,ं राक्षसों,ं वरुण, गन्धवों,ं शवद्याधरों ंऔर सपों-सभी को पिीा देते हैं।॥२

मैं रशवनन्दन की वन्दना करता हाँ, जो शवषम राशि में त्मस्त रह कर नरों,ं राजाओं,ं जानवरों,ं शसंहों,ं वन-जनुतुओं,ं कीिों,ं मधुमत्मक्खयों–सबको पीशित करते हैं।।३

मैं रशवनन्दन की वन्दना करता हाँ, जो शवषम राशि में रह कर दिों,ं दुगगों, अरण्यों,ं सैन्यदलों,ं नगरों ंऔर मण्डलों ंको केलि देते हैं।।४

रशवनन्दन को नमस्कार, शजनें मन्त्र, शतल, जौ, गिु, िना, ावल, धातु की मूशतथयाँ और नीले वस्त्र दे कर प्रसन्न शकया जाता है।॥५

रशवनन्दन को नमस्कार, जो बहुत ही सूक्ष्म हैं, यद्यशप वे योशगयों ंको गुहाओं ंमें, प्रयाग और यमुना के फूलों ंपर और सरस्वती के पशवत्र जल में ध्यान द्वारा शमलते हैं ।।६

शदवाकरनन्दन को जमस्कार, जो दूसरे गृह में से िशनवार को अपने गृह में पहुँिने हैं, तो लोगों ंको प्रसत्र रखते हैं और जो एक बार गृह छिो देने पर शफर बहुत वषों तक उधर नहीं ं लौटते हैं।11७

शदनकरनन्दन को नमस्कार, जो यद्यशप एक हैं शफर भी ब्रह्मा हो कर तीनों ंलोकों ंpi सृजनकरते,हरर हो कर रक्षा करते तर्ा शिव हो कर शवनिा करते हुए तीन शभन्न रूपों ंमें प्रकटहोतेहैंऔर जो ऋक्, यजु और साम के रूप हैं ।।८

जोइसिशनस्तोत्र का पाठ अपने पुत्र, सम्बन्धी, धनाशद सशहत प्रातुःकाल दृढ़ शित्त हो कर करतेहैं,वेइसलोक में सुखों ंको भोगते और अन्ततुः शनवाथण की प्रात्मप्त करते हैं।।९

कोणस्,शपंगल, बभ्रुरु, कृष्ण, रौ, अन्तक, यम, सौरर, िनैश्चर और मन्द के नामों ंसे शपप्पलादद्वारासंसुतुत हुए हैं ।।१०

जोप्रातुःकाल उठ कर इन दि नामों ंका पाठ करता है, उसको िनैश्चर की ओर से शकसीप्रकारकादुःख नहीं ंहोता ।।११

श्री हनुमत्स्तोत्रम्

२. वन्दे सन्तं श्री हनुमन्तम्

श्लोक

यत्र यत्र रघुनार्कीतथनं,तत्रतत्रकृतमस्तकांजडलम् ।
बाष्पवारर-पररपूिथलोनं,मारुडतंनमत रिासान्तकम् ।।

मैंवायुपुत्रहनुमान्कोप्रणाम करता हाँ जो जहाँ कहीं ंभी भगवान् राम का कीतथन शकया जाताहै,वहाँभत्मक्तसेशिरकेऊपर हार् जिो कर तर्ा आँखों ंमें आनन्दाशुरु भर कर उपत्मस्त रहतेहैंऔरजोराक्षसों ंकेशलएकाल के समान हैं।

गीत

खन्दे सन्तं श्रीहनुमन्तं, रामदास-ममलं बलवन्तम् ।।१।। वन्दे....

प्रेरेमरुद्धगल-मशुरु वहन्तम्, पुलांडकत-वपुषा डवलयन्तम् ।
रामकर्ामृत-मधूडन डपबन्तम्, परम-प्रेरेम-भरि नटन्तम् ।।२।। वन्दे....

सवं राममयं पश्यन्तम्, राम राम इडत सदा जपन्तम्।
सद्धस्तक्त-परं समुपडदिन्तम्, डवठ्ठलपन्तं प्रडतमुखयन्तम् ।।३।। वन्दे....

मैं सन्त-हृदय श्री हनुमान् जी को नमस्कार करता हाँ जो भगवान् राम के अनन्य भक्त हैं, जो ुिद्ध तर्ा सबल हैं ।।१

शजनका कण्ठ भत्मक्त से रुद्ध है, आँखों ंसे आनन्दाशुरुओं ंकी धारा प्रवाशहत हो रही है तर्ा शजनकासमूपूणथ ंरीर रोमांसे पुलशकत हो रहा है। जो भगवान् राम के कर्-रुपी अमृत का मधुपानकरते तर्ा परम भत्मक्त के सार् नृत्य करते हैं।।२

जोसब-कुछ भगवान् राम के ही रूप में देखते हैं तर्ा जो सदा 'राम-नाम' जप करते हैं।जोश्रेष्ठभत्मक्त-मागथ का पर्प्रदिथन करते हैं, भगवान् के सार् परम अनुरक्त हैं तर्ा सुख को
प्रदानकरनेवाले हैं ।।३

नामावली

आंजनेय आंजनेयआंजनेयपाडहमाम्।
हनुमन्त हनुमन्तहनुमन्तरिमाम्।।

३. जयशतमंगलागार

(श्री तुलसीदासकृतम्)

मनोजवं मारुततुल्यवेगं, डजतेस्तन्द्रयं बुस्तद्धमतां वररष्ठम् ।
वातात्मजं वानरयूर्-मुख्यं, श्रीरामदूतं डिरसा नमाडम ।।

मैंउस श्री रामदूत को अपने मस्तक से प्रणाम करता हाँ जो मन और वायु के समानगशत वालाहै,शजसने इत्मन्द्रयों ंपर काबू पा शलया है, जो समस्त बुत्मद्धमानों ंमें श्रेष्ठ है, जो वायुपुत्रहै औरजोवानर-सेना का प्रमुख है।

गीत

जयडत मंगलागारसंसार-भारापहार,
वानराकार-डवग्रह-पुरारर।
राम-रोषानल-ज्वाल-माला डमष-ध्यान्त ि-र-
लिभसंहारकारर ।।१

जयडत मरुदंजना-मोद-मस्तन्दर
नत-ग्रीव सुग्रीव-दु:खैकबन्धो ।
यातुधानोद्धत-कुरुद्ध-कालाडग्रहर
डसद्ध-सुर-सजनानन्द-डसन्धो ।।२

जयडत रुद्राग्रडि डवश्व-वनद्याग्रडि,
डवश्व-डवख्यात-भट ि-क्रवडतथ।
साम-गाताग्रडि काम-जेताग्रडि
राम-डहत राम-भक्तानुवडतथ ।।३

जयडत संग्राम-जय राम-सने्दि-हर,
कौल-कुिल-कल्या-भाडष ।
राम-डवरहाकथ-सन्तप्त-भरताडद-नर-
नारी ि-ीतल-करि-कल्पिडि ।।४

जयडत डसंहासनासीन सीतारमि
डनरस्तख-डनभथर हरष-नृत्यकारी ।
राम-साम्राज्य ोभा-सडहत सवथदा,
तुलसी-मानस-रामपुर-डवहारी ।।५

हे हनुमान, तेरी जय हो। तू मंगलों ं का घर है, (जन्म-मृतुयु-रूपी) संसार के भार को हलका करने वाला है। तू स्वयं वानर-वेषधारी भगवान् शिव है। तू श्रीराम के क्रोधरूपी अशिशिखा के शमसमेंराक्षसरूपीपतंगों ंकासंहारकरनेवालाहै।।१

तेरी जय हो। तू वायु देव और अंजना देवी के आनन्द का मत्मन्दर है। दुःख से शजसका मस्तक झुकगयारा्,उससुग्रीवके दुखमेंतूहीएकमात्रशमत्ररहाहै।तूकुषुब्धराक्षसों ंके कालाशग सदिृक्रोषकोशमटानेवालाऔरशसद्धपुरुषों,ंदेवताओं ंतर्ासज्जनों ंकोआनन्ददेने वाला महासागरहै।।२

तेरी जय हो ! एकादि रिों ं में तू सवथप्रर्म है। शवश्वभर में शजतने भी पूजनीय हैं, उन सबमें तू उतूकृ ष्ट है। तू शवश्वशवख्यात योद्धाओं ं का सम्राट् है। सामवेद के गायकों ं और कामशवजेताओं ं मेंभीतूप्रर्महैऔरभगवान्रामिन्द्रकाभलाकरनेवालातर्ाश्रीरामकेभक्तों ंकाअनुयायी है ।।३

तेरी जय हो! तू संग्रामों ं का शवजेता है, श्री रामिन्द्र जी का सने्देवाहक है, अयोध्या में श्रीराम का कु ल-समिार पहुाँनेवाला है। भरत आशद नर-नारी जन श्रीराम के शवयोग-रूपी सूयथ से सन्तप्तरे,तबउनकोीतलतापहुाँनेवालाकल्पतरुतूहीर्ा।।४

तेरी जय हो! श्रीराम जब शसंहासन पर शवराजमान हुए तब उन्ें देख कर आनन्द-शवभोर हो नृत्य करनेवालातूहीहै।शजसप्रकारअयोध्यामेंश्रीरामिन्द्रअपनीसमस्तोभाके सार् शवराजमान हैं, उसी प्रकार तुलसीदास की मानसरूपी अयोध्या में तू सवथदा शवराजमान रहे ।।५

नामावली

श्रीरामदूत जय हनुमन्त पाडह माम्।
श्रीरामदूत जय आंजनेय रि माम्।।

४. राम सुशमर राम सुशमर

(श्री गुरुनानककृत)

आपदामपहताथरं दातारं सवथसम्पदाम् ।
लोकाडभरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम् ।।

मैं भगवान् श्रीराम को बारम्बार नमस्कार करता हाँ जो समूपूणथ आपशत्तयों ंको दूर करते हैं, अत्मखल सम्पशत्तयों ंको प्रदान करते हैं और समस्त संसार को आनत्मन्दत करते हैं।

गीत

राम सुडमर राम सुडमर,एडहतेरोकाजहै।

माया की संग त्याग,हररजूकीसरनलाग।
जगत सुख मान डमथ्या,रूठीसबसाजहै।।१

सुपने ज्यों ंधन डपछान,काहेपरकरतमान।
बारू की भीत तैसे,बसुधाकीराजहै।।२

'नानक' जन कहत बात,डबनडसजैहैंतेरोगात।
डछन-डछन करर गयो काल्ह,तैसेजातआजहै।।३

रेमन,श्रीरामकास्मरणकर,श्रीरामकास्मरणकर।तेराएकमात्रयहीकतथव्य है।

मायाकासार्छिदे।भगवान्किरणग्रहणकर।जगत्के सुखकोशमथ्या समझ । सांसाररक ऐश्वयथ झूठू ा है। तू राम का स्मरण कर ।।१

धनकोस्वप्नवत्समझ।इससंसारकाराज्यएकबालूकीदीवारके समान (क्षणभंगुर) है। शफरतूशकसपरअशभमानकररहाहै?तूरामकास्मरणकर।।२

नानकजीयहबातकहरहेहैंशकएकशदनतेरिारीरनिाकोप्राप्तहोगा। पल-पल करकेकलकाशदनव्यतीतहिोलाऔरउसीभाँशतआजभी(पल-पलकर)व्यतीत हो जायेगा। तू रामकास्मरणकर।।३

नामावली

राम राम रामसीताराम राम।
राम राम रामसीताराम राम।।

श्री राम-स्तोत्रम्

५. ुिद्ध ब्रह्म परात्पर राम

श्लोक

मंगलं रामिन्द्राय,महनीय गिुाब्धये।
क्रिवडतथ-तनूजाय,सावथभौमाय मंगलम्।।
मंगलं सत्यपालाय,धमथ-संस्तरुडत-हेतवे।
सीता-मनोडभरामाय,रामिन्द्राय मंगलम्।।

भगवान्राम का मंगल हो। जो सद्गुणों ंके सागर हैं, जो िक्रवती राजा के पुत्र हैं, जो स्वयंसम्राट्हैं,उन राम का मंगल हो। भगवान् राम का मंगल हो! जो सत्य की रक्षा करते हैं, जोधमथकेसंस्ापक हैं और जो देवी सीता के मन को आनन्द देने वाले हैं, उन रामिन्द्र का मंगल हो!

बालकाण्ड

श्री राम जय रामजयजयराम।
श्री राम जय रामजयजयराम।।
श्री राम जय रामजयजयराम।
श्री राम जय रामजयजयराम।।
श्री राम जय रामजयजयराम।
श्री राम जय रामजयजयराम।।
श्री राम जय रामजयजयराम।
श्री राम जय रामजयजयराम।।

ुद्धि ब्र्ह्म परात्पर राम
कालात्मक परमेश्वर राम
षितल्प-सुख-डनडद्रत राम
ब्र्ह्माद्यमरगि-प्राडर्थत राम

ण्डि-डकरि-कुल-मण्डन राम

श्रीमिरर्-नन्दन राम
किौल्या-सुख-वद्धथन राम
डवश्वाडमत्र-डप्रय-धन राम
घोर-ताडका-घातक राम
मारीिडद-डनपातक राम
कौडिक-मख-संरिक राम

श्रीमदहल्योद्धारक राम

गौतम-मुडन समूपूडजत राम

सुर-मुडन-वर-गि संसुतुत राम
नाडवक-धाडवत-मृदु-पद राम
डमडर्ला-पुर-जन-मोदक राम

डवदेह-मानस रंजक राम
त्र्यम्बक-कामुथक-भंजक राम
सीताडपथत-वरमाडलक राम
कृत-वैवाडहक-कौतुक राम
भागथव-दपथ-डवनिाक राम
श्रीमदयोध्या-पालक राम

रघुपशत राघव राजा राम।
पशतत पावन सीता राम ।।

अयोध्याकाण्ड

रघुपडत राघवराजाराम।
पडतत पावनसीताराम।।

अगडित-गिुगि-भूडषत राम
अवनीतनया-काडमत राम
राकिान्द्र-समानन राम
डपतृवाक्याडश्रत-कानन राम
डप्रय-गुह-डवडनवेडदत पद राम
तत्क्षाडलत-डनजमृदु -पद राम
भरिाज-मुखानन्दक राम
डित्रकूटाडद्र-डनकेतन राम
दिरर्-संतत डिस्तन्तत राम
कैकेयी-तनयाडिथत राम
डवरडित-डनज-डपतृकमथक राम
भरताडपथ त-डनज-पादु किो राम

रघुपडत राघवराजाराम।
पडतत पावनसीताराम।।

अरण्यकाण्ड

रघुपडत राघवराजा राम । पडतत
पावनसीता राम ।।

दण्डक-वन-जन-पावन राम
दुष्ट-डवराध-डवनिान राम
रिभंग-सुतीक्ष्मिाडिथत राम
अगस्त्यानुग्रह-वडधथत राम
गृध्राडधप-संसेडवत राम
पंविटी-तट-सुस्तस्त राम
पूिथिखाडतथ-डवधायक राम
खरदूषि-मुख-सूदक राम
सीताडप्रय-हररिानुग राम
मारीिाडतथ-कृद्धिुग राम

अपहृत-सीतान्वेषक राम
गृध्राडधप-गडतदायक राम
बिरीदत्त-फलिान राम
कबन्ध-बाहुिदक राम

रघुपडत राघव राजा राम।
पडतत पावन सीता राम ।।

डकस्तष्कन्धाकाण्ड

रघुपडत राघवराजाराम।
पडतत पावनसीताराम।।

हनुमत्-सेडवत-डनजपद राम
नतसुग्रीवाभीष्टद राम
गडवथत-वाडल-संहार राम
वानर-दूत-प्रेरेषक राम
डहतकर-लक्ष्ि-संयुत राम
कडपवर-संतत-संसृमृत राम

रघुपडत राघव राजा राम ।
पडतत पावन सीता राम ।।

सुन्दरकाण्ड

रघुपडत राघवराजाराम।
पडतत पावनसीताराम।।

तद्गडत-डवघ्न-ध्ंवसक राम
सीता-प्रिाधारक राम
दुष्ट-दिानन-दूडषत राम

डिष्ट-हनुमत्-भूडषत राम
सीतावेडदत-कानन राम
कृतूिडामडि-दिथन राम
कडपवर-विनाश्वाडसत राम
रावि-डनधन-प्रस्तस्त राम

रघुपडत राघवराजाराम।
पडतत पावनसीताराम।।

युद्धकाण्ड

रघुपडत राघवराजा राम।
पडतत पावनसीता राम।।

वानर-सैन्य-समावृत राम
रि ोडषत-रत्नाकर राम
डवभीषि भयदायक राम
पवथत-सेतु-डनबन्धक राम
कुम्भकिथ-डिरिदक राम
रिास-संघ-डवमदथक राम
अडहमडहरावि ारक राम
संहत-दिमुख-रावि राम
डवडधभवमुखसुरसंसुतुत राम

खस्तस्त-दिरर्-वीडित राम
सीतादिथन-मोडदत राम
अडभडषक्त-डवभीषि-नुत राम
पुष्पकयानारोहि राम
भरिाजाडभडनषेवन राम
भरत प्रिाडप्रय-कारक राम
अवधपुरी कुलभूषि राम
सकल-सत्त्वसमानन राम
रत्नलसत्-पीठस्तस्त राम
पट्टाडभषेकालंकृत राम
पाडर्थवकुल सम्माडनत राम
डवभीषिाडपथत रंजक राम
किीकुलानुग्रहकर राम
सकलजीव-संरिक राम
समस्त-लोकोद्धारक राम

रघुपडत राघव राजा राम ।
पडतत पावन सीता राम ।।

नामावली

रघुपडत राघवराजाराम।
पडतत पावनसीताराम।।
ईश्वर ओतेरेनाम।
सबको सन्मडतदेभगवान्।।

हे रघुवंि के प्रभु , सूयथवंी राजा रघु के वंि में जन्म-ग्रहण करने वाले, पशततों ंको ुिद्ध करने वाले, हे सीताराम , ईश्वर और अल्ला तेरे ही नाम हैं। हे भगवान्! सबको सद्बुत्मद्ध प्रदान कर!

६. रामिन्द्र रघुवीर

रामिन्द्र रघुवीर रामिन्द्र रिधीर
रामिन्द्र रघुनार् रामिन्द्र जगन्नार् ।
रामिन्द्र रघुराम रामिन्द्र परं-धाम
रामिन्द्र मम बन्धो रामिन्द्र दयाडसन्धो ।।

रामिन्द्ररघुके वंकि श्रीरामिन्द्ररघुवंकियोद्धा हैं। श्री रामिन्द्र युद्धक्षेत्र में दृढ़ और ान्त रहने वाले हैं।श्री स्वामीहैं। श्री रामिन्द्र अत्मखल शवश्व के प्रभु हैं। श्री रामिन्द्र रघुवंशियों ंको आनन्ददेनेवालेहैं।श्रीरामिन्द्र परम-पद हैं। श्री रामिन्द्र मेरे बनुधु हैं। श्री रामिन्द्र दया के सागर हैं।

७. खेलशत मम हृदये

श्लोक

जयतु जयतु मन्त्रं,जन्म-साफल्य-मन्त्रं
जनन-मरि-भेद-क्लेि-डवेिद-मन्त्रम् ।।
सकल-डनगम-मन्त्रं सवथ ासै्त्रैकमन्त्रं
रघुपडत-डनज-मन्त्रं राम-रामेडत मन्त्रम् ।।

उसमन्त्रकी जय हो, जो मानव-जन्म को सफल बनाता है, जन्म-मृतुयु, भेद तर्ा क्लेि कासमूलनिाकरता है और जो सभी वेदों ंका मन्त्र है, वह एक मन्त्र जो सभी ास्त्रों ंमें पाया जाताहै,जोभगवान् राम का अपना मन्त्र- 'राम-राम' मन्त्र है।

गीत

खेलडत मम हृदये राम:खेलडत मम हृदये ।
मोह-महिाथव-तारिकारी
राग ैष-मुखासुर-मारी ।।१ (खेलडत...)
स्तिन्त-डवदेह-सुता-सहिारी,
दहरायोध्या नगर-डवहारी ।।२ (खेलडत...)
परमहंस-साम्राज्योद्धारी,
सत्य-ज्ञानानन्द रीरी ।।३ (खेलडत...)

वहराममेरेहृदय में खेलता है, वह मेरे हृदय में खेलता है।

वहप्राणीकोमोह (अज्ञान) के महासागर से पार उतारता है, वह राग-द्वेषाशद असुरों ंका संहार करता है ।।१

शजसकीसहिरी ित्मन्त है, सीता है तर्ा जो अयोध्या नगर (हृदयाकिा) में शवहार करता है ।।२

जोपरमहंसों ंके साम्राज्य का उद्धारक है तर्ा शजसका िरीर सत्य, ज्ञान तर्ा आनन्द है (वहराममेरेहृदय में खेलता है) ।।३

नामावली

राम राम रामरामराम-नाम तारकम्।
राम-कृष्ण-वासुदेवभस्तक्त-मुस्तक्त-दायकम्।।
जानकी-मनोहरं सवथ-लोक-नायकम्।
किराडद सेव्यमानपुण्यनाम कीतथनम्।।

८. पे्रेम मुशदत मन से कहो

पे्रेम मुडदत मन से कहो
राम राम राम श्री राम राम राम,
राम राम राम श्री राम राम राम ।।१

पाप कटे दुःखडमटे,लेतराम-नाम,
भव-समुद्र-सुखद-नाव एक राम-नाम ।।२ श्री राम...

परमि ास्तन्त-सुख-डनधान, डदव्य राम-नाम,
डनराधार को अधार, एकरामनाम।।३श्रीराम...

परम गोप्यपरमइष्ट-मन्त्रराम-नाम,
सन्त-हृदय-सदा-बसत, एक राम-नाम ।।४ श्री राम...

महादेव सततजपत,डदव्यराम-नाम,
किी-मरत मुस्तक्त करत,कहतराम-नाम।।५श्रीराम...

मात-डपता बनुधु सखासबहीराम-नाम,
भक्त-जनन-जीवन-धन, एकराम-नाम।।६श्रीराम...

अर्थ

पे्रेमऔरआनन्दपूणथमनसेबार-बार राम-नाम लेते रहो ।।१

रामकानामलेनेसेपापऔरदुख दूर हो जाते हैं। संसार-रूपी सागर को सुखपूवथक पार करने के शलएरामकानामहीनौकाहै।।२

भगवान् राम का शदव्य नाम परम ात्मन्त और आनन्द का धाम है। शजसका कोई आश्रय नहीं, उन शनराशश्रतों के शलए एकमात्र राम नाम ही आश्रय है।।३

राम-नाम बहुत ही गोपनीय इष्ट-मन्त्र है। राम-नाम सन्तों के हृदय में सदा शनवास करता है ।।४

भगवान्शिवजीसदा राम-नाम का जप करते रहते हैं। किी नगरी में राम-नाम का उच्चारणकरतेहुएिरीरत्याग करने वाले प्राशणयों को वह मुत्मक्त प्रदान करते हैं ।।५

रामकानाममाता, शपता, भाई, शमत्र-सब-कुछ ही है। राम-नाम भक्तों का जीवन-धन है ।।६

९. शपब रे राम-रसम्

(श्री सदाशिवब्रह्मेन्द्रकृतम्)

श्लोक

वैदेही-सडहतं सुर-दुम-तलेहैमे महा-मण्डपे,
मधे्येपुष्पकमासने मडिमयेवीरासने संस्तस्तम् ।
अगे्रे वायडत प्रभंजन-सुतेतत्त्वं मुडनभ्यः परं,
व्याख्यान्तं भरताडदडभः पररवृतंरामं भजे श्यामलम् ।।

मैं श्यामल राम की पूजा करता हाँ जो रत्न-जशटत आसन पर पुष्पों से आभूशषत वीरासन में स्वणथ-मण्डप के बिी में कल्पवृक्ष के निी भगवती सीता के सशहत बैठे हैं, शजनके समक्ष हनुमान् जी ज्ञाशनयों को परम तत्त्व का उपदि दे रहे हैं और जो भरत आशद से पररवृत हैं।

गीत

डपब रे राम-रसम् रसने,डपब रे राम-रसम्।
दूरीकृत-पातक-संसगथ
पूररत-नानाडवध-फल-वगथम् ।।१ डपब रे...

जनन-मरि-भयि ोक-डवदूरं
सकलि ास्त्र-डनगमागम-सारम् ।।२ डपब रे...

पररपाडलत-सरडसज-गभाथण्डं
परम-पडवत्रीकृत-पाषण्डम् ।।३ डपव रे...

ुद्धि-परमहंसाश्रम-गीतं
ुकि ौनक-कौडिक-मुख-पीतम् ।।४ डपव रे . . .

राम-नामके रसकापानकरो,हेमेरीशजह्वा ! राम-नाम-सुधा का पान करो। जो पाप-कलुषकोनष्टकरताहैतरा्जोनानाप्रकारके पुष्प-फलों ंसे सम्पन्न है ।।१

जोजन्म-मृतुयुके भयतरि्ोकों ंकोदूर करता है तरा् जो सारे ि्ास्त्र, शनगम तरा् आगमों ंकासारहै।।२

जोब्रह्माद्वारारशितसारेलोकों ंकीरक्षाकरता है तरा् जो पाखत्मण्डयों ंको भी धाशमथक बना ालिता है ।।३

जोपरमहंसों ंकेआश्रममें(परमहंसों ंद्वारा) गाया जाता है, जो ि्ुक, ि ौनक, कौशिक आशदकेद्वाराशपयाजाताहै।हेशजह्ने!उसीराम-नाम-रूपी सुधा का पान कर ।।४

नामावली

श्री राम जय रामजय जय राम। श्री राम जय रामजय जय राम। श्री राम जय रामजय जय राम।

१०. भज रे रघुवीरम्

(श्री सदाशिवब्रह्मेन्द्रकृतम्)

श्लोक

श्री रामिन्द्रि–रौमनसा स्मराडम,
श्री रामिन्द्रि–रौविसा गृाडम ।
श्री रामिन्द्र - ि रौडिरसा नमाडम,
श्री रामिन्द्रि–रिौरिं प्रपद्ये ।।

श्रीरामिन्द्र के िरणों ंका मन से ध्यान करता हाँ, वाणी से उन िरणों ंका गुणगान करता हाँ। मस्तकसेिरणों ंको प्रणाम करता हाँ और उन्ीं ंिरणों ंकी िरण जाता हाँ।

गीत

भज रे रघुवीरम् मानस,भज रे रघुवीरम्।

अमुबुद-डिम्भ-डविम्बन-गात्रम्
अमुबुद-वाहन-नन्दन-दात्रम् ।।१ भज रे...

कुडिक-सुताडपथत-कामुथकवेदम्

वडि-हृदयामुबुज-भास्करपादम् ।।२ भज रे...

कुण्डल-मण्डन-मस्तण्डत-किथम्
कुण्डडल-भंजकमद्भुत-विथम् ।।३ भज रे...

दस्तण्डत-सुन्द-सुताडदक-वीरम्
मस्तण्डतमनुकुलमाश्रय ीरम् ।।४ भज रे..

परमहंस मस्तखलागम-वेद्यम्
परमवेदमकुट-प्रडतपाद्यम् ।।५ भज रे...

कालाम्भोधर-कान्ति-रीरम्
कौडिकुि-ौनक-पररवारम् ।।६ भज रे...

कौसल्या-दिस्र-सुकुमारम्
कडल-कल्मष-भय-गहन-कुठारम् ।।७ भज रे...

परमहंस हत्पद्य-डवहारम्
प्रडतहत-दिमुख-बल-डवस्तारम् ।।८ भज रे...

रघुकुल-वीर श्री राम का भजन कर। रे मन, उस रघुवीर का भजन कर।

उसका ीरीर नवमेघ के समान श्याम है और देवेन्द्र-पुत्र बाशल का उसने संहार शकया है ।।१

कुशिक पुत्र श्री शवश्वाशमत्र से उसने धनुशवथद्या सीखी है और उसका ीरण योगी जनों ंके हृदयरूपी कमल के शलए सूयथशकरणों ंके समान आनन्द देने वाला है।।२

उसके कानों ंमें सुन्दर केयूर सुिोशभत हैं, उसके गुण अद्भुत हैं, उसने आशदिेष को अपना पलंग बनाया है।।३

सुन्द-राक्षस के पुत्र मारिी आशद को उसने दण्ड शदया है और ीक्रवती मनु के कुल को सुिोशभत शकया है और वह भक्तों ंका आश्रय तर्ा शवषुणु है ।।४

वह स्वयं परमहंस योगी है, अत्मखल वेदि-ास्त्र द्वारा वह जे्ज्ञेय है तर्ा बेद और उपशनषदों ं में उसका वणथन शकया गया है।।५

उसका ीरीर मेघ के समान कृष्ण है और उसके पररजन शवश्वाशमत्र, ुिक, ौकनाशद हैं ।।६

वहकौसल्या और दिरर् का शप्रय पुत्र हैऔर कशलयुग का जो महा गहन पाप-भय है, उसके शलएवह कुठार के समान है ।।७

वह परमहंस योशगयों ंके हृदय-रूपीकमलमें शवहार करता हैऔर दिमुख रावण के अशमत पराक्रम को भी उसनेकुत्मण्ठत करशदयाहै।।८

नामावली

१.राम राम श्री राम राम
२.राम राम सीताडभराम
३.राम राम शृंगार-राम
४.राम राम कल्यिा-राम
५.राम राम कोदण्ड-राम
६.राम राम पट्टाडभ-राम
७.राम राम आनन्द-राम
८.राम राम श्री राम राम

११. भज मन रामिरण सुखदाई

(श्री तुलसीदासकृत)

श्लोक

पूवथ रामतपोवनाडद गमनं हत्वा मृगं कांनिं,
वैदेही-हरिं जटायु-मरिं सुग्रीव-सम्भाषिम् ।
वाली-डनग्रहिं समुद्र-तरिं लंकापुरी-दाहनं,
पश्चाद्रावि-कुम्भकिथ-मर्नं एतस्तद्ध रामायिम् ।।

प्रारम्भ में राम का वनवास, शफर सुवणथ मृग का हनन, सीता जी का अपहरण, जटायु का मरण , सुग्रीव के सार् बातीत, बाशल का सहार, समिु का तरण, लकानगरी का दहन, शफर रावण , कुम्भकणाथशद का नि-यह है रामायण।

गीत

भज मन रामिरन सुखदाई।ओमनरामिरनसुखदाई।

डजडह ंरनन से डनकसीसुरसररसंकरजटासमाई।
जटासंकरी नाम पस्यो है, डत्रभुवनतारिआई।।१।।भजमन . . .

डजन ंरनन की ंरनपादुका,भरतरह्योलौलाई।
सोई ंरन केवट धोइ लीने, तबहररनाविलाई।।भजमन . . .

सोइ ंरन सन्तनजनसेवत,सदारहतसुखदाई।
सोइ ंरन गौतम ऋडष-नारी,परडसपरम-पदपाई।।भजमन . . .

दण्डक-बन प्रभु पावन कीन्ी, ऋडषयन त्रास डमटाई।
सोत्र प्रभु डत्रलोक के स्वामी कनक-मृगा सँग धाई ।।४।। भज मन...

कडप सुग्रीव बनुधु-भय-ब्याकुल, डतन जय-छत्र डफराई।
ररपु को अनुज डबभीषन डनडसिर, परसत लंका पाई ।।५ ।। भज मन...

डसव सनकाडदक अरु ब्ह्माडदक सेष सहस मुख गाई।
तुलडसदास मारुतसुत की प्रभु डनज मुख करत बडाई ।।६।। भज मन...

हेमन,श्रीरामके उनसुखदायकिरणों ंकासेवनकर।

शजनिरणों ंसेगंगाशनकलीऔरशिवजीकीजटामेंसमायीहै,शजससेउसकानाम जटिंकरी प्रिा है। वह तीनों ं लोकों ं को तारने के शलए आयी है ।।१

शजनिरणों ंकीपादुकाकोश्रीभरतजीलेगयेरे्औरशजसकीभत्मक्तकीर्ी।शजन रिणों ं को शनषादराज गुह ने धोया र्ा और तब भगवान् की नाव िलायी र्ी ।।२

उनिरणों ंकासारेसन्त-जनध्यानकरसदाकल्याणकारीबनेरहतेहैं।उन्ीं ंिरणों ंके स्पिथ से गौतम ऋशष की पत्नी अहल्या जी ने परम-पद को प्राप्त शकया र्ा ।। ३

प्रभुनेअपनेिरणों ंसेदण्डकारण्यकोपशवत्रशकयाऔरवहाँकेऋशषयों ंकादु:खदूर शकया। वही शत्रलोक के स्वामी उन िरणों ं से कांनिमृग के पीछे दिौ रे् ।।४

उनिरणों ंकीकृपासेसुग्रीवको,जोअपनेभाईसेिराहुआर्ा,शवजयप्राप्तहुई, वैसेहीतुरुरावणके भाईशवभीषणकोभीउनिरणों ंके स्पिथ-मात्रसेलंकाकाराज्यप्राप्त हुआ ।।५

उनिरणों ंकीसुतुशतशिवजी,सनकाशदऋशष,ब्रह्माआशददेवता,सहस्रमुखवालेिषनाग आशदकरतेहैं।तुलसीदासकहतेहैंशकभगवान्रामिन्द्रअपनेमुखसेहनुमान्जीकागुणगान करते हैं।।६

नामावली

श्री राम राम जय राम।सीताडभराम जय राम।।
कोदण्ड-राम जय राम।कल्यि-राम जय राम।।
पट्टाडभ-राम जय राम।आनन्द-राम जय राम।।
लोकाडभराम जय राम।श्रीराम राम जय राम।।

१२. ितुः श्री रामम्

(श्री सदाशिवब्रह्मेन्द्रकृतम्)

श्लोक

डिदाकारोधातापरम-सुखदः पावनतनुः,
मुनीन्द्रःयोगीन्द्रःयडतपडत-सुरेन्द्रः हनुमता ।
सदासेव्यःपिोजनक-तनयांकः सुरगुरु,
रमा-नारोरामोरमतुममडितेते तु सततम् ।।

वह श्रीराम ज्ञानस्वरूप है, शवश्व का स्रष्टा है, परम सुख देने वाला है, उसका िरीर पशवत्र है, मुशनशेरेष्ठों,ं योगीन्द्रों,ं यशतशेरेष्ठों ंतरा महान् देवताओं ंऔर हनुमान् जी से सदा सेवा स्वीकार कर रहा है, पूणथ पुरुष है, अपनी गोद में सीता जी को बैठाये है, देवताओं ंका भी गुरु है, श्री लक्ष्मी जी का स्वामी है, वह मेरे शित्त में सदा रमता रहे!

गीत

ितः श्री रामं डिन्तय, जीमूत श्याममम् ।।

अंगीकृत-तुमुबुरु -संगीतम्
हनुमद्-गवय-गवाि-समेतम् ।।१।। ितः
नव-रत्न-स्राडपत-कोटीरम् ।
नव-तुलसी-दल-कस्तल्पत-हारम् ।।२।। ितः ...

परमहंस-हृद्गोपुर-दीपम्
रिि-दडलत-मुडनतरिीिपम् ।।३।। ितः...

हे मन, मेघश्याम श्रीराम का शिन्तन कर।

शजसने तुमुबुरु मुशन का गायन स्वीकार शकया और जो हनुमान, गवय, गवाक्ष आशद वानर शेरेष्ठों ंसे युक्त है ।।१

शजसनेनवरत्नों ंसे ज़िा हुआ मुकुट धारण शकया है और नयी तुलसी-दलों ंकी माला पहनी है ।।२

जोपरमहंसयोशगयों ंके हृदय-रूपी गोपुर पर दीपक के समान है और शजसने गौतम ऋशष की पत्नीअहल्याकाियाप अपने िरणों ंके स्पिथ से दूर कर शदया, उस राम का शिन्तन कर ।।३

नामावली

राम राम नमोऽसुतुते,जयरामभद्र नमोऽसुतुते।
रामिन्द्र नमोऽसुतुते,जयराघवेन्द्र नमोऽसुतुते।।
देव-देव नमोऽसुतुते,जयदेवराज नमोऽसुतुते।
वासुदेव नमोऽसुतुते,जयवीरराज नमोऽसुतुते।।
राम राम जय राजा-राम।रामराम जय सीताराम।।

हे रामिन्द्र, रामभि, राघवेन्द्र, देवों ंके देव, देवों ंके राजा, हे वासुदेव, पराक्रमी राजा, तेरी जय हो! तुझे प्रणाम !

महाराज राम की जय हो ! सीतापशत राम की जय हो!

१३. राम रतन धन पायो

(श्री मीराबाईकृत)

श्लोक

डिदं डिवभुं डनमथलंडनडवथकलं्पं,
डनरीहं डनराकार-मोंकंार-वेद्यम् ।
गुितीत-मव्यक्त-मेकं तुरीयं,
परं ब्र्ह्म यो वेद तस्ैमै नमस्ेते ।।

उसव्यत्मक्तकोप्रणामजो उस परब्रह्म को जानता है, जो ज्ञानरूप है, सवथव्यापी है, मल-रशहतहै,शवकल्पून्यहै,इच्छाहीन है, शनराकार है, ओंकंार द्वारा जानने योग्य है, गुणों ंसे परे है,अव्यक्तऔरएकहै,तुरीयावस्ा स्वरूप है।

गीत

राम रतन धन पायोपायोजीमैंतो।
वसुतु अमोलक दी मेरे सद्गुरु डकरपाकरअपनायो।।१।।रामरतन...

जनम जनम की पूँजीपाईजगमेंसभीखोवायो।
खरि नडहं कोई ोर न लेवे डदनडदनबढतसवायो।।२।।रामरतन...

सत् की नाव खेवडटयासद्गुरुभवसागरतरआयो।
मीरा के प्रभु डगररधर नागर हरखहरखजसगायो।।३।।रामरतन...

मैंने राम-रूपी रत्न की सम्पशत्त पा ली है।

वह ऐसी वसुतु है जो अमूल्य है और उसे सद्गुरु ने मुझे शदया है। उन्ोंनें कृपापूवथक मुझे अपना शलया है ।।१

उस राम-रूपी रत्न को पाने के शलए भले ही मुझे सारी सांसाररक वसुतुओं ंसे हार् धोना प़ा, शकनुतु उसे पा कर मैंने अनेक जन्मों ंतक की पूँजी पा ली है। उसमें से न तो कुछ खिथ होता है, न कुछ घटता है। ोर भी उसे ुिरा नहीं ंसकता। (इसके शवपरीत) वह सवाया हो कर शनत्यप्रशत बढ़ता ही जाता है।॥२

सत्यरूपी नाव का केवट सद्गुरु है। (वह शमल गया तो) संसार सागर पार करना आसान है। मीराके स्वामी परम किुल शगररधर श्रीकृष्ण हैं। वह (मीरा) आनन्द-शवभोर हो कर उनका यिोगानकरती है ।।३ ।।

नामावली

हरर हरर हरर हररश्री हरर बोल।
हरर हरर श्याम हररहरर हरर बोल।।

१४. राम से कोई शमला दे

श्लोक

नमस्तस्ै मै सदैकस्ै मैकस्ै मैडिन्महसे नमः ।
यदेतडिश्वरूपिेराजतेगुरुराज ते ।।

हे गुरुराज! तुझे प्रणाम करता हाँ जो एकमात्र सत्-स्वरूप है, अशनवथिनीय है, ज्ञानस्वरूप है, प्रकिामय है और जो इस समस्त शवश्व के रूप में प्रकट हो रहा है।

गीत

राम से कोई डमलादे,मुरे्रामसेकोईडमलादे।
डबन लाठी का डनकला अन्धा,राहसेकोईलगादे।।१।।रामसे...

कोई कहे वह बसे अवधमें,कोईकहेवहवृन्दावनमें।
कोई कहे तीरर् मस्तन्दर में, कोईकहेडमलतेओमनमें।रामसे...

देख सकूँ मैं अपनेमनमें,कोईऐसीज्योडतजलादे।
श्रद्धा-ज्योडत जला दे, भस्तक्त-ज्योडतजलादे,ज्ञान-ज्योडतजलादे।।२।।राम से...

उस भगवान् राम से शमलने में मेरी कोई सहायता कर दे।

अन्धा लाठी शबना जैसे िल प़िता है, वैसे मैं शबना सहारे के भटक रहा हाँ। हार् पक़ि कर कोईमुझेउसदेव-दिथनके रास्ेतेलगादे।।१

कोई कहता है शक वह राम के रूप में अयोध्या में है तो कोई कहता है शक वह कृ ष्ण के रूप में वृन्दावन में है। कोई कहता है शक वह तीर्थ-क्ेषत्र में है तो कोई कहता है शक वह मत्मन्दर में है। शफर कोई यह भी कहता है शक वह प्रत्ेयेक को अपने-अपने मन में ही शमलता है। कोई मेरे अन्दर ऐसा प्रकिा जला दे, शजससे में अपने मन में उसे देख सकूाँ , अनुभव कर सकूाँ । मेरे अन्दर श्रद्धा, भत्मक्त और ज्ञान की ज्योशत जला दे। उस राम से मुझे कोई शमला दे।॥२

१५. श्रीरामरक्षास्तोत्रम्

ॐश्रीगणेाय नमुः । अय श्रीरामरक्षास्तोत्र-मन्त्रय । बुधकौशिक ऋशषुः । श्रीसीतारामिन्द्रो देवता । अनुष्टुप् छन्दुः । सीता ित्मक्तुः । श्रीमान् हनुमान् कीलकं । श्रीसीतारामिन्द्रप्रीत्यरे् रामरक्षास्तोत्रजपेशवशनयोगुः ।

अर् ध्यानम्

ध्यायेदाजानुबाहुं धृतिरधनुषं वद्धपद्मासनस्ं,
पीतं वासो वसान नवकमलदलस्पडधथनेत्ंरं प्रसन्नम् ।
वामांकारूढसीतामुखकमलडमलिोनं नीरदाभं,
नानालंकारदीप्ंतं दधतमुरुजटामण्डलं रामिन्द्रम् ।।

स्तोत्रम्

रिरतं रघुनार्स्य ितकोडटप्रडवस्तरम् ।
एकैकमिरं पुंसां महापातकनिानम् ।।१

ध्यात्वा नीलोत्पलश्यामं रामं राजीवलिोनम्।
जानकीलक्ष्मिपेतं जटामुकुटमस्तण्डतम्।।२
साडसतूिधनुवाथिपाडि नकृंतंरिान्तकम् ।
स्वलीलया जगत्त्रातुमाडवभूथतमजं डवभुम् ।।३

रामरिं पठेत्प्राज्ञः पापघ्नीं ंसवथकामदाम्।
डिरो मे राघवः पातु फालं दिरर्ात्मजः ।।४

कौसल्येयो दृौ पातु डवश्वाडमत्रडप्रयः शुरुती।
ीि पातु मखत्राता मुखं सौडमडत्रवत्सलः ।।५

डजह्वे डवद्याडनडधः पातु कण्ठ भरतवस्तन्दत ।
स्कन्धौ डदव्यायुधः पातु भुजो भगे्नेिकामुथकः ।।६

करौ सीतापडत पातु हृदयं जामदग्न्यडजत्।
मध्ंयं पातु खरध्ंवंसी नाडभ जाम्बवदाश्रयः ।।७

सुग्रीवेः कटी पातु सस्तिनी हनुमत्प्रभुः ।
ऊरू रघूत्तमः पातुः रिःकुलडवनिाकृत् ।।८

जानुनी सेतुकृत्पातु जंघे दिमुखान्तकः ।
पादौ डवभीषिश्रीदः पातु रामोऽस्तखलं वपुः ।।९

एतां रामबलोपेतां रिां यः सुकृती पठेत् ।।
स डिरायुः सुखी पुत्री डवजयी डवनयी भवेत् ।।१०

पातालभूतलव्योमाररिश्छद्मिाररिः ।
न द्रष्टुमडप िक्तास्ेते रडितं रामनामडभः ।।११

रामेडत रामभद्रेरेडत रामिन्द्रेडत वा स्मरन्।
नरो ना डलप्यते पापैभुथस्तक्ंतं मुस्तक्ंतं ि डवन्दडत ।।१२

जगज्जैत्रैरैकमन्त्रि रामनाम्नाऽडभरडितम्।
यः कण्ठे धारयेत्तस्यकरस्ाःसवथडसद्धयः।।१३

वज्रपंजरनामेदं यो रामकविं स्मरेत् ।
अव्याहताज्ञः सवथत्रलभतेजयमंगलम्।।१४

आडदष्टवान्यर्ा स्वप्ेने रामरिाडममां हरः ।
तर्ा डलस्तखतवान्प्रातःप्रबुद्धोबुधकौडिकः।।१५

आरामः कल्पविृांडवरामःसकलापदाम्।
अडभरामस्तस्त्रलोकानां रामः श्रीमान्स नः प्रभु ।।१६

तरिौ रूपसम्पन्नौसुकुमारौमहाबलौ।
पुण्डरीकडविालिौ ीरकृष्णाडजनाम्बरौ ।।१७

फलमूलाडिनौ दान्तौतापसौब्रह्मर्ाररिौ।
पुत्रौ दिरस्ैयैतौ भ्रातरौरामलक्ष्मी।।१८

रिण्यौ सवथसत्त्वानांश्ेरेष्ठौसवथधनुष्मतान्।
रिः कुलडनहन्तारौत्रायेतांनोरघूत्तमौ।।१९

आत्तसज्जधनुषाडवपुसूपिावियिुगडनषंगसंडगनौ ।
र्िाय मम रामलक्ष्विग्रतः पडर् सदैव गिताम्।।२०

सन्नद्धः कविी ख्िगी ापबिाधरो युवा ।
गिन्मनोरर्ोऽस्माकं रामः पातु सलक्ष्ि।।२१

रामो दिारडर्ः ूरो लक्ष्मणिुरो बली ।
काकुत्स्र्ः पुरुषः पूिथः कौसल्ेयेयो रघूत्तमः ।।२२

वेदान्तवेद्यो यज्ञेैः पुरिापुरुषोत्तमः ।
जानकीविभः श्रीमानप्रमेयपराक्रमः ।।२३

इत्ेयेताडन जपेडन्नत्ंयं मद्भक्तः श्रद्धयास्तन्वतः ।
अश्वमेधाडधकं पुण्ंयं सम्प्राप्नोडन न संयिः ।।२४
रामं दुवाथदलश्यामं पद्मिां पीतवाससम् ।

सुतुवस्तन्त नामडभडदथवै्यैनथ ते संसाररिो नराः ।। २५

रामं लक्ष्पूिवथजं रघुवरं सीतापडतं सुन्दरं,
काकुत्स्ं कर्रिाथवं गिुडनडधं डवप्रडप्रयं धाडमथकम् ।

राजेन्द्र सत्यसन्धं दिरर्तनयं श्यामलं ान्तमूडतथ,
वन्दे लोकाडभरामं रघुकुलडतलकं राघवं राविाररम् ।।२६

रामाय रामभद्राय रामिन्द्राय वेधसे ।
रघुनाथ्राय नाथ्राय सीतायाः पतये नमः ।।२७

श्रीराम राम रघुनन्दन राम राम श्रीराम राम भरताग्रज राम राम ।
श्रीराम राम रिककथि राम राम श्रीराम राम िरिं भव राम राम ।।२८

श्रीरामिन्द्रिरौ मनसा स्मराडम श्रीरामिन्द्रिरौ विसा गृाडम ।।
श्री रामिन्द्रिरौ डिरसा नमाडम श्रीरामिन्द्रिरौ िरिं प्रपदे्ये ।।२९

माता रामो मस्तत्पता रामिन्द्रः स्वामी रामो मत्सखा रामिन्द्रः ।
सवथस्ंवं मे रामिन्द्रो दयालु- नाथनं्यं जाने नैव जाने न जाने ।।३०

दडिडे लक्ष्मी यिस्य वामे ि जनकात्मजा ।
पुरतो मारुडतयथस्य तं वन्दे रघुनन्दम् ।। ३१

लोकाडभरामं रिरंगधीरं राजीवनेत्रं रघुवंनिार्म् ।
कारुण्यरूपं करिाकरं तं श्रीरामिनं्द्रं िरिं प्रपदे्ये ।।३२

मनोजवं मारुततुल्यवेगं डजतेस्तन्द्रयं बुस्तद्धमतां वररष्ठम् ।
वातात्मजं वानरयूर्मुखं्यं श्रीरामदूतं िरिं प्रपदे्ये ।।३३

कूजनं्तं रामरामेडत मधुरं मधुरिारम् ।
आरुह्य कडवतिाखां वन्दे वाल्मीडककोडकलम् ।।३४

आपदामपहताथरं दातारं सवथसम्पदाम् ।
लोकाडभरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम् ।।३५

भजथनं भवबीजानामजथनं सुखसम्पदाम् ।
तजथनं यमदूतानां रामरामेडत गजथनम् ।। ३६

रामो राजमडिः सदा डवजयते रामं रर्मिं भजे
रामिाडभहता डनिाररिमू रामाय तस्मै नमः ।

रामान्नास्तस्त परायिं परतरं रामस्य दासोऽस्म्यहं
रामे डित्तलयः सदा भवतु मे भो राम मामुद्धर ।। ३७

राम रामेडत रामेडतरमेरामेमनोरमे ।
सहस्रनाम ततुतुल्यंरामनामवरानने ।।३८

इडत श्रीबुधकौडिकमुडनडवरडितंश्रीरामरिास्तोत्रं समूपिथम्।

१६. श्री हनुमान ालीसा

दोहा

श्रीगुरु िरन सरोज रज शनज मनु मुकुरु सुधारर ।
बरनउँ रघुबर शबमल जसु जो दायकु फल ारर ।।

बुत्मद्धहीन तनु जाशनके सुशमरौं ंपवन-कुमार ।
बल बुशध शबद्या देहु मोशहं हरहु कलेस शबकार ।।

ौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर। जय कपीस शतहुँ लोक उजागर।।
राम दूत अतुशलत बल धामा। अंजशन-पुत्र पवनसुत नामा ।।
महाबीर शबक्रम बजरंगी। कु मशत शनवार सुमशत के संगी।।
कं िन बरन शबराज सुबेसा। कानन कुं िल कुं शित के सा।।
हार् बज्र औ ध्वजा शबराजै। काँधे मूँज जनेऊ साजै ।।
संकर सुवन के सरीनन्दन। तेज प्रताप महा जग बन्दन ।।
शबद्यावान गुनी अशत ातुर । राम काज कररबे को आतुर ।।
प्रभु िररत्र सुशनबे को रशसया। राम लषन सीता मन बशसया ।।
सूक्ष्म रूप धरर शसयशहं शदखावा। शबकट रूप धरर लंक जरावा ।।
भीम रूप धरर असुर साँहारे । रामिन्द्र के काज साँवारे।।
लाय सजीवन लखन शजयाये। श्रीरघुबीर हरशष उर लाये ।।
रघुपशत कीन्ही बहुत ब़ाई। तुम मम शप्रय भरतशह सम भाई।।
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं। अस कशह श्रीपशत कं ठ लगावें।।
सनकाशदक ब्रह्माशद मुनीसा । नारद सारद सशहत अहीसा ।।
जम कु बेर शदगपाल जहाँ ते । कशब कोशबद कशह सके कहाँ ते।।
तुम उपकार सुग्रीवशहं कीन्ा। राम शमलाय राज पद दीन्ा ।।
तुम्हरो मन्त्र शबभीषन माना । लंके स्वर भए सब जग जाना ।।

जुग सहस्रजोजनपरभानू।लील्योताशहमधुरफलजानू।।
प्रभु मुशिकामेशलमुखमाहीं।ंजलशधलाँशघगयेअिरजनाहीं।ं।
दुगथम काज जगत के जेते। सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते।।
राम दुआरे तुम रखवारे। होत न आज्ञा शबनु पैसारे।।
सब सुखलहैतुम्हारीसरना।तुमरच्छककाहकिोरना।।
आपन तेज सम्हारो आपै । तीनों ं लोक हाँक तें काँपै ।।
भूत शपसिा शनकट नशहं आवै। महावीर जब नाम सुनावै।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत शनरन्तर हनुमत बीरा ।।
संकट तें हनुमान छ्ुिावै । मन क्रम बिन ध्यान जो लावै।
सब पर राम तपस्वी राजा। शतन के काज सकल तुम साजा।।
और मनोरर् जो कोई लावै । सि़ो अशमत जीवन फल पावै।।
रिों ं जुग परताप तुम्हारा। है परशसद्ध जगत उशजयारा ।।
साधु सन्त के तुम रखवारे। असुर शनकन्दन राम दुलारे ।।
अष्ट शसत्मद्ध नौ शनशध के दाता। अस बर दीन जानकी माता ।।
राम रसायन तुम्हरे पासा । सदा रहो रघुपशत के दासा ।।
तुम्हरे भजन राम को पावै। जनम जनम के दुख शवसरावै।।
अन्त काल रघुवर पुर जाई। जहाँ जन्म हरर-भक्त कहाई।।
और देवता शित्त न धरई। हनुमत सेइ सवथ सुख करई ।।
संकट कटै शमटै सब पीरा। जो सुशमरै हनुमत बलबीरा ।।
जै जै जै हनुमान गोसाई। कृ पा करहु गुरु देव की नाई।।
जो सत बार पाठ कर कोई। छू टशह बत्मन्द महासुख होई ।।
जो यह पढ़ें हनुमान िलीसा। होय शसत्मद्ध साखी गौरीसा।।
तुलसीदास सदा हरर िेरा। कीजै नार् हृदय महाँ िेरा ।।

दोहा

पवनतनय संकट हरन, मंगलमूरशतरूप।
राम लपन सीता सशहत, हृदयबसहुसुरभूप।।

।। इशत हनुमानिालीसा।।

१७. संकटमिोन हनुमानाष्टक

मत्तगयन्द छन्द

बाल समय रशब भशक्ष शलयो तब तीनहुाँ लोक भयो अ ाँशधयारो।
ताशहसों ंत्रासभयोजगकोयहसंकटकाहुसों ंजातनटारो ।।
देवन आशन करी शबनती तब छााँश़ि शदयो रशब कष्ट शनवारों।ं
को नशहं जानत है जग में कशप संकटमिोन नाम शतहारो ।।१

बाशल की त्रास कपीस बसै शगरर जात महाप्रभु पन्थ शनहारो।

ाशिक महा मुशन साप शदयो तब ाशहय कौन शबिार शबिारो।।
कै शद्वज रूप शलवाय महाप्रभु सो तुम दास के सोक शनवारो।
को नशहं जानत है जग में कशप संकटमोन नाम शतहारो ।।२

अंगद के साँग लेन गये शसय खोज कपीस यह बैन उिरो।
जीवत ना बशिही हम सो जु शबना सुशध लाए इहाँ पगु धारो ।।
हेरर कें तट शसनुधु सबै तब लाय शसया-सुशध प्रान उबारो।
को नशहं जानत है जग में कशप संकटमोन नाम शतहारो ।।३

रावन त्रास दई शसय को सब राक्षशस सों ंकशह सोक शनवारो।
ताशह समय हनुमान महाप्रभु जाय महा रजनीर मारो।।
ाहित सीय असोक सों ंआशग सु दै प्रभु मुशिका सोक शनवारो।
को नशहं जानत है जग में कशप संकटमोन नाम शतहारो ।।४

बान लग्यो उर लशछमन के तब प्रान तजे सुत रावन मारो।
लै गृह बैद्य सुषेन समेत तबै शगरर ोन सु बीर उपारो ।।
आशन सजीवन हार् दई तब लशछमन के तुम प्रान उबारो।
को नशहं जानत है जग में कशप संकटमोन नाम शतहारो ।।५

रावन जुद्ध अजान शकयो तब नाग शक फाँस सबै शसर ारो।
श्रीरघुनार् समेत सबै दल मोह भयो यह संकट भारो।।
आशन खगेस तबै हनुमान जु बन्धन काशट सुत्रास शनवारो।
को नशहं जानता है जग में कशप संकटमोन नाम शतहारो ।।६

बनुधु समेत जबै अशहरावन लै रघुनार् पताल शसधारो।
देशबशह पूशज भली शबशध सों ंबशल देउ सबै शमशल मन्त्र शबिारो ।।
जाय सहाय भयो तब ही अशहरावन सैन्य समेत साँहारो।
को नशहं जानत है जग में कशप संकटमोन नाम शतहारो ।।७

काज शकये ब़ि देवन के तुम बीर महाप्रभु देत्मख शबिारो।
कौन सो संकट मोर गरीब को जो तुमसों ंनशहं जात है टारो ।।
बेशग हरो हनुमान महाप्रभु जो कछु संकट होय हमारो।
को नशहं जानत है जग में कशप संकटमोन नाम शतहारो ।।८

दोहा

लाल देह लाली लसे, अरु धरर लाल लाँगूर।
बज्र देह दानव दलन, जय जय जय कशप सूर ।।

१८. हनुमान् सुतुशतुः

मनोजवं मारुततुल्यवेगं डजतेस्तन्द्रयं बुस्तद्धमतां वररष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूर्मुख्यं श्रीरामदूतं िरिं प्रपद्ये।।१

अंजनानन्दनं वीरं जानकीिोकनिानम्।
कपीिमिहन्तारं वन्दे लंकाभयंकरम् ।।२

शजनकीमनकेसमानगशतऔर वायु के समान वेग है; जो परम शजतेत्मन्द्रय और बुत्मद्धमानों ं में शे्रेष्ठहैं,उनपवननन्दनवानराग्रगण्य श्रीरामदूत की में िरण लेता हाँ।।१

पुत्र,वीर,जानकीजी का िोक शवदूररत करने वाले, वानरों ंके अशधपशत, अक्षयकुमारकासंहारकरनेवालेऔर लंका में भय उत्पन्न करने वाले हनुमान् जी की मैं वन्दना करता हाँ।।२

१९. कशलयुगकृत भगवत्स्तुशतुः

धे्येयंसदापररभवघ्नमभीष्टदोहं
तीराथस्पदंडिवडवररंडिनुतं िरण्यम् ।
भृत्याडतथहंप्रितपालभवास्तब्धपोतं
वन्दे महापुरुषतिैरिारडवन्दम् ।।१

त्यक्त्वासुदुस्त्यजसुरेस्तितराज्यलक्ष्मीं ं
धडमथष्ठआयथविसायदगादरण्यम् ।
मायामृगंदडयतवेस्तितमन्यधावद्
वन्दे महापुरुषतिैरिारडवन्दम् ।।२

यं ब्र्ह्मावरिन्द्ररुद्रमरुतःसुतुन्वस्तन्त डदव्यैः स्तवै-
वेदैः सांगपदक्रमोपडनषदैगाथयस्तन्त यं सामगाः ।
ध्यानावस्तस्तद्गतेन मनसा पश्यस्तन्त यं योडगनो
यस्यान्तं न डवदुः सुरासुरगिा देवाय तस्मै नमः ।।३

यं िवाः समुपासते डिव इडत ब्र्ह्मेडत वेदास्तन्तनो
बौद्धा बुद्ध इडत प्रमिापटवः कतेडत नैयाडयकाः ।
अहथडन्नत्यर् जैनिासनरताः कमेडत मीमांसकाः
सोऽयं नो डवदधातु वांडछतफलं त्रैलोक्यनाथो हररः ।।४

आकिाात्पडततं तोयं यथा गिडत सागरम् ।
सवथदेवनमस्कारः केवं प्रडत गिडत ।।५

अडसतडगररसमं स्वात्कजलं डसनुधुपात्रं
सुरतरुवरिखा लेस्तखनी पत्रमुवी ।
डलखडत यडद गृहीत्वा िारदा सवथकाल
तदडप तव गुिानामिी पारं न याडत ।।६

हे महारुपुष! आपके िरणारशवन्द की वन्दना करता हाँ, जो शक ध्यान करने योग्य हैं, शवपशत्तयों ंके नाि करने वाले हैं, समूपूणथ मनोरर्ों ंको पूणथ करने वाले हैं, तीर्ों के आधार-स्वरूप हैं, शिव और ब्रह्मा शजनकी वन्दना करते हैं, जो िरणागतवत्सल है, सेवकों ंके दुख शनवारण करते हैं और संसाररूपी समुि में नौका के समान हैं ।।१

शजस राज्यलक्ष्मी को छोिना कशठन है तर्ा देवतागण भी शजसके शलए लालाशयत रहते हैं, उसे त्याग करके ब्रिों ंकी आज्ञा से वन में गये और पत्नी के इच्छानुसार मायामृग के पीछे-पीछे भागते शफरे, ऐसे आपके धशमथष्ठ िरण-कमलों ंकी, हे महापुरुष। मैं वन्दना करता हाँ।॥२

ब्रह्मा, वरुण, इन्द्र, रुि और मरुद्गण शदव्य स्तोत्रो द्वारा शजसकी सुतुशत करते हैं,

सामवेद के गाने वाले अग, पद, क्रम और उपशनषदों ंके सशहत वेदों ंद्वारा शजसका गायन

करते हैं, योगीजन ध्यान में त्मस्त तद्गत हुए मन से शजसका दिथन करते हैं, देवताऔर असुरगण कोई भी शजसके अन्त को नहीं ंजानते, उस परम पुरुष देव के शलए मेरा नमस्कारहै ।।३

शिव-भक्तशजनें्शिवके रूपमेंपूजतेहैं,वेदान्तीशजनें्ब्रह्ममानते हैं, बौद्ध-धमथ के अनुयायीशजनें्बुद्धभगवान्मानतेहैं,प्रमाणकुिलनैयाशयकशजनें्कताथ-रूप में जानते हैं, जैन शजनें् अहथतकहतेहैं तर्ामीमांसकशजनकीशक्रयाकाण्डके रूपमें उपासना करते हैं, ऐसे शत्रलोकीनार् हमें वांशछत फल प्रदान करें ।।४

शजसभाँशतआकिसेशगराहुआजलसमुिमेंजाशमलताहै,उसी भाँशत सभी देवों ंको शकया हुआ नमस्कार भगवान् के िव को ही प्राप्त होता है ।।५

कालेपवथतकेसमानशलखनेकीयाहीशसनुधुकेसमानब्रिीदावात में हो, कल्पवृक्ष की ाखिाकीकलमऔरपृथ्वीकेसमानशवस्तीणथकागजकोलेकरयशदसरस्वती देवी सदैव शलखती रहें, तो भी हे इि, वे तुम्हारे गुणों ं के अन्त तक नहीं ं पहुाँ सकतीं ं ।।६

२०. श्री रामिन्द्र कृपालु

श्री रामिन्द्र कृपालु भजुमनहरिभवभयदारुिम् ।
नवकंज-लोिन कंज-मुखकर-कंजपदकंजारुिम् ।।

कन्दपथ अगडित अडमतछडवनवनील-नीरद सुन्दरम् ।
पटपीत मानहु तडडतरुडिसुडिनौडमजनकसुतावरम् ।।

भजु दीनबनुधु डदनेि दानवदैत्यवंडिनकन्दनम् ।
रघुनन्द आनन्दकन्द कौलिन्ददिरर्नन्दनम् ।।

डसर मुकुट कुण्डल डतलक ारु उदारु अंगडवभूषिम् ।
आजानु भुज र ापधर संग्रामडजत-खरदूषिम् ।।

इडत वदडत तुलसीदास ंकर ष-मुडन-मन-रंजनम् ।
मम हृदयकंज डनवास कुरु कामाडदखलदलगंजनम् ।।

२१. प्रातुःस्मरणम्

प्रातः स्मराडम हृडद संसुफुरदात्मतत्त्वं
सस्तच्चतुसुखं परमहंसगडतं तुरीयम् ।

यत्स्वप्नजागरसुषुप्तमवैडत डनत्यं
तद्ब्रह्म डनष्कलमहं न भूतसंघः ।।१

प्रातभथजाडम मनसा विसामगम्यं
विो डवभास्तन्त डनस्तखला यदनुग्रहि ।
यने्नेडतनेडतविनैडनथगमा अवि-
सं्तं देवदेवमजमचुयुतमाहुरग्रयम् ।।२

प्रातनथमाडम तमसः परमकथविथ
पिूथ सनातनपदं पुरुषोत्तमाख्यम् ।
यस्तस्मडन्नदं जगदिषमिषमूती
रज्ज्वां भुजंगम इव प्रडतभाडसतं वै ।।३

प्रातः स्मराडम भवभीडतहरं सुरिं
गंगाधरं वृषभवाहनमस्तम्बकिम् ।
खवांगिूलवरदाभयहस्तमिीं
संसाररोगहरमौषधमडितीयम् ।।४

प्रातः स्मराडम भवभीडतमहाडतथिान्त्यै
नारायिं गरुिवाहनमब्जनाभम् ।
ग्राहाडभभूतवरवारिमुस्तक्तहेतुं
क्रियुधं तरुिवाररजपत्रनेत्रम् ।।५

प्रातः स्मराडम रघुनार्मुखारडवनं्दं
मन्दस्तस्मतं मधुरभाडष डविालभालम् ।
किथवलस्तम्बिलकुण्डलोडभगण्डं

किाथन्तदीघथनयनं नयनाडभरामम् ।।६
प्रातः स्मराडम गिनार्मनार्बनुंधुं
डसनदूरपूरपररिोडभतगण्डयुग्मम् ।
उिण्डडवघ्नपररखण्डनिण्डदण्ड-
माखण्डलाडदसुरनायकवृन्दवनद्यम् ।।७

प्रातः स्मराडम खलु तत्सडवतुवथरेणंयं
रूपं डह मण्डलमिोऽर् तनुयथजूंडष ।
सामाडन यस्य डकरिाः प्रभवाडदहेतुं
ब्र्म्हाहरात्मकमलक्ष्यमडिन्त्यरूपम् ।।८

मैं प्रातुःकाल हृदय में सुफु ररत होते हुए ओितत्त्व का स्मरण करता हाँ, जो सत्, शित् और आनन्दरूप है, परमहंसों ं का प्राप्यस्ान है और जाग्रताशद तीनों ं अवस्ाओं ं से शवलक्षण है, जो स्वप्न, सुषुत्मप्त और जाग्रत अवस्ाओं ं को शनत्य जानता है, वह सुफु रणारशहत ब्रह्म ही मैं हाँ, पंभूतों ं का संघात (िरीर) मैं नहीं ं हाँ।।१

जो मन और वाणी से अगम्य है, शजसकी कृपा से समस्त वाणी भास रही है, शजसका स्त्रि 'नेशत-नेशत' कह कर शनरूपण करते हैं, शजस अजन्मा देवदेवेश्वर अचुयुत को अग्रय (आशद) पुरुष कहते हैं, मैं उसका प्रातुःकाल भजन करता हाँ।।२

शजस सवथस्वरूप परमेश्वर में यह समस्त संसार रजुजु में सपथ के समान प्रशतभाशसत हो रहा है, उस अन्धकार से परे, शदव्य तेजोमय, पूणथ सनातन पुरुषोत्तम को मैं प्रातुःकाल नमस्कार करता हाँ।।३

जो सांसाररक भय को हरने वाले और देवताओं ं के स्वामी हैं, जो गंगा जी को धारण करते हैं, शजनकावृषभवाहनहै,जोअत्मम्बकाकेइिहैंतर्ाशजनकेहार्मेंखट्ांग,शत्रिूलऔरवरद तर्ा अभयमुिाहै,उनसंसार-रोगकोहरनेके शनशमत्तअशद्वतीयऔषशध-रूप'इि'(महादेव जी) कामैंप्रातुःकालस्मरणकरताहाँ।।४

गरुिवाहन, कमलनाभ, ग्राह से ग्रशसत गजेन्द्र की मुत्मक्त के कारण, सुदिथनिक्रधारी, नवशवकशसत कमलपत्र-से नेत्र वाले नारायण का भवभयरूपी महान् दुःख की ित्मन्त के शलए मैं प्रातुःकाल स्मरण करता हाँ।।५

जो मधुर मुस्कानयुक्त, मधुर भाषी और शविाल भाल से सुिोशभत हैं; कानों ं में लटके हुए ंलि कु ण्डलों ं से शजनके दोनों ं कपोल ोशभत हो रहे हैं तर्ा जो कणथ पयथन्त शवसूतृत ब्रि-ब्रि नेत्रों ं से ोभायमान और नेत्रों ं को आनन्द देने वाले हैं, श्री रघुनार् जी के ऐसे मुखारशवन्द का मैं प्रातुःकाल स्मरण करता हाँ।।६

जो इन्द्र आशद देवेश्वरों ं के समूह से वन्दनीय हैं, अनार्ों ं के बनुधु हैं, शजनके युगल कपोल शसन्दूरराशि से अनुरंशजत हैं. जो उद्दण्ड (प्रबल) शवघ्नों ं का खण्डन करने के शलए प्रिण्ड दण्डस्वरूप हैं, उन श्री गणि जी को मैं प्रातुःकाल स्मरण करता हाँ।।७

मैंसूयथ भगवान् के उस शे्रेष्ठ रूप को प्रात काल स्मरण करता हाँ, शजनका मण्डल ऋगे्वेद है,तनुयजुवेद है, शकरणें सामवेद हैं और जो ब्रह्मा तरा शिवस्वरूप है, जगत् की उत्पशत्त, रक्षा औरनिाका कारण है तरा अलक्ष्य और अशिन्त्य स्वरूप है ।।८

रशववार

आडदत्य-स्तोत्रम्

१. आशदत्यहृदयम्

ॐश्रीगणिाय नमुः। अय श्री आशदत्यहृदय स्तोत्रमहामन्त्रय अगस्त्यो भगवान् ऋशषुः, अनुष्टुप्छन्दुः,आशदत्यमण्डलान्तवथती परमिाा देवता। मम सकलशवघ्नशनवारणपूवथकसवाथभीष्टशसद्ध्यरे् जपे शवशनयोगुः।

ततो युद्धपररश्रान्तं समरे डिन्तया स्तस्थतम्।
रावें ाग्रतो दृष्ट्वा युद्धाय समुपस्तस्थतम्।।१।।

दैवतैश्च समागम्य द्रष्टुमभ्यागतो रिम्।
उपागम्याब्वीद्राममगस्त्यो भगवानृडषः ।।२।।

राम राम महाबाहो शि गुह्यं सनातनम्।
येन सवाथनरीन् वत्स समरे डवजडयष्यडस ।।३।।

आडदत्यहृदयं पुण्यं सवथितुरुडवनिानम्।
जयावहं जपेडन्नत्यमियं परमं डिवम् ।।४।।

सवथमंगलमांगल्यं सवथपापप्रिानम्।
डिन्तिोकप्रिमनमायुवथधथनमुत्तमम् ।।५।।

रस्तश्ममन्तं समुद्यन्तं देवासुरनमसृकृतम्।
पूजयस्व डववस्वन्तं भास्करं भुवनेश्वरम् ।।६।।

सवथदेवात्मको ह्येष तेजस्वी रस्तश्मभावनः ।
एष देवासुरगिोकान् पाडत गभस्तस्तडभः ।।७।।

एष ब्ह्मा ि डवषणुश्च डिवः स्कन्दः प्रजापडतः ।

महेन्द्रो धनदः कालो यमः सोमो ह्यपांपडतः ।।८।।

डपतरो वसवः साध्या ह्यडश्वनी मरुतो मनुः ।
वायुवथडि प्रजाप्रि ऋतुकताथ प्रभाकरः ।।९।।

आडदत्यः सडवता सूयथः खगः पूषा गभस्तस्तमान्।
सुविथसदृो भानुः डहरण्यरेता डदवाकरः ।।१०।।

हररदश्वः सहस्राडिथः सप्तसस्तप्तमथरीडिमान्।
डतडमरोन्मर्नः ि◌मुभुस्त्वष्टा माताथण्ड अंुमिान् ।।११।।

डहरण्यगभथः डिडिरस्तपनो भास्करो रडवः ।
अडग्नगभोऽडदतेः पुत्रः ि◌ंखः डिडिरनिानः ।।१२।।

व्योमनार्स्तमोभेदी ऋग्यजुः सामपारगः ।
घनवृडष्टरपां डमत्रो डवन्ध्यवीर्ीप्लवंगमः ।।१३।।

आतपी मण्डली मृतुयुः डपंगलः सवथतापनः ।
कडवडवथश्वो महातेजा रक्तः सवथभवोद्भवः ।।१४।।

नित्रग्रहतारिागमडधपो डवश्वभावनः ।
तेजसामडप तेजस्वी ि◌ादित्मन्नमोऽसुतु ते ।।१५।।

नमः पूवाथय डगरये पडश्चमायाद्रये नमः ।।
ज्योडतगथिानां पतये डदनाडधपतये नमः ।।१६।।

जयाय जयभद्राय हयथश्वाय नमो नमः ।
नमो नमः सहस्रांि आडदत्याय नमो नमः ।।१७।।

नमः उग्राय वीराय सारंगाय नमो नमः ।
नमः पद्यप्रबोधाय माताथण्डाय नमो नमः ।।१८।।

ब्र्हेंमिानाचुयुतिाय सूयाथयाडदत्यविथसे ।
भास्वते सवथभिाय रौद्राय वपुषे नमः ।। १९।।

तमोघ्नाय डहमघ्नाय ि◌तुरुघ्नायाडमतात्मने ।
कृतघ्नघ्नाय देवाय ज्योडतषां पतये नमः ।।२०।।

तप्तिामीकराभाय विये डवश्वकमथि।
नमस्तमोऽडभडनघ्नाय स्वये लोकसाक्षिि ।।२१।।

नियत्येष वै भूतं तदेव सृजडत प्रभुः।
पायत्येष तपत्येष वषथत्येष गभस्तस्तडभः ।।१२।।

एष सुप्ेतेषु जागडतथभूतेषुपररडनडष्ठतः।।
एष एवाडग्नहोत्ंर ि फलंविडमहोडत्रिाम्।।३२।।

वेदाश्च क्रतवश्ैचैवक्रतूनांफलमेवि।
याडन कृत्याडन लोकेषुसवथएषरडवःप्रभुः।।२४।।

एनमापतुसु कृिरषुकान्तारेषुभयेषिु।
कीतथयन् पुरुषः कडश्चन्नावसीदडतराघव।।२५।।

पूजयस्ैवैनमेकाग्रो देवदेवं जगत्पडतम् ।
एतस्तत्रगुडितं जप्त्वायुद्धेषुडवजडयष्यडस।।२६।।

अस्तस्मन् ि महाबाहोरावित्ंवंवडधष्यडस।ए
वमुक्त्वा तदाऽगस्त्योजगामियर्ागतम्।।२७।।

एतत्त्छुत्वा महातेजानष्टिोकोऽभवत्तदा।
धारयामास सुप्रीतो राघवःप्रयतात्मवान्।।२८।।

आडदत्ंयं पे्रेक्ष्य जप्त्वातुपरंहषथमवाप्तवान्।
डत्ररिाम्य ुडिभूथत्वाधनुरादायवीयथवान्।।२९।।

रावि पे्रेक्ष्य दृष्टात्मायुद्धायसमुपागमत्।
सवथयत्ेनेन महता वधेतस्यधृतोऽभवत्।।३०।।

अर् रडवरवदडन्नरीक्ष्यरामंमुडदतमनाःपरमंप्रहृष्यमिाः।
डनर्डिरपडतसंयिं डवडदत्वासुरगिमध्यगतोविस्त्वरेडत।।३१।।

।। इडत आडदत्यहृदयंसमूपिूथम्।।

२. गायत्री-मन्त्र

ॐ भूभुथवः स्वः । तत्सडवतुवथरेण्ंयं।
भगो देवस्य धीमडह।
डधयो यो नः प्रिोदयात्।

ॐ –	परब्रह्म का अशभवाच्य िब्द
भूः –	भूलोक
भुवुः –	अन्तररक्ष लोक
स्वुः –	स्वगथलोक
तत् –	परमिाा अर्वा ब्रह्म

सशवतुः -	ईश्वरअर्वा सृशष्टकताथ
वरेणंयं -	पूजनीय
भगथः-	अज्ञान तरापाप-शनवारक
देवय -	ज्ञानस्वरूपभगवान् का
धीमशह-	हमध्यानकरते हैं
शधयो-	बुत्मद्ध,प्रज्ञा
युः-	जो
नुः-	हमारा
प्रिोदयात् -	प्रकाशितकरे

हमउसमशहमामयईश्वरकाध्यानकरतेहैं,शजसनेइससंसार को उत्पन्न शकया है, जो पूजनीयहै,जोज्ञानकाभण्डारहै,जोपापों ंतरा्अज्ञानकोदूरकरने वाला है-वह हमें प्रकिा शदखाये और हमें सत्पर् पर ले जाये।

३. श्रीमद्भगवद्गीता, अध्याय २

सांख्ययोग-त्मस्तप्रज्ञलक्षणम्

अजुथन उविा

स्तस्तप्रज्ञस्य का भाषा समाडधस्स्य किव ।
स्तस्तधीः डकं प्रभाषेत डकमासीत व्रजेत डकम् ।।५४

श्री भगवानुविा

प्रजहाडत यदा कामान् सवाथन् पार्थ मनोगतान् ।
आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्तस्तप्रज्ञस्तदोच्यते ।।५५

दुःखेष्वनुडिग्नमनाः सुखेषु डवगतसृपृहः ।
वीतरागभयक्रोधः स्तस्तधीमुथडनरुच्यते ।।५६

यः सवथत्रानडभस्नेहस्तत्तत्प्राप्य ुिभुिभम् ।
नाडभनन्दडत न ेिडष्ट तस्य प्रज्ञा प्रडतडष्ठता ।।५७

यदा संहरते ायं कूमोऽङ्गानीव सवथिः ।।
इस्तन्द्रयिीस्तन्द्रयारे्भ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रडतडष्ठता ।।५८

डवषया डवडनवतथन्ते डनराहारस्य देडहनः ।
रसवजथ रसोऽप्यस्य परं दृष्ट्वा डनवतथते ।।५९

यततो ह्यडप कौन्तेय पुरुषस्य डवपडश्चतः ।
इस्तन्द्रयाडि प्रमार्ीडन हरस्तन्त प्रसभं मनः ।।६०

ताडन सवाथडि संयम्ययुक्तआसीत मत्परः ।
वि डह यसे्येस्तन्द्रयाडितस्यप्रज्ञाप्रडतडष्ठता ।। ६१

ध्यायतो डवषयानुंसःसंगसे्तेषूपजायते ।
संगात् संजायते कामः कामात्क्रोधोऽडभजायते ।।६२

क्रोधाद्भवडत सम्मोहःसम्मोहात्स्मृडतडवभ्रमः ।
सृमृडतभ्ंरंाद् बुस्तद्धनिाोबुस्तद्धनिाात्प्रिश्यडत ।।६३

रागिषडवयुक्तैसु्तडवषयाडनस्तन्द्रयैश्चरन्।
आत्मवश्यैडवथधेयात्माप्रसादमडधगिडत ।।६४

प्रसादे सवथदुःखानांहाडनरस्योपजायते ।
प्रसन्नितसोह्याुबुस्तद्धः पयथवडतष्ठते ।।६५

नास्तस्त बुस्तद्धरयुक्तस्यनिायुक्तस्य भावना ।
न ाभावयतः ाास्तन्तरिान्तस्यकुतः सुखम् ।।६६

इस्तन्द्रयिाां डह रतां यन्मनोऽनुडवधीयते ।
तदस्य हरडत प्रज्ञां वायुनाथवडमवाम्भडस ।। ६७

तस्माद्यस्य महाबाहो डनगृहीताडन सवथिः ।
इस्तन्द्रयिाीस्तन्द्रयारे्भ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रडतडष्ठता ।।६८

या डनिा सवथभूतानां तस्यां जागडतथ संयमी ।
यस्यां जाग्रडत भूताडन सा डनिा पश्यतो मुनेः ।।६९

आपूयथमिामिलप्रडतष्ठं समुद्रमापः प्रडविस्तन्त यित् ।
तित्कामा यं प्रडविस्तन्त सवे स ाास्तन्तमाप्नोडत न कामकामी ।।७०

डवहाय कामान्यः सवाथनुमांश्चरडत डनःसृपृहः ।
डनमथमो डनरहंकारः स ाास्तन्तमडधगिडत ।।७१

एषा ब्राह्मी स्तरु्डतः पार्थ नैनां प्राप्य डवमुह्यडत ।
स्तरु्त्वाऽस्यामन्तकालेऽडप ब्रह्मडनवाथिमृिडत ।।७२

ॐ तत्सत् इडत श्रीमद्भगवद्गीतासूपडनषतुसु ब्रह्मडवद्यायां योगिासे्त्रे श्रीकृष्णाजुथनसंवादे
सांख्ययोगो नाम डितीयोऽध्यायः ।।

४. श्रीमद्भगवद्गीता, अध्याय १२

भस्तक्तयोगः

अजुथन उवाि

एवं सततयुक्ता ये भक्तास्त्वां पयुथपासते ।
येाप्यिरमव्यक्ंतं तेषां के योगडवत्तमाः ।।१

श्रीभगवानुवाि

मय्यावेश्य मनो ये मां डनत्ययुक्ता उपासते ।
श्रद्धया परयोपेतास्ेते मे युक्ततमा मताः ।।२

ये त्विरमडनदेश्यमव्यक्ंतं पयुथपासते ।
सवथत्रगमडिनं्त्यं ि कूटस्मिलं धुरुवम् ।।३

सडन्नयमे्येस्तन्द्रयग्रामं सवथत्र समबुद्धयः ।
ते प्रापुनुवस्तन्त मामेव सवथभूतडहते रताः ।।४

क्ेलिेाऽडधकतरस्ेतेषामव्यक्तासक्तिेतसाम् ।
अव्यक्ता डह गडतदुथःखंदेहवस्तद्भरवाप्यते।।५

ये तु सवाथडि कमाथडिमडयसंन्यस्यमत्पराः।
अनने्येनैव योगेनमांध्यायन्तउपासते।।६

तेषामहं समुद्धताथमृतुयुसंसारसागरात्।
भवाडम नडिरात्पार्थमय्यावेडितेितसाम्।।७

मये्येव मन आधत्स्वमडयबुस्तंद्ंधडनविेय।
डनवडसष्यडस मये्येवअतऊध्ंवंनसंयिः।।८

अर् डित्ंतं समाधातुंनिक्नोडषमडयस्तस्रम्।
अभ्यासयोगेन ततोमाडमिापुंतुंधनंजय।।९

अभ्यासेऽप्यसमर्ोऽडस मत्कमथपरमो भव ।
मदर्थमडप कमाथडि कुवथन्डसस्तद्धमवाप्त्स्यडस।।१०

अरै्तदप्यिक्तोऽडस कतुं मद्योगमाडश्रतः ।
सवथकमथफलत्यागं ततःकुरुयतात्मवान्।।११

शे्रेयो डह ज्ञानमभ्यासाज्ज्ञानाद्ध्यानंडवडिष्यते।
ध्यानात्कमथफलत्यागस्त्यागिाास्तन्तरनन्तरम् ।।१२

अिष्टा सवथभूतानांमैत्रःकरिुएवि।
डनमथमो डनरहंकारःसमदुःखसुखःमिी।।१३

सनुतुष्टः सततं योगीयतात्मादृढडनश्चयः।
मय्यडपथतमनोबुस्तद्धयों ंमद्भक्तःसमेडप्रयः।।१४

यस्मान्नोडिजते लोकोलोकान्नोडिजतियः।
हषाथमषथभयिोगैमुथक्तो यः स ि मे डप्रयः ।।१५

अनपिेः ुडिदथिउदासीनोगतव्यर्ः।
सवाथरम्भपररत्यागी यो मद्भक्तः स मे डप्रयः ।।१६
यो न हृष्यडतनिेडष्टनिोडतनकाङ्क्षडत।
ुभिुभपररत्यागी भस्तक्तमान्यः स मे डप्रयः ।।१७

समः ित्रौ ि डमतेरितरामानापमानयोः।
तिौष्णसुखदुःखेषु समः संगडववडजथतः ।।१८

तुल्यडनन्दासुतुडतमोनी सनुतुष्टो येनके नडित् ।
अडनकेतः स्तरुरमडतभथस्तक्तमान्मेडप्रयोनरः।।१९

ये तु धष्याथमृतडमदं यर्ोक्ंतं पयुथपासते ।
श्रिधाना मत्परमा भक्तास्तेऽतीव मे डप्रयाः ।।२०

ॐ तत्सत् इडत श्रीमद्भगवद्गीतासूपडनषतुसु ब्र्ह्मडवद्यायां योगिास्त्रे श्रीकृष्णाजुथनसंवादे
भस्तक्तयोगो नाम ादिोऽध्यायः ।।

५. श्रीमद्भगवद्गीता, अध्याय १५

श्री भगवानुवि

ऊध्वथमूलमधः ाखमश्वत्ंथंप्राहुरव्ययम्।
छन्दांडस यस्य पिाथडनयस्ंतंवेदसवेदडवत्।।१

अधश्चोध्ंवं प्रसृतास्तस्य ाखागिुप्रवृद्धाडवषयप्रवालाः।
अधश्च मूलान्यनुसन्ततािन कमाथनुबन्धीडनमनुष्यलोके ।।२

न रूपमस्येह तर्ोपलभ्यतेनान्तोनािडदनथिसम्प्रडतष्ठा।
अश्वत्थमेनं सुडवरूढमूल-मसंगिस्त्रेिदृढेनडछत्त्वा।।३

ततः पदं तत्पररमाडगथतव्ंयं यस्तस्मनगतानडनवतथस्तन्तभूयः।

तमेव ादं्यं पुरुषं प्रपदे्ये यतः प्रवृडत्तः प्रसृता पुरिी ।।४

डनमाथनमोहा डजतसंगदोषा अध्यात्मडनत्या डवडनवृत्तकामाः ।
ंनैडवथमुक्ताः सुखदुःखसंज्ैत्रै- गथिन्त्यमूढाः पदमव्ययं तत् ।।५

न तद्भासयते सूयो न ांको न पावकः ।
यद्गत्वा न डनवतथन्ते तद्धाम परमं ममः ।।६

ममैवांा जीवलोके जीवभूतः सनातनः ।
मनःषष्ठानीस्तन्द्रयाडि प्रकृडतस्ाडन कषथडत ।।७

रीरं यदवाप्नोडत यच्चापुयुत्क्रामतीश्वरः ।
गृहीत्ैवैताडन संयाडत वायुगथन्धाडनवायात् ।।८

श्रोत्ं रंु स्पिथनं ि रसनं ांमेव ि ।
अडधष्ठाय मनश्चायं डवषयानुपसेवते ।।९

उत्क्रामन्तं स्तस्तं वाडप भुंजानं वा गुास्तन्वतम् ।
डवमूढा नानुपश्यस्तन्त पश्यस्तन्त ज्ञानुिषः ।।१०

यतन्तो योडगनश्ैचैनं पश्यन्त्यात्मन्यवस्तस्तम् ।
यतन्तोऽप्यकृतात्मानो नैनं पश्यन्त्यैतसः ।।११

यदाडदत्यगतं तेजो जगद्भासयते ऽस्तखलम् ।
यच्चन्द्रमडस यच्चाग्नौ तत्तेजो डवस्तद्ध मामकम् ।।१२

गामाडवश्य ि भूताडन धारयाम्यहमोजसा ।
पुष्णाडम ौषधीः सवाथ सोमो भूत्वा रसात्मकः ।।१३

अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राडिनां देहमाडश्रतः ।
प्रिापानसमायुक्तः पाम्यन्नं ितुडवथधम् ।।१४

सवथस्य ाहं हृडद सडन्नडवष्टो - मत्तः सृमृडतज्ञाथनमपोहनं ि ।
वेदैश्च सवैरहमेव वेद्यो- वेदान्तकृिदडवदेव ाहम् ।।१५
ाडिवमौ पुरुषो लोके िरश्चिार एव ि ।
रिः सवाथडि भूताडन कूटस्ोऽरि उच्यते ।।१६

उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः परमात्मेतुयुदाहृतः ।
यो लोकत्रयमाडवश्य डबभत्यथव्यय ईश्वरः ।।१७

यस्मात्क्षरमतीतोऽहमिरादडप ौत्तमः ।
अतोऽस्तस्म लोके वेदिप्रडर्तः पुरुषोत्तमः ।।१८

यो मामेवमसमूमूढो जानाडत पुरुषोत्तमम् ।
स सवथडवद्भजडत मां सवथभावेन भारत ।।१९

इडत गुह्यतमं ाास्त्रडमदमुक्तं मयानघ ।
एतद्बुद्ध्वा बुस्तद्धमानस्यातृकृतकृत्यश्च भारत ।।२०

ॐ तत्सत् इडत श्रीमद्भगवद्गीतासूपडनषतुसु ब्र्ह्मडवद्यायां योगिास्त्रे श्रीकृष्णाजुथनसंवादे पुरुषोत्तमयोगो नाम पंदिोऽध्यायः ।।

६. गीता मशहमा

(हरर गीता से)

गीता हृदय भगवान् का सब ज्ञान का ुभ सार है।
इस ुद्ध गीता ज्ञान से ही ल रहा संसार है ।।१

गीता परम शवद्या सनातन सवथास्त्र प्रधान है।
परब्रह्म रूपी मोक्षकारी शनत्य गीता गान है ।।२

संसार के सब ज्ञान का ज्ञानमय भण्डार है।
शुरुशत उपशनषद् वेदान्त ग्रन्थों ं का महा ुभ सार है ।।३

गाते जहाँ जन गीत गीता पे्रेम से धरते ध्यान हैं।
तीरर् वहीं ं भव के सभी ुभ ुद्ध और महान् हैं।।४

गाते जहाँ शनत्य हरर गीता शनरन्तर नेम से।
रहते वहीं ं सुखकन्द नटवर न्द-नन्दन पे्रेम से ।।५

यह मोहमाया कष्टमय तरना शजसे संसार हो ।
वह बैठ गीता नाव में सुख से सहज में पार हो ।।६

सुनते सुनाते शनत्य जो लाते इसे व्यवहार में।
पाते परम पद ठोकरें खाते नहीं ं संसार में ।।७

धरते हुए जो ध्यान गीता ज्ञान का तन छो़ते ।
लेने उसे माधव मुरारी आप ही उठ दौ़ते ।।८

७. श्री शवषुणुसहस्रनामस्तोत्रम्

।। हररुः ॐ ।।

ुक्लाम्बरधरं डवषुंणुं ंडिविं ंतुभुथजम् ।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सवथडवघ्नोपिान्तये ।।

व्यासं वडसष्ठनप्तारं ंक्रेतेः पौत्रमकल्मषम् ।
परिारात्मजं वन्देे ुकतातं तपोडनडधम् ।।

व्यासाय व्यासरूपाय डवषुणुरूपाय डवष्णवे।
नमो वै ब्र्ह्मडनधये वाडसष्ठाय नमो नमः ।।

अडवकाराय ुद्धाय डनत्याय परमात्मने ।
सदैकरूपरूपाय डवष्णवे सवथडजष्णवे ।।

यस्य स्मरिमात्रेि जन्मसंसारबन्धनात् ।
डवमुच्यते नमस्तस्मैै डवष्णवे प्रभडवष्णवे ।।

नमः समस्तभूतानामाडदभूतायभूभृते।
अनेकरूपरूपाय डवष्णवे प्रभडवष्णवे ।।
ॐ नमोडवष्णवेप्रभडवष्णवे।।

श्रीविैम्पायन उविा

शुरुत्वा धमाथनिैषिपावनाडनिसवथिः।
युडधडष्ठरः ंान्तनवंपुनरेवाभ्यभाषत।।१।।

युडधडष्ठर उविा

डकमेकं दैवतं लोके डकं वाप्येकं परायिम्।
सुतुवन्तः कं कमिथन्तःप्रापुनुयुमाथनवाःुभिम्।।२।।

को धमथः सवथधमाथिांभवतःपरमोमतः।
डकं जपनुमुच्यते जनुतुजथन्मसंसारबन्धनात्।।३।।

श्रीभीष्म उविा

जगत्प्रभुं देवदेवमनन्तंपुरुषोत्तमम्।
सुतुवन्नामसहस्रेि पुरुषःसततोस्तत्थतः।।४।।

तमेव ंाथयडन्नत्यंभक्त्यापुरुषमव्ययम्।
ध्यायनसुतुवन्नमस्यंश्च यजमानस्तमेव ं ।।५।।

अनाडददनधनं डवषुंणुंसवथलोकमहेश्वरम्।
लोकाध्यिं सुतुवडन्नत्यं सवथदुःखाडतगोभवेत्।।६।।

ब्र्ह्मण्यं सवथधमथज्ञं लोकानां कीडतथवधथनम् ।
लोकनार्ं महद्भूतं सवथभूतभवोद्भवम् ।।७ ।।

एष मे सवथधमाथिं धमोऽडधकतमो मतः ।
यद्भक्त्या पुण्डरीकिां स्तवैरिन्नरः सदा ।।८ ।।

परमं यो महत्तेजः परमं यो महत्तपः ।
परमं यो महद्ब्रह्म परमं यः परायिम् ।।९ ।।

पडवत्रिाां पडवत्ंरं यो मंगलानां ि मंगलम् ।
दैवतं देवतानां ि भूतानां योऽव्ययः डपता ।।१०।।

यतः सवाथडि भूताडन भवन्त्याडदयुगागमे ।
यस्तस्ंमंश्च प्रलयं यास्तन्त पुनरेव युगिये ॥११ ।।

तस्य लोकप्रधानस्य जगन्नार्स्य भूपते ।
डवष्णोनाथमसहस्ंरं मे शिु पापभयापहम् ।।१२ ।।

याडन नामाडन गौिाडन डवख्याताडन महात्मनः ।
ऋडषडभः पररगीताडन ताडन वक्ष्याडम भूतये ।।१३ ।।

ऋडषनाथम्नां सहस्रस्य वेदव्यासो महामुडनः ।
छन्दोऽनुष्ट्टुप्तर्ा देवो भगवान्देवकीसुतः ।।
अमृतांूद्भिवो बीजं ि स्तक्तदेवकीनन्दनः ।
डत्रसामा हृदयं तस्य ि न्त्यरे् डवडनयुज्यते ।।
डवषुंणुं डजषुंणुं महाडवषुंणुं प्रभडवषुणु महेश्वरम् ।
अनेकरूपदैत्यान्ंतं नमाडम पुरुषोत्तमम् ।।

अय श्रीशवष्णोशदथव्यसहस्रनामस्तोत्रमहामन्त्रय । श्रीवेदव्यासो भगवानृशषुः । अनुष्टुप् छन्दुः । श्रीमहाशवषुणुः परमिाा श्रीमन्नारायणो देवता । अमृतांूद्भिवो भानुररशत बीजम् । देवकीनन्दनुः स्रष्टेशत त्मिक्तुः । उद्भवुः क्षोभणो देव इशत परमो मन्त्रुः । िंखभृन्नन्दकी िक्रीशत कीलकम् । िांगथधन्वा गदाधर इत्यस्त्रम् । रर्ंगपाशणरक्षोभ्य इशत नेत्रम् । शत्रसामा सामग सामेशत कविम् । आनन्ंदं परब्रह्मेशत योशनुः, ऋतुसुसुदिथनुः काल इशत शदग्बन्धुः । श्रीशवश्वरूप इशत ध्यानम्। श्रीमहाशवषुणुप्रीत्यरे् सहस्रनामजपे शवशनयोगुः ।।

शवश्च शवषुणुवथषट्कार इत्ंयंगुष्ठाभ्यां नमुः । अमृतांूद्भिवो भानुररशत तजथनीभ्यां नमुः । ब्रह्मण्यो ब्रह्मकृद्ब्रह्मेशत मध्यमाभ्यां नमुः । सुवणथशवन्स्दुरक्षोभ्य इत्यनाशमकाभ्यां नमुः । शनशमषोऽशनशमषुः स्रग्वीशत कशनशष्ठकाभ्यां नमुः । रर्ंगपाशणरक्षोभ्य इशत करतलकरपृष्ठाभ्यां नमुः । सुव्रतुः सुमुखुः सूक्ेष्मेशत ज्ञानाय हृदयाय नमुः । सहस्रमूधाथ शवश्वेशत ऐश्वयाथय शिरसे स्वाहा। सहस्राशिं सप्तशजह्वेशत ि कै्त्यै शिखायै वषट् नेत्रसामासामौषाट्गुःसामेशतबलायकवियहुम् ।रर्ंगपाशणरक्षोभ्यइशततेजसे गिथधन्वा गदाधर इशत वीयाथय अस्त्राय फट् । ऋतुः सुदिथनुः काल इशत भूभुथवुः सुवरोम् इशत शदग्बन्धुः ।।

।। ध्यानम् ।।

क्षीरोदन्वत्प्रदे ेशिमशणशवलसतै्सैकते मौत्मक्तकानां
मालाकूलृप्तासनस्थः स्फशटक मशणशनभौत्मक्तकैमथत्मण्डतांगुः।
ुभै रभै रदभै रुपररशवरशितै मुथ क्तपीयू षवषे ुः
आनन्दी नुः पुनीयादररनशलनगदिांखपाशणमुथकुन्दुः।।

भूः पादौ यय नाशभशवथयदसुरशनलश्चन्द्रसूयों े नेत्रे
कणाथविाुः शिरोद्यौमुथखमशप दहनो यय वास्तेयमत्मब्धुः।
अन्तुःस्थ यय शवशं्वं सुरनरखगगोभोशगगन्धवथदैतै्यैुः
शित्रं रंरम्यते तं शत्रभुवनवपुषं शवषुणुर्मिं नमाशम।।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।।

न्ताकारं भुजगियनं पद्मनाभं सुरिं
शवश्वाधार गगनसदृिं मेघवणथ ुभांगम् ।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयन योशगहृद्ध्यानगम्यं
वन्दे शवषुणु भवभयहरं सवथलोकैकनार्म् ।।

मेघश्यामं पीतकौयवासं
श्रीवत्सांक कौसुतुभोद्भाडसतांगम् ।
पुण्योपेतं पुण्डरीकायता
वन्दे डवषुंणुं सवथलोकैकनार्म् ।।

नमः समस्तभूतानामाडदभूताय भूभृते ।
अनेकरूपरूपाय डवष्णवे प्रभडवष्णवे ।।

सिंखिक्र सडकरीटकुण्डलं
सपीतवस्त्रं सरसीरुहेिम् ।
सहारविस्स्लिोडभकौसुतुभं
नमाडम डवषुंणुं डिरसा ेतुभुथजम् ।।

छायायां पाररजातस्य हेमडसंहासनोपरर ।
आसीनममुबुदश्याममायतिामलंकृतम् ।।

न्द्रिाननं ेतुबाथहु श्रीवत्सांडकतविसम् ।
रुक्मिीसत्यभामाभ्यां सडहतं कृष्णमाश्रये ।।
।। ॐ डवश्वस्मै नमः ।।

।। हरः ॐ ।।

ॐ डवशं्वं डवषुणुवथषट्कारो भूतभव्यभवत्प्रभुः ।
भूतकृद्भूतभृद्भावो भूतात्मा भूतभावनः ।।१४।।

पूतात्मा परमात्मिामुक्तानांपरमागडतः।
अव्ययः पुरुषः ंसिीत्रज्ञोऽरिएवि।।१५।।

योगो योगडवदां नेताप्रधानपुरुषेश्वरः।
नारडसंहवपुः श्रीमान् केिवःपुरुषोत्तमः।।१६।।

सवथः िवथः डिवःस्रुिभूथताडदडनडधरव्ययः।
सम्भवो भावनो भताथप्रभवःप्रभुरीश्वरः।।१७।।

स्वयमूभूः िमुभुराडदत्यःपुष्करिोमहास्वनः।
अनाडदडनधनो धाता डवधाताधातुरुत्तमः।।१८।।

अप्रमेयो हृषीकेिःपद्मनाभोऽमरप्रभुः।
डवश्वकमाथ मनुस्त्वष्टा रुडवष्ठःरुडवरोधुरुवः।।१९।।

अग्राह्यः िाश्वतः कृष्णोलोडहताःप्रतदथनः।
प्रभूतस्तस्त्रककुब्धाम पडवत्रंमंगलंपरम्।।२०।।

ईिनः प्रिादःप्रिोजेयेष्ठःशे्रेष्ठःप्रजापडतः।
डहरण्यगभो भूगभोमाधवोमधुसूदनः।।२१।।

ईश्वरो डवक्रमी धन्वीमेधावीडवक्रमःक्रमः।
अनुत्तमो दुराधषथः कृतज्ञःकृडतरात्मवान्।।२२।।

सुरिः िर्रि िमथ डवश्वरेताः प्रजाभवः ।
अहः संवत्सरोव्यालःप्रत्ययःसवथदिथनः।।२३।।

अजः सवेश्वरः डसद्धःडसस्तद्धःसवाथडदरचुयुतः।
वृषाकडपरमेयात्मा सवथयोगडवडनःसृतः।।२४।।

वसुवथसुमनाः सत्यः समात्माऽसस्तम्मतः समः ।
अमोघः पुण्डरीकिो वृषकमाथ वृषाकृडतः ।।२५ ।।

रुद्रो बहुडिरा बभ्रुडुवथश्वयोडनः ुिडिश्रवाः ।
अमृतः िाश्वतः स्रुिथरारोहो महातपाः ।।२६ ।।

सवथगः सवथडवद्भानुडवथष्वक्सेनो जनादथनः ।
वेदो वेदडवदव्यंगो वेदांगो वेदडवत्कडवः ।।२७ ।।

लोकाध्यिः सुराध्यिो धमाथध्यिः कृताकृतः ।
तिुरात्मा ितुगूयूथहश्चतुदथष्टरश्चतुभुथजः ।।२८ ।।

भ्राडजषुणुभोजनं भोक्तासडहषुणुजथगदाडदजः ।
अनघो डवजयो जेता डवश्वयोडनः पुनवथसुः ।।२९ ।।

उपेन्द्रो वामनः प्रांुरिमोघः ुिडिरूडजथतः ।
अतीन्द्रः संग्रहः सगो धृतात्मा डनयमो यमः ।।३० ।।

वेद्यो वैद्यः सदायोगी वीरहा माधवो मधुः ।
अतीस्तन्द्रयो महामायो महोत्साहो महाबलः ।।३१ ।।

महाबुस्तद्धमथहावीयों ंमहिास्तक्तमथहाद्युडतः।
अडनदेश्यवपुः श्रीमानमेयात्मामहाडद्रधृक् ।।३२।।

महेष्वासो महीभताथश्रीडनवासःसतांगडतः।
अडनरुद्धः सुरानन्दो गोडवन्दोगोडवदांपडतः।।३३।।

मरीडिदथमनो हंसः सुपिो भुजगोत्तमः ।
डहरण्यनाभः सुतपाःपद्मनाभःप्रजापडतः।।३४।।

अमृतुयुः सवथदृक् डसंहःसन्धातासस्तन्धमान्स्तस्थरः।
अजो दुमथषथिः ंास्ताडवशुरुतात्मासुराररहा।।३५।।

गुरुगुथरुतमो धामसत्यःसत्यपराक्रमः।
डनडमषोऽडनडमषः स्रग्वीविास्पडतरुदारधीः।।३६।।

अग्रींगाथमीिः श्रीमान्न्यायोनेतासमीरिः।
सहस्रमूधाथ डवश्वात्मा सहस्रािःसहस्रपात्।।३७।।

आवतथनो डनवृत्तात्मासंवृतःसम्प्रमदथनः।
अहः संवतथको वडिरडनलोधरींधरः।।३८।।

सुप्रसादः प्रसन्नात्माडवश्वधृस्तग्वश्वभुस्तग्वभुः।
सत्कताथ सतृकृतः साधुजथहुनाथरायिोनरः।।३९।।
असंख्येयोऽप्रमेयात्मा डवडिष्टः डिष्टकृ ुिडिः ।
डसद्धार्थः डसद्धसंकल्पःडसस्तद्धदःडसस्तद्धसाधनः।।४०।।

वृषाही वृषभो डवषुणुवृथषपवाथवृषोदरः।
वधथनो वधथमानश्च डवडवक्तःशुरुडतसागरः।।४१।।

सुभुजो दुधथरो वाग्मीमहेन्द्रोवसुदोवसुः।
नैकरूपो बृहदूरूपः डिडपडवष्टःप्रकिानः।।४२।।

ओजस्तेजोद्युडतधरः प्रकिात्मा प्रतापनः।
ऋद्धः स्पष्टिारो मन्त्रश्चन्द्रांुभिोथस्करद्युडतः।।४३।।

अमृतांूद्भिवो भानुः ि◌डबनदुः सुरेश्वरः ।
औषधं जगतःसेतुःसत्यधमथपराक्रमः।।४४।।

भूतभव्यभवन्नार्ः पवनः पावनोऽनलः ।
कामहा कामकृत्कान्तःकामःकामप्रदःप्रभुः।।४५।।

युगाडदकृ द्युगावतों नैकमायो महिानः ।
अदृश्योव्यक्तरूपश्च सहस्रडजदनन्तडजत् ।।४६ ।।

इष्टोऽडवडिष्टः डिषे्टेष्टःडिखण्डीनहुषोवृषः।
क्रोधहा क्रोधकृत्कताथडवश्चबाहुमथहीधरः।।४७।।

अचुयुतः प्रडर्तः प्रिाःप्रिादोवासवानुजः।
अपां डनडधरडधष्ठानमप्रमत्तःप्रडतडष्ठतः।।४८।।

स्कन्दः स्कन्दधरो धुयोवरदोवायुवाहनः।
वासुदेवो बृहद्भानुराडददेवःपुरन्दरः।।४९।।

औकस्तारिस्तारः ि◌ूरः ि◌ौररजथनेश्वरः ।
अनुकूलः ि◌तावतथः पद्मीपद्मडनाभिः।।५०।।

पद्मनाभोऽरडवन्दिाः पद्मगभथः ि◌रीरभृत् ।
महस्तद्धथकुरुद्धो वृद्धात्मामहिोगरिध्वजः।।५१।।

अतुलः ि◌रभो भीमःसमयज्ञोहडवहथररः।
सवर्थालिलिण्यो लक्ष्मीवान्सडमडतंजयः।।५२।।

डविरो रोडहतो मागों हेतुदाथमोदरःसहः।
महीधरो महाभागो वेगवानडमतिानः।।५३।।

उद्भवः ि◌ोभिो देवःश्रीगभथःपरमेश्वरः।
करिं कारिं कताथ डवकताथगहनोगुहः।।५४।।

व्यवसायो व्यवस्र्ानःसंस्र्ानःस्र्ानदोधुरुवः।
परस्तद्धथः परमस्पष्टस्तुष्टःपुष्टःशुभिेः।।५५।।

रामो डवरामो डवरतोमागोंनेयोनयोऽनयः।
वीरः ि◌स्तक्तमतां श्रेष्ठोधमोधमथडवदुत्तमः।।५६।।

वैकुण्ठः पुरुषः प्रिाःप्रिादःप्रिवःपृरु◌ः।

डहरण्यगभथः ितुरुघ्नो व्याप्तो वायुरधोिजः ।।५७ ।।

ऋतुः सुदिथनः कालः परमेष्ठी पररग्रहः ।
उग्रः संवत्सरो दिो डवश्रामो डवश्वदर्डिः ।।५८ ।।

डवस्तारः स्ावरस्ाुिः प्रमिां बीजमव्ययम् ।
अरोऽनरो महाकिोी महाभोगो महाधनः ।।५९ ।।

अडनडवथण्णः रुडवष्ठोऽभूधथमथयूपोमहामखः।
नित्रनेडमनथित्री िमःमिःसमीहनः।।६०।।

यज्ञ इज्यो महेज्यश्चक्रतुःसत्ंरंसतांगडतः।
सवथदिी डवमुक्तात्मासवथज्ञोज्ञानमुत्तमम्।।६१।।

सुव्रतः सुमुखः सूक्ष्ःसुघोषःसुखदःसुहत्।
मनोहरो डजतक्रोधोवीरबाहुडवथदारिः।।६२।।

स्वापनः स्वविो व्यापीनैकात्मानैककमथकृत्।
वत्सरो वत्सलो वत्सीरत्नगभोधनेश्वरः।।६३।।

धमथगुब्धमथकृद्धमीसदसत्क्षरमिरम्।
अडवज्ञाता सहस्रांुडिवथधाताकृतर्लिः।।६४।।

गभस्तस्तनेडमः सत्त्वस्ःडसंहोभूतमहेश्वरः।
आडददेवो महादेवो देविोदेवभृद्गुरुः।।६५।।

उत्तरो गोपडतगोप्ताज्ञानगम्यःपुरातनः।
रीिरभूतभृद्भोक्ता कपीन्द्रोभूररर्दिः।।६६।।

सोमपोऽमृतपः सोमःपुरुडजतुपुरुसत्तमः।
डवनयो जयः सत्यसन्धो दिाहथःसात्वतांपडतः।।६७।।

जीवो डवनडयता सिीमुकुन्दोऽडमतडवक्रमः।
अम्भोडनडधरनन्तात्मा महोदडधियोऽन्तकः।।६८।।

अजो महाहथः स्वाभाव्यो डजताडमत्रः प्रमोदनः ।
आनन्दो नन्दनो नन्दः सत्यधमाथ डत्रडवक्रमः ।।६९ ।।

महडषथः कडपलिायथः कृतज्ञो मेडदनीपडतः ।
डत्रपदस्तस्त्रदिाध्यिो महाशंगः कृतान्तकृत् ।।७० ।।

महावराहो गोडवन्दः सुषिेः कनकांगदी ।
गुह्यो गभीरो गहनो गुप्तश्चक्रगदाधरः ।।७१ ।।

वेधाः स्वांगोऽडजतः कृष्णोदृढः संकषथिोऽच्युतः ।
वरिो वारिो वृिः पुष्करिो महामनाः ।।७२ ।।

भगवान् भगहानन्दी वनमाली हलायुधः ।
आडदत्यो ज्योडतराडदत्यः सडहष्णुगथडतसत्तमः ।।७३ ।।

सुधन्वा खण्डपरिुदाथरिो द्रडविप्रदः ।
डदवःसूपृक्सवथदृग्व्यासो वािस्पडतरयोडनजः ।।७४ ।।

डत्रसामा सामगः साम डनवाथिं भेषजं डभषक् ।
संन्यासकृिमः ान्तो डनष्ठा ास्तन्तः परायिम् ।।७५ ।।

ुभिोंगः ास्तन्तदः स्रष्टा कुमुदः कुवलियः ।
गोडहतो गोपडतगोप्ता वृषभिो वृषडप्रयः ।।७६ ।।

अडनवती डनवृत्तात्मा सिंप्ता ैमकृस्तिवः ।
श्रीवत्सविः श्रीवासः श्रीपडतः श्रीमतां वरः ।।७७ ।।

श्रीदः श्रीिः श्रीडनवासः श्रीडनडधः श्रीडवभावनः ।
श्रीधरः श्रीकरः शे्रयः श्रीमाँिंकित्रयाश्रयः ।।७८ ।।

स्विः सं्वंगः ितानन्दो नस्तन्दज्योडतगथिेश्वरः ।
डवडजतात्मा डवधेयात्मा सत्कीडतथस्तश्छन्नसंयिः ।।७९ ।।

उदीथः सवथतश्चिरनीिः ाश्वतस्तस्थरः ।
भूियो भूषिो भूडतडवथिोकः ोकनािनः ।।८० ।।

अडिथष्मानडिथतः कुम्भो डविुद्धात्मा डविोधनः ।
अडनरुद्धोऽप्रडतरर्थः प्रद्युम्नोऽडमतडवक्रमः ।।८१ ।।

कालनेडमडनहा वीरः ौररः ूरजनेश्वरः ।
डत्रलोकात्मा डत्रलोकेिः केिवः केडिहा हररः ।।८२ ।।
कामदेवः कामपाल कामी कान्तः कृतागमः ।
अडनदेश्यवपुडवथष्णुवीरो ऽनन्तो धनंजयः ।।८३ ।।

ब्र्ह्मण्यो ब्र्ह्मकृद्ब्रह्मा ब्र्ह्म ब्र्ह्मडववधथनः ।
ब्र्ह्मडवद्राह्मिो ब्र्ह्मी ब्र्ह्मज्ञो ब्र्ाह्मिडप्रयः ।।८४ ।।

महाक्रमो महाकमाथ महातेजा महोरगः ।
महाक्रतुमथहायज्वा महायज्ञो महाहडवः ।।८५ ।।

स्तव्यः स्तवडप्रयः स्तोत्रं सुतुडतः स्तोता रिडप्रयः ।

पिृथः पूरडयता पुण्यः पुण्यकीडतथरनामयः ।।८६ ।।

मनोजवस्तीर्थकरो वसुरेता वसुप्रदः ।
वसुप्रदो वासुदेवो वसुवथसुमना हडवः ।।८७ ।।

सद्गडतः सतृकृडतः सत्ता सद्भडतः सत्परायिः ।
रिसैनो यदुशे्रेष्ठः सडन्नवासः सुयामुनः ।।८८ ।।

भूतावासो वासुदेवः सवाथसुडनलयो ऽनलः ।
दपथहा दपथदो दृप्तो दुधथरोऽरापराडजतः ।।८९ ।।

डवश्वमूडतथमथहामूडतथदीप्तमूडतथरमूडतथमान् ।
अनेकमूडतथरव्यक्तः ितमूडतथः िताननः ।।९० ।।

एको नैकः सवः कः डकं यत्तत्पदमनुत्तमम् ।
लोकबनुधुलोकनारे माधवो भक्तवत्सलः।।९१ ।।

सुविथविो हेमांगो वरांगश्चन्दनांगदी ।
वीरहा डवषमः ूिन्यो घृतीिरिलश्चलः ।॥९२ ।।

अमानी मानदो मान्यो लोकस्वामी डत्रलोकधृक् ।
सुमेधा मेधजो धन्यः सत्यमेधा धराधरः ।।९३ ।।
तेजोवृषो द्युडतधरः सवथिस्त्रभृतां वरः ।
प्रग्रहो डनग्रहो व्यग्रो नैकशंगो गदाग्रजः ।।९४ ।।

तिुमूथडतथश्चतुबाथहुश्चतुयूथहश्चतुगथडतः ।
तिुरात्मा ितुभाथवश्चतुवेदडवदेकपात् ।।९५ ।।

समावतोऽडनवृत्तात्मा दुजथयो दुरडतक्रमः ।
दुलथभो दुगथमो दुगो दुरावासो दुाररहा ।।९६ ।।

ुभिंगो लोकसारंगः सुतनुतुस्तनुतुवधथनः ।
इन्द्रकमाथ महाकमाथ कृतकमाथकृतागमः ।।९७ ।।

उद्भवः सुन्दरः सुन्दोरत्ननाभःसुलिोनः ।
अको वाजसनः शृंगी जयन्तःसवथडवजयी ।।९८ ।।

सुविथडबनदुरिोभ्यःसवथवागीश्वरेश्वरः ।
महाह्रदो महागतों महाभूतोमहाडनडधः ।।९९ ।।

कुमुदः कुन्दरः कुन्दःपजथन्यःपावनोऽडनलः ।
अमृतिोऽमृतवपुः सवथज्ञःसवथतोमुखः ॥१०० ।।

सुलभः सुव्रतः डसद्धः ितुरुडजितुरुतापनः ।
न्यग्रोधोदुम्बरोऽश्वत्थश्चिूरान्ध्रडनषूदनः ।।१०१ ।।

सहस्राडिथः सप्तडजह्नः सप्ैतैधाः सप्तवाहनः ।
अमूडतथरनघोऽडिन्त्यो भयकृद्भयनिानः ।।१०२ ।।

ञिबृहतृकिः स्रूलो गिुभृडन्नगुथिो महान् ।
अधृतः स्वधृतः स्वास्यः प्राग्ंवंी वंविधथनः ।।१०३ ।।

भारभृत्कडर्तो योगी योगिीः सवथकामदः ।
आश्रमः श्रमिः ामः सुपिो वायुवाहनः ।॥१०४।।
धनुधथरो धनुवेदो दण्डो दमडयता दमः ।
अपराडजतः सवथसहो डनयन्ताऽडनयमोऽयमः ।।१०५ ।।

सत्त्ववान्सास्तत्त्वकः सत्यः सत्यधमथपरायिः ।
अडभप्रायः डप्रयाहहोऽहथः डप्रयकृत्प्रीडतवधथनः ।।१०६ ।।

डवहायसगडतज्योडतः सुरुडिहथतभुस्तग्वभुः ।
रडवडवथरिोनः सूयथः सडवता रडवलिोनः ।।१०७ ।।

अनन्तो हुतभुग्भोक्ता सुखदो नैकजोऽग्रजः।
अडनडवथण्णः सदामषी लोकाडधष्ठानमद्भुतः।।१०८।।

सनात्सनातनतमः कडपलः कडपरव्ययः ।
स्वस्तस्तदः स्वस्तस्तकृत्स्वस्तस्तस्वस्तस्तभुक्स्वस्तस्तर्दाडिः।।१०९।।

अरौद्रः कुण्डली ंक्रीडवक्रमूयूडजथतिासनः।
ब्दिाडतगः ंब्दसहः डिडिरःविथरीकरः।।११०।।

अकूरूरः पिैलोदिोर्दाडिःडिमिांवरः।
डवित्तमो वीतभयःपुण्यश्रविकीतथनः।।१११।।

उत्तारिो दुषूकृडतहापुण्योदुःस्वप्ननिानः।
वीरहा र्रिः सन्तोजीवनःपयथवस्तस्तः।।११२।।

अनन्तरूपोऽनन्त श्रीडजथतमनुयुभथयापहः ।
तिुरश्रो गभीरान्मा डवडदिोव्याडदिोडदिः।।११३।।

अनाडदभूथभुथवो लक्ष्मीःसुवीरोरुडिरांगदः।
जननो जनजन्माडदभीमोभीमपराक्रमः।।११४।।

आधारडनलयोऽधाता पुष्पहासः प्रजागरः ।
ऊध्वथगः सत्परि्ारः प्रिादःप्रिवःपिः।।११५।।

प्रमिां प्रिाडनलय प्रिाभृत्प्रिाजीवनः ।
तत्त्वं तत्त्वडवदेकात्मा जन्ममृत्युजराडतगः ।।११६ ।।

भूभुथवः स्वस्तरुस्तार सडवता प्रडपतामहः ।
यज्ञो यज्ञपडतयथज्वा यज्ञांगो यज्ञवाहनः ।।११७ ।।

यज्ञभृद्यज्ञकृद्यजी यज्ञभुग्यज्ञसाधनः ।
यज्ञान्तकृद्यज्ञगुह्यमन्नमन्नाद एव ि ।।११८ ।।

आत्मयोडनः स्वयंजातो वैखानः सामगायनः ।
देवकीनन्दनः स्रष्टा डितिीः पापनिानः ।।११९ ।।

खिभृन्नन्दकी िक्री िांगथधन्वा गदाधरः ।
रर्ांगपाडिरिोभ्यः सवथप्रहरियुधः ।।१२० ।।

।। सवथप्रहरियुध ॐ नम इडत ।।

वनमाली गदी िांगी िंखी िक्री ि नन्दकी।
श्रीमान्नारायिो डवष्णुवाथसुदेवोऽडभरितु ।।

।। श्री वासुदेवोऽडभरित्वों ंनम इडत ।।

इतीदं कीतथनीयस्य केिवस्य महात्मनः ।
नाम्नां सहस्रं डदव्यानामिेषि प्रकीडतथतम् ।।१२१ ।।

य इदं शिुयाडन्नत्यं यश्चाडप पररकीतथयेत् ।
निुभं प्रापुनुयास्त्ंकडित्सोऽमुत्रेह ि मानवः ।।१२२ ।।

वेदान्तगो ब्राह्मिः स्यात्क्षडत्रयो डवजयी भवेत् ।
वैश्यो धनसमृद्धः स्यिूद्रः सुखमवापुनुयात् ।।१२३ ।।

धमाथर्ी प्रापुनुयाद्धमथमराथर्ी िार्थमापुनुयात् ।
कामानवापुनुयात्कामी प्रजार्ी िापुनुयात्प्रजाम् ।।१२४ ।।

भस्तक्तमान्यः सदोत्थाय ुिडिस्तद्गतमानसः ।
सहस्रं वासुदेवस्य नाम्नामेतत्प्रकीतथयेत् ।।१२५ ।।

यिः प्राप्नोडत डवपुलं याडतप्राधान्यमेव ि ।
अिलां डश्रयमाप्नोडत शे्रयः प्राप्नोत्यनुत्तमम् ।।१२६ ।।

न भयं क्वडिदाप्नोडत वीयथ तेजश्च डवन्दडत ।
भवत्यरोगो द्युडतमानबलरूपगुिास्तन्वतः ।।१२७ ।।

रोगातों मुच्यते रोगिाद्धो मुचे्येत बन्धनात् ।
भयानुमुचे्येत भीतसुतु मुचे्येतापन्न आपदः ।।१२८ ।।

दुगाथण्यडततरत्यिु पुरुषः पुरुषोत्तमम् ।
सुतुवन्नामसहस्रे डनतं्यं भस्तक्तसमस्तन्वतः ।।१२९ ।।

वासुदेवाश्रयो वासुदेवपरायिः ।
सवथपापडविुद्धात्मा याडत ब्र्ह्म सनातनम् ।।१३० ।।

न वासुदेवभक्तानामिुभं डवद्यते क्वडित् ।
जन्ममृतुयुजराव्याडधभयं नैवोपजायते ।।१३१।।

इमं स्तवमधीयानः श्रद्धाभस्तक्तसमस्तन्वतः ।
युजे्येतात्मसुखिास्तन्तश्रीधृडतसृमृडतकीडतथडभः ।।१३२ ।।

न क्रोधो न ि मात्सयं न लोभो निुभा मडतः ।
भवस्तन्त कृतपुण्यानां भक्तानां पुरुषोत्तमे ।।१३३ ।।

द्यौः सिन्द्राकथनित्रा खं डदिो भूमथहोदडधः ।
वासुदेवस्य वीयि डवधृताडन महात्मनः ।।१३४।।

ससुरासुरगन्धवथ सयिोरगरिासम् ।
जगिि वतथतेदं कृष्णस्य सिरिारम् ।।१३५ ।।

इस्तन्द्रयाडि मनो बुस्तद्धः सत्तं्वं तेजो बलं धृडतः ।
वासुदेवात्मकान्याहुः ित्र ित्रज्ञ एव ि ।।१३६ ।।

सवाथगमानामिाारः प्रमं पररकल्पते ।
आिारप्रभवो धमो धमथस्य प्रभुरचुयुतः ।।१३७ ।।

ऋषयः डपतरो देवा महाभूताडन धातवः ।
जंगमाजंगमं ि दं जगन्नारायिोद्भवम् ।।१३८ ।।

योगो ज्ञानं तरा सांखं्यं डवद्याः डिल्पाडद कमथ ि ।
वेदाः िास्त्राडि डवज्ञानमेतत्सवं जनादथनात् ।।१३९ ।।

एको डवषुणुमथहद्भुतं पृर्गूभूतान्यनेकिः ।
त्रिीकानव्याप्य भूतात्मा भुङ्क्के्ते डवश्वभुगव्ययः ।।१४०।।

इमं स्तवं भगवतो डवष्णोव्याथसेन कीडतथतम् ।
पठेद्य इितुपुरुषः शे्रयः प्रापुंतुं सुखाडन ि ।।१४१ ।।

डवशे्वेश्वरमजं देवं जगतः प्रभवाप्ययम् ।

भजस्तन्त ये पुष्करिां न ते यास्तन्त पराभवम् ।।१४२।।

।। न ते यास्तन्त पराभव ॐ नम इडत ।।

अजुथन उवाि

पद्मपत्रडविालि पद्मनाभ सुरोत्तम ।
भक्तानामनुरक्तानां त्राता भव जनादथन ।।१ ।।

श्रीभगवानुवाि
यो मां नामसहस्रेरि स्तोतुडमिडत पाण्डव ।
सोऽहमेकेन श्लोकेन सुतुत एव न संयिः ।।२।।

।। सुतुत एव न संयि ॐ नम इडत ।।

व्यास उवाि

वासनिासुदेवस्य वाडसतं भुवनत्रयम् ।
सवथभूतडनवासोऽडस वासुदेव नमोऽसुतु ते ।।३

।। श्री वासुदेव नमोऽसुतु त ॐ नम इडत ।।

पावथतुयुवाि
केनोपायेन लघुना डवष्णोनाथमसहस्रकम् ।
पठ्यते पस्तण्डतैडनथतं्यं श्रोतुडमिाम्यहं प्रभो ।।४।।

ईश्वर उवाि
श्रीराम राम रामेडत रमे रामे मनोरमे ।
सहस्रनामततुतुलं्यं रामनाम वरानने ।।५ ।।
।। श्रीरामनाम वरानन ॐ नम इडत ।।

ब्रह्मोवाि
नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूतथये
सहस्रपादाडिडिरोरुबाहवे ।
सहस्रनामे्ने पुरुषाय ाश्वते
सहस्रकोडटयुगधाररे नमः ।।६ ।।

।। सहस्रकोडटयुगधाररे नम ॐ नम इडत ।।

संजय उवाि
यन्त्र योगेश्वरः कृष्णोयत्रपारे्धनुधथरः ।
तन्त्र श्रीडवथजयो भूडतधुरुवानीडतमथडतमथम ।।७ ।।

श्रीभगवानुवि

अनन्याडश्चन्तयन्तो मां ये जनाः पयुथपासते ।
तेषां डनत्याडभयुक्तानांयोगिेमंवहाम्यहम्‌॥८।।
पररत्रिााय साधूनांडवनिाायिदुषृकृताम्‌।
धमथसंस्र्ापनार्ाथय सम्भवाडम युगे युगे ।।९।।

आताथ डवषण्णाः डिडर्लाश्च भीताः
घोरेषु ि व्याडधषु वतथमानाः ।
संकीत्यथ नारायिब्दमात्रं
डवमुक्तदुःखाः सुस्तखनो भवनुतु ।।१० ।।

ॐ

आपदामपहताथरं दातारं सवथसम्पदाम्‌ ।
लोकाडभरामं श्रीरामंभूयोभूयोनमाम्यहम्‌।।१।।

आताथनामाडतथहन्तारं भीतानां भीडतनिानम्‌ ।
डिषतां कालदण्ंडतंरामिन्द्रनमाम्यहम्‌।।२।।

अग्रतः पृष्ठतश्चैवपार्श्वथतश्चमहाबलौ।
आकिथपूिथधन्वानौ रितां रामलक्ष्मी ।।३।।

सन्नद्धः कवीखि्गिीापबाधरोयुवा।
गिन्‌ ममाग्रतोडनत्ंयरामःपातुसलक्ष्मिः।।४।।

नमः कोदण्डहस्तायसन्धीकृतिरायि।
खस्तण्डतास्तखलदैत्याय रामायापडन्नवाररि ।।५ ।।

रामाय रामभद्रायरामिन्द्रायवेधसे।
रघुनार्ाय नार्ाय सीतायाःपतयेनमः।।६।।

अचुयुतानन्तगोडवन्दनामोच्चारिभेषजात्‌ ।
नश्यस्तन्त सकला रोगाः सत्ंयसत्ंयंवदाम्यहम्‌।।७।।

अचुयुतानन्त गोडवन्दडवष्णोनारायिामृत।
रोगान्मे नाियिोषान्िुधन्वन्तरेहरे।।८।।

यज्ेञिाचुयुत गोडवन्दमाधवानन्तकिव।
कृष्ण डवष्णो हृषीकिवासुदेवनमोऽसुतुते।।९।।

श्रीकृष्ण डवष्णोनृहरे
प्रद्युम्न संकषथिवासुदेव।
अजाडनरुद्धामल डवश्वरूप

त्वं पाडह नः सवथभयादजस्रम् ।।१० ।।

आलोड्य सवथिास्त्राडि डवियथ ि पुनः पुनः ।
इदमेकं सुडनष्पन्नं ध्येयो नारायिो हररः ।।११ ।।

यदिरपदभ्रष्टं मात्राहीनं तु यद्भवेत् ।
तत्सवं ि्म्यतां देव नारायि नमोऽसुतु ते ।।१२।।

कायेन विाा मनसेस्तन्द्रयैवाथ
बुद्धयाऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात् ।
करोडम यद्यत् सकलं परस्मै
नारायियेडत समपथयाडम ।।१३ ।। ।।
ॐ तत् सत् ।।

८. सूयथ-सुतुशतुः

श्लोक

सूयथ सुन्दरलोकनार्ममृतंवेदान्तसारं डिवं
ज्ञानं ब्र्ह्ममयं सुरिममलंलोकैकडित्तं स्वयम्।
इन्द्राडदत्यनराडधपंसुरगुरुं त्रैलोक्यिामडिं
ब्र्ह्माडवषुणुडिवस्वरूपहृदयंवन्देसदा भास्करम् ।।१।।

आडददेव नमसुतुभ्यंप्रसीदमम भास्कर।
डदवाकर नमसुतुभ्यं प्रभाकरनमोऽसुतु ते ।।२।।

मैं सदा सूयथ भगवान् की वन्दना करता हाँ, जो सुन्दर लोकनार् हैं; जो वेदान्त के सार और मंगलकारी तरा स्वतन्त्र ज्ञान-स्वरूप एवं ब्रह्ममय अशप ि देवताओं ंके अशधपशत हैं; जो शनत्य ुद्धि हैं; जो जगत् के सत्य ैतन्य है; जो इन्द्र, नर और सुरों ंके अशधपशत और गुरु हैं; जो तीनों ंलोकों ंके ि्ामशण हैं; जो ब्रह्मा, शवषुणु और शिव के हृदय-स्वरूप और जीवन-दान देने वाले हैं।।१

हे आशद देव भास्कर! आपको प्रणाम है, आप मुझ पर प्रसन्न हों।ं हे शदवाकर! आपको नमस्कार है; हे प्रभाकर! आपको प्रणाम है ।।२

९. शवषुणु-स्तोत्रम्

श्लोक

न्तिाकारं भुजगियनंपद्मनाभं सुरिं
डवश्वाधारं गननसदृिंमेघविथ ुिभांगम्।
लक्ष्ीकान्तं कमलनयनंयोडगडभध्याथनगम्यं
वन्दे डवषुंणुं भवभयहरंसवथलोकैकनार्म् ।।१

मेघश्यामंपीतकौियवासं
श्रीवत्सांकं कौसुतुभोद्भाडसतांगम् ।
पुण्योपेतंपुण्डरीकायतिा
डवषुंणुं वन्देसवथलोकैकनार्म् ।।२

मैं शवषुणु की वन्दना करता हाँ, जो िान्ताकार हैं, जो िेषनाग पर ियन करते हैं, शजनकी नाशभ से ब्रह्मा की उत्पशत्त हुई; जो देवताओं ंके अशधष्ठाता और शवश्व के कताथ तर्ा आकाि के समान सवथव्यापक हैं, शजनका रंग बादलों ंके सुन्दर रंग से शमलता है; शजनका िरीर मनोमुग्धकारी है; जो लक्ष्मीपशत हैं; शजनके नेत्र कमल के समान है; जो योशगयों ंको ध्यान द्वारा शमलते हैं; जो जन्म-मरण के िक्र को छुिाने वाले और सभी लोकों ंके स्वामी हैं ।।१

मैं शवषुणु की वन्दना करता हाँ, मेघ के समान शजनका श्याम वणथ है; जो पीताम्बर धारण करने वाले हैं; शजनके श्रीवत्स का शिह्न है; जो कौसुतुभ-मशण से िोभायमान हैं, कमल के समान नेत्र वाले हैं, पुण्यिा हैं तर्ा सब लोकों ंके एकमात्र स्वामी हैं ।॥२

१०. िात्मन्त-मन्त्र

ॐ िं नो डमत्रः िं वरुिः । िं नो भवत्वयथमा । िं न इन्द्रो बृहस्पडतः । िं नो डवषुणुरुरुक्रमः । नमो ब्रह्मिे । नमस्ते वायो । त्वमेव प्रत्यिं ब्रह्मडस । त्वामेव प्रत्यिं ब्रह्म वडदष्यडम । ऋतं वडदष्यडम । सत्यं वडदष्यडम । तन्मामवतु । तिक्तारमवतु । अवतु माम् । अवतु वक्तारम् ।। ॐ िान्तः िान्तः िान्तः ।।१।।

(कृष्णयजुवेद : तैशत्तरीयोपशनषद्)

शमत्र, वरुण और अयथमा हमारे शलए कल्याणप्रद हों।ं इन्द्र, बृहस्पशत तर्ा शविाल िगों ंवाले शवषुणु हमारे शलए कल्याणकारी हों।ं ब्रह्म के शलए नमस्कार है। है वायुदेव ! तुम्हें नमस्कार है। तुम्हीं ं प्रत्यक्ष ब्रह्म हो। मैं तुमको ही प्रत्यक्ष ब्रह्म के नाम से पुकारूँगा । मैं तुम्हें ऋत नाम से और सत्य नाम से पुकारूँगा। वह ब्रह्म मेरी और मेरे आिायथ की रक्षा करे। वह मेरी और वक्ता (आिायथ) की रक्षा करे। ॐ िात्मन्तुः िात्मन्तुः िात्मन्तुः ।

ॐ सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु । सह वीयथ करवावहै। तेजस्तस्व नावधीतमस्तु । मा डवडिषावहै ।। ॐ िान्तः िान्तः िान्तः ।।२।।

(कृष्णयजुवेद : कठोपशनषद्)

वह (परमिान्) हम दोनों ं(गुरु-शिष्य) की सार्-सार् रक्षा करे। वह हम दोनों ंको सार्-सार् ही मोक्ष का आनन्द उपभोग कराये। हम दोनों ंशुरुशत का तात्पयथ जानने के शलए एक-सार् ही पुरुषार्थ करें। हम दोनों ंकी अध्ययन की हुई शवद्या तेजोमयी हो। हम दोनों ंपरस्पर कभी द्वेष न करें। ॐ ािात्मन्तुः ािात्मन्तुः ािात्मन्तुः ।

ॐ यश्छन्दसामृषभो डवश्वरूपः । छन्दोभ्योऽध्यमृतात्सम्बभूव । स मेन्द्रो मेधया सृपिोतु । अमृतस्य देवधारिो भूयासम् । िरीरं मे डविषथिम्। डजह्वा मे मधुमत्तमा । किाथभ्यां भूरर डवशुरुवम् । ब्ह्मिः किोऽडस मेधयाऽडपडहतः । शुरुतं मे गोपाय ।। ॐ ाि्स्तन्तः ाि्स्तन्तः ाि्स्तन्तः ।।३।।

(स्वरूपबोध उपशनषद् तर्ा तैशत्तरीयोपशनषद् वल्ली १, अनुवाक ४)

जो वेदों ंमें सवथश्रेष्ठ है, सवथरूप है तर्ा अमृतस्वरूप वेदों ंसे प्रधान रूप में प्रकट हुआ है, वह इन्द्र (परमेश्वर) मुझे धारणायुक्त बुत्मद्ध से सम्पन्न करे। मैं अमृत को धारण करने वाला बन जाऊाँ। मेरा िरीर (ब्रह्म का मनन और शनशदध्यासन करने के शलए) सवथर्ा रोगरशहत तर्ा शविेष फुरतीला रहे। मेरी शजह्वा सदा-सवथदा के शलए अशतिय मधुमती हो जाय। हे देव! मैं अपने दोनों ं कानों ंद्वारा अशधक सुनता रहाँ। हे प्रणव, तू लौशकक बुत्मद्ध से ढकी हुई परमिाा की शनशध है। तू मेरे सुने हुए उपदि की रक्षा कर अर्ाथत् ऐसी कृपा कर शक वे मुझे कभी शवस्मरण न हों।ं ॐ ात्मिन्तुः ाि्मन्त ाि्मन्त ।

ॐ अहं वृिस्य रेररव । कीडतथः पृष्ंठं डगरेररव । ऊध्वथपडवत्रो वाडजनीव स्वमृतमस्तस्म । द्रडविं सविथसम्। सुमेधा अमृतोऽडितः । इडत डत्रिंकोवेदानुविनम् ।। ॐ ाि्स्तन्तः ाि्स्तन्तः ाि्स्तन्तः ।।४।।

(ब्रह्मानुभव उपशनषद् तर्ा तैशत्तरीयोपशनषद् वल्ली १, अनुवाक १०)

मैं ससार-वृक्ष का उच्छेद करने वाला हाँ। मेरी कीशतथ पवथत के शिखर के समान उन्नत एवं शविाल है। सूयथ में जैसे उत्तम अमृत है, वैसे ही मैं भी अशतिय पशवत्र शविुद्ध अमृतस्वरूप हाँ। मैं परम धन का भण्डार, प्रज्योशतत ज्ञानी, अमर और अशवनश्वर हाँ। यह शत्रिंकु ऋशष का ज्ञान-प्रात्मप्त के बाद व्यक्त शकया हुआ वैशदक प्रविन है। ॐ ाि्मन्तुः ाि्मन्तुः ाि्मन्तुः ।

ॐ पिूथमदः पिूथडमदं पिाूथत्पिूथमुदच्यते । पिूथस्य पिूथमादाय पिूथमेवावडिष्यते ।। ॐ ाि्स्तन्तः ाि्स्तन्तः ाि्स्तन्तः ।।५।।

(ुक्ल यजुवेद ईिावायोपशनषद्)

वह (परब्रह्म) पूणथ है और यह (कायथब्रह्म) भी पूणथ है, क्योंशक पूणथ से पूणथ की ही उत्पशत्त होती है। उस पूणथ में से पूणथ शनकाल लेने पर भी वह पूणथ ही बिा रहता है। ॐ ाि्मन्तुः ाि्मन्तुः ात्मिन्तुः ।

ॐ आप्यायन्तु ममांगाडन वाक् प्रिाश्रिुः श्रोत्रमर्ो बलडमस्तन्द्रयाडि ि सवाथडि। सवथ ब्ह्मौपडनषदं माहं ब्ह्म डनराकुयाथ मा मा ब्ह्म डनराकरोदडनराकरिमस्त्वडनराकरिं मे असुतु ।

तदात्मडन डनरते य उपडनषतुसु धमाथसे्ते मडय सनुतु ते मडय सनुतु ।। ॐ ाि्स्तन्तः ाि्स्तन्तः ाि्स्तन्तः ।।६।।

(सामवेद केनोपशनषद्)

मेरे अंग, वाक्, प्राण, ाि्कुषु, श्रोत्र, बल और समूपूणथ इत्मन्द्रयाँ पुष्ट हों।ं यह सब उपशनषद् प्रशतपाशदत ब्रह्म है। मैं ब्रह्म को कभी अस्वीकार न करूँ। ब्रह्म मेरा कभी पररत्याग न करे। इस प्रकार हमारा परस्पर का शनत्य सम्बन्ध अटूट बना रहे। आाि में शनरन्तर शनरत मुझमें उपशनषदों ंमें प्रशतपाशदत धमथ शनत्य बने रहें, मुझमें शनत्य-शनरन्तर बने रहें। ॐ ाि्त्मन्तुः ाि्त्मन्तुः ाि्त्मन्तुः ।

ॐ वाङ्क् मे मनडस प्रडतडष्ठता । मनो मे वाडि प्रडतडष्ठतम्। आडवरावीमथ एडध । वेदस्य म आणीस्ः । शुरुतं मे मा प्रहासीरनेनाधीतेनाहोरात्रान्संदधामूयूतं वडदष्यामडम । सत्ंयं वडदष्यामडम । तन्मामवतु । तित्कारमवतु । अवतु माम् । अवतु वक्तारम् । अवतु वक्तारम् ।। ॐ ाि्स्तन्तः ास्तिन्तः ाि्स्तन्तः ।।७।।

(ऋगे्वेद : ऐतरेयोपशनषद्)

मेरी वाक्-इत्मन्द्रय मन में त्मस्त हो जाय। मेरा मन वाक्-इत्मन्द्रय में त्मस्त हो जाय। ब्रह्म मेरे शलए प्रकट हो जाय। हे मन और वाणी! तुम दोनों ंमेरे शलए ज्ञान की प्रात्मप्त कराने बाले बनो। सुना हुआ ज्ञान मुझे त्याग न करे-उसे मैं कभी न भूलूँ। मैं रात-शदन शनरन्तर ब्रह्म-शवद्या का पठन और शिन्तन ही करता रहाँ। मैं अपनी वाणी से सदा ऋत (शे्रेष्ठ विन) ही उच्चारण करूँगा, सवथरा् सत्य ही बोलूँगा। वह (ब्रह्म) मेरी रक्षा करे। वह (ब्रह्म) मेरे आाियथ की रक्षा करे। वह (ब्रह्म) मेरी और मेरे आाियथ की रक्षा करे। मेरे आाियथ की रक्षा करे। आशधभौशतक, आशधदैशवक और आध्यात्मिक शत्रशवध तापों ंकी ाि्त्मन्त हो ।

ॐ भद्ं रं नोअडपवातय मनः ।। ॐ ाि्स्तन्तः ाि्स्तन्तः ाि्स्तन्तः ।।८ ।।

(ब्रह्मरहयोपशनषद्)

हे परब्रह्म ! नमस्कार । मेरा मन और ये (ाि्रीर, इत्मन्द्रय, प्राणाशद) सौम्य, सुष्ठ और स्वस्् बने रहें। ॐ ाि्त्मन्तुः ाि्त्मन्तुः ाि्त्मन्तुः।

ॐ भद्ं रं किेडभः शिुयाम देवा भद्ं रं पशे्येमिाडभयथजत्राः । स्तस्रैरंगैसुतुष्टुवांसस्तनूडभव्यथिेम देवडहतं यदायुः । स्वस्तस्त न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तस्त नः पूषा डवश्ववेदाः । स्वस्तस्त नस्ताक्ष्यों ं अररष्टनेडमः स्वस्तस्त नो बृहस्पडतदथधातु ।। ॐ ाि्स्तन्तः ाि्स्तन्तः ाि्स्तन्तः ।।९।।

(अर्वथवेदः प्रश्नोपशनषद्)

हे पूजनीय देवगण ! हम कानों ंसे कल्याणमय विन ही सुनें। नेत्रों ंसे भी हम सदा ाि्ुभ का ही दिथन करें। हम तुम्हारा स्तवन करते रहें और सुदृढ़ एवं सुपुष्ट अंग एवं ाि्रीर से तुम्हारे (देवताओं ंके) शलए शहतकर आयु का भोग करें। सब ओर फैले सुयि वाले इन्द्र, सवथज्ञ पूषा, अररष्टशनवारक ताथ्यथ (गरि़) और बुत्मद्ध के स्वामी बृहस्पशत सदा हमारे शलए कल्याण का पोषण करें। ॐ ाि्त्मन्तुः ाि्त्मन्तुः ाि्त्मन्तुः ।

ॐ यो ब्रह्मिं डवदधाडत पूवं । यो वै वेदांश्च प्रडहिोडत तस्मै । तं ह देवमात्मबुस्तद्धप्रकिंमुमुिुवं ाि्रिमहं प्रपदे्ये ।। ॐ ाि्स्तन्तः ाि्स्तन्तः ाि्स्तन्तः ।।१०।।

(योगसार उपशनषद्)

जो परमेश्वर आशद में ब्रह्मा की सृशष्ट करते हैं, शजन्होंनें उसको वेद प्रदान शकये और जो आिा तर्ा बुत्मद्ध के प्रकिाक हैं, मैं मुमुकुषु उन परम देव की िरण ग्रहण करता हाँ। ॐ िात्मन्तुः ात्मिन्तुः िात्मन्तुः ।

हररः ॐ अडनमीले पुरोडहतं । यज्ञस्य देवमृस्तत्वजम् । होतारं रत्नधातमम् ।।

(ऋग्वेदसंशहता)

मैं (देवताओं ंमें) पुरोशहत (रूप से वतथमान), पूजा-कमथ के देने वाले, ऋत्मत्वक् (ऋतु में देवताओं ंको पूजने वाले), होता (देवताओं ंको बुलाने वाले), रमणीय धनों ंके सबसे अशधक देने वाले अशि की सुतुशत करता हाँ।

हररः ॐ इपे त्वोजेत्वा । वायव स्तो पायवस्ः देवो वस्सडवता प्रापथयतु । श्रेष्ठतमाय कमथि आप्यायध्वम्। अघ्न्या देवभागम्। ऊजथस्वती पयस्वती ।।

(कृष्णयजुवेदसंशहता)

सशवता (जगत् की उत्पशत्त करने वाला परमिा) हमारी प्राणाशद इत्मन्द्रयों ंको अतुयुत्तम करने योग्य कमथ में भली प्रकार शनयोशजत करे। हम लोग अन्नाशद श्रेष्ठ पदार्थ तर्ा पौरुष की प्रात्मप्त के शलए सेवा करने योग्य आपका आश्रय ग्रहण करते हैं। देवताओं ंके भाग की वृत्मद्ध और पोषण शनत्य होता रहे।

हररः ॐ इषे त्वोजे त्वा । वायव स् देवो वः सडवता प्रापथयतु । श्रेष्ठतमाय कमथि आप्यायध्वम् । अघ्न्या इन्द्राय भागं । प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्ा । मा वस्तेन ईति माघिंसः । ध्रुवा अस्तस्मन् गोपतो स्यात। बहूवीयथजमानस्य पून्याडह ।।

(ुक्लयजुवेदसंशहता)

सशवता (परमिा) हमारे इत्मन्द्रय, मन तर्ा प्राणाशद को श्रेष्ठ कतथव्य कमथ में सम्यक् प्रकार से संयुक्त करे। हम लोग अन्न इत्याशद उत्तम पदार्थ तर्ा पराक्रम की प्रात्मप्त के शलए उसका आश्रय लेते हैं। हे शमत्र लोग। तुम भी ऐसा हो कर उन्नशत को प्राप्त हो तर्ा हम भी हों।ं हे भगवन्! परमैश्वयथ की प्रात्मप्त के शलए हम बहुत सन्तान वाले हों ंऔर व्याशध तर्ा यक्ष्माशद रोग से रशहत गौ आशद पिु हमें सदैव प्राप्त हों।ं हम लोगों ंमें पापी तर्ा ोरि–ाकू न उत्पन्न हों।ं इस पिु के स्वामी यजमान के पास बहुत से उक्त पदार्थ शनश्चल सुख के हेतु हों ंतर्ा आप इसके गौ, घिो आशद पिु तर्ा इसकी लक्ष्मी और प्रजा (सन्तान) की रक्षा करें।

हररः ॐ अग्न आयाडह वीतये। गृिानो हव्यदायते। डन होता सस्तत्स बडहथडष ।।

(सामवेदसंशहता)

हे अशग्नदेव! हशव को भक्षण करने के शनशमत्त हमारे द्वारा देवताओं ंको हशव पहुँाने के शनशमत्त होता (उनको बुलाने बाले) शवराशजए। सुतुशत शकये हुए आप आइए और बन कर शबछे हुए कुिासन पर

हरः ॐ ि नो देवीरडभष्टय, आपो भवनुतु पीतये । ि योरडभस्रवनुतु नः । हरः ॐ।।

(अर्वथवेदसंशहता)

हे (शवद्या) देवी ! मेरे पीजानेके शलएतूजल बन जा तरा रोग-पापनिाक, भयशनवतथक होकर हमारे ऊपर तेज , वीयथऔरसुखकीवषाथकर।

११. पुरुषसूक्तम्

ॐ सहस्रीषाथ पुरुषुः । सहस्राक्षुः सहस्रपात्। स भूशमं शवश्वतो वृत्वा । अत्यशतष्ठद्दांगुलम् ।
पुरुष एवेदं सवथम् । यद्भूतं यच्च भव्यम् । उतामृतत्वयोनुः । यदन्नेनाशतरोहशत । एतावानय मशहमा। अतो ज्यायांश्च पूरुषुः । पादोऽय शवश्वा भूताशन । शत्रपादयामृतं शदशव । शत्रपादूध्वथ उदैतुपुरुषुः ।
पादो ऽयेहाभवातुपुनुः । ततो शवष्वङ्व्यक्रामत् । सोनानिने अशभ । तस्माशद्वरिाजायत । शवराजो अशध पूरुषुः । स जातो अत्यररच्यत। पश्चाद्भूशममरो पुरुः । यतुपुरुषेण हशवषा । देवा यज्ञमतन्वत ।
वसन्तो अयासीदाज्यम् । ग्रीष्म इध्मुः ि◌रद्धशवुः । सप्तायासन् पररधयुः । शत्रुः सप्त सशमधुः कृतुः ।
देवा यद्यज्ञं तन्वानुः । अबध्नन्पुरुषं पिुम् । तं यज्ञं बशहथशष प्रौक्षन् । पुरुषं जातमग्रतुः तेन देवा अयजन्त । साध्या ऋषयश्च ये । तस्माद्यज्ञात्सवथहुतुः । संभृतं पृषदाज्यम् । पिू स्तांश्चक्रे वायव्यान् ।
आरण्यान् ग्राम्याश्च ये। तस्माद्यज्ञात्सवथहुतुः । ऋिुः सामाशन जशज्ञरे । छन्दांशस जशज्ञरे तस्मात् ।
यजुस्तस्मादजायत । तस्मादश्वा अजायन्त । ये के ि◌ोभयादतुः । गावो ह जशज्ञरे तस्मात् । तस्माज्जाता अजावयुः । यतुपुरुषं व्यदधुः । कशतधा व्यकल्पयन् । मुखं शकमय कौ बाह। कावूरू पादावुच्येते ।
ब्राह्मणोऽय मुखमासीत् । वाह राजन्युः कृतुः । ऊरू तदय यदै्वश्युः । पद्भ्यां ि◌ूो अजायत ।
न्द्रिमा मनसो जातुः । ि◌क्षोुः सूयो अजायत। मुखाशदन्द्रश्चाशिश्च । प्राणाद्वायुरजायत । नाभ्या आसीदन्तररक्षं। ि◌ीष्णों ◌ंद्यौुः समवतथत । पद्भ्यां भूशमशदथिुः श्रोत्रात्। तरा लोकानकल्पयन् । वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम् । आशदत्यवणिं तमससुतु पारे । सवाथशण रूपाशण शवशिन्त्य धीरुः । नामाशन कृत्वाऽशभवदन् यदासेते। धाता पुरस्ताद्यमुदाजहार । ि◌क्रुः प्रशवद्वान् प्रशदिश्चतसुः । तमेवं शवद्वानमृतं इह भवशत । नान्युः पन्था अयनाय शवद्यते । यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाुः। ताशन धमाथशण प्रमान्यासन् । ते ह नाकं मशहमानुः सिनेते । यन्त्र पूवथ साध्याुः सत्मन्त देवाुः ।।

अद्भ्युः समूभूतुः पृशर्व्ैयै रसाच्च । शवश्वकमथणुः समवतथताशध । तय त्वष्टा शवदधिूपमेशत ।
ततुपुरुषय शवश्वमाजानमग्रे । वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्। आशदत्यवणथ तमसुः परस्तात् । तमेवं शवद्वानमृत इह भवशत । नान्युः पन्था शवद्यतेऽयनाय । प्रजापशतश्चरशत गभे अन्तुः । अजायमानो बहुधा शवजायते ।।

तय धीराुः पररजानत्मन्त योशनम् । मरीिीनां पशद्मच्छत्मन्त वेधसुः । योग देवेभ्य आतपशत । यो देवानां पुरोशहतुः। पूवो यो देवेभ्यो जातुः । नमो रुिाय ब्राह्मये । रुिं ब्राह्म जनयन्तुः । देवा अग्रे तदब्रुरुवन्। यसै्त्वैवं ब्राह्मणो शवद्यात् । तय देवा असन् वि। ह्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यौ । अहोरात्रे पावें । नक्षत्राशण रूपम्। अशश्वनी व्यात्तम् । इष्टं मशनषाण । अमुं मशनषाण । सविं मशनषाण ।।

१२. नारायणसूक्तम्

सहस्रीषथ देवं डवश्विां डवश्विमुभुवम् ।
डवशं्वं नारायिं देवमिरं परमं पदम् ।।

डवश्वतः परमाडन्नत्यं डवशं्वं नारायिं हररम् ।
डवश्वमेवेदं पुरुषस्तडिश्वमुपजीवडत ।।

पडतं डवश्वस्यात्रेमेश्वरं ाश्वतं डिवमचुयुतम् ।
नारायिं महाज्ेञेयं डवश्वात्मानं परायिम् ।।

नारायिपरो ज्योडतरात्मा नारायिः परः ।
नारायिपरं ब्र्ह्म तत्त्वं नारायिः परः ।
नारायिपरो ध्याता ध्यानं नारायिः परः ।।

यच्च डकंडिजगत्सवं दृश्यते शूरूयतेऽडप वा।
अन्तबथडहश्च तत्सवं व्याप्य नारायिः स्तस्तः ।।

अनन्तमव्ययं कडवं समुद्रेऽन्तं डवश्विमुभुवम् ।
पद्मकोप्रतीकिां हृदयं ाप्यधोमुखम् ।।

अधो डनष्ट्या डवतस्त्यान्ते नाभ्यामुपरर डतष्ठडत ।
ज्वालमालाकुलं भाडत डवश्वस्यायतनं महत् ।।
सन्ततं डिलाडभसुतु लम्बत्याकोसडन्नभम् ।
तस्यान्ते सुडषरं सूक्ंष्ं तस्तस्मन्सवं प्रडतडष्ठतम् ।।

तस्य मध्ये महानडग्नडवथश्वाडिथडवथश्वतोमुखः ।
सोऽग्रभुस्तग्वभजस्तन्तष्ठन्नाहारमजरः कडवः ।।

डतयथगूध्वथमधिायी रश्मयस्तस्य सन्तता ।
सन्तापयडत सं्वं देहमापादतलमस्तगः ।
तस्य मध्ये वडिडिखा अीयोध्वाथ व्यवस्तस्तः ।।

नीलतोयदमध्यस्ा डवद्युिेखेव भास्वरा।
नीवारिूकवत्तन्वी पीता भास्वत्यिूपमा ।।

तस्याः डिखाया मध्ये परमात्मा व्यवस्तस्तः ।
स ब्र्ह्मा स डिवः स हररः सेन्द्रः सोऽरिः परमः स्वराट् ।।

ऋतं सत्यं परं ब्र्ह्म पुरुषं कृष्णडपंगलम्।
ऊध्वरेतं डवरूपिां डवश्वरूपाय वै नमो नमः ।।

नारायिाय डवद्महे वासुदेवाय धीमडहः।
तन्नो डवष्णुः प्रिोदयात् ।।

शवष्णोनुथकं वीयाथशण प्रर्वि यु: पाशर्थवाशन शवममे रजांशस यो अस्कभायदुत्तरं सधस्थं शविक्रमाणस्त्रेधोरुगायो शवष्णो रराटमशस शवष्णो: पृष्ठमशस शवष्णो: श्नप्त्रेस्त्रो शवष्णोस्यूरशस शवष्णोधुरुवमशस वैष्णवमशस शवष्णवे त्वा ।। ॐ ात्मन्तु: ात्मन्तु: ात्मन्तु: ।।

१३. खेलशत शपण्डाण्े्डे

(श्री सदाशिवब्रह्मेन्द्रकृतम्)

गीत

खेलडत डपण्डाण्े्डे भगवान्खेलडत डपण्डाण्े्डे ।

हंस: सोऽहं: हंस: सोऽहं हंस: सोऽहंसोऽह-डमडत ।।१ (खेलडत...)

परमात्माहं पररप्पोऽहं ब्र्हैमैवाहंब्र्हैमेडत ।।२ (खेलडत...)

त्वक्ि-शुरुडत-डजह्वा-प्रिो पंडिवध-प्रिोपस्त्राने ।।३ (खेलडत...)

ब्दि-स्पिथ-रसाडदक-मात्रे सास्तत्त्वक-राजस-तामस-डमत्रे ।।४ (खेलडत...)
बुस्तद्ध-मन-डश्चत्ताहंकारे भू-जल-तेजो-गगन-समीरे ।।५ (खेलडत...)

परमहंस-रूपि डवहताथ ब्र्मा-डवषुणु-रुद्राडदक-कताथ ।।६ (खेलडत...)

भगवान् शपण्डाण्ड में (इस व्यशष्ट जगत् में) खेलता है, वह इस जीवि-रीर में खेलता है।

यह कहते हुए मैं वही (परमिाा) हाँ। वही (परमिाा) मैं हाँ, वही मैं हाँ, मैं वही हाँ, वहीं ंमैं हाँ। मैं वही हाँ, वह खेलता है।।१

यह कहते हुए खेलता है, 'मैं परमिाा हाँ, मैं पररपूणथ हाँ, मैं ब्रह्म ही हाँ, ब्रह्म ही हाँ।।२

वह पााँि प्रकार के प्राणों ंके धाम में, िमथ, िकुषु, श्रोत्र, शजह्वा तर्ा नाशसका आशद इत्मन्द्रयों ं के स्र्ान में खेलता है ।।३

वह िब्द, स्पिथ, रस आशद तन्मात्राओं ंमें तर्ा सात्मत्त्वक, राजस तर्ा तामस गुणों ंमें खेलता है ।।४

वह बुत्मद्ध, मन, शित्त, अहंकार में, पृथ्वी, जल, अशि, वायु तर्ा आकाि तत्त्वों ंमें खेलता है ।।५

वह परमहंसों ंके रूप में शवहार करता है। उसने ही ब्रह्मा, शवषुणु तर्ा रुि आशद का सृजन शकया र्ा ।।६

१४. शिन्ता नात्मस्त शकल

(श्री सदाशिवब्रह्मेन्द्रकृतम्)

श्लोक

आकिाव ि-पव-डवदूरगोऽह-
माडदत्यवद्-भास्य-डवल्लिोऽहम् ।
अहायथव-डन्नत्य-डवडनश्चलोऽहं
अम्भोडधवत्-पार-डववडजथतोहम् ।।

मैं आकिा के समान प्रत्येक वसुतु से अशलप्त हाँ। आशदत्य के समान स्वयंप्रकिा हाँ, मुझे शकसी दूसरे प्रकिा की अपेक्षा नहीं ंहै, पवथत के समान सदा शनश्चल अटल हाँ और सागर के समान असीम हाँ, मेरा कोई कूल-शकनारा नहीं ंहै।

गीत

डिन्ता नास्तस्तडकल तेषां,
डिन्ता नास्तस्तडकल ।

मि-दम-करुिा-समूपिाथनाम् ।
साधु-समागम-संकिीाथनाम् ।।१ (डिन्ता नास्तस्त...)

काल-त्रय-डजत-कन्दपाथनाम् ।
खस्तण्डत-सवेस्तन्द्रय-दपाथिम् ।।२ (डिन्ता नास्तस्त...)

परमहंस-गुरु-पद-डित्तानाम् ।
ब्र्ह्मानन्दामृत-मत्तानाम् ।।३ (डिन्ता नास्तस्त...)

उनको कोई शिन्ता नहीं,ं शबलकुल शिन्ता नहीं ंहै।

जो िम, दम और करुणा आशद गुणों ंसे पररपूणथ हैं और जो साधु-सन्तों ंके समाज से शघरे हुए होते हैं ।।१

शजन्होंनें भूत, भशवष्य और वतथमान- तीनों ंकालों ंमें काम पर शवजय पा ली है तर्ा सभी इत्मन्द्रयों ंके गवथ को ि ूर कर शदया है।।२

शजनका शित्त हमिेा परमहंस गुरुिरणों ंमें लगा रहता है और जो ब्रह्मानन्दरूपी अमृत से मस्त रहते हैं ।।३

उनके शलए शिन्ता नहीं ंहै, शबलकुल शिन्ता नहीं ंहै।

नामावली

सत्यं ज्ञान-मनन्तं ब्र्ह्म।
डनत्यानन्द-स्वरूपं ब्र्ह्म।।
ब्र्ह्म सत्य, ज्ञान तर्ा अनन्तहै।
ब्र्ह्म का स्वरूप डनत्यानन्दहै।

१५. मानस संरि रे ब्रह्मशण

(श्री सदाशिवब्रह्मेन्द्रकृतम्)

श्लोक

एष स्वयं-ज्योडत-रनन्तत्ि-स्तक्त-
रात्माऽप्रमेयः सकलानुभूडतः ।
य-मेव-डवज्ञाय डवमुक्त-बन्धो
जय-त्ययं ब्र्ह्मडव-दुत्तमोत्तमः ।।

यह स्वयंप्रकि सवोत्तम अिा अनन्त ित्मक्तिाली है। वह शकसी भी प्रमाण से नापा नहीं ं
जा सकता है; परनुतु सबकी अनुभूशत का शवषय है। उसको जान लेने से ब्रह्मज्ञाशनयों ंमें श्रेष्ठ पुरुष जन्म-मरण के सारे बन्धनों ंसे मुक्त हो जाता है।

गीत

मानस संरि से ब्र्ह्मडि,मानस संरि रे ।

श्री रमी-कि-दुगथ-डवहारे
सेवक-जन-मस्तन्दर-मन्दारे ।।१ (मानस...)

मद-डिस्तख-डपिालंकृत-डिकुरे
महनीय-कपोल-डवडजत-मुकुरे ।।२ (मानस...)

परमहंस-मुखत्ि-न्द्रत्ि-कोरे
पररपूररत-मुरली-रवधारे ।।३ (मानस...)

हे मन! उस ब्रह्म में शविरण कर, शविरण कर।

जो श्री लक्ष्मी जी का शप्रय है, भक्तजनों ंकी इच्छाओं ंको पूरा करने में कल्प-वृक्ष के समान है ।।१

शजसके कुन्तल मत्त मयूर के पखों ंसे सुिोशभत हैं और शजसके मनोहर कपोलों ंके आगे दपथण भी हार जाता है ।।२

जोपरमहंस के मुख-रूपी ि◌न्द्रमेंकिोरपक्षी केसमान आनन्द मानता है तर्ा शजसके हार्मेंअनन्तस्वर लहररयों ◌ंसे भरी हुईमुरलीहै।।३

नामावली

भक्तवत्सल गोडवन्द।भागवत-डप्रय गोडवन्द।।
पडतत-पावन गोडवन्द।परम दयालो गोडवन्द।।
नन्द-मुकुन्द गोडवन्द।नवनीत◌ि◌ोर गोडवन्द।।
वि◌ु-डवलोल गोडवन्द।डवजय-गोपाल गोडवन्द।।

१६. तद्वत् जीवत्वं ब्रह्मशण

(श्री सदाशिवब्रह्मेन्द्रकृतम्)

श्लोक

अन्त-ज्योंडंत-बथडह-ज्योडतःप्रत्य-ग्ज्योडतः परात्परः ।
ज्योडत-ज्योंडंतः स्वयं-ज्योडत-रात्म-ज्योडतः डिवोऽस्म्यहम् ।।

मैं वह शिव हाँ जो शक आन्तररक ज्योशत, बाह्य-ज्योशत, आद्य-ज्योशत तर्ा परात्पर-ज्योशत है, जो शक ज्योशतयों ◌ंकी ज्योशत, स्वयं ज्योशत तर्ा अि◌-ज्योशत है।

गीत

तित् जीवत्वं ब्र्ह्मडि,तित् जीवत्वं ।

यित् तोयैन्द्र-डित्वम् ।
यि-नुमुकुरे प्रडतडबम्बत्वम्।।१ (तित्...)

स्र्गि यि-न्नर-रूपत्वम् ।
भानु-करे यित् तोयत्वम् ।।२ (तित्...)

ुक्तौ यित् रजतमयत्वम् ।
रज्जौ यित् फडि-देहत्वम् ।।३ (तित्...)

परमहंस-गुरि◌ अि◌य-डवद्या
भडिता डधकृकृत-माया-डवद्या ।।४ (तित्...)

ब्रह्म में जीवत्व वैसे ही है, जैसे शक जल में ि◌न्द्रमा का प्रशतशबम्ब देख कर दो ि◌न्द्रमा होने काभ्रम होना, अर्वा दपथण में अपनी परछाईं ।।१

अर्वा अन्धकार में वृक्ष के दूँठ को देख कर उसके मनुष्य होने का भ्रम, अर्वा मृग-मरीशिका में जल का भ्रम ।।२

अर्वा सीपी में ाँदी का भ्रम, अर्वा क्षीण प्रकाि में रजुजु में सपथ का भ्रम ।। ३

परमहंस गुरु के द्वारा बतलायी हुई अद्वैत शवद्या माया को दूर कर देती है ।।४

नामावली

अन्त-ज्योडत-बथडह-ज्योडतःप्रत्य-ग्ज्योडतः परात्परः।
ज्योडत-ज्योडतः स्वयं-ज्योडत-रात्म-ज्योडतः डिवोऽस्म्यहम्।।

१७. मज गोशवन्दम्

(श्री ंकरााचयथकृतम्)

श्लोक

नमः परस्मै पुरुषाय भूयसेसदुद्भव-स्थान-डनरोध-लीलया । गृहीतत्रि-स्तक्त-डत्रतयाय देडहना-मन्तभथवायानुपलक्ष्य-वत्मथने ।।

मैं उस परम पुरुष को नमस्कार करता हाँ शजसने जगत् की सृशष्ट की त्मस्थत, पालनतथा शवनाि की लीला के शलए शत्रमूशतथ का रूप धारण कर रखा है तथा जो सभी भूतों ंमें अन्तयाथमीके रूप से आसीन है और शजसकी ाल सबके शलए अज्ञेय है।

गीत

भज गोडवन्दं भज गोडवन्दं,गोडवन्दंभजमूढ-मते।
सम्प्राप्ते सडन्नडहते काले नडह नडहरिडतिुकृञ्-करिे।।१(भज . . .)

का ते कान्ता कस्तेपुत्रःसंसारोऽयमतीवडवडित्रः।
कस्य त्वं वा कुत आयातःतत्त्वंडिन्तययडददंभ्रातः।।२(भज . . .)

सत्संगत्वे डनःसंगत्वेडनःसंगत्वेडनमोहत्वम्।
डनमोहत्वे डनश्चल-डित्तं डनश्चल-डित्तेजीवनुमुस्तक्तः।।३(भज...)

मा कुरु धन-जन-यौवन-गवथहरडतडनमेषात्,कालःसवथम्।
माया-मय-डमदं-मस्तखलं डहत्वा ब्रह्म-पदंत्वंप्रडविडवडदत्वा।।४(भज . . .)

डदन-मडप रजनी सायं-प्रातःडिडिरवसन्तौपुन-रायातः।
कालः क्रीडत गि-त्यायु-स्त-दडपनमुं-त्याा-वायुः।।५(भज . . .)

काते कान्ता धन-गत-डिन्ता वातुल डकं तव नास्तस्त डनयन्ता ।
ि्मडप सज्जन-संगडत-रेका-भवडत भविाथव-तरि नौका ।।६ (भज . . .)

योग-रतो वा भोग रतो वा संग-रतो वा संग-डवहीनः ।
यस्य ब्र्मडि रमते डित्तं नन्दडत नन्दडत नन्द-त्येव ।।७ (भज...)

पुन-रडप जननं पुन-रडप मरिं पुन-रडप जननी-जठरे ियनम् ।
इह संसारे बहु-दुस्तारे कृपयाऽपारे पाडह मुरारे ।।८ (भज...)

रथ्ा-कपथट-डवरडित-कन्थः पुण्यापुण्य-डववडजथत-पन्थः ।
योगी योग-डनयोडजत-डित्तो रमते बालोन्मत्तव-देव ।।९ (भज...)

त्वडय मडय सवथत्रैरैको डवषणु-व्यथर्थ कुप्यडस मय्यसडहषणुः ।
सवथस्तस्म-न्नडप पश्यात्मानं सवथत्रोत्सृज भेदाज्ञानम् ।।१० (भज...)

गेयं गीता-नाम-सहस्रं ध्येयं श्रीपडत-रूप-मजस्रम् ।
नेयं सज्जन-संगे डित्तं देवं दीन-जनाय ि डवत्तम् ।।११ (भज...)

गुरु-रिामुबुज-डनभथर-भक्तः संसारा-दडिराद्-भव मुक्तः ।
सेस्तन्द्रय-मानस-डनयमा-देवं द्रक्ष्यडस डनज-हृदयस्थं देवम् ।।१२ (भज़ . .)

हे मूढ़ नर, गोशवन्द का भजन करो, गोशवन्द की िरण जाओ, गोशवन्द का कीतथन करो। मृतुयुकाल के शनकट आने पर यह व्याकरण-सूत्र (िुकृञ्करणे) तुम्हारी सहायता नहीं ंकरेगा ।।१

तुम्हारी स्त्री कौन है, तुम्हारा पुत्र कौन है? यह संसार ब्रिा ही शवशित्र है, तुम शकसके हो, तुम कहाँ से आये हो? हे भाई! इस तत्त्व का शविार तो करो ।।२

सत्संग के द्वारा अनासत्मक्त की प्रात्मप्त होती है, अनासत्मक्त से मोह का शनवारण होता है, मोह के नष्ट हो जाने पर शित्त िान्त हो जाता है तर्ा शित्त की िात्मन्त से जीवनुमुत्मक्त की प्रात्मप्त हो जाती है ।।३

धन, जन तर्ा यौवन का अशभमान न करो। काल क्षण मात्र में ही इन सबको नष्ट कर लिता है। इन सारे मायामय शवषयों ंका पररत्याग कर ज्ञान के द्वारा ब्रह्मपद को प्राप्त करो ।।४

बारम्बार शदन, राशत्र, सायं, प्रात, शिशिर तर्ा वसन्त का पुनरागमन होता रहता है; काल क्रिा कर रहा है, वायु बीतती जा रही है, शफर भी आिा की शृंखला टूटती नहीं ं।।५

हे पागल नर! कौन तुम्हारी स्त्री है? तुम धन के शलए यह शिन्ता क्यों ंकरते हो? क्या कोई भी व्यत्मक्त तुम्हारा शनयन्ता अर्वा पर्-प्रदिथक नहीं ंहै? एक क्षण के शलए भी सज्जनों ंकी संगशत संसार सागर से पार ले जाने के शलए नौका के समान है।।६

हि मनुष्य योग में रत हो अर्वा भोग में, शकसी के संग में हो अर्वा संग-रशहत, परनुतु शजसका मन ब्रह्म में ही आनन्द लेता है, एकमेव वही वास्तव में बारम्बार आनन्द लेता है ।।७

पुनुः जन्म, पुनुः मृतुयु तरा पुनुः माता के गभथ में पिना। यह संसार बहुत ही दुस्तर है। ईश्वर ही अपनी करुणा से मुझे पार उतारे ।।८

सिक पर पि हुए फटे-पुराने शिर्ट पिहन कर पाप-पुण्य से शववशजथत मागथ का अनुगमन कर योगी गम्भीर ध्यान में मि होता है, शिु के समान अर्वा उन्मत्त मनुष्य के समान आनन्द लूटता है ।।९

तुममें, मुझमें तरा सवथत्र वह एक ही शवषुणु वतथमान है; शफर भी सशहषुणुता से रशहत हो कर तुम व्यर्थ ही क्रोध कर रहे हो। सबमें एक ही आिा के दिथन करो। भेद-भ्रात्मन्त का सवथत्र पररत्याग करो ।।१०

भगवद्गीता तरा शवषुणुसहस्रनाम का गायन करो। लक्ष्मीपशत नारायण पर सतत ध्यान लगाओ। अपने मन को सज्जनों ंकी संगशत में लगाओ। अपने सारे धन को गरीबों ंतरा पीशितों ंको दे ालो ।।११

गुरु के रण कमल में अशविल भत्मक्त के द्वारा तुम अल्प समय में ही संसार से शवमुक्त होजाओगे। इत्मन्द्रयों ंतरा मन के शनग्रह द्वारा तुम अपने हृदय में ही ज्योशत के दिथन करोगे ।।१२

नामावली

गोडवन्द जय जयगोपाल जय जय।
राधा-रमि हरर-गोडवन्द जय जय।।

१८. नमो आशदरूप

(श्री तुकारामकृतम्)

श्लोक

त्वमेव माता ि डपता त्वमेव,त्वमेव बनुधुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव डवद्या द्रडविं त्वमेव,त्वमेव सवं मम देव-देव ।।

हे देवाशधदेव! तू ही मेरी माँ, तू ही मेरा शपता, मेरा बनुधु, शमत्र, शवद्या, धन और सवथस्व है।

गीत

नमो आडदरूपओंकंार-स्वरूप
डवश्वाडिय बापश्रीपाणुडुरंगा ।।१

तुडजया सत्तेने तुरे् गि गाऊँ
तिें सुखी राहूँ सवथ काल ।।२ (नमो...)

तूंडि वक्ता ज्ञानाडस अंजन
सवथ हिों जिों तुर्या हाती ।।३ (नमो...)

तुका म्हि जेरें् नाडहं मी-तू-पि ।
स्तवाव तें किो किो लागी ।।४ (नमो...)

आशदस्वरूप और ओंकार-रूपी हे पाणुडुरंग, हे जगत्मत्पता, मुझे प्रणाम ।।१

हे भगवान्, तेरी कृपा से तेरे गुण गाऊँ और शफर सदा सुखी रहाँ।।२

तू ही वक्ता है और ज्ञान-प्रात्मप्त का अंजन है। जो-कुछ होता है, सब तेरे हार् में है।।३

तुकाराम कहता है शक जब 'मैं-पन' और 'तू-पन' ही समाप्त हो गया तो कौन शकसकी सुतुशत करे ।।४

नामावली

नमो आडदरूपओंकार-स्वरूप।
जय पाणुडुरंगाजयपाणुडुरंगा।।

१९. आशद बीज एकले

(श्री तुकारामकृतम्)

श्लोक

यस्मा-डददं जग-दुदेडत ितुमुथखाद्य
यस्तस्मन्नवस्तस्त-मिष-मिष-मूले ।
यत्रोपयाडत डवलयं ि समस्त-मनेते
दृ-ग्गिोरो भवतु मेऽद्य स दीन-बनुधुः ।।

आशद-काल में शजससे ितुमुथख ब्रह्मा आशद सारी सृशष्ट उशदत होती है, शजस एक मूल में समस्त संसार अवत्मस्त रहता है और अन्त में शजसमें सब-कुछ शवलीन हो जाता है, वह दीनबनुधु आज मेरे दृशष्टगिोर हो!

गीत

आडद बीज एकले
बीज अंकुरलेरोपबाढले।

एक बीजापोटी तरु कोडट कोडट
जन्म घेती सुमनें फलें
कोडट जन्म घेती सुमनें फलें ।।१ (आडद...)

व्यापुडन जगता तूं डह अनन्ता
बहुडवधरूपा घेडस घेडस
परी अन्ती ब्र्ह्म एकले
घेडस परी अन्ती ब्र्ह्म एकले ।।२ (आडद...)

प्रर्मतुः वहाँ केवल एक बीज रा। बीज फूटा, अंकुररत हुआ और पौधा बना। एक बीजके अन्दर करिीों ंपिे, फूल और फल पैदा होते हैं।।१

हे अनन्त, तू ही सारे जग में व्याप्त हो कर अनेकानेक रूप धारण करता है; परनुतु अन्त मेंएकमात्र ब्रह्म ही रहता है ।।२

नामावली

जय हरर डवट्ठलपाणुडुरंगा डवठ्ठल ।
जय हरर डवट्ठलपाणुडुरंगा डवठ्ठल ।
जय हरर डवठ्ठलपाणुडुरंगा डवठ्ठल ।

२०. नशह रे नशह िंका

(श्री सदाशिवब्रह्मेन्द्रकृतम्)

श्लोक

रवे-यथरा कमथडि साडि-भावोवि-यथरा दाह-डनयामकत्वम्।
रज्जो-यथरारोडपत-वसुतु-संगःतरै्व कूटस्र्-डिदात्मनो मे ।।

शजस प्रकार सूयथ प्रते्येक कायथ का साक्षी है, शजस प्रकार अशि में दाहक ित्मक्त या रस्सी में सपथ का भ्रम आरोशपत होता है, उसी प्रकार मेरा भी सम्बन्ध इन वसुतुओं ंसे है। वास्तव में तो मैं कूटस्र् और शिदिा हाँ।

गीत

नडह रे नडह िंका काडित्
नडह रे नडह िंका ।
अज-मिर-मैित-मनन्ंतं
ध्यायस्तन्त्र्ह्म परं ािन्तम् ।।१ (नडहरे . . .)

ये त्यजस्तन्त बहुतर-पररतापं

ये भजस्तन्त सस्तच्चत्-सुख-रूपम् ।।२ (नडह रे...)

परमहंसगुरु-भडितं गीतं
ये पठस्तन्त डनगमार्थ-समेतम् ।।३ (नडह रे...)

कोई िका नहीं ंहै। कुछ भी िका नहीं ंहै।

जो अजन्मा, अशवनिी, अशद्वतीय, अनन्त, परम ािन्त ब्रह्म का ध्यान करते हैं, उनको कोई िंका नहीं ंहै।।१

जो अनेकों ंप्रकार के सांसाररक सन्तापों ंका त्याग कर सत्-शित्-आनन्द-रूप ब्रह्म का भजन करते हैं, उनको कोई िका नहीं ंहै ।।२

परमहंस गुरुओं ंद्वारा गाये गये गीतों ंको, शजनमें शक सारे वेदों ंका अर्थ समाया हुआ है, जोगाते हैं, उनको कोई िंका नहीं ंहै।।३

नामावली

ॐ ॐ ॐ ॐॐॐडविार। ॐ ॐ ॐ
ॐभजॐकार।।

२१. सविं ब्रह्ममयम्

(श्री सदाशिवब्रह्मेन्द्रकृतम्)

गीत

सवथ ब्र्ह्म-मयंरेरे,सवं ब्र्ह्म-मयम्।।
डकं विनीयं डक-मविनीयं
डक रिनीयंडक-मरिनीयम् ।।१(सवथ . . .)

डकं पठनीयंडक-मपठनीयं ।
डकं भजनीयं डक-मभजनीयम् ।।२ (सवथ . . .)

डकं बोधव्ंयं डक-मबोधव्ंयं
डकं भोक्तव्ंयं डक-मभोक्तव्यम् ।।३ (सवथ . . .)

सवथत्र सदा हंस-ध्यानं
कतथव्य भो मुस्तक्त-डनधानम् ।।४ (सवथ . . .)

सब ब्रह्मही है, देखो सब ब्रह्म ही है।

कहने के शलए क्या है, न कहने के शलए क्या है? करने के शलए क्या है, न करनेके शलए क्या है?।।१

सीखने के शलए क्या है, न सीखने के शलए क्या है? पूजा करने के शलए क्या है, न पूजा करने के शलए क्या है? ।।२

जानने के शलए क्या है, न जानने के शलए क्या है? भोग करने के शलए क्या है, न भोग करने के शलए क्या है? ।।३

व्यत्मक्त को सदा सवथदा हंस का ही ध्यान करना ाशहए। यही मुत्मक्त प्रदान करता है ।।४

नामावली

नारायि, नारायि,नारायि, लक्ष्मी।

२२. सब हैं समाना

सब हैं समान सबमें एक प्रिा,
त्याग के अडभमान हररनाम गाओ।
हररनाम गाओ दया अपनाओ,
अपने हृदय में हरर को बसाओ।।

हररनाम प्यारा सबका सहारा,
हररनाम जप के सुख ास्तन्त पाओ।
कहे डनवृडत्त हररनाम भस्तक्त,
हररनाम स्तक्त सबको देवे मुस्तक्त।।

२३. एक सार नाम

एक सार नाम हरर भज हरर ।
हरर हरे तेरी शिन्ता सारी ।। (एक सार . . .)

एक नाम शसद्ध रे राम कृ ष्ण गोशवन्द ।
जप के आनन्द पायो मन ।। (एक सार . . .)

पन्थ और सारे छिो दूसरे रे ।
कृ ष्ण नाम गा रे प्यारे प्यारे ।। (एक सार . . .)

जप ज्ञानदेव हरर नाम माला ।

हरष शनराला पाया पाया ।। (एक सार . . .)

२४. अठारह सद्गुण

श्रीराम जय राम जय जय राम ॐ ।
श्रीराम जय राम जय जय राम ॐ ।।

सत्यता, दयालुता, ुिद्धता,
प्रसन्नता, शनमथलता, शनयशमतता,
अितुरुता, शमत्रता, आजथवता,
समानता, एकाग्रता, अरोषता,
युक्तता, नम्रता, दृढ़ता,
एकता, ालीनता, उदारिता,
अभ्यास करो शनत्य इन अठारह गुणों ं का,
पाना ाहो ीघ्र ही जो अमरता।
अशद्वतीय ब्रह्म ही एक सत्यता,
और सब संसार है शमथ्या नाता ।
पाओगे अमर धाम अनन्तता का,
देखोगे अगर शवशभन्नता में एकता ।
शमले न यह ज्ञान यूशनवशसथटी में,
कृ पा हो गुरु की शमले ाश्वतता ।।

श्री राम जय राम जय जय राम ॐ ।
श्री राम जय राम जय जय राम ॐ।।

२५. शदव्य जीवन

हरे राम हरे राम, राम राम हरे हरे ।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे ।।

सेवा पे्रेम दान पशवत्रता ध्यान साक्षात्कार।
भले बनो भला करो दयालु बनो ।।
सेवा भत्मक्त ध्यान द्वारा साक्षात्कार पाओ ।
भले बनो भला करो दयालु बनो ।।
अभ्यास करो अशहंसा और सत्य पशवत्रता ।
यही है आधारशिला योग वेदान्त का ।।
स्वयं को पूछो 'कौन हाँ मैं' मोक्ष प्राप्त करो।
प्रश्न करो शनज ओा से 'कौन हाँ मैं' ।।

रीर नहीं ं यह मन नहीं ं मैं ाश्वत आिा हाँ।
बुत्मद्ध नहीं ं इत्मन्द्रय नहीं ं मैं ाश्वत आिा हाँ।।
इसको जानो मुत्मक्त पाओ कतथव्य है यही ।
इसको जानो अशवलम्ब अभी और यहीं ं ।।
शदव्य जीवन यापन करो कहते गुरुदेव ।
शदव्यता में वास करो कहें शिवानन्द ।।

हरे राम हरे राम, राम राम हरे हरे ।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे ।।

२६. कोई-कोई जाने रे

मेरा सत-शित-आनन्द रूप, कोई-कोई जाने रे,
दै्वैत विन का मैं हाँ स्रष्टा, मन-वाणी का मैं हाँ ाष्टा ।
मैं हाँ साशक्षस्वरूप, कोई-कोई जाने रे... ।।१

पंकिो से मैं हाँ न्यारा, तीन अवस्ाओं ं से भी न्यारा ।
अनुभव शसद्ध अनूप, कोई-कोई जाने रे... ।।२

सूयथ ाेन्द्र में तेज है मेरा, अशि में भी ओज है मेरा।
मैं अदै्वैतस्वरूप, कोई-कोई जाने रे...।।३

जन्म-मरण मेरे धमथ नहीं ं हैं, पाप-पुण्य मेरे कमथ नहीं ं हैं।
अज शनलेपीरूप,कोई-कोईजानेरे...।।४

तीन लोक का मैं हाँ स्वामी, घट-घट व्यापी अन्तयाथमी ।
ज्यों ंमाला में सूत, कोई-कोई जाने रे... ।।५

सत्संगीशनज रूप पशहिानो, जीव ब्रह्म का भेद न मानो।
तूहैब्रह्मस्वरूप, कोई-कोई जाने रे... ।।६

ॐआनन्द ॐ आनन्द ॐ आनन्द

२७. रिा प्रभु

रिाप्रभु तूने यह ब्रह्माण्ड सारा ।
प्राणों ंसे प्यारा, तूशह सबसे न्यारा ।। रिा प्रभु . . .

तूशह मात तूशह तात, तूशह बनुधु तूशह भ्रात ।

सकल जगत में एक तेरा पसारा ।। रि प्रभु . . .

मशहमातेरेहैअपारा, शकसने नहीं ंपायापार।
ब्रिब्रिगयेहारे ्लून्स्ढ़ शफरत सारा।।रिप्रभु . . .

२८. मन्त्र-पुष्पाशण

ॐ योऽपां पुष्पं वेद । पुष्पवान् प्रज्ञावान् पुिमान् भवशत । ्न्द्रमा वा अपां पुष्पम् । पुष्पवान् प्रजावान् पुिमान् भवशत । य एवं वेद। योऽपामायतनं वेद । आयतनवान् भवशत ।।

अशिवाथ अपामायतनम् । आयतनवान् भवशत । योऽेरियतनं वेद। आयतनवान् भवशत । आपो वा अिरायतनम् । आयतनवान् भवशत । य एवं वेद । योऽपामायतनं वेद । आयतनवान् भवशत ।।

वायुवाथ अपामायनतम् । आयतनवान् भवशत । यो वायोरायतनं वेद। आयतनवान् भवशत । आपो वै वायोरायतनम् । आयतनवान् भवशत । य एवं वेद। योऽपामायतनं वेद। आयतनवान् भवशत ।।

असौ वै तपन्नपामायतनम् । आयतनवान् भवशत । योऽमुष्य तपत आयतनं वेद । आयतनवान् भवशत । आपो वा अमुष्य तपत आयतनम् । आयतनवान् भवशत । य एवं वेद । योऽपामायतनं वेद । आयतनवान् भवशत ।।

न्द्रमा वा अपामायतनम् । आयतनवान् भवशत । यश्चन्द्रमस आयतनं वेद । आयतनवान् भवशत । आपो वै ्न्द्रमस आयतनम् । आयतनवान् भवशत । य एवं वेद । योऽपामायतनं वेद । आयतनवान् भवशत ।।

नक्षत्राशण वा अपामायतनम् । आयतनवान् भवशत। यो नक्षत्राणामायतनं वेद । आयतनवान् भवशत । आपो वै नक्षत्राणामायतनम् । आयतनवान् भवशत । य एवं वेद । योऽपामायतनं वेद । आयतनवान् भवशत ।।

पजथन्यो वा अपामायतनम् । आयतनवान् भवशत । युः पजथन्ययायतनं वेद। आयतनवान् भवशत । आपो वै पजथन्ययायतनम् । आयतनवान् भवशत । य एवं वेद। योऽपामायतनं वेद। आयतनवान् भवशत ।।

संवत्सरो वा अपामायतनम् । आयतनवान् भवशत । युः संवत्सरस्वायतनं वेद । आयतनवान् भवशत । आपो वै संवत्सरयायतनम् । आयतनवान् भवशत । य एवं वेद । योऽपुसु नावं प्रशतशष्ठतां वेद ।प्रत्येव शतष्ठशत ।।

२९. मा ि्ुः

हरेनाथमैव नामैव नामैव मम जीवनम्।

कलौ नास्त्येव नास्त्येव नास्त्येव गशतरन्यरा ।।

कलौ कल्मष-शित्तानां पापिव्योपजीशवनाम् ।
शवशधशक्रया-शवहीनानां गशतगोशवन्दकीतथनम् ।।

नाहं वसाशम वैकुण्ठे योशगनां हृदयेऽशप वा ।
मद्भक्ता यत्र गायन्ती तत्र शतष्ठाशम नारद ।।

आताथ शवषण्णाः शिशर्लाश्च भीता
घोरेषु ि व्याशधषु वतथमानाः ।
संकीत्यथ नारायणिब्दमात्रं
शवमुक्तदुःखाः सुत्मखनो भवत्मन्त ।।

सवथधमाथन्पररत्यज्य मामेकं िरणं व्रज ।
अहं त्वा सवथपापेभ्यो मोक्षशयष्याशम मा ि ुः ।।

अन्यरा ि रणं नात्मस्त त्वमेव ि रणं मम ।
तस्मात् कारुण्य भावेन रक्ष रक्ष महेश्वर ।।

३०. प्रभु-प्रार्थना

हे प्रभो आनन्ददाता ज्ञान हमको दीशजए।
ि घ्र सारे दुगुथणों ं को दूर हमसे कीशजए ।।
लीशजए हमको ि रण में हम सदिारी बनें। ब्रह्मिारी, धमथरक्षक,
वीर व्रतधारी बनें ।। हे प्रभो...

प्रेम से हम गुरुजनों ं की शनत्य ही सेवा करें।
सत्य बोलें, झूठ त्यागें, मेल आपस में करें ।।
शनन्दा शकसी की हम शकसी से भूल कर भी ना करें।
शदव्य जीवन हो हमारा तेरे यि गाया करें ।। हे प्रभो . . .

त्वमेव माता ि शपता त्वमेव त्वमेव बनुधुश्च सखात्वमेव।
त्वमेव शवद्या ि शवणं त्वमेव त्वमेव सवथ मम देवदेव।।
कायेन वाया मनसेत्मन्द्रयैवाथ बुद्धियाना वा प्रकृतेुःस्वभावात् ।
करोशम यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेशत समपथयाशम।।
नारायणायेशत समपथयाशम, नारायणायेशत समपथयाशम।।

३१. दैव-प्रार्थना

जय हे पे्रेमाणथव, करुणाकर, जय सवथज्ञ, समर्थ, शवभो ।
समूपूशजत, सवाथन्तवाथसी, नमो सत्मच्चदानन्द प्रभो ।।
ज्ञानित्मक्त से पूररत उर हो, हो सनुतुशलत हमारा मन ।
श्रद्धा, ीील, भत्मक्त, प्रज्ञा से, तिो सकें ककथ ि बन्धन ।।
अपनी शदव्य पे्रेरणा से प्रभु, हर दो यह शनजता, ज़िता ।
तृष्णा, घृणा, प्रशतस्पधाथ से, करो शवमुख, दो सात्मत्त्वकता ।।
वह दृग दो! प्रशत कण-कण में, तेरा ही अशधष्ठान देखें ।
सेवा करते हम जन-जन में, तुमको मूशतथमान् देखें ।।
अधरों ं पर तव प्रांजल गार्ा, पूणथकाम, ुिशितम, पावन ।
रहें सदा हम तुम में सुत्मस्त, ऐसे वर दो हे भगवान् ।।

३२. शवश्व-प्रार्थना

हे ेह और करुणा के आराध्य देव!
तुम्हें नमस्कार है, नमस्कार है।
तुम सवथव्यापक, सवथित्मक्तमान् और सवथज्ञ हो ।
तुम सत्मच्चदानन्दधन हो ।
तुम सबके अन्तवाथसी हो ।

हमें उदारता, समदशिथता और मन का समत्व प्रदान करो ।
श्रद्धा, भत्मक्त और प्रज्ञा से कृतार्थ करो ।
हमें आध्यात्मिक अन्तुःत्मिक्त का वर दो,
शजससे हम वासनाओं ंका दमन कर मनोजय को प्राप्त हों।ं
हम अहंकार, काम, लोभ, घृणा, क्रोध और दे्वेष से रशहत हों।ं
हमारा हृदय शदव्य गुणों ंसे पररपूररत करो।

हम सब नाम-रूपों ंमें तुम्हारा दिथन करें।
तुम्हारी अिथना के ही रूप में इन नाम-रूपों ंकी सेवा करें।
सदा तुम्हारा ही स्मरण करें।
सदा तुम्हारी ही मशहमा का गान करें।
तुम्हारा ही कशलकल्मषहारी नाम हमारे अधर-पुट पर हो ।
सदा हम तुममें ही शनवास करें।

३३. जगदीि-आरती

ॐ जय जगदीि हरे , स्वामी जय जगदीि हरे ।
भक्त जनन के संकट , क्षण में दूर करे ।। ॐ जय . . .

जो ध्यावे फल पावे, दुख शवनसे मन का,
स्वामी दुख शवनसे मन का।
सुख सम्पशत घर आवे, कष्ट शमटे तन का ।। ॐ जय...

मातु शपता तुम मेरे, ◌रण गहाँ शकसकी,
स्वामी ◌रण गहाँ शकसकी।
तुम शबन और न दूजा, आस करूँ शकसकी ।। ॐ जय...

तुम पूरण परमिाा, तुम अन्तयाथमी,
स्वामी तुम अन्तयाथमी।
पार-ब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ।। ॐ जय...

तुम करुणा के सागर, तुम पालन-कताथ,
स्वामी तुम पालन-कताथ।
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भताथ ।।ॐ जय...

तुम हो एक अगिोर, सबके प्राणपती,
स्वामी सबके प्राणपती।
शकस शवशध शमलूाँ दयामय, तुम से मैं कुमती ।।ॐ जय...

दीनबनुधु दुखहताथ, तुम रक्षक मेरे,
स्वामी तुम रक्षक मेरे।
अपने हार् उठाओ, द्वार पि़ा तेरे ।। ॐ जय...

शवषय शवकार शमटाओ, पाप हरो देवा,
स्वामी पाप हरो देवा।
श्रद्धा भत्मक्त बढ़ाओ, सन्तन की सेवा ।।ॐ जय...

३४. आरती

(शिवानन्दाश्रम)

जय-जय आरती शवघ्नशवनायक,
शवघ्नशवनायक श्रीगणिे ।।१

जय-जय आरती सुब्रह्मण्य,
सुब्रह्मण्य काशतथकेय ।।२

जय-जय आरती वेणु गोपाल,
वेणु गोपाल, वेणु लोल,

पापशवदूर नवनीतिोर ।।३

जय-जय आरती वेंकट रमण,
वेंकट रमण संकट हरण,
सीता राम राधे श्याम ।।४

जय-जय आरती गौरर मनोहर,
गौरर मनोहर, भवाशन िंकर,
साम्ब सदाशिव उमा महेश्वर ।।५

जय-जय आरती राजराजेश्वरर,
राजराजेश्वरर शत्रपुरसुन्दरर, महालक्ष्मी, महासरस्वशत,
महाकाली, महिात्मक्त ।।६

जय-जय आरती आंजनेय,
आंजनेय हनुमन्त ।।७

जय-जय आरती िनैश्चराय,
लिैश्चराय, भास्कराय ।।८।।

जय-जय आरती दत्तात्रेय,
दत्तात्रेय शत्रमूत्यथवतार ।।८

जय-जय आरती सद्गुरुनार्,
सद्गुरुनार् शिवानन्द ।।९

जय जय आरती वेणु गोपाल ।।

ॐ राजाशधराजाय प्रसह्यसाशहने, नमो वयं वैश्रवणाय कुमथहे, समेकामान् कामकामाय महंयं ।
कामेश्वरो वैश्रवणोददातु कुबेराय वैश्रवणाय, महाराजाय नमुः ।

ॐ न तत्र सूयो भाशत न िन्द्रतारकं
नेमा शवद्युतो भात्मन्त कुतोऽयमशिुः ।
तमेव भान्तमनुभाशत सवथ
तय भासा सवथशमदं शवभाशत ।।
गंगे ि यमुने िैव गोदावरर सरस्वशत ।
नमथदे शसनुधु कावेरर नमसुतुभ्यं नमो नमुः ।।
ॐ स्वत्मस्त प्रजाभ्युः पररपालयन्तां
न्यायेन मागेण महीं ंमहिीुः ।
गोब्राह्मणेभ्युः ुभमसुतु शनतं्यं
लोकाुः समस्ताुः सुत्मखनो भवनुतु ।।
काले वषथतु पजथन्युः पृशर्वी सयिाशलनी ।

दोऽयं क्षोभरशहतो ब्राह्मणुः सनुतु शनभथयुः ।।
अुभाशन शनरिाष्टे तनोशत ुभसन्तशतम् ।
सूमृशतमात्रेण यतुंपुंसां ब्रह्म तन्मंगलं परम् ।।
अशतकल्याणरूपत्वाशन्नत्यकल्याणसंश्रयात् ।
स्मतृथणां वरदत्वाच्च ब्रह्म तन्मंगलं शवदुः ।।
ओंकारश्चारि्बदश्च द्वावेतौ ब्रह्मणुः पुरा ।
कण्ठं शभत्वा शवशनयाथतौ तस्मान्मांगशलकावुभौ ।।
ॐ अर् ॐ अर् ॐ अर् ॐ ।

मगलं अस्मद्गुरूणाम् । मगलं मे असुतु ।
सवेषां मंगलं भवतु ।।
ॐ सवेषां स्वत्मस्त भवतु । सवेषां ात्मन्तभथवतु ।
सवेषां पूणथ भवतु । सवेषां मंगलं भवतु ।।
सवे भवनुतु सुत्मखनुः सवे सनुतु शनरामयुः ।
सवे भिाशण पश्यनुतु मा कशश्चद् दुः खभाग्भवेत् ।।
लोका-स्समस्ता-सुसुत्मखनो भवनुतु ।
असतो मा सद्गमय ।
तमसो मा ज्योशतगथमय ।
मृत्योमाथ अमृतं गमय ।।

ॐ पूणथमदुः पूणथशमदं पूणाथत्पूणथमुदच्यते ।
पूणथय पूणथमादाय पूणथमेवावशिष्यते ।।
ॐ ात्मन्तुः ात्मन्तुः ात्मन्तुः ।

त्वमेव माता ि शपता त्वमेव,
त्वमेव बनुधुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव शवद्या िशवणं त्वमेव,
त्वमेव सविं मम देव-देव ।।

कायेन वािा मनसेत्मन्द्रयैवाथ
बुद्धियाना वा प्रकृतेुः स्वभावात् ।
करोशम यद्यत् सकलं परस्मै
नारायणायेशत समपथयाशम ।।

बोलो श्री सद्गुरुमहाराज की जय !
सविं ब्रह्मापथणमसुतु !
ॐ तत्सत्!
ॐ ात्मन्तुः ात्मन्तुः ात्मन्तुः !